107

विवाह पञ्चशलाका चक्रम्।

कृ. रो. मृ. आ. पुन. पु. श्ले.
भ. अश्वि. रेवती उ.भा. पू.भा. शत. धनि.
म. पू.फा. उ.फा. हस्त चित्रा स्वाती विशा.
श्र. अभि. उ.षा. पू.षा. मू. ज्ये. अनु.

वधू प्रवेशनेदाने वरणे पाणिपीडने।
वेधः पञ्चशलाकाख्यो ऽन्यत्रसप्तशलाककः।।

अथ [illegible] चतुर्विध [illegible]माह !

प्रथम[illegible] स्थानसम्बन्धो दृष्टि[illegible] द्वितीयकः। तृती[illegible] त्वत्येकतोदृष्टि, स्थित्येकत्र चतुर्थकः।।१।।
अन्योन्यगी [illegible] स्वेसंयुता[illegible] वे स्थितः। पूर्णे [illegible] मिथो [illegible] वर्ग गती यदा।।२।।
अथ [illegible] ग्रहाणां [illegible] विचारे विशेषमाह [illegible] त्रिकोणे [illegible] गृहांकगैः शुभं सम्पूर्णं पादेन दलं पादात्य [illegible]।

[illegible] पञ्चकम् ([illegible] गतांशाः)

[illegible] रोगः
८, १७, २६
[illegible]
[illegible]
३, १२, २०, २९
[illegible] नृपः
४, १३, २२
[illegible]
चौर.
६, १५, २४
[illegible]
मृत्यु
१, १०, १९, २८

श्रीमहावीर [illegible]
राजा-गुरुः

काशी [illegible]

श्रीविश्वनाथाय नमः।
मन्त्री-बुधः

विवाहादन्यत्र सप्तशलाका चक्रम्।

श्री संवत् २०५६, शाके १९२१, बंगला सन् १४०५, मेषार्कतः १४०६, ईसवीय सन् १९९९-२००० फसली सन् १४०६-१४०७ हिजरी सन् [illegible]-२०, [illegible] १७००, वर्षे विश्वा ५ महर्घताकरम्।

अकूपारं तीर्त्वा जनकतनयापापकमले।
प्रणम्याथो लंकामनयत् सलीलं मलिनताम्।।
कृते यो रामस्य प्रथित चरितं कल्मषहरम्।
सदाऽहं तं वन्दे पवन तनयं भक्त परमम्।।

श्रीसंवत् २०५६, शाके १९२१ वर्षे समस्त [illegible]

खरमासाः-	
गुरुः-	वर्षारम्भात् वैशाख कृष्ण १३ बुधे (१४-४-१९९९) यावत्।
	वर्षारम्भे मीन राशौ। चैत्र शुक्ल ३ शनौ (२०-३-१९९९) पश्चिमास्तः। वैशाख शुक्ल ४ सोमे (१९-४-१९९९) पूर्वस्यादिशायाम् उदयः। अधिक ज्येष्ठ शुक्ल १५ रवौ (३०-५-१९९९) मेष राशौ। श्रावण शुक्ल १४ बुधे (२५-८-१९९९) वक्री। मार्गशीर्ष १४ भौमे (२१.१२.१९९९) मार्गी।
शुक्रः-	श्रावण कृष्ण १४ भौमे (१०-८-१९९९) पश्चिमास्तः। श्रावण शुक्ल १३ भौमे (२४-८-१९९९) पूर्वोदयः।
शनिः-	वर्षपर्यन्तम् मेष राशौ। वर्षारम्भे अश्विन्यां। शुद्ध कृष्ण १२ बुधे भरण्यां। भाद्रपद कृष्ण ५ भौमे (३१-८-१९९९) वक्री। पौष शुक्ल ७ गुरौ (१३-१-२०००) मार्गी।
राहुः-	वर्षपर्यन्तम् कर्क राशौ केतुश्च। वर्षपर्यन्तम् मकर राशौ।
खरमासाः-	धनुराशि-मीनराशिश्च गते रविः खरमासः।
विवाहः-	वैशाख शुक्ल, शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण। शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल। आषाढ़। कार्तिक। मार्गशीर्ष। पौष शुक्ल। माघ। फाल्गुन।

वर्ष लग्नम् ७/२४/४४/३९

१० के. ८ ७ म. ६ ११ ५ सू. गु.चं. बु. २ ४ रा. श.शु. ३

आर्द्रादौ भूमौ वर्षाढ़क्

आर्द्रा १	पुनर्व. १	पुष्य १	श्लेषा १	मघा १।।
पू.फा. १।।	उ.फा. १	हस्त १।।	चित्रा १	स्वाती १

आषाढ़े [illegible] श्रावणे [illegible] भाद्रपदे ३, आश्विने ३।।, कार्तिके २ [illegible] साधारण वृष्टिः।

विन्ध्योत्तरवासिनांविंशोत्तरीयमतेनायव्ययचक्रम्।

मेष	वृष	मि.	क.	सिंह	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशय	योग
१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११	आय	[illegible]
२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८	व्यय	[illegible]

विन्ध्यदक्षिणवासिनामष्टोत्तरीयमतेनायव्ययचक्रम्।।

मेष	वृष	मि	क.	सिंह	क	तु	वृ.	ध	म.	कुं	मी	राशय	योग
११	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	५	११	१४	२	२	१४	आय	[illegible]
८	१४	११	११	५	११	१४	८	११	८	८	११	व्यय	[illegible]

अनेन चक्रेण विशेष विचार- लाभव्ययौ समीकृत्वा एक हीनं तु [illegible]। अष्टाभिस्तु हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्।। लाभ १, सौख्य २, क्लेश ३, रोगं ४, लोकापवादनं ५, सम्मानम् ६, विजय ७, हानि ८, कथित [illegible]।। अथवा उभय लाभैव लाभः।। व्ययैक्यं व्यय इति। यत्र विभागे [illegible] ५१।५६।१९, देशान्तर स्पष्ट घट्यादि १।२ [illegible] [illegible] प्रत्यक्ष ५।५५ [illegible] २५।५८ [illegible]

धर्मो रक्षति रक्षितः

वर्षारम्भे

'नन्दन'

नामसंवत्सरः संकल्पादौ वर्षपर्यन्तम् योजनीयम्

श्रीकाशीस्थधर्मसभासदांसम्मतम्-२०५६

श्री डॉ. जीवनाथ ओझा, एम. ए. गणित, पीएच.डी. विद्यावारिधि ज्योतिषशास्त्राचार्येण प्रवर्तितम्

संरक्षक :- डॉ. झारखण्ड ओझा
आयुर्वेदसंकायाध्यक्ष, चिकित्सा विज्ञान संस्थान का.हि.वि.वि. वाराणसी

प्रधानसम्पादक
रामेश्वरनाथ ओझा एम.ए. ज्योतिषशास्त्राचार्य

सम्पादक
• श्रीमती कान्ति ओझा एम.एससी. गणित, ज्योतिषी

सलाहकार- डॉ. कैलाशपति ओझा वरिष्ठ प्राध्यापक दिल्ली वि.वि. दिल्ली
डॉ. सुरेन्द्रनाथ ओझा प्रवक्ता राजकीय आयुर्वेदिक कालेज वाराणसी
शिक्षा निकेतन अजगरा (तारगाँव) वाराणसी

सत्यात्रास्तिपरोधर्मः

श्रावण कृष्ण
६ भौमतः
इष्टम् ४०/१०

'विजय'

नामसंवत्सरः प्रवेश्यः।

श्री पंडित ऋषिकेश पाण्डेयेन विरचितम्

प्रकाशक :- [illegible] बुकसेलर, राजादरवाजा, वाराणसी। फोन- ३५३६५०, ३६०८४८

जन्मलग्नम् [illegible]

रा. ४ ३ ५ ६ ७ गु. १२ ८ १० [illegible]

जन्मलग्नाज्जन्मलग्न फल

१ देह सुखम्	७ स्त्री सुख[illegible]
२ धन लाभः	८ रोगभयम्
३ कुटुम्ब वृद्धिः	९ धर्म लाभः
४ मित्र-सुखम्	१० पुत्रप्राप्ति[illegible]
५ पुत्र प्राप्तिः	११ लाभसुख[illegible]
६ शत्रु जयः	१२ व्यय कष्ट[illegible]

मूल्यः २५ [illegible]

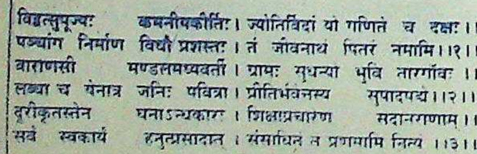
विषय-सूची

प्रवर्तक एवं आद्यसम्पा[illegible]

[illegible] डॉ जीवनाथ ओझा [illegible]

एम. ए. गणित, ज्योतिषशास्त्र[illegible]

विद्यावारिधि पीएच. डी.



विद्वत्सुपूज्यः कमनीयकीर्तिः। ज्योतिर्विदां यो गणिते च दक्षः।।
पञ्चांग निर्माण विधौ प्रशस्तः। तं जीवनाथ पितरं नमामि।।१।।
वाराणसी मण्डलमध्यवर्ती। ग्रामः सुधन्यो भुवि नारगाँवः।।
लब्धा च येनात्र जनिः पवित्रा। प्रीतिर्भवेत्तस्य सुपादपद्मे।।२।।
दूरीकृतस्तेन घनाऽन्धकारः। शिक्षाप्रचारेण सदानराणाम्।।
सर्वं स्वकार्यं हनुमत्प्रसादात्। संसाधितं तं प्रणमामि नित्यं।।३।।

दो शब्द

विगत ५८ वर्षों से प्रस्तुत 'श्रीमहावीर पञ्चांगम्' आपकी सेवा में अनवरत् प्रकाशित हो रहा है। संवत् २००१ में प्रातः स्मरणीय पूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी से मेरे पूज्य पिता स्व. डॉ. जीवनाथ ओझा ने पञ्चांग बनाने की अपनी अभिलाषा बताई तब श्रद्धेय स्वामी करपात्रीजी ने हनुमद् आराधना के लिए [illegible] तिथ्यां जनकतनया पादकमले [illegible] अपना सम्मति एवं आशीर्वाद इस पञ्चांग के निमित्त प्रदान किया। [illegible] आपका सम्मान है।

आप कृपालु पाठकों के [illegible] का ही परिणाम है कि आज काशी का यह प्राचीन एवं लोकप्रिय पञ्चांग भारत ही नहीं अपितु विदेशों में रहने वाले भारतीय बन्धुओं में भी समादृत प्रचलित है।

पञ्चांगापेक्षित परामर्श, सुझाव का हम सदैव आदर करते हैं, अतः अपना अमूल्य सुझाव और सम्मति भेजते रहें, इससे हमारा उत्साह बढ़ेगा।

कृपाकांक्षी
रामेश्वरनाथ ओझा
श्रीमती कान्ति ओझा

श्रीमंगलमूर्त्तयेनमः

काशीशं गणनायकं सुरगुरुं देवी तथा श्रीपतिम्।
स्तुत्वावायुसुतं सभक्ति मनसा ध्यात्वा च नत्वा गुरुम्।।
स्वर्गीयं पितरं नमामि विबुधं श्रीजीवनाथं हि तम्।
नित्यं लोक हिताय यस्य कृपया पञ्चाङ्गमातन्यते।।

संवत्सरस्वली

सतयुग का मान	-	१७,२८,००० वर्षाणि
त्रेतायुग का मान	-	१२,९६,००० वर्षाणि
द्वापरयुग का मान	-	८,६४,००० वर्षाणि
कलियुग का मान	-	४,३२,००० वर्षाणि

इस वर्ष कल्पारम्भ से १९५५८८५१०० वर्ष कलियुग के आरम्भ काल से ५१०० वर्ष, श्री विक्रमादित्य के सिंहासनारोहण काल से २०५६ वर्ष एवं शकारम्भ से १९२१ वर्ष व्यतीत हुए। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार संवत् २०५६ को सूर्य सिद्धान्तीय अहर्गण = ७१४४८४१५५२६१ + ३५४ = ७१४४८४१५५६१५ एवं ग्रहलाघवीय अहर्गण २२५१ तथा गत चक्र ४३ है। वर्षारम्भ में नन्दन नामक संवत्सर है। श्रावण कृष्ण ६ मंगलवार को 'विजय' नामक संवत्सर प्रवेश करेगा।

२६वाँ नन्दन संवत्सर

सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सौख्यं भवति शोभनम्।
बहुक्षीरयुता गावो नन्दने नन्दिताः प्रजाः।।

शिव-पार्वती संवाद के अनुसार-नन्दन नामक संवत्सर में सर्वत्र सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य तथा सौहार्द रहेगा। गायों में दूध-घी अधिक उतरेगा।

२७वाँ विजय संवत्सर

क्षत्रियाश्च तथा वैश्याः शूद्राश्च नटनर्तकाः।
पीड्यन्ते प्रचुरं रोगैर्विजयाब्दे तु सुन्दरि।।

शिवजी कहते हैं कि हे सुन्दरि! विजय संवत्सर में क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा नट एवं नर्तक अधिक पीड़ित रहेंगे।

ग्रहसभासद विचार

चैत्रादि मेषादि कुलीर तौली मृगादिवाराधिपतिक्रमेण।
राजा च मन्त्री ह्यथ सस्यनाथो रसाधिपो नीरस नायकश्च।।
आर्द्रादिनाथो घननायकश्च धान्याधिपश्चापदिनादिवारः।।

राजा गुरु फलम्

गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुधाश्च धेनवः।
यजन्ति विप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवं सर्वजनेषुवर्तते।।

संवत् २०५६ के राजा गुरु हैं फलस्वरूप पृथ्वी पर उत्तम वर्षा, गाय अधिक दूध देने वाली, अग्निहोत्री विप्र यज्ञ यागादि करने वाले, तथा घर-घर में उत्सव होंगे।

मन्त्री बुध फलम्

शशिसुते शुभमंत्रिसमागते रचयतिनाकुरुतेमदन क्रियाम्।
बहुधनं बहुवारिसमन्वितं यवमसूरिचणात्रमहर्घता।।

मन्त्री पद बुध को प्राप्त है अतः स्त्रियाँ अपने पति से रमण करती प्रसन्नचित्त रहेंगी। धन-धान्य की प्रचुरता होगी, उत्तम वर्षा होगी, जौ चना, मसूर में महंगी रहेगी।

सस्येश शनिफलम्

रविसुते यदि धान्यपतौ जनो नृपतिभिः परिपीडित विग्रहः।
गदभयं तुषधान्य हरं सदा दुरितवाद विवादयुतानराः।।

शनि को सस्येश का पद प्राप्त होने के फलस्वरूप जनता राजा से पीड़ित रहेगी, युद्ध तथा रोग की वृद्धि होगी, भूसी वाले अन्नों को क्षति पहुँचेगी, लोग पापकर्म तथा वाद-विवाद में संलग्न रहेंगे।

दुर्गेश भौम फलम्

अवनिजो गढ़नायकतां गतो विविधदुर्गवियोगसमन्वितः।
जनपदेषु जनाः क्रयविक्रये भयविशेषतया न फलं क्वचित्।।

मंगल के दुर्गेश होने से लोग स्वजनों वियोग से दुःखित रहेंगे, जनपदों में (बाजार में) वस्तुओं को खरीद-बिक्री करने लोगों के सम्मुख भय व्याप्त रहेगा तथा प्रायःसभी कार्य निष्फल होंगे।

धनेश शुक्रफलम्

द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युताः समधाः सकला भुविमानवाः।
समसुखाः क्रय विक्रय जीविनो नृपतयो जनपालनतत्पराः।।

धनेश का पद शुक्र को प्राप्त होने के फलस्वरूप सभी लोग धनवान क्रय-विक्रय करने वाले समान सुखी तथा राजा लोग जनता के पालन में तत्पर रहेंगे।

रसेश चन्द्रफलम्

यदि विधौ रसपे भुवि मानवा नववधू युवती भुभुजे प्रियाम्।
जलधरा बहुवारिविधायका रसवती धनधान्यवती मही।।

चन्द्रमा के रसेश होने से लोग अपनी नयी नयी प्रियतमाओं के साथ रमण करते हैं। मेघ वर्षा बहुत करता है, पृथ्वी रस पदार्थ तथा धन-धान्य से पूर्ण रहती है।

धान्येश गुरु फलम्

गोधूमाः शालिमुद्गाश्च कंगुमाषाश्च कोद्रवाः।
सुभिक्षं जायते देवि गुरौ धान्याधिपे सति।।

धान्येश गुरु को होने से गेहूँ, धान, मूंग, कंगनी, उड़द तथा कोदो के मूल्य में सस्ती तथा सुभिक्ष होता है।

नीरसेश शुक्रफलम्

कर्पूरं गुरु [illegible]
[illegible] नीरसेशो भृगुर्यदि।।

नीरसेश का पद शुक्र को प्राप्त है फलतः कपूर, अगर-तगर सुगन्धित वस्तु, सुवर्ण, मोती तथा वस्त्रों का भाव महंगा होता है।

फलेश भौम फलम्

फलपतिर्यदि भूतनयो भवेत् [illegible]
गत भयान्नतदेशजनास्तदा नृपत[illegible]।।

फलेश का पद मंगल को प्राप्त हुआ है अतः पृथ्वी सुन्दर फल-फूलों से युक्त, आनर्तदेशवाली भय रहित, राजाओं में अधिक विग्रह की स्थिति उत्पन्न होती है।

मेघेश भौम फलम्

अवनिजो जलदस्य पतौ भुवि श्रुति [illegible]
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रचुर [illegible]

मंगल के मेघेश होने के फलस्वरूप लोग [illegible] पराजय की स्थिति आती है, कहीं अल्पाधिक तो कहीं अन्य [illegible] मनुष्यों को सन्तापदायक होता है।

रोहिणी वासफलम्

'खण्ड वृष्टिश्च सन्धिषु'– रोहिणी का निवास सन्धि में है अतः [illegible] के फल प्राप्त हो रहे हैं।

संवत्सर वासफलम्

'सर्वधान्यं महर्घं स्याद्रणिग्वेश्मनि संस्थिते'– [illegible] के घर में होने से सभी अन्न महंगे होते हैं।

समय वाहन फलम्

जनता भ्रमिता [illegible]
[illegible] नौकावाहनतत्पर।।

इस वर्ष समय-वाहन नौका (नाव) है अतः जनता भ्रमित, [illegible] को पीड़ा, सम्पूर्ण पृथ्वी फल रहित होगी।

आर्द्रा प्रवेश फलम्

तिथि फलम्– आर्द्रा प्रवेश नवमी तिथि उपरान्त दशमी तिथि में हो रहा है फलतः 'दशम्यां शुभदा प्रोक्ता' अतः यह शुभ फलदायक है।

वारफलम्– 'भौमे निधनमाप्नुयात्' मंगलवार के दिन आर्द्रा का प्रवेश मृत्युकारक होता है।

नक्षत्र फलम्– 'चित्रायां चित्र धान्यानि सर्वदा शुभफलं भवेत्' चित्रा नक्षत्र में आर्द्रा का प्रवेश होने से चित्र-विचित्र अन्नों का उत्पादन अधिक होगा तथा वर्ष शुभदायक रहेगा।

योगफलम्– 'परिघाच्चधननाशकृत' परिघ योग में आर्द्रा का प्रवेश धन का नाश करने वाला है।

वेलाफलम्– 'अस्तंगता द्री बहुसस्य सम्पत्' आर्द्रा का प्रवेश गोधूलि वेला में हो रहा है फलतः [illegible] तथा सम्पत्ति लाभ के फल प्राप्त हो रहे हैं।

नवमेघानां– 'अल्पवृष्टिश्च काले' काल नामक मेघ से अल्पवृष्टि का योग प्राप्त हो रहा है।

चतुर्मेघानां– 'द्रोणो वर्षति सर्वदा' द्रोण नामक मेघ सर्वदा वर्षाकारक है।

द्वादश मेघानां– 'कर्कोटके जलं नास्ति मरणं च महीतले' कर्कोटक नामक मेघ में वर्षा नहीं होती, पृथ्वी पर मृत्यु अधिक होता है।

वर्षफलम्

[illegible]
[illegible]

-[illegible]

[illegible]
[illegible]

-[illegible]

सुभिक्षं सुखिनो लोका [illegible]
नन्दने च धनधान्यसंकुलम् [illegible]

-[illegible]

गुरु-बृहस्पति के नेतृत्व में संवत् २०५६ का नन्दन नामक संवत्सर [illegible] १९९९ से प्रारम्भ हो रहा है। आकाशीय-यात्रिक [illegible] मंत्रिमण्डल में छः (६) विभाग शुभ ग्रहों के अधीन हैं तथा [illegible] क्रूर ग्रहों का अधिकार है। संवत्सर 'नन्दन' नामक [illegible] धार्मिक कार्यों में वर्ष भर किया जायेगा, [illegible] 'विजय' नामक अगला संवत्सर प्रवेश कर [illegible] शुभग्रहों की अधिकता के कारण उसका [illegible] क्रमशः बृहस्पति एवं बुध हैं जो निर्णायक [illegible] सांस्कृतिक कार्यक्रम में सम्पूर्ण वातावरण [illegible] रहेगा। गोष्ठिक चर्चा का प्रचार और प्रसार [illegible]

राजा (सत्ताधारी) और अधिकारी [illegible] सर्वोच्च कल्याण हो सके। [illegible] [illegible] वातावरण में सुख मिलेगा। [illegible] [illegible] अपने-अपने निर्धारित कार्य को करने में [illegible] का अनुभव करेगा। [illegible] प्रचुर मात्रा में होने से सबके [illegible] के [illegible] के लिये सुविधा प्रदान [illegible] शोधपरक शिक्षा तक [illegible] के लिये [illegible] शिक्षा नीति तय [illegible] निर्धारित किये जायेंगे। [illegible] को [illegible] में

अशिक्षा है इस सत्य को जनता एवं शासक वर्ग दोनों [illegible] तथा सुधार के प्रयास [illegible] विज्ञान-प्रौद्योगिकी कला, कम्प्यूटर, [illegible] संस्कृत भाषा तथा अन्य [illegible] भाषाओं के अध्ययन के लिये [illegible] प्रावधान [illegible] नीति में सन्तोषजनक सुधार [illegible] होगा।

वर्ष प्रवेश कुण्डली के अनुसार [illegible] योग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। [illegible] विद्यालय, विद्यार्थी [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] दैवी-प्राकृतिक दुर्घटनाओं [illegible] की व्यापक क्षति होगी।

[illegible] कष्टदायक [illegible] मन्त्रियों के लिये विपरीत रहेगा। [illegible] और वर्षपर्यन्त वक्री मार्गी गति [illegible] का कारण बनेगा। [illegible] मंगलवार से शनि वक्री होकर [illegible] परिस्थितियाँ उत्पन्न करेगा। देश के [illegible] दैवी-प्राकृतिक कोप से धन-जन [illegible] आवश्यक वस्तुओं में मंहगाई आ जायेगी।

[illegible] २० मार्च को पश्चिम में अस्त होकर [illegible] इसका फल सुभिक्ष कारक है [illegible] मंहगाई बनी रहेगी। [illegible] मेष राशि में प्रवेश [illegible] सुभिक्ष इत्यादि में सुधार ला देगा। [illegible] यह वर्ष सामान्यतया शुभफलदायक है।

राशि-फलम्

(दिनांक १८ मार्च से १९९९ से ४ अप्रैल २००० ई. तक)

चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

मेष–राशि वालों के लिये यह वर्ष सामान्यता कष्टकारक है। शनि की मध्य साढ़ेसाती एवं गुरु का भी गोचरवश मध्यम फरकारक होना बहुविध उलझनें खड़ी कर देगा। आर्थिक परेशानी, अपनी बृद्धि एवं प्रतिभा का उपयोग न कर पाने से मानसिक ग्लानि सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट, व्यर्थ के वाद-विवाद में संलग्न होने, जैसी परिस्थितियों से मन अशान्त रहा करेगा। सारी सुविधायें रहते हुए भी आप उसका उपयोग नहीं कर पायेंगे। वाहन इत्यादि का प्रयोग करते समय सावधानी अपेक्षित है। स्थान-परिवर्तन अथवा प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण के भी अवसर आ सकते हैं। राजकीय कार्यों में निराशा जनक परिणाम प्राप्त होंगे। शनि-गुरु की शान्ति का उपाय करने से सुधार होगा।

इ, उ, ऐ, ओ, वा, वी, वू, वे, वो।

वृष–राशिवालों के लिये वर्षारम्भ में गुरु के अनुकूल होने तथा शनि के विपरीत रहने से समय मिश्रितफलकारक रहेगा। धन और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, एवं शत्रु पराजित होंगे तथा प्रायः सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। विवाह पुत्र जन्मादिक मांगलिक अंवसर आयेंगे। सबके बावजूद शनि के विपरीत रहने से अकल्पित परेशानियाँ आती रहेंगी और उलझनें बनी रहेंगी। पुत्रादिकों के प्रति विशेष चिन्तित रहना पड़ेगा। स्वयं का स्वास्थ्य खराब रहेगा एवं व्यय की अधिकता से आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ेगा। राहु-केतु अनुकूल है अतः अकस्मात् लाभ के अवसर भी प्रायः आते रहेंगे। जून के महीने से गुरु भी विपरीत हो जायेगा। एवं अनेक परेशानियाँ खड़ी करेगा। शनि एवं गुरु की नियमित आराधना श्रेयस्कर होगी।

का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा।

मिथुन–राशिवालों के लिये यह वर्ष प्रायः उत्तम फल प्रदान करने वाला है। गोचर से एकादश का शनि उचित-अनुचित दोनों तरह से लाभ ही प्रदान करेगा। दूसरों की वस्तुयें भी आप की हो जाये, ऐसे अवसर आयेंगे। वर्षारम्भ से मई के महीन तक गुरु थोड़ा हल्का है अतः सभी सुखों के बावजूद मन खिन्न सा रहेगा किन्तु जून से गुरु भी शुभ फलकारक होकर लाभ एवं सफलता के नये आयाम उपस्थित कर देगा। राहु के विपरीत रहने से जोखिम वाले कार्यों से भरसक बचना चाहिए। कुटुम्बियों से लड़ाई-झगड़े होंगे। गुप्त रोग तथा नेत्रकष्ट की सम्भावना है। वर्ष के उत्तरार्ध में मांगलिक कार्य करने के अवसर भी आयेंगे। भौतिक-सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। नौकरी व्यवसाय में उन्नति होगी।

ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क–ग्रहों की शुभाशुभ स्थितियों के कारण राशि वालों के लिये यह वर्ष मध्यम फल कारक है। वर्ष के उत्तरार्ध मई महीन तक गुरु के अनुकूल रहने से रुके एवं अधूरे कुछ कार्य पूर्ण होंगे, घर से मंगलकार्य सम्पन्न होंगे। भाग्योन्नति होगी। राजकीय एवं न्यायालय सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलेगी। भाइयों एवं परिजनों का सहयोग प्राप्त होगा। शनि के कारण काम तो हाथ में रहेगा किन्तु उसका प्रतिफल पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं होगा। बौद्धिक क्षमता एवं प्रभुत्व में कमी का अनुभव होगा। मई के अन्त से गुरु भी परिवर्तित होकर हल्का पड़ जायेगा। मनो-मस्तिष्क पर उदासी एवं खिन्नता का भाव परिलक्षित होने लगेगा। कार्यों में व्यवधान आने लगेंगे। स्वास्थ्य ढीला-ढाला रहने लगेगा।

मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे।

सिंह–वर्षारम्भ में गोचर से अष्टम भाव का आया गुरु झकझोर देगा। रोग-शोक-बन्धन से स्थितियाँ डॉवाडोल हो जायेंगी। मुँह से कठोर वाणी निकलेगी जिससे बना-बनाया काम बिगड़ जायेगा। शारीरिक सुख बाधित रहेगा। राजकीय एवं न्यायालय सम्बन्धी कार्यों में फल विपरीत रहेगा। पुत्रादिकों परिजनों के विरोध का सामना करना पड़ेगा। धार्मिक कार्यों में व्यवधान उपस्थित होंगे। जून के महीने से गुरु परिवर्तित हो जायेगा एवं बहुत सी विपरीत परिस्थितियाँ स्वयमेव समाप्त हो जायेंगी। रुके एवं अधूरे कार्य पूर्ण होने लगेगें। मांगलिक कृत्य सम्पन्न होंगे। भाग्य में चमक आ जायेगी।

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

कन्या–वर्षारम्भ में गुरु सर्वथा अनुकूल है फलतः सुख-सुविधा के साधनों में वृद्धि करेगा। स्त्री-परिवार का उत्तम सुख प्राप्त होगा। वाणी-वृद्धि में निखार आयेगा एवं बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी। शनि की ढैया के कारण स्त्री-पुत्रादिकों के कारण चिन्तित होना पड़ सकता है। न चाहते हुए भी कुछ ऐसे कार्य करने पड़ेंगे जिससे पश्चाताप होगा। जून के प्रारम्भ से ही गुरु भी प्रतिकूल रहेगा फलतः परेशानियाँ बवडंर बाँध कर आ जायेगी। इस समय शनि एवं गुरु की ग्रहशान्ति का उपाय करने से विपरीत परिस्थितियों में अवश्य सुधार होगा। सुन्दरकाण्ड, शनिस्तोत्र के पाठ से शनि के प्रभाव को कम करने में मदद मिलेगी। एकादश भाव में आया राहु शुभकार्यों में प्रवृत्त करेगा, धार्मिक आस्था बलवती होगी।

रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते।

तुला–राशि वालों के लिये यह वर्ष मिश्रित फलकारक है। शनि के कारण बार-बार अनचाही यात्रायें करनी पड़ेगी जिसे पारिवारिक सुख में व्यवधान आयेंगे। वाहन इत्यादि के प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए। अच्छी से अच्छी वस्तुयें आपको आकर्षित नहीं कर पायेंगी। सब कुछ उपलब्ध रहते हुए भी मानसिक सुख-शान्ति का अभाव खटकेगा। मई के अन्त से गुरु परिवर्तित होकर सर्वथा अनुकूल हो जायेगा एवं सुख-चैन के वातारण का सृजन होने लगेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं के साधन उपलब्ध होंगे तथा स्त्री-परिवार के प्रति संलग्नता बढ़ेगी। घर में मांगलिक उत्सव होने के अवसर आ जायेंगे। कार्यक्षमता बढ़ जायेगी, विद्या-बुद्धि में प्रखरता आयेगी, स्वास्थ्य भी अनुकूल रहने लगेगा।

तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

वृश्चिक–राशिवालों के लिये यह वर्ष सर्वथा शुभफलदायक एवं अनुकूल है। वर्षारम्भ में गोचर से पंचम भाव का गुरु, वर्षपर्यन्त छठें भाव का शनि नौवें-तीसरे राहु-केतु आशा से कहीं अधिक लाभकारी सिद्ध होंगे। सुख और आनन्द में वृद्धि होगी। प्रायः प्रत्येक कार्यों में सफलता मिलेगी। नौकरी व्यवसाय में उन्नति होगी। कोई स्थिर लाभ भी हो सकता है। शत्रु हार जायेंगे अथवा आप से सन्धिकर लेंगे। घर में मंगलकार्य होंगे। तर्क शक्ति सूझ-बूझ में वृद्धि होगी। भूमि-भवन से सम्बन्धित कोई काम बनेगा। सट्टे-लाटरी से भी लाभ सम्भव है। मई के अन्त से गुरु थोड़ा हल्का पड़ जायेगा एवं मनो-मस्तिष्क पर उदासी का भाव आ जायेगा। कार्यों में मन नहीं लगेगा।

ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ठ, भे।

धनु–वर्षारम्भ से मई के महीने तक का समय मन्द फल फलकारक है। इसमें मन अशान्त रहेगा एवं निर्णय लेने की क्षमता में कमी का अनुभव होगा। शत्रुपक्ष से परेशानी बढ़ेगी। बार-बार यात्रायें करने से पारिवारिक व्यवधान पैदा होंगे। अपने ही साधनों का उपभोग नहीं कर पायेंगे। शनि के कारण स्त्री एवं पुत्र के प्रति चिन्तित होना पड़ेगा। धोखा खाने अथवा ठगे जाने की भी स्थितियाँ बन सकती है। राहु-केतु के कारण आकस्मिक लाभ भी होंगे किन्तु स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। मई के अन्त से गुरु परिवर्तित होकर सर्वथा अनुकूल हो जायेगा। अधूरे एवं रुके हुए सभी कार्यों में प्रगति होने लगेगी। भौतिक सुख-सुविधा के साधन जुटने लगेगें। स्त्री-परिवार का सुख-सान्निध्य प्राप्त होगा। घर में मंगल कार्य होंगे। किसी स्थिर लाभ की भी सम्भावना बन सकती है। तर्क शक्ति सूझ-बूझ में वृद्धि होगी। सद्गुणों का विकास होगा।

भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

मकर–शनि की अढ़ैया एवं गोचर से गुरु के भी हल्के रहने से राशिवालों को कदम-कदम पर अनेक कार्यों में व्यवधान का सामना करना पड़ेगा। स्वजन एवं परिजन अपने रहते हुए पराये जैसा बर्ताव करेंगे। धन की कमी का अनुभव होगा। मन अशान्त रहेगा तथा बेचैनी बढ़ेगी। इच्छा के विपरीत स्थानान्तरण हो सकता है। [illegible] यात्रायें करनी पड़ेगी। नौकरी व्यवसाय रोजी-रोजगार में झंझट पैदा होंगे। लड़ाई-झगड़े से विरत रहना ही आप के लिये उचित रहेगा। स्वयं का स्वास्थ्य ढीला-ढाला रहेगा। राजकीय एवं न्यायालीय कार्यों में सफलता संदिग्ध रहेगी। केतु की अनुकूलता से यदा-कदा लाभ भी होता रहेंगे किन्तु शारीरिक कष्ट सम्भव है।

गू, गे, सा, सी, सू, से, सो, दा।

कुम्भ–राशिवालों को [illegible] से आया द्वितीय भाव का गुरु, वर्षपर्यन्त तृतीय शनि एवं छठें राहु [illegible] नवीन आयाम उपस्थित कर देंगे। चारों तरफ से पैसा आने लगेगा एवं शत्रु [illegible] हो जायेंगे। स्वजन एवं परिजन आपके आगे-पीछे घूमेंगे। प्रेम सम्बन्धों में [illegible]ता आयेगी एवं स्त्री-परिवार के प्रति संलग्नता में वृद्धि होगी। नौकरी-चाकरी [illegible] इत्यादि भौतिक सुख-साधन जुटेंगे। अपने से सबल शत्रु को भी आप [illegible] देंगे, ऐसी शक्ति आ जायेगी। केतु विपरीत है अतः नेत्र कष्ट एवं यदा-कदा [illegible] फिजूल खर्ची का भी सामना करना पड़ेगा। मई के अन्त से गुरु थोड़ा हल्का पड़कर कार्यों में व्यवधान उपस्थित कर देगा जिससे आपके प्रभुत्व में हल्की कमी का अनुभव होगा।

दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

मीन–वर्षारम्भ में गुरु आपकी राशिपर है फलतः स्वास्थ्य ढीला-ढाला रहेगा। बौद्धिक क्षमता एवं सूझ-बूझ की कमी से गलत निर्णय लेकर परेशानी में पड़ जायेंगी। लड़ाई-झगड़ा, वाद-विवाद से भरसक दूर रहने का ही प्रयास करें। शनि की उतरती साढ़े-साती आपको अपनी ही क्षमताओं के प्रयोग से वंचित रखेगी। आप ही का पैसा एवं आप ही के साधन आपके काम नहीं आयेंगे। पैसा पानी की तरह खर्च हो जायेगा। स्वजनों परिजनों से लड़ाई-झगड़ा होता रहेगा। कार्यों में व्यवधान उपस्थित होंगे। राहु-केतु शुभफलकारक है फलतः आकस्मिक लाभ के अवसर भी आते रहेंगे। मई के अन्त से गुरु परिवर्तित होकर सर्वथा अनुकूल हो जायेगा। लाभ होने लगेगा एवं शत्रु भाग खड़े होंगे। स्वास्थ्य में भी सुधार हो जायेगा। रुके एवं अधूरे कार्य बनने लगेंगे।

पत्र व्यवहार का पता–

रामेश्वरनाथ ओझा एम. ए. ज्योतिषाचार्य

प्रधान सम्पादक–

श्रीमहावीर पञ्चाङ्गम्

बी. ३७/१८२, खन्ना वाटिका, बिरदोपुर, वाराणसी।

[illegible]मासफल

चैत्र शुक्ल पक्ष–वर्ष का [illegible] पहला पखवारा सामान्यतया सन्तोषप्रद रहेगा किन्तु मंगल एवं बुध का वक्री होना दुर्भिक्ष एवं मँहगी की सूचना है। राजनैतिक एवं प्रशासनिक निर्णयों से जनता की परेशानी बढ़ेगी तथा चेती की खड़ी फसल को क्षति पहुँचने के भी योग मिल रहे है। सबके बावजूद शेयर बाजार में सूचकांक बढ़ेगा एवं तेजी का दौरा आयेगा। देश के किसी प्रान्त में सत्ता परिवर्तन के योग भी मिल रहे हैं। शक्कर, चावल, घृत आदि में पहले तेजी आकर बाद में मन्दी की अवधारणा चलने लगेगी। इस पक्ष के मध्य में आँधी, तूफान, वर्षा की सम्भावना तथा अग्निकाण्ड विस्फोट से क्षति पहुँचने के योग हैं।

वैशाख मास–कई दृष्टियों से यह महीना राहत प्रदान करने वाला प्रतीत हो रहा है। चेती की फसल सन्तोषजनक उतर जाने से सुविधा एव प्रसन्नता का वातावरण। बुध मार्गी होकर पुनः मीन राशि का हो जा रहा है फलतः शेयर बाजार में आयी तेजी टिक न सकेगी। कृष्णपक्ष में शनि पश्चिम दिशा में अस्त होकर प्रायः सभी दैनिक उपयोग की वस्तुओं में मँहगी का रुख ला देगा। साग, सब्जी, दूध, [illegible] तथा खाद्यान्नों में तेजी। शुक्ल पक्ष में गुरु उदित हो जायेगा फलतः विवाहादि मांगलिक कृत्यों के लिये मुहूर्त्त मिलने लगेंगे। यद्यपि कि वैशाख मास में गुरु [illegible] उत्तम है किन्तु मीन राशि का होने से राजनैतिक विद्रोह अथवा [illegible] के अवसर आ जायेगें। मनुष्यों में ज्वर-व्रण या इसी के समान कोई बीमारी फैलने के भी योग मिल रहे हैं। शनि अस्त, गुरु उदय, मंगल वक्री का फल प्राकृतिक उपद्रव के रूप में सामने आयेगा। आँधी-तूफान, वर्षा वण्डर के योग हैं।

प्रथम ज्येष्ठमास–इस वर्ष ज्येष्ठ में मलमास लगा है। शुद्ध ज्येष्ठ [illegible] अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में कुल पाँच शनिवार एवं पाँच रविवार पड़ रहे हैं [illegible] अमावस्या शनिवार को पड़ रही है फलतः यह महीना अशान्तिकारक रहेगा। [illegible] अस्थिरता तथा विग्रह-विरोध का वातावरण बनने से देश के सम्मुख [illegible] उपस्थित हो जायेगी। शनिवार की अमावस्या एवं संक्रान्ति तथा [illegible] प्राकृतिक दुर्घटनाओं का कारक बनेगा। भूकम्प, अग्निकाण्ड, [illegible] एवं जातीय संघर्ष से धन-जन की भीषण क्षति हो सकती है। [illegible] सत्ता में उलट-फेर, छत्र-भंग के योग भी बन सकते हैं। नई-नई [illegible] एवं शासन दोनों परेशान रहेंगे। चित्रा नक्षत्र का मंगल, गेहूँ, चावल [illegible] ताँबा, पीतल में तेजी का रुख लायेगा। मेष राशिगत शनि का [illegible] करेगा। कुल मिलाकर यह महीना देश तथा जनता के दोनों के [illegible] भीषण गर्मी से जनता बेहाल रहेगी।

द्वितीय ज्येष्ठमास–इस मास में विगत दिनों की परेशानियाँ [illegible] जिससे कुछ राहत मिलेगी। मास के पाँच सोमवार सामान्यतया शुभ [illegible] रविवार की अमावस्या एवं मंगलावर की मिथुन संक्रान्ति मँहगी कारक [illegible] जैसे फल-दूध, सब्जी का भाव आसमान छूने लगेगा। उमस भरी [illegible] त्रस्त रहेगी। मानसून पूर्व धूलभरी आँधी के साथ वर्षा होने के योग [illegible] शुक्ल पक्ष में चन्द्रदर्शन भी मँहगी की सूचना दे रहा है। आर्द्रा नक्षत्र [illegible] मंगलवार को आ रहा है इसके फल में मानसून की वर्षा समयानुकूल [illegible] रहे हैं। इस मास में कर्क राशिगत शुक्र शेयर बाजार में तेजी का हल्का [illegible] कृष्ण पक्ष में रुई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, [illegible], मूँग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी तथा चलोत्पन्न पदार्थ नारियल व सभी फलों में [illegible]। शुक्ल पक्ष में रुई, सूत कपास, खली, अलसी, एरंड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, [illegible] चाँदी में तेजी तथा सोना के भाव में घटा-बढ़ी चलेगी।

आषाढ़मास–इस मास में पाँच मंगलवार एवं पाँच बुधवार शुभ [illegible] फलकारक है। अग्निकाण्ड एवं विस्फोट की घटकार धन-जन को क्षति पहुँचा [illegible]। कृष्ण पक्ष में बादल तो उमड़-घुमड़ कर खूब आयेंगे किन्तु उसके अनु[illegible] वर्षा नहीं हो पायेगी। देश के कुछ भागों में सूखे जैसी स्थिति भी रहेगी। शासन [illegible] में आपसी सामञ्जस्य का अभाव दिखेगा। सामाजिक सौहार्द बिगड़ने तथा लड़ाई [illegible] उत्पात के योग बन रहे हैं। कृष्ण पक्ष में रुई, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड कपास [illegible], एरंड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द [illegible], नमक, सज्जी, हरड़ (हरीतिकी) सुपारी, नारियल, काजू, केसर, मजीठ, [illegible], गुग्गुल [illegible] तथा किराना में तेजी। तुला राशि का मंगल खाद्यान्नों में तेजी [illegible] सूत, कपास, सूती वस्त्र में विशेष तेजी कारक है। शुक्लपक्ष की [illegible] वाला चन्द्रग्रहण देश के पूर्वोत्तर भाग में अनिष्टकारी [illegible] की कमी हो जायेगी तथा मंत्रियों के परिजनों, डाक्टरों, इंजीनियरों एवं [illegible] के लिये यह ग्रहण विपरीत फलकारक है।

श्रावण मास–श्रावणमास में पाँच गुरुवार पड़ना [illegible] कारक माना जाता है। बाढ़, वर्षा से दुर्भिक्ष की स्थिति भी पैदा हो सकती है। कहीं अतिवृष्टि और कहीं वर्षा का अभाव हो, ऐसे योग बन रहे हैं। भीषण बाढ़ से देश के पूर्वोत्तर भागों में धन-जन की व्यापक क्षति के योग बन रहे हैं। [illegible] दिनों के अन्तराल में चन्द्रग्रहण के बाद श्रावण अमावस्या को ग्रस्तास्त सूर्य ग्रहण लग रहा है जो देश की सत्ता के तथा [illegible] के लिये अशुभफलकारक है। इसका परिणाम दैवी-प्राकृतिक प्रकोप के रूप में सामने आ सकता है। शुक्र का [illegible] में श्रावण अमावस्या के एक दिन पूर्व अस्त होना भी अनिष्टकारी होगा। घी, तेल, गुड़, खाण्ड शक्कर, गेहूँ, जौ, चना इत्यादि खाद्यान्न में तेजी का दौरा आयेगा। [illegible] में पहले तेजी होकर बाद में मन्दी टिकेगी। चाँदी में घटा-बढ़ी चलकर तेजी ठहरेगी। खाद्यान्नों में [illegible] तेजी एक मास तक बनी रहेगी। सोना, ताँबा, पीतल, जस्ता, हींग, पारा, [illegible] में तेजी का रुख रहेगा। शुक्ल पक्ष में गुरु भी [illegible] जा रहा है फलतः बाढ़-वर्षा [illegible] का क्रम जारी रहेगा। शासन-सत्ता पक्ष तथा जनता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। शुक्ल पक्ष में [illegible] से सूर्योदय व्यापक [illegible] एवं वृष्टि के योग उपस्थित कर रहा है।

भाद्रपद मास–यह महीना [illegible] राहत प्रदान करेगा। विगत मास की कठिनाइयाँ [illegible] कम होती जायेंगी। शासन-सत्ता की सूझ-बूझ बढ़ेगी तथा उनके द्वारा लिये गये निर्णयों से जनता को लाभ होगा। महिलाओं के प्रति आदर-भाव [illegible] कार्यक्रम बनाये जायेंगे। किसी महिला को कोई [illegible] सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। [illegible] शनि वक्री होता है तो उत्पात अवश्य करता है, इस मास में तीन ग्रह गुरु-शुक्र-शनि एक साथ वक्री गति से गतिमान हैं [illegible] भागों में प्रलयंकारी स्थिति पैदा हो सकती है। [illegible] के योग भी बन रहे हैं। भारत के दक्षिणी भाग जैसे [illegible] विदेश में जापान, इग्लैंड, डेनमार्क, जर्मनी पोलेण्ड [illegible] पड़ेगा। जीरा, सोना, गुड़ खाण्ड, सरसों [illegible] वस्त्र-सूती, वस्त्र में तेजी तथा चाँदी में घटा [illegible] कपास, रेशम, सूत, सोना-चाँदी, लोहा, इमारती [illegible] सरसों एरंड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूँज, [illegible] अनुराधा नक्षत्र का मंगल, कपास, गेहूँ, लाल मिर्च लाल चन्दन, [illegible] वस्तुओं में तेजी कारक है।

आश्विन मास–इस मास में पाँच रविवार अग्निभय, विस्फोट तोड़फोड़, राजनैतिक उथल-पुथल के योग पैदा कर रहे हैं। शनिवार की अमावस्या मँहगी कारक है। आश्विन शुक्ल तृतीया एवं नवमी को मंगलवार का योग अग्निकाण्ड एंव विस्फोट, तोड़फोड़ से क्षति के योग पैदा कर रहा है। सूती वस्त्र तथा कपास के व्यवसायी यदि इन दिनों माल संग्रह करें तो आगे चैत्र मास तक अच्छे लाभ की स्थिति बन सकती है। सबके बावजूद आगहनी एवं धान की फसल बहुत अच्छी उतरने की सम्भावना है। कृषक वर्ग में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। कृष्ण पक्ष में हल्की छिटपुट वायुवेग के साथ वर्षा होने के भी योग है। धनु राशि का मंगल रुई, कपास, सूती वस्त्र में घटाबढ़ी कर तेजी लायेगा। चाँदी, धातुऐं, लकड़ी, सूत सन, घास, बिनौला, सरसो, घी में तेजी। चौपायों के भाव भी तेज रहेंगे। हस्त नक्षत्र का सूर्य अमावस्या के आसपास, गेहूँ, जौ, ज्वार, खाण्ड, गुड़, कपास लकड़ी नमक, हरें, हींग, धनियाँ, हल्दी तथा क्षार में तेजी। शुक्ल पक्ष में सोना, चाँदी मोती, आदि रत्न, गुड़ खाण्ड अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल सन, केशर कपूर, लाल कपड़ा में तेजी के योग बनेगें।

कार्तिक मास–यह मास कई दृष्टियों से उत्तम प्रतीत हो रहा है। मास के पाँच सोमवार चावल-चीनी का भंडार भरने की पूर्व सूचना दे रहे हैं। पाँच मंगलवार राजनैतिक अस्थिरता, अग्निभय, तोड़फोड़ हिंसा करायेंगे। फल-दूध, सब्जी की प्रचुर उत्पत्ति से जनता में सुख-सन्तोष का वातावरण। देश की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शुक्ल पक्ष में वृश्चिक राशि की सूर्य संक्रान्ति मंगलवार को लग रही

है फलतः खाद्यान्नों, रस पदार्थ तथा कषैले पदार्थ के व्यापारी तीसरे मास में अच्छे लाभ की सम्भावना बन सकती है। पूवा... वर्षा होने के योग पैदा कर रहा है। इस मास में जौ, चावल, गेहूँ रुई सूत, सरसों, तिल, एरंड अफीम में तेजी का दौरा आयेगा... वक्री होकर शेयर बाजार में तेजी का रुख पैदा कर देगा।

मार्गशीर्ष मास–सर्वत्र सुभिक्ष, सुविधा एवं सन्तोष का वातावरण। चावल चीनी, फल, दूध सब्जी आदि दैनिक उपयोग की वस्तुओं की प्रचुर उपलब्धता से जनता प्रसन्नता का अनुभव करेगी। चावल चीनी का भंडार बढ़ेगा। सबके बावजूद शेयर बाजार में विगत मास की तेजी का रुख मन्दा पड़ने लगेगा। व्यापार जगत का बहुप्रतीक्षित श्रवण नक्षत्र का मंगल कृष्ण पक्ष की एकादशी से हो रहा है इस समय देश के उद्योग धन्धे में वृद्धि होगी। इस समय का संग्रह किया हुआ माल आगे अच्छा लाभ देता है। गेहूँ के भाव में अच्छी तेजी तथा जौ, चना, तिल अफीम, धातु, सोना चाँदी में साधारण तेजी का रुख रहेगा। अलसी, सरसों, एरंड हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़ खाण्ड में भी तेजी का ही रुख रहेगा। मास के पाँच बुधवार सुभिक्षकारक है।

पौष मास–बूँदा-बांदी, बादल-वर्षा तुषारपात हिमपात के साथ यह महीना प्रारम्भ होगा ऐसे संकेत मिल रहे हैं। भीषण ठंडक से बचने के लिये समुचित प्रबन्ध शासन के स्तर से तथा व्यक्तिगत स्तर से अपेक्षित है। इस मास में पाँच गुरुवार तथा पाँच शुक्रवार उत्तम फलकारक है। बुद्धिजीवियों एवं महिलायों के लिये यह मास उत्तम फलकारक है। चौपायों एवं वाहन जैसे मोटर, कार, इत्यादि के मूल्यों में वृद्धि के अवसर आयेंगे। कृष्ण पक्ष में तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़ खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन, चाँदी में तेजी का रुख चलेगा। शुक्ल पक्ष में मूंग, चावल, गेहूँ, गुड़ खाण्ड, लाल शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, सरसो मूंग, पटसन में तेजी की अवधारणा रहेगी। ठिठुरन भरी सर्दी से जनता बेहाल रहेगी। ओला-पाला से खेती को स्वल्प क्षति पहुँचेगी।

माघ मास–इस मास में पाँच शनिवार दुर्भिक्ष, भय, आतंक, असुरक्षा का वातावरण किन्तु कृष्ण प्रतिपदा शनिवार का योग कठिन परिस्थितियों में भी शासन पक्ष अपने प्रयास में सफल होगे और जनता के कल्याणार्थ समुचित कदम उठायेंगे। भीषण सर्दी, पाला, कुहरा, हिमपात होने से खड़ी फसल एवं सब्जीयों को क्षति पहुँचेगी। पड़ोसी देश के साथ सम्बन्धों में तनाव पैदा होगा तथा आतंकवादी घटनाओं से क्षति पहुँचने के योग बन रहे हैं। कृष्ण पक्ष में गेहूँ, जौ, चावल, सूती वस्त्र, सन, चाँदी गुड़ खाण्ड, अलसी सुपारी, लौंग, पीपलामूल, में तेजी का रुख रहेगा। शुक्ल पक्ष में सोना चाँदी, मोती, माणीक्य आदि रत्न एवं जवाहरात, खाद्यान्नों में मसूर, गेहूँ अलसी तथा रुई कपास में तेजी चलेगी। अमावस्या के मंगल आसन्न मीन राशि का होकर सोना, रुई, तृण, लकड़ी से निर्मित वस्तुयें तेज करेगा। चौपायों एवं दुधारु पशुओं में भी तेजी की धारणा चलेगी। इस मास में राजनैतिक समीकरण में बिखराव की स्थिति भी पैदा हो सकती है।

फाल्गुन मास–ऐसा प्रतीत होगा कि ठंडक जाकर पुनः वापस आ गई हो। पहाड़ी क्षेत्र में भीषण हिमपात से ठंक का सिलसिला जारी रहेगा। सबके बावजूद चैती की फसल अच्छी उतरने के पूर्व संकेत मिल रहे है। इस मास में पाँच रविवार एवं पाँच सोमवार मिश्रित फलकारक है। दिन में तेज धूप एवं रात में ठंडक के योग। बूंदा-बांदी के भी योग बन रहे है। मासारम्भ में ही शेयर बाजार में तेजी का एक झटका आयेगा। मासारम्भ में सोना, चाँदी, सूत, सन, सूती वस्त्र, तिल, तेल, एरंड, सरसो, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ हल्दी गेहूँ, गुड़ का भाव तेज चलेगा। अमावस्या के आसन्न रेशम, सोना चाँदी, गेहूँ चना, उड़द ज्वर, बाजरा, घी, सरसों तिल, तेल, गुड़ खाण्ड, गुग्गुल, पीपलामूल, रुई तेज चलेंगे। शुक्ल पक्ष में चावल, गुड़ खाण्ड शक्कर गेहूँ खाद्य तेल में तेजी की धारणा रहेगी। मासान्त में ओला पत्थर पड़ने तथा पानी बरसने से खड़ी फसल को क्षति पहुँचने के योग भी बन रहे हैं।

चैत्र कृष्ण पक्ष–वर्ष का यह अन्तिम पखवारा सामान्यतया शुभ फलदायक रहेगा। चैती की फसल की उत्तम सम्भावनाओं सेजनता एवं शासक वर्ग में सुख सन्तोष का वातावरण किन्तु ऐसा प्रतित हो रहा है कि यह संवत् अपने अन्तिम दिनों में कुछ उत्पात कर के ही समाप्त होगा। पक्ष के तीन मंगलवार, राजनैतिक अस्थिरता एवं तोड़फोड़ की सम्भावना। ४ अप्रैल को संवत् २०५६ की समाप्ति हो जायेगी।

ग्रहण विवरण संवत् २०५६, शाके १९२१

संवत् २०५६ शाके १९२१ (१९९९-२०...) में कुल चार ग्रहण लगेंगे जिसमें दो सूर्य ग्रहण है और दो चन्द्र ग्रहण हैं।

१. चन्द्र ग्रहण-आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा बुधवार दिनांक २८ जुलाई १९९९ ई. को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण लगेगा। ग्रहण का स्पर्श भारत में कही भी दिखाई नहीं देगा। इस चन्द्र ग्रहण का स्पर्श एशिया के पूर्वोत्तर किनारे के साथ जापान आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, हवाई, उत्तरी अमेरिका, (पूर्वोत्तर भाग को छोड़कर) पश्चिमी दक्षिण अमेरिका, मध्य अमेरिका, अंटार्कटिका के अधिकांश भाग, हिन्दमहासागर के दक्षिण पूर्वी भाग, और प्रशान्त महासागर में देखा जा सकेगा। ग्रहण का मोक्ष भारत के सुदुर पूर्वोत्तर भागों जैसे-अगरतला, ऐजावल, गुवाहटी, कोहिमा, ईटानगर शिलांग, पोर्ट ब्लेयर एवं उसके निकटस्थ स्थानो पर दिखाई देगा। इसके अलावा ग्रहण का अन्त या मोक्ष सुदूर पूर्वी एशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, हवाई, सूदर पश्चिमी उत्तर अमेरिका, अंटार्कटिका, पूर्वी हिन्दमहासागर, उत्तरी प्रशान्त महासागर एवं दक्षिणी प्रशान्त महासागर (पूर्वी भाग को छोड़कर) में दिखाई देगा। भारतीय मानक समयानुसार **ग्रहण का स्पर्श या आरम्भ घं.१५ मि.५२ पर तथा अन्त या मोक्ष घं.१८ मि.१५.५** पर होगा। ग्रहण का ग्रासमान ०.४०२ रहेगा। यह चन्द्रग्रहण उत्तराषाढ़ा-श्रवण नक्षत्र एवं मकर राशि पर लगेगा।

२. खग्रास सूर्यग्रहण-श्रावण कृष्ण ३० बुधवार तदनुसार दिनांक ११ अगस्त १९९९ ई. को खग्रास सूर्य ग्रहण लगेगा। यह ग्रहण श्लेषा नक्षत्र एवं कर्क राशि पर लगेगा। इस ग्रहण को संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तर-पूर्वी भाग, कनाडा के पूर्वी भाग, उत्तरी अटलांटिक महासागर; यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, एशिया (हिन्द महासागर के पूर्वी भाग को छोड़कर) उत्तरी हिन्दमहासागर में देखा जायेगा। **पूरे भारत में यह ग्रहण दिखाई देगा। भारत में कुछ जगहों पर यह ग्रहण खग्रास (पूर्ण ग्रहण) के रूप में दिखाई देगा तथा शेष भारत में यह ग्रहण खण्डग्रास के रूप में (अंशतः) दिखाई देगा।** ग्रहण का अन्त या मोक्ष भारत में बहुत से जगहों पर नहीं देखा जा सकेगा क्योंकि ग्रहण लगे हुए ही सूर्यास्त हो जायेगा। भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ घं.१३ मि.५६.२ पर होगा तथा अन्त या मोक्ष घं.१९ मि.१०.१ पर होगा।

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१ श्रावण कृष्ण ३० बुधे (दि.११.८.९९ई.) श्लेषानक्षत्रे कर्क राशौ काश्यां सायं ग्रस्तास्त खण्डसूर्य ग्रहण विवरणम्-

सूर्य ग्रहण	काश्यां सूर्योदयात् इष्ट				भा.स्टे.टा.	
काश्यां	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.
स्पर्श	२८	२४	४	५२	१६	५८.४
मध्य	३१	२	५	५५	१७	५८
सूर्यास्त	३२	३१	६	३०	१८	३६.४
मोक्ष	-	-	-	-	१९	१०.१

शीर्षं

मोक्ष

स्पर्श

ग्रहण ग्रासमान=०.८५५ अश्लेषा नक्षत्रे कर्क राशौ खग्रास सूर्य ग्रहणम्

सम्पादन–श्रीमती कान्ति ओझा, एमस.सी. गणित

राशि ग्रहण फलम्

मेष	व्यथा
वृष	श्रीः
मिथुन	हानिः
कर्क	घातः
सिंह	क्षतिः
कन्या	लाभः
तुला	सुखम्
वृश्चिक	मान नाशं
धनु	आत्म-कष्टं
मकर	स्त्री-कष्टं
कुम्भ	सौख्यं
मीन	चिन्ता

ग्रहण का सूतक–सूर्यग्रहण का सूतक ग्रहण स्पर्श के १२ घंटे पूर्व से लग जाता है। सूतक प्रारम्भ हो जाने पर मंदिर में प्रवेश करना, मूर्ति को स्पर्श करना, भोजन करना इत्यादि कार्य वर्जित रहते हैं। बालक, वृद्ध एवं रोगी अत्यावश्यक में पथ्याहार ले सकते हैं। ग्रहण स्पर्श के समय स्नान, सूर्य ग्रहण में (कुरुक्षेत्र) का स्नान तदनन्तर श्राद्ध, दान, जप, मंत्र-सिद्धि करना चाहिए। मोक्ष के समय पुनः स्नान करना चाहिए।

वे स्थान जहाँ खग्रास ग्रहण स्पर्श से लेकर मोक्ष तक सम्पूर्ण रूप में दिखाई देगा।

स्थान	ग्रहण स्पर्श घं. मि. से.	खग्रासारम्भ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	खग्रास समाप्ति घं. मि.से.	ग्रहण समाप्ति घं. मि. से.	ग्रासमान
आणन्द	१६-५६-२९	१८-००-४८	१८-०१-१५	१८-१-४२	१८-५९-१७	१.०१८
वरोदा	१६-५६-५८	१८-१-३	१८-१-३५	१८-२-७	१८-५९-३०	१.०१८
भुज	१६-५३-०	१७-५९-१५	१७-५९-३७	१८-०-०	१८-५९-४	१.०१९
बोरसद	१६-५६-३२	१८-०-४८	१८-१-२१	१८-१-५३	१८-५९-२४	१.०१८
ढोल्का	१६-५५-५०	१८-०-२७	१८-०-५४	१८-१-२२	१८-५९-११	१.०१९
खम्भात	१६-५६-३२	१८-०-५७	१८-१-२१	१८-२-०	१८-५९-३७	१.०१८
खेड़ा	१६-५६-०	१८-०-४०	१८-०-५६	१८-१-११	१८-५९-६	१.०१८
मलिया	१६-५४-२४	१७-५९-३८	१८-०-९	१८-०-३९	१८-५८-५५	१.०१९
नाडियाड	१६-५६-१२	१८-०-४७	१८-१-०३	१८-१-१८	१८-५९-८	१.०१८
पाड्रा	१६-५६-५८	१८-१-५	१८-१-३८	१८-२-११	१८-५९-३५	१..०१८
पेटलैंड	१६-५६-२६	१८-०-४५	१८-१-१७	१८-१-४९	१८-५९-२३	१.०१८
सुरेन्द्रनगर	१६-५५-१८	१८-०-१४	१८-०-४७	१८-१-२१	१८-५९-२२	१.०१९

वे स्थान जहाँ खण्डग्रासारम्भ सम्पूर्णग्रासारम्भ, सम्पूर्णग्रास समाप्ति तो दिखाई देगी किन्तु मोक्ष या ग्रहण का अन्त नहीं दिखाई देगा क्योंकि ग्रहण लगे ही सुर्यास्त हो जायेगा।

स्थान	ग्रहण स्पर्श घं. मि. से.	खग्रासारम्भ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	खग्रास समाप्ति घं. मि.से.	सुर्यास्त घं. मि. से.	ग्रासमान
अकोला	१७-१-२६	१८-३-२४	१८-३-५२	१८-४-२१	१८-५४-२	१.०१७
भुसावल	१७-०-१९	१८-३-१	१८-३-२६	१८-३-५१	१८-५९-६	१.०१७
जगदलपुर	१७-५-३३	१८-४-५१	१८-५-२५	१८-५-५१	१८-३२-०	१.०१५
जलगांव	१७-०-११	१८-२-५६	१८-३-२२	१८-३-४७	१९-०-१	१.०१७
कलिंगप.	१७-७-२	१८-५-३०	१८-५-५२	१८-६-१५	१८-२२-७	१.०१५
कोरापुट	१७-६-५	१०-५-१३	१८-५-३७	१८-६-२	१८-२९-१	१.०१५
मुल	१७-३-२९	१८-४-११	१८-४-३३	१८-४-५५	१८-४२-६	१.०१६
पलकोंडा	१७-६-३८	१८-५-१५	१८-५-४०	१८-६-४	१८-२४-५	१.०१५
राजुरा	१७-३-४७	१८-४-३४	१८-४-५६	१-५-१७	१८-४३-४	१.०१६
श्रीकाकुल	१७-७-३	१८-५-४३	१८-५-५८	१८-६-१३	१८-२३-५	१.०१५
यवतमाल	१७-२-२२	१८-३-४५	१८-४-११	१८-४-४३	१८-४९-३	१.०१७

वे स्थान जहाँ ग्रहण का आरम्भ एवं अस्त अन्त दोनों दिखाई देगा किन्तु खण्ड ग्रहण के रूप में। खग्रास नहीं दिखाई देगा।

स्थान	ग्रासमान	ग्रहणारम्भ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	ग्रहणकी समाप्ति घं. मि. से.
अहमदाबाद	०.९९६	१६-५५-३०	१८-०-३०	१८-५८-५०
अमृतसर	०.७८७	१६-४५-३०	१७-४८-५०	१८-४६-६
देहरादून	०.७८७	१६-४९-३०	१७-५१-१२	१८-४७-१२
दिल्ली	०.८२९	१६-५१-६	१७-५३-३०	१८-५०-०
हरिद्वार	०.७९४	१६-५०-६	१७-५१-५०	१८-४७-४८
जयपुर	०.८७९	१६-५२-२४	१७-५५-४८	१८-५२-५४
जोधपुर	०.९१७	१६-५१-१२	१७-५६-१२	१८-५४-३०
मुम्बई	०.९२७	१७-१-३०	१८-५-४२	१९-३-६
पुणे	०.२९६	१७-२-५४	१८-६-१८	१९-३-१८
शिमला	०.७७८	१६-४७-५४	१७-५०-०	१८-४६-१८
श्रीनगर	०.७३८	१६-४२-१२	१७-४५-०	१८-४२-०
उदयपुर (S.O)	०.९५०	१६-५४-६	१७-५८-४२	१८-५६-३०
उज्जैन	०.९६३	१६-५७-२४	१८-०-४२	१८-५७-४८

प्रमुख स्थान जहाँ से खण्डग्रास ग्रहण का आरम्भ तो दिखाई देगा किन्तु ग्रहण का अन्त/मोक्ष नहीं दिखाई देगा क्योंकि ग्रहण लगे ही सूर्यास्त हो जायेगा।

स्थान	ग्रासमान	ग्रहणारम्भ घं. मि. से.	मध्य घं. मि. से.	सूर्यास्त घं. मि. से.
अगरतला	०.८३१	१७-२-१८	१७-५८-१२	१८-१-१८
इलाहाबाद	०.८६१	१६-५७-४२	१७-५७-५४	१८-४१-१२
बैंगलोर	०.८१६	१७-१२-२४	१८-१२-१८	१८-४२-३०
भोपाल	०.९४७	१६-५८-१२	१८-०-४२	१८-५६-०
भुवनेश्वर	०.९५१	१७-५-१२	१८-३-३०	१८-१८-२४
कलकत्ता	०.८८०	१७-३-६	१८-०-२४	१८-११-१२
चेन्नई	०.८४०	१७-१२-५४	१८-११-४८	१८-३२-६
गुवाहटी	०.७७५	१७-०-०	१७-५५-२४	१८-२-३६
नागपुर	०.९८३	१७-१-४८	१८-३-१८	१८-४६-३६
पटना	०.८३३	१६-५८-५४	१७-५७-२४	१८-२८-१८
तिरुपति	०.८४८	१७-११-५४	१८-११-२४	१८-३६-२४
वाराणसी	०.८५५	१६-५८-२४	१७-५८-०	१८-३६-२४

३. खग्रास चन्द्रग्रहण–पौष शुक्ल पूर्णिमा, शुक्रवार तदनुसार २१ जनवरी २००० ई. को यह चन्द्रग्रहण खग्रास लगेगा। इस ग्रहण को भारत के किसी भी हिस्से से नहीं देखा जायेगा क्योंकि भारत वर्ष में इस समय दिन का समय रहेगा। ग्रहण का आरम्भ भा. मा. स. घं.८ मि.३१.४ पर तथा समाप्ति घं.११ मि.५५.४ पर होगी।

४. खण्डग्रास सूर्य ग्रहण—माघ कृष्ण अमावस्या शनिवार तदनुसार ५ फरवरी २००० ई. को खण्डग्रास सूर्य ग्रहण लगेगा। यह ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा। ग्रहण का आरम्भ भा. मा. स. से घं.१६ मि.२५.७ पर होगा तथा ग्रहण का अन्त घं.२० मि.१३.१ पर होगा।

आभार

ग्रहण, चन्द्रोदय-चन्द्रास्त, ग्रहों के उदयास्त के आकड़े भारत सरकार के खगोल विज्ञान केन्द्र पी-४५६ ब्लाक यन- न्यू अलीपुर कलकत्ता के सौजन्य से।

-प्रधान सम्पादक

विंशोपका–वर्षा ९, धान्यम् १५, तृणम् १७, शीतम् ९, उष्णम् ११, वायुः १३, वृद्धिः १५, विनाशः ११, विग्रहः ५, क्षुधा १३, तृष्णा १३, निद्रा ११, आलस्यम् ३, उद्यमः ९, शान्तिः ५, क्रोधः ११, दम्भः ३, भेदः ३, मैथुनम् १३, रसनिष्प ७, फलनिष्प ११, उत्साहः १, उग्र १३, सौम्य ९, पाप ११, पुण्यंस्व ७, व्याधिः १९, भेषज १७, उग्रता ३, आचारः १५, अनाचारः ५, मरणम् ९, जन्म १३, देशोपद्रव १९, देशस्वामिनी ११, चौर ७, चौरनाश ९, अग्नि ११, अग्नि ३, विग्रहः १३, [illegible] १५, स्वामित्वम् ७, निजधनम् ३, परधनम् ११, शलभा ५, शुकः ३, मूषकः १७, अतिवृष्टि ९, अनावृष्टि ३, स्वचक्रम् १५, परचक्रम् १७, नायकत्वम् १९, रत्नम् ९, वस्त्रम् ९, घृतम् १७, तैलम् १३, दुकूलम् १३, ऊर्णावस्त्र ७ सौक्ष्म १७

पञ्चांग देखने की रीति

गत ५६ वर्षों से यह पञ्चांग प्रकाशित हो रहा है। अतः प्राचीन प्रेमियों के निमित्त पञ्चांग देखने की विधि बताना तो पिष्टपेषण मात्र ही है। पुनरपि, नवीन उत्सुक एवं जागरुक बन्धुओं के हित हेतु संक्षिप्त निर्देशन देना आवश्यक है।

प्रत्येक विज्ञान में बड़ी पारिभाषिक शब्दावलियों के स्थान पर सुविधार्थ संक्षिप्त संकेत निर्धारित कर लिए जाते हैं। इस पंचांग में भी किंचित् निर्णीत चिह्न हैं। उनका सम्यक् ज्ञान प्रथम ही आवश्यक है। वे निम्नांकित हैं।

सांकेतिक चिन्ह	स्पष्टार्थ	सांकेतिक चिन्ह	स्पष्टार्थ
दि.मा.	दिनमान	फ.	फसली
		रा.	सायमान से राष्ट्रीय तारीख
ति.	तिथि	चं.रा.प्र.	चन्द्रसंचार, अर्थात उक्त घटी पल पर चन्द्रमाराशि बदलेगा
वा.	वार		
घ.प.	घटी पल	सू.उ.	सूर्य-उदय
घं.मि.	घण्टा-मिनट	सू.अ.	सूर्य-अस्त
दि.	दिन	र.क्रा.	रविक्रान्ति (प्रतिदिन सूर्यो. कालिक क्रान्ति)
रा.	रात		
न.	नक्षत्र	रे.अ.	रेलवे घटी अन्तर
यो.	योग	चं.अ.	चन्द्र-अस्त
क.	करण	चं.उ.	चन्द्र-उदय
अं.	अंग्रेजी तारीख	भ.	भद्रा
[illegible]	[illegible]		

उपरोक्त संकेतों को जान किसी पक्ष का आश्रय लेकर समझा जाय तो सरलता से समझ में आ सकता है।

उदाहरण–पौष शुक्ल पूर्णिमा (ति.१५) को लीजिये। इस तिथि को [illegible] लिखा [illegible] इसका अर्थ है कि सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन का मान [illegible] पल है। आगे तिथि वार में १५ बुधवार लिखा है इसका अर्थ है [illegible] को बुधवार है। आगे घ.प. ५२।४० लिखा है इसका अर्थ ति.१५ का मान ५२ घटी [illegible] ४० पल तक रहेगा। घण्टा मिनट का खाना घटी पल को घण्टा मिनट में परिवर्तित कर देता है। जैसे तिथि १५ का मान रात २ बजकर ५७ मिनट तक रहेगा। इस तिथि को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का मान १९ घटी ४२ पल है जो दिन १।४६ बजे तक रहेगा। योग वृद्धि नामक है। जिसका मान २१ घटी २६ पल तक रहेगा। करण विष्टि का मान २१ घटी २९ पल तक है। द्वितीय करण बव का मान ५२ घटी ४० पल है। प्रवर्धमान योग है। इसके आगे तारीख दी गयी है। अंग्रेजी तारीख ३१ मार्च है। आगे सूर्योदय तथा सूर्यास्त का समय क्रमशः ५ बजकर ५३ मिनट एवं ६ बजकर ७ मिनट पर दिया गया है। चन्द्र संचार के खाने में कन्या का चन्द्रमा दिन-रात है। सूर्योदय कालिक स्पष्ट सूर्य अर्थात् ११ राशि १६ अंश ० कला ३० विकला है क्रान्ति जैसे ३।५६ है। जिसका अर्थ है। ३ घटी ५६ पल उत्तरक्रान्ति है रेलवे अन्तर जैसे +२ लिखा है। इसका अर्थ है उस दिन २ मिनट सूर्य घड़ी में जोड़ने से रेलवे घड़ी के अनुसार समय होगा। चन्द्र अस्त होने का समय आगे ५।३४ दिया गया है। [illegible] अतिरिक्त दैनिक-सूर्योदय कालिक ग्रह दिये गये हैं। प्रत्येक दिन की ग्रहगति भी दी गयी है साथ ही दैनिक लग्न सारणी भी दिन रात संयुक्त लिखी गयी है साथ ही साथ ही प्रत्येक पक्ष में धर्म शास्त्र राशिफल तथा पक्षफल और मुहूर्त सरल नागरी में लिख दिया गया है।

काशी सूर्य घड़ी के समय (लोकल टाइम) में पंचांग में दिये हुए दैनिक अन्तर को संकेत के अनुसार धन-ऋण कर देने से काशी में रेलवे घड़ी के अनुसार समय हो जायेगा।

... इसी प्रकार अन्य देवों की भी पूजा करनी चाहिए।

मुहूर्त तालिका सवत् २०५६

विवाह मुहूर्त्ताः

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ९ शनौ (२४.४.९९) मघायाम् मृत्युवाण व्याप्तिः।
तिथि १० रवौ (२५.४.९९) मघायाम् मृ.बा. परम लग्नं गोधूलिः।
तिथि ११ सोमे (२६.४.९९) उत्तराफाल्गुन्याम् ल.८ वा.ल.११
तिथि १२ भौमे (२७.४.९९) उत्तराफाल्गुन्याम् दिवा. ल.२ वा ल.३ वा.५ वा ल. गोधूलि वा.ल.८ वा हस्तभे ल.११।
तिथि १३ बुधे (२८.४.९९)हस्तभे दिवा ल.२ वा ल.३ वा ल.५वा ल.गोधूलि वा ल.८
तिथि १४ गुरो (२९.४.९९) स्वात्याम् रात्रो भद्रा व्याप्तिः।
तिथि १५ शुक्रे (३०.४.९९) स्वात्याम दिवा ल.२ वा ल.३ वा ल.५ वा ल. गोधूलि वा ल.८ वा ल.९ वा ल.११

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ रवौ (२.५.९९) अनुराधायाम् दिवा लग्नम् २ वा लग्नम् गोधूलि वा लग्नम् ८ वा लग्नम् ११
तिथि ३ सोमे (३.५.९९) अनुराधायाम दिवा ल.२
तिथि ४ भौमे (४.५.९९) मूले मृ.बा.परं रात्रो ल.११
तिथि ५ बुधे (५.५.९९) मूले दिवा ल.३
तिथि ६ गुरो (६.५.९९)उत्तराषाढाभे ल.गोधूलि वा ल.८वा. ल.९ वा ल.११ वा ल.१२
तिथि ७ शुक्रे (७.५.९९) उ.षा. भे भद्रा व्याप्तिः सल्लग्नाभावः।
तिथि ११ भौमे (११.५.९९) उत्तराभाद्रपदायाम ल.गोधूलि वा रात्रो ल.८ वा ल.९ वा ल.११ वा ल.१२
तिथि १२ बुधे (१२.५.९९) उत्तराभाद्रपदायाम दिवा ल.३ वा ल.गोधूलि वा रेवत्याम् ल.८ वा ल.११।
तिथि १३ गुरो (१३.५.९९) रेवत्याम दिवा ल. मृ.बा.व्याप्तिः।

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.६.९९) मृगशिरायाम मृ.बा. व्याप्तिः।
तिथि ५ शुक्रे (१८.६.९९) मघायाम् ल.गोधूलि वा ल.११ पंचेष्टाभावः।
तिथि ६ शनौ (१९.६.९९) मघायाम् दिवा ल.३
तिथि ७ रवौ (२०.६.९९) उत्तराफाल्गुन्याम् दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः
तिथि ८ सोमे (२१.६.९९) उत्तराफाल्गुन्याम् हस्तभे लग्नम् गोधूलि वा रात्रो ल.११ वा ल.१२
तिथि ९ भौमे (२२.६.९९) हस्तभे दिवालग्नम् ३ वा ल.५
तिथि १० बुधे (२३.६.९९) स्वात्याम् ल.गोधूलि वा रात्रो ल.११ वा ल.१२ वा ल.२
तिथि ११ गुरो (२४.६.९९) स्वात्याम् दिवा ल.भद्रा व्याप्तिः।
तिथि १२ शुक्रे (२५.६.९९) अनुराधायाम् रात्रो ल.११ वा ल.१२ वा ल.२
तिथि १३ शनौ (२६.६.९९) अनुराधायाम् मृत्युबाण व्याप्तिः।
तिथि १४ रवौ (२७.६.९९) मूले रात्रो भद्रा व्याप्तिः।
तिथि १५ सोमे (२८.६.९९) भद्रापरान्त मूले ल.गोधूलि वा.ल.११ व ल.१२ वा ल.२

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (३०.६.९९) उत्तराषाढायाम दिवा ल.५ वा ल.८ वा ल.गोधूलि वा ल.११ वा ल.१२ वा ल.२
तिथि ७ सोमे (५.७.९९) उत्तराभाद्रपदायाम भद्रापरान्त दिवा ल.८ वा ल.गोधूलि परं मृ.बा.व्याप्तिः
तिथि ८ भौमे (६.७.९९) मृ.बा. परं रात्रो रेवत्याम् ल.११ वा ल.२
तिथि ११ शुक्रे(९.७.९९)रोहिण्याम पंचेष्टाभावः
तिथि १२ शनौ (१०.७.९९) रोहिण्याम् दिवा ल.५ वा ल.गोधूलि वा रात्रो ल.११ वा मृगभे ल.१२ वा ल.२।
तिथि १३ रवौ (११.७.९९) भद्रापूर्व मृगभे दिवा ल.५

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ गुरो (१५.७.९९) मघायाम मृ.बा. व्याप्तिः सल्लग्नाभावः।
तिथि ४ शुक्रे (१६.७.९९) मघायाम मृ.बा. व्यतिपात भद्रा च व्याप्तिः सल्लग्नाभावः।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (१९.११.९९) उत्तराभाद्रपदायाम भद्रापरान्त रात्रो ल.३ वा रेवत्याम् ल.
तिथि १२ शनौ (२०.११.९९) रेवत्याम् दिवा ल.११ वा ल.गोधूलि वा ल.३
तिथि १५ भौमे (२३.११.९९) रोहिण्याम् रात्रो ल.३ वा ल.५ वा ल.६

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (२४.११.९९) रोहिण्याम् दिवा लग्नम् ८ वा ल.११ वा ल.१२ वा लग्नम् गोधूलि वा मृगभे ल.३ वा ल.५ वा ल.६
तिथि २ गुरो (२५.११.९९) मृगभे दिवा ल.८ वा ल.११।
तिथि ७ सोमे (२९.११.९९) मघायाम् ल.गोधूलि वा ल.३ वा ल.५
तिथि ८ भौमे (३०.११.९९) मघायाम् दि.ल.८
तिथि ९ बुधे (१.१२.९९) उत्तराफाल्गुन्याम् दिवा ल.११ वा ल.गोधूलि वा रात्रो ल.३ वा ल.५ वा ६ वा ल.८
तिथि १० गुरो (२.१२.९९) हस्ते भद्रापरान्त रात्रो ल.५ वा ल.६ वा ल.८।
तिथि ११ शुक्रे (३.१२.९९) हस्ते दिवा ल.९
तिथि १२ शनौ (४.१२.९९) स्वात्याम् ल. गोधूलि वा रात्रो ल.३ वा ल.५ वा ल.६
तिथि १४ सोमे (६.१२.९९) अनुराधायाम् मृत्युबाण व्याप्तिः

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि १ बुधे(८.१२.९९) मूले रात्रो ल.५ वा ल.६
तिथि २ गुरो (९.१२.९९) मूले दिवा ल.११ वा ल.गोधूलि वा रात्रो ल.३।
तिथि २ शुक्रे (१०.१२.९९) उत्तराषाढायाम् रात्रो ल.६ वा ल.७ वा ल.८
तिथि ३ शनौ (११.१२.९९) उत्तराषाढायाम् दिवा ल.१२ वा ल.गोधूलि वा रात्रो ल.३।
तिथि ८ गुरो (१६.१२.९९) उत्तराभाद्रपदायाम् व्यतिपातः संक्रान्ति जन्यदोषः।

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि ११ सोमे (१७.१.२०००) रोहिण्याम् रात्रो ल.५ वा ल.६ वा ल.८
तिथि १२ भौमे (१८.१.२०००) मृगभे ल.गोधूलि वा रात्रो ल.५ वा ल.६ वा ल.८

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि १ शनौ (२२.१.२०००) मघायाम् रात्रो ल.८ वा ल.९
तिथि २ रवौ (२३.१.२०००) मघायाम दिवा ल.१२ वा ल.गोधूलि
तिथि ४ सोमे (२४.१.२०००) उत्तराफाल्गुन्याम् मृ.बा. व्याप्तिः।
तिथि ५ भौमे (२५.१.२०००) मृ.बा.परं रात्रो उत्तराफाल्गुन्याम् ल.६ वा हस्तभे ल.८ वा.ल.९
तिथि ६ बुधे (२६.१.२०००) हस्ते दिवा लग्नं १२ वा लग्नं गोधूलिः वा लग्नं ६
तिथि ७ गुरो (२७.१.२०००) स्वात्यां रात्रो लग्नं ८ वा लग्नं ९
तिथि ८ शुक्रे (२८.१.२०००) स्वात्यां दिवा लग्नं १२ वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रो लग्नं ५ वा लग्नं ६ वा लग्नं ८
तिथि १० रवौ (३०.१.२०००) अनुराधायां दिवा लग्नं १२ वा लग्नं गोधूलिः
तिथि ११ भौमे (१.२.२०००) मूले लग्नं गोधूलिः वा रात्रो लग्नं ६ वा लग्नं ८वा लग्नं९
तिथि १२ बुधे (२.२.२०००) मूले दिवा लग्नं११
तिथि १३ गुरो(३.२.२०००)उत्तराषाढायाम् ल.९
तिथि १४ शुक्रे (४.२.२०००) उत्तराषाढायाम् सल्लग्नाभावः।

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ भौमे (८.२.२०००) उत्तराभाद्रपदायाम् रात्रो ल.८
तिथि ४ बुधे (९.२.२०००) उत्तराभाद्रपदायाम् भद्रापरान्त पंचेष्टाभावः रेवत्याम् ल.८
तिथि ५ गुरो (१०.२.२०००) रेवत्याम् दिवा ल.११ वा ल.गोधूलि
तिथि ८ रवौ (१३.२.२०००) रोहिण्याम् आवश्यके ल.६ वा ल.८
तिथि ९ सोमे (१४.२.२०००) रोहिण्याम् मृगभे च वैधृति मृ.बा. व्याप्तिः।
तिथि १० भौमे (१५.२.२०००) मृगभे मृ.बा. परम केतु वेधः
तिथि १५ शनौ (१९.२.२०००) मघायाम् दिवा ल.३ वा ल.गोधूलि वा रात्रो ल.८

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि १ रवौ(२०.२.२०००)मघायाम् दिवा ल.११
तिथि २ सोमे (२१.२.२०००) उत्तराफाल्गुन्याम् ल.गोधूलि वा रात्रो ल.६ वा ल.९।
तिथि ३ भौमे (२२.२.२०००) उत्तराफाल्गुन्याम् भद्रा व्याप्तिःभद्रापरं हस्तभे ल.८वा ल.९
तिथि ४ बुधे (२३.२.२०००) हस्ते दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः
तिथि ५ गुरो (२४.२.२०००) स्वात्याम् आ.ल. गोधूलि वा रात्रो ल.६वा ल.८वा ल.९
तिथि ६ शुक्रे (२५.२.२०००) स्वात्याम् दिवा लग्ने पंचेष्टाभावः
तिथि ७ शनौ (२.२०००) अनुराधायम् आ.ल.[illegible] वा रात्रो ल.६ वा ल.८ वा.९
तिथि ८ रवौ (२.२०००) अनुराधायम् दिवा लग्नं पंचेष्टाभावः
तिथि ९ सोमे (२.२०००) मूले लग्नम् गोधूलि वा ल.६ वा ल.८ वा ल.९।
तिथि १० भौमे (२.२०००) मूले दिवाल.११ परमं भद्रा व्याप्तिः
तिथि ११ बुधे (३.२०००) उत्तराषाढायाम् केतु युतिः व्यतिपातः।
तिथि १२ गुरो (३.२०००) उत्तराषाढायाम् केतुयुतिः आ.ल.गोधूलि वा ल.६ वा.८

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १ भौमे (७.३.२०००) उत्तराभाद्रपदायाम् दिवा ल.२ वा ल.गोधूलि वा ल.८ वा ल.९ वा ल.११
तिथि २ बुधे (८.३.२०००) रेवत्याम् दिवा ल.२ वा ल.गोधूलि वा रात्रो ल.८ वा ल.९ वा ल.११
तिथि ६ शनौ (११.३.२०००) रोहिण्याम् रात्रो ल.११
तिथि ७ रवौ (१२.३.२०००) रोहिण्याम् मृ.बा. व्याप्तिः सल्लग्नाभावः।
तिथि ८ सोमे (१३.३.२०००) भद्रापरं मृगभे आ. ल.गोधूलि

वैवाहिक वधू प्रवेश मुहूर्त्ताः

नोट-(विवाह से १६ दिन के अन्दर सम दिनों अथवा ५वें, ७वें, ९वें दिन में)

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ८ शुक्रे (२३.४.९९) पुष्ये ल.२ वा.६
तिथि १५ शुक्रे (३०.४.९९) स्वात्याम् ल.२

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (३.५.९९) अनुराधायाम् ल.२
तिथि ७ शुक्रे (७.५.९९) उत्तराषाढायाम् ल.२
तिथि १३ गुरो (१३.५.९९) रेवत्याम् ल.२वा३

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १ सोमे (१४.६.९९) मृगशिरायाम् ल.२वा.३
तिथि ८ सोमे (२१.६.९९) उत्तराफाल्गुन्याम् ल.३
तिथि ११ गुरो (२४.६.९९) स्वात्याम् ल.३ (भद्रा पूर्व)
तिथि १३ शनौ (२६.६.९९) अनुराधायाम् ल. गोधूलि
तिथि १५ सोमे (२८.६.९९) मूले ल.गोधूलि

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ गुरो (१.७.९९) उत्तराषाढायाम् श्रवणे च ल.३ वा ६
तिथि ७ सोमे (५.७.९९) उत्तराभाद्रपदायाम् ल.गोधूलि

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (१९.११.९९) उत्तराभाद्रपदायाम् भद्रापूर्व ल.८ वा भद्रापरान्त ल.३
तिथि १२ शनौ (२०.११.९९) रेवत्याम् ल.११ वा ल.गोधूलि

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि २।३ गुरो (२५.११.९९) मृगशिरायाम् ल.८ वा.ल.१२
तिथि १० गुरो (२-११.९९) उत्तराफाल्गुन्याम् भद्रापूर्व ल.८
तिथि ११ शुक्रे (३.१२.९९) हस्ते ल.८

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि २ गुरो (९.१२.९९) मूले ल.८
तिथि ३ शनौ (११.१२.९९) उत्तराषाढायाम् ल.गोधूलि (भद्रापूर्व)
तिथि ५ सोमे (१३.१२.९९) धनिष्ठायाम् ल. गोधूलि
तिथि ८ गुरो (१६.१२.९९) उत्तराभाद्रपदायाम् आ.ल.८

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १५ शुक्रे (२१.१.२०००) पुष्ये ल.१२ वा ल.गोधूलि

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ७ गुरो (२७.१.२०००) चित्रायाम भद्रापूर्व ल.१२ चन्द्रदान
तिथि ८ शुक्रे (२८.१.२०००) स्वात्याम ल.१२

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ गुरो (१०.२.२०००) रेवत्याम् ल.१२
तिथि ६ शुक्रे (११.२.२०००) अश्विन्याम ल.१२
तिथि ९ सोमे (१४.२.२०००) रोहिण्याम रिक्तोत्तरे ल.२
तिथि १३ गुरो (१७.२.२०००) पुष्ये ल.५

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२१.२.२०००) उत्तराफाल्गुन्याम ल.३
तिथि ५ गुरो (२४.२.२०००) चित्रायाम स्वात्याम च ल.३
तिथि ६ शुक्रे (२५.२.२०००) स्वात्याम ल.११

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि ८ सोमे (१३.३.२०००) मृगशिरायाम भद्रापूर्व ल.१

[illegible]गमन-वधू प्रवेश मुहूर्त्ताः

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरो (२२-४-९९) पुनर्भे लग्नं ६
तिथि ८ शुक्रे (२३-४-९९) पुष्ये लग्नं २ वा६
तिथि १३ बुधे (२८-४-९९) हस्त लग्नं २
तिथि १५ शुक्रे (३०-४-९९) स्वात्यां लग्नं २

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि २ रवौ (२-५-९९) अनुराधायां लग्नं २
तिथि ३ सोमे (३-५-९९) अनुराधायां लग्नं २
तिथि ५ बुधे (५-५-९९) मूले लग्नं २
तिथि ७ शुक्रे (७-५-९९) उत्तराषाढायाम् श्रवणे च भद्रापरान्त लग्न ६
तिथि १० सोमे (१०-५-९९) शतभिषायाम् लग्न २ (भद्रा पूर्व)
तिथि १२ बुधे(१२-५-९९)उत्तराभाद्रपदायाम् ल.३
तिथि १३ गुरो(१३-५-९९) रेवत्याम् ल.२ वा३

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (१९-११-९९) उत्तराभाद्रपदायाम् भद्रापूर्व ल.८ भद्रापरान्त ल.३

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १ बुधे (२४-११-९९) रोहिण्याम् ल.८
तिथि २।३ गुरो (२५-११-९९) मृगशिरायाम् ल.८ वा १२

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि २ गुरो (९-१२-९९) मूले ल.८
तिथि ५ सोमे (१३-१२-९९) धनिष्ठायाम् ल.[illegible]
तिथि ८ गुरो (१६-१२-९९) उत्तराभाद्रपदायाम् आ. ल.८

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ९ सोमे (१४-२-२०००) रिक्तोत्तरे रोहिण्याम् ल.२
तिथि १३ गुरो (१७-२-२०००) पुष्ये ल.[illegible]

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२१-२-२०००) उत्तराफाल्गुन्याम [illegible]
तिथि ५ गुरो (२४-२-२०००) चित्रा स्वात्याम् च ल.११ वा ल.३

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (८-३-२०००) उत्तराभाद्रपदायाम् रेवत्याम् च ल.३
तिथि ३ गुरो (९-३-२०००) रेवत्याम ल.[illegible]
तिथि ७ रवौ (१२-३-२०००) रोहिण्याम ल.[illegible] वा ल.३
तिथि ८ सोमे (१३-३-२०००) मृगशिरायाम भद्रापूर्व ल.१

चौल [illegible] मुहूर्त्ताः

[illegible]

तिथि ७ गुरो [illegible] पुनर्भे ल.६
तिथि १३ बुधे [illegible] हस्त भे ल.२

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि १० सोमे(१०-५-९९)शतभिषायाम् ल.२

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (१६-६-९९) पुनर्भे ल.५
तिथि १० बुधे (२३-६-९९) चित्रायाम् ल.५
तिथि ११गुरो(२४-६-९९)स्वात्याम् भद्रापूर्व ल.३

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ गुरो (१-७-९९)उत्तराषाढा श्रवणे च ल.५

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि १२ बुधे (२४-७-९९) पुष्ये लग्नं ५ बाद

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १५ शुक्रे (२१-१-२०००) पुष्ये ल.१२

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ सोमे (७-२-२०००) शतभिषा भे ल.१२
तिथि ५ गुरो (१०-२-२०००) रेवत्याम् ल.१२
तिथि ६ शुक्रे (११-२-२०००) अश्विन्याम् ल.१२
तिथि १३ गुरो (१७-२-२०००) पुनर्भे ल.२

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ गुरो (२४-२-२०००) चित्रा स्वात्याम् च ल.११ वा ३

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (८-३-२०००) रेवत्याम् ल.३
तिथि ३ गुरो (९-३-२०००) रेवत्याम् ल.[illegible]

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्ताः

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ११ सोमे (२६-४-९९) पूर्वाफाल्गुन्याम् भद्रापूर्व ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ५ बुधे (५-५-९९) मूले ल.२

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (१८-६-९९) [illegible] ल.४
तिथि १० बुधे (२३-६-९९) चित्रायाम् ल.४

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (३०-६-९९) पू.षा. भे ल.५
तिथि ३ गुरो (१-७-९९) उ.षा. श्रवणे ल.५

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (१४-७-९९) श्लेषायाम् ल.५ बाद

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ सोमे (७-२-२०००) शतभिषायाम् ल.१२ चन्द्रदान

तिथि ९ सोमे (१४-२-२०००) रोहिण्याम्
तिथि १२ बुधे (१६-२-२०००) आर्द्रायाम् ल.११ वा २

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२१-२-२०००) पूर्वाफाल्गुन्याम् उत्तराफाल्गुन्यां च ल.११ वा लग्नं ३
तिथि ५ गुरो (२४-२-२०००) चित्रायां स्वात्याम् च ल.११ वा ३

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (८-३-२०००) रेवत्यां लग्नं ३
तिथि ३ गुरो (९-३-२०००) रेवत्यां-अश्विन्याम् च ल.११ वा ३

कर्णवेध मुहूर्त्ताः

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरो (२२-४-९९) पुनर्भे ल.५
तिथि ८ शुक्रे (२३-४-९९) पुष्ये ल.५
तिथि १३ बुधे (२८-४-९९) हस्त भे ल.२

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (३-५-९९) अनुराधायाम् ल.२
तिथि १३ गुरो (१३-५-९९) रेवत्याम् ल.३

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे (१६-६-९९) पुनर्भे ल.५
तिथि १० बुधे (२३-६-९९) चित्रायाम् ल.५

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ गुरो (१-७-९९) उत्तराषाढायाम् श्रवणे च ल.५

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि १२ बुधे (२४-७-९९) पुष्य भे ल.५ बाद
तिथि ७ सोमे (१९-७-९९) हस्ते भे ल.६
तिथि १० शुक्रे (२३-७-९९) अनुराधायाम ल.६

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ५ सोमे (१३-१२-९९) धनिष्ठायाम् ल.१२

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ६ बुधे (२६-१-२०००) हस्त भे ल.१

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ गुरो (१०-२-२०००) रेवत्याम् ल.१२
तिथि ६ शुक्रे (११-२-२०००) अश्विन्याम् ल.१२

गृहारम्भ मुहूर्त्ताः

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ८ शुक्रे (२३-४-९९) पुष्ये च शु.लग्नं३
तिथि १३ बुधे (२८-४-९९) हस्ते भे च.शु. (भृ.सु.) लग्नं ३
तिथि १५ शुक्रे (३०-४-९९) स्वा० च.शु.ल.४

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (३-५-९९) अनुराधायां लग्नं २

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (३०-७-९९) धनिष्ठायां च.शु. लग्नं ८

तिथि ३ शनौ (३१-७-९९) शतभिषायां भद्रापरं ल.९

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि १५ गुरौ (२६-८-९९) धनिष्ठायां भद्रापरं ल.११ च.शु.

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

तिथि १ शुक्रे (२७-८-९९) शतभिषायां ल.११ चक्रशुद्धि।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि १२ शनौ (२०-११-९९) मृगशिरायां ल.८ वा १२ च.शु.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ८ गुरौ (१६-१२-९९) उत्तराभाद्रपदायाम् च. शुद्धि

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १३ बुधे (१९-१-२०००) मृगशिरायाम् च. शुद्धि ल.१०

तिथि १५ शुक्रे (२१-१-२०००) पुष्ये ल.१२ च.शु.

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ९ सोमे (१४-२-२०००) रिक्तोत्तरे रोहिण्याम् ल.४ च. शुद्धि (भृ.सु.)

तिथि १२ बुधे (१६-२-२०००) पुनर्भे ल.४ च.शुद्धि

तिथि १३ गुरौ (१७-२-२०००) पुनर्भे पुष्ये ल.५ च.शुद्धि

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२१-२-२०००) उत्तराफाल्गुन्याम् ल.३ च.शुद्धिः।

तिथि ५ गुरौ (२४-२-२०००) चित्रायाम् स्वात्याम् ल.११ च.शुद्धिः।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (८-३-२०००) उत्तराभाद्रपदे रेवत्याम् नाऽत्र च.शु.।

नूतन गृहप्रवेश मुहुर्त्ताः।

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरौ (२२-४-९९) पुनर्भे ल.६ च.शुद्धिः

तिथि १३ बुधे (२८-४-९९) हस्तभे ल.४ च.शुद्धिः।

तिथि १५ शुक्रे (३०-४-९९) स्वात्याम् ल.४ नाऽत्र च.शुद्धिः।

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १० बुधे (२[illegible]) [illegible] ल.५ च.शुद्धिः

तिथि ११ गुरौ (२४-६-९९) [illegible] भद्रापूर्व ल.३

तिथि १३ शनौ (२६-६-९९) अनुराधायाम् ल.८

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १३ बुधे (१९-१-२०००) मृगशिरायां ल.१० च.शु.

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ७ गुरौ (२७-१-२०००) चित्रायां लग्नं १२ चक्र शुद्धि।

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ६ शुक्रे (११-२-२०००) अश्विन्यां लग्नं १२ च.शु.

तिथि १३ गुरौ (१७-२-२०००) पुष्ये लग्नं ५ च.शु.

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि ५ गुरौ (२४-२-२०००) चित्रायां लग्नं ११ च.शु.

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (८-३-२०००) उत्तराभाद्रपदे रेवत्यां च नाऽत्र च शु.।

तिथि ३ गुरौ (९-३-२०००) रेवत्यां अश्विन्यां नाऽत्र च.शु.।

जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्तः

नोट—नूतन गृहप्रवेश के सभी मुहूर्त्त जीर्णादि गृहप्रवेश के लिये विहित हैं। इसके अतिरिक्त केवल जीर्ण गृह प्रवेश (पुराना खरीदा हुआ मरम्मत कराया हुआ तथा अन्य) के लिये श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष मास में मुहूर्त्त दिये जा रहे हैं।

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (३०-७-९९) धनिष्ठायाम् नाऽत्र च.शुद्धिः।

तिथि ३ शनौ (३१-७-९९) शतभिषायाम् नाऽत्र च.शुद्धिः।

तिथि १० शुक्रे (६-८-९९) रोहिण्याम् भद्रापू.ल.८

तिथि ११ शनौ (७-८-९९) मृगभे ल.८

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि ५ सोमे (१६-८-९९) चित्रायाम् ल.८

तिथि १५ गुरौ (२६-८-९९) धनिष्ठायाम् भद्रापरम् नाऽत्र चक्रशुद्धिः।

कार्तिक शुक्ल पक्ष र्ययेनः

तिथि ११ शुक्रे (१९-११-९९) भद्रापूर्वं उत्तराभाद्रपदायाम् ल.८वा भद्रोपरान्ते ल.३

तिथि १२ शनौ (२०-११-९९) रेवत्याम् ल.८

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १० गुरौ (२-१२-९९) भद्रापूर्व उत्तराफाल्गुन्याम् ल.८

तिथि ११ शुक्रे (३-१२-९९) हस्ते ल.८

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ८ गुरौ (१६-१२-९९) उत्तराभाद्रपदायाम् संक्रान्तिजन्य दोषः आ. ल.८

सर्व देवप्रतिष्ठा, जलाशयारामसुर प्रतिष्ठा

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरौ (२२-४-९९) पुनर्भे भद्रापूर्व ल.६

तिथि ८ शुक्रे (२३-४-९९) पुष्ये सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयाराम सुर प्रतिष्ठा ल.४

तिथि १३ बुधे (२८-४-९९) हस्त भे सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशयामसुर प्रतिष्ठा ल.२ वा ४

तिथि १५ शुक्रे (३०-४-९९) स्वात्याम् देवप्रतिष्ठा ल.६

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (३-५-९९) अनुराधायाम् भद्रापूर्व लग्नं ३

तिथि ७ शुक्रे (७-५-९९) उत्तराषाढायाम् सर्वदेव प्रतिष्ठा लग्नं चिन्त्यम्।

तिथि १२ बुधे (१२-५-९९) उत्तराभाद्रपदायां सर्वदेवप्रतिष्ठा लग्नं ३

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १ सोमे (१४-६-९९) मृगभे सर्वदेवप्रतिष्ठा

तिथि १० बुधे (२३-६-९९) चित्रायां सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा

तिथि ११ गुरौ (२४-६-९९) स्वात्यांभद्रापूर्व जलाशयाराममुरप्रतिष्ठा लग्नं ३

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (३०-६-९९) उत्तराषाढ़ायाम् सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा

तिथि ३ गुरौ (१-७-९९) उत्तराषाढायाम श्रवणे च भद्रापूर्व सर्वदेव प्रतिष्ठा, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि १।२ बुधे (१४-७-९९) पुष्ये सर्वदेवप्रतिष्ठा लग्नं ५

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १३ बुधे (१९-१-२०००) मृगशिरायां सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा लग्नं १

तिथि १५ शुक्रे (२१-१-२०००) पुष्ये जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा लग्नं १२

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि ७ गुरौ (२७-१-२०००) चित्रायां सर्वदेवप्रतिष्ठा लग्नं १

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि २ सोमे (७-२-२०००) शतभिषायां सर्वदेवप्रतिष्ठा लग्नं ११

तिथि ५ गुरौ (१०-२-२०००) रेवत्यां सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारामसुर प्रतिष्ठा लग्नं ११

तिथि ९ सोमे (१४-२-२०००) रिक्तोत्तरे रोहिण्यां सर्वदेवप्रतिष्ठाया जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा लग्नं ११

तिथि १२ बुधे (१६-२-२०००) पुनर्भे सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयारामसुर प्रतिष्ठा लग्नं गोधूलिः।

तिथि १३ गुरौ (१७-२-२०००) पुनर्भे, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा ल.११

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२१-२-२०००) उत्तराफाल्गुन्यां सर्वदेव प्रतिष्ठा लग्नं १

तिथि ५ गुरौ (२४-२-२०००) चित्रायां स्वात्यां सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा लग्नं ११

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि २ बुधे (८-३-२०००) उत्तराभाद्रपद रेवत्यां च सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा ल.१

चूल्हिका स्थापन मुहूर्त्ताः

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि १ गुरौ (१८-३-९९) उत्तराभाद्रपदायां चक्र शुद्धिः

तिथि १५ बुधे (३१-३-९९) उत्तराफाल्गुन्यां चक्रशुद्धिः

वैशाख शुक्ल

तिथि ८ शुक्रे २३-४-९९) पुष्ये च.शु.

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ७ शुक्रे (७-५-९९) भद्रोर्ध्वं श्रवणे च.शु.

तिथि १२ बुधे (१२-५-९९) उत्तराभाद्रपदायां च.शु.

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (३०-६-९९) उत्तराषाढायाम् च.शु.

तिथि ७ सोमे (५-७-९९) पूर्वाभाद्रपदायां च.शु.

आषाढ़ शुक्ल

तिथि १।२ बुधे (१४-७-९९) [illegible] च.शु.

श्रावण कृष्ण

तिथि ५ सोमे (२-८-९९) उत्तराषाढायां च.शु.

आश्विन शुक्ल

तिथि १२।१३ शुक्रे (२२-१०-९९) पूर्वाभाद्रपदायां च.शु.

कार्तिक कृष्ण प

तिथि ३ बुधे (२७-१०-९९) भरण्यां च.शु.

तिथि १२ गुरौ (४-११-९९) उत्तराफाल्गुन्यां च.शु.

कार्तिक शुक्ल प

तिथि १० गुरौ (१८-११-९९) पूर्वाभाद्रपदायां च.शु.

तिथि ११ शुक्रे (१९-११-९९) उत्तराभाद्रपदायां च.शु.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १० गुरौ (२-१२-९९) भद्रापूर्व उत्तराफाल्गुन्याम् च.शु.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ७ बुधे (१५-१२-९९) भद्रापूर्व शतभे पूर्वाभाद्रपदायां च च शुद्धिः।

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १५ शुक्रे (२१-१-२०००) पुष्ये च.शु.

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ९ सोमे (१४-२-२०००) रिक्तोत्तरे रोहिण्यां च.शु.

तिथि १३ गुरौ (१७-२-२०००) पुनर्भे-पुष्ये च.शु.

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि २ सोमे (२१-२-२०००) उत्तराफाल्गुन्यां

तिथि १२ गुरौ (२-३-२०००) उत्तराषाढायाम् च.शु.

इष्टिका निर्माण दहनञ्च मुहूर्त्ताः

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि १ गुरौ (१८-३-९९) उत्तराभाद्रपदायाम् निर्माणम्

तिथि ३ शनौ (२०-३-९९) अश्विन्याम् निर्माणम्

तिथि ४ रवौ (२१-३-९९) भरण्यां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ११ शनौ (२७-३-९९) पुष्ये निर्माणं

तिथि १४ भौमे (३०-३-९९) पूर्वाफाल्गुन्याम् दहनं चक्रशुद्धिः

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि १ गुरौ (१-४-९९) हस्त भे निर्माणं

तिथि ३ रवौ (४-४-९९) विशाखायाम् दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ९ शनौ (१०-४-९९) उ.षा. श्रवणे च निर्माणं

तिथि १० रवौ (११-४-९९) श्रवणे निर्माणं

तिथि १४ गुरौ (१५-४-९९) उत्तराभाद्रपदायाम् रिक्तोत्तर निर्माणं

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि १।२ शनौ (१७-४-९९) भरण्यां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ३ रवौ (१८-४-९९) कृत्तिकायां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि १० रवौ (२५-४-९९) मघायां दहनं चक्रशुद्धिः

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि १ शनौ (१-५-९९) विशाखायाम् दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ७ शनौ (८-५-९९) श्रवणे निर्माणं

तिथि ११ भौमे (११-५-९९) पूर्वाभाद्रपदायाम् दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि १३ गुरौ (१३-५-९९) रेवत्याम् निर्माणं

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि १ रवौ (१६-५-९९) कृत्तिकायां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ५।६ गुरौ (२०-५-९९) पुष्ये निर्माणं

तिथि ८ शनौ (२२-५-९९) दहन चक्रशुद्धिः

तिथि १४ शनौ (२९-५-९९) विशाखायां दहनं चक्रशुद्धिः

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ११ गुरौ (१०-६-९९) अश्विन्याम् निर्माणं

तिथि १३।१४ शनौ (१२-६-९९) कृत्तिकायाम् दहनं चक्रशुद्धिः

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ६ शनौ (१९-६-९९) मघायाम् दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ७ रवौ (२०-६-९९) पूर्वाफाल्गुन्याम् दहनं चक्रशुद्धिः

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि १ भौमे (२९-६-९९) पूर्वाषाढायाम् दहनं चक्रशुद्धिः

आश्विन कृष्ण पक्ष

तिथि ५।६ गुरौ (३०-९-९९) रोहिण्याम् निर्माणं

आश्विन शुक्ल पक्ष

तिथि ३ भौमे (१२-१०-९९) विशाखायाम दहनं चक्रशुद्धिः

कार्तिक कृष्ण पक्ष

तिथि २ भौमे (२६-१०-९९) भरण्याम् दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ७ रवौ (३१-१०-९९) पुष्ये निर्माणं

तिथि ९ भौमे (२-११-९९) मघायाम दहन चक्रशुद्धिः

तिथि १२ गुरौ (४-११-९९) उत्तराफाल्गुन्याम् निर्माणं

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि १० गुरौ (२-१२-९९) उत्तराफा. निर्माणं

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ३ शनौ (११-१२-९९) उ.षा. निर्माणं

तिथि ४ रवौ (१२-१२-९९) श्रवणे रिक्तोत्तरे निर्माणं

तिथि ८ गुरौ (१६-१२-९९) पूर्वाभाद्रपदायां, उत्तराभाद्रपदायां च निर्माणं

तिथि १० शनौ (१८-१२-९९) रेवत्याम् अश्विन्यां च निर्माणं

तिथि ११ रवौ (१९-१२-९९) भरण्याम् दहनं चक्र शुद्धि

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि ३ शनौ (२५-१२-९९) पुष्ये निर्माणं

तिथि ६ भौमे (२८-१२-९९) पूर्वाफाल्गुन्याम दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ११ रवौ (२-१-२०००) विशाखायां दहनं चक्रशुद्धिः

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि २ शनौ (८-१-२०००) उत्तराषाढायाम् निर्माणं

तिथि ३ रवौ (९-१-२०००) श्रवणे निर्माणं

तिथि ७ गुरौ (१३-१-२०००) उत्तराभाद्रपदायां निर्माणं

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ भौमे (८-२-२०००) पूर्वाभाद्रपदायां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ५ गुरौ (१०-२-२०००) रेवत्यां निर्माणं

तिथि ७ शनौ (१२-२-२०००) भरण्यां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ८ रवौ (१३-२-२०००) कृत्तिकायां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि १३ गुरौ (१७-२-२०००) पुनर्भे पुष्ये निर्माणं

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

तिथि १ रवौ (२०-२-२०००) मघायां पूर्वाफाल्गुन्यां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि १२ गुरौ (२-३-२०००) उत्तराषा. निर्माणं

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १ भौमे (७-३-२०००) पूर्वाभाद्रपदायां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि ३ गुरौ (९-३-२०००) रेवत्यां निर्माणं

तिथि ७ रवौ (१२-३-२०००) रोहिण्यां निर्माणं

तिथि ११ गुरौ (१६-३-२०००) पुष्ये निर्माणं

तिथि १३ शनौ (१८-३-२०००) मघायां दहनं चक्रशुद्धिः

तिथि १४ रवौ (१९-३-२०००) पूर्वाफाल्गुन्यां दहनं चक्रशुद्धिः

चैत्र कृष्ण पक्ष

तिथि ८ भौमे (२८-३-२०००) पूर्वाषाढायाम् दहनं।

भूमिक्रय मुहूर्त्ताः (बैनामा कराने का)

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि २ शुक्रे (१९-३-९९) रेवत्याम्

तिथि १० शुक्रे (२६-३-९९) पुनर्वसौ

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि ७ गुरौ (८-४-९९) मूलभे

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ७ गुरौ (२२-४-९९) पुनर्वसु भे

ज्येष्ठ शुद्ध कृष्ण पक्ष

तिथि ६ गुरौ (६-५-९९) पूर्वाषाढायाम्

तिथि १३ गुरौ (१३-५-९९) रेवत्याम्

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ शुक्रे (१८-६-९९) ज्येष्ठायाम्

तिथि १२ शुक्रे (२५-६-९९) विशाखायां

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ गुरौ (१५-७-९९) [illegible]

तिथि ९ गुरौ (२२-७-९९) [illegible]

तिथि १० शुक्रे (२३-७-९९) अनुराधायाम्

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि [illegible] गुरौ (१२-८-९९) [illegible]

तिथि [illegible] शुक्रे (१३-८-९९) पूर्वाफाल्गुन्याम्

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

तिथि [illegible] शुक्रे (१०-९-९९) पूर्वाफाल्गुन्याम्

आश्विन कृष्ण पक्ष

[illegible]

[illegible] पूर्वाफाल्गुन्याम्

आश्विन शुक्ल पक्ष

[illegible]

[illegible]

आश्विन शुक्ल पक्ष

[illegible] पूर्वाभाद्रपदायां

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि [illegible] गुरौ (२५-११-९९) मृगशिरायाम्

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ३ गुरौ (९-१२-९९) मूले

तिथि [illegible] शुक्रे (१०-१२-९९) पूर्वाषाढायाम्

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि [illegible] शुक्रे (२४-१२-९९) पुनर्भे

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि १ शुक्रे (७-१-२०००) पूर्वाषाढायाम्

तिथि १४ गुरौ (२०-१-२०००) आर्द्रायाम्

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि १२ गुरौ (३-२-२०००) पूर्वाषाढायाम्

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ गुरौ (१०-२-२०००) रेवत्याम्

तिथि १३ गुरौ (१७-२-२०००) पुनर्भे

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

तिथि १२ गुरौ (१६-३-२०००) श्लेषायाम्

विपणि व्यापार मुहूर्त्ताः

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि १ गुरौ (१८-३-९९) उत्तराभाद्रपदायाम्

तिथि ७ बुधे (२४-३-९९) मृगभे

वैशाख कृष्ण पक्ष

तिथि २ शुक्रे (२-४-९९) स्वात्याम्

तिथि ६ बुधे (७-४-९९) मूले (भद्रपूर्व)

वैशाख शुक्ल पक्ष

तिथि ८ शुक्रे (२३-४-९९) पुष्ये

तिथि १३ बुधे (२८-४-९९) हस्ते

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

तिथि ३ सोमे (३-५-९९) अनुराधायां

तिथि ५ बुधे (५-५-९९) मूले

तिथि १२ बुधे (१२-५-९९) उत्तराभाद्रपदायाम्

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

तिथि ३ बुधे ([illegible]) पुनर्भे

तिथि ७ रवौ ([illegible]-६-९९) उ.फा.भे

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तिथि ६ सोमे (५-७-९९) उत्तराभाद्रपदायाम्

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ रवौ (१८-७-९९) उत्तराफाल्गुन्याम्

श्रावण कृष्ण पक्ष

तिथि ४ रवौ (१-८-९९) उत्तराभाद्रपदायाम्

तिथि १० शुक्रे (६-८-९९) रोहिण्याम्

श्रावण शुक्ल पक्ष

तिथि ३ शनौ (१४-८-९९) उत्तराफाल्गुन्याम्

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

तिथि ६ रवौ (२९-८-९९) उत्तराभाद्रपदायाम्

तिथि ८ शुक्रे (३-९-९९) रोहिण्याम्

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

तिथि २ शनौ (११-९-९९) हस्ते

आश्विन कृष्ण पक्ष

तिथि १ रवौ (२६-९-९९) उत्तराभाद्रपदायाम्

आश्विन शुक्ल पक्ष

तिथि २ सोमे (११-१०-९९) स्वात्याम्

कार्तिक कृष्ण पक्ष

तिथि १ सोमे (२५-१०-९९) अश्विन्याम्

कार्तिक शुक्ल पक्ष

तिथि ११ शुक्रे (१९-११-९९) उत्तराभाद्रपदायाम्

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तिथि २ बुधे (२४-११-९९) रोहिण्याम्

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

तिथि ८ गुरौ (१६-१२-९९) उत्तराभाद्रपदे

पौष कृष्ण पक्ष

तिथि ७ बुधे (२९-१२-९९) उ.फा.भे

पौष शुक्ल पक्ष

तिथि ६ बुधे (१२-१-२०००) उत्तराभाद्रपदे

माघ कृष्ण पक्ष

तिथि १० रवौ (३०-१-२०००) अनुराधायाम्

माघ शुक्ल पक्ष

तिथि ५ गुरौ (१०-२-२०००) रेवत्याम्

स्वास्थ्यरक्षा में नक्षत्रों एवं ऋतुओं का नियोग

प्रस्तुति-प्रो. जे. के. ओझा, का. हि. वि. वि. वाराणसी।

ऋतु-सूर्य संक्रान्तियाँ अंग्रेजी तारीख से-अयन-काल-बल-रसोत्पत्ति आहार-विहार-

वर्षा-कर्क-सिंह १६ जुलाई से १७ सितम्बर तक दक्षिणायन-विसर्ग काल (सौम्य) अल्प बल-अल्प स्निग्धता अम्ल रस-जल युक्त सृत-नदी का पानी-व्यायाम आतप (धूप) सेवन तथा मैथुन वर्जित। खाने पीने में शहद का प्रयोग करना चाहिए। पुराना-गेहूँ-जौ की रोटी चावल का भात-साठी का भात सेवन करें। निर्मल एवं शुष्क वस्त्र धारण करना चाहिए। जिस स्थान फर्श या दिवाल पर पानी का रिसाव हो ऐसे स्थान पर अधिक समय तक नहीं रहना चाहिए।

शरद्-कन्या- तुला १७ सितम्बर से १५-१६ नवम्बर तक-दक्षिणायन (सौम्य) विसर्ग काल-मध्यम बल-मध्य स्निग्धता लवण रस वृद्धि-इस ऋतु में मधुर लघु शीतल तथा तिक्त रस युक्त एवं अन्नपान करना चाहिए। पूरी भूखलगने पर मात्रानुसार भोजन करना चाहिए। कन्या राशि में सूर्य के आ जाने से सूर्य की किरणें प्रखर हो जाती है अतः उससे बचना चाहिए। प्रातः-सायं स्वच्छ एवं निरभ्र आकाश में टहलना चाहिए। धूप से बचें-दिन में सोयें नहीं और पुरवा हवा का त्याग करें। रात्रि के पूर्व याम में चाँदनी में सोना चाहिए।

हेमन्त-वृश्चिक-धनु १५-१६ नवम्बर से १४ जनवरी तक दक्षिणायान-विसर्ग काल (सौम्य) प्रकृष्ट या उत्तम बल-मधु रस वृद्धि जठराग्नि प्रबल रहती है इसलिये इस समय स्निग्ध जैसे घी-तेल-अम्ल-खट्टा-नीबू-आँवला-लवण-रस युक्त भोज्य पदार्थ-चर्बी युक्त भोजन दूध-घी-गुड़-खाँड़-नये चावल का भात इत्यादि गम्भीर प्रकृति के भोज्य पदार्थ को आसानी से पचाकर शरीर को बल प्रदान करते हैं। प्रमदा-स्त्री-पत्नी के साथ सोना तथा इच्छानुसार मैथुन भी लाभदायक है। तेलाभ्यंग-स्निग्ध-उबटन-शिरोभंग (सिर में तेल लगाना) आतप (धूप लेना) गर्म जल में स्नान करना तथा गर्म बिस्तर में एवं गर्म कमरे में सोना चाहिए।

शिशिर-मकर-कुम्भ १४ जनवरी १४ मार्च तक-उत्तरायण- आदान काल का आरम्भ (आग्नेय) मध्य बल रुक्षता रसोत्पत्ति-शिशिर-ऋतु में हेमन्तऋतु में विहित भोज्य पदार्थों का ही सेवन करना चाहिए। किन्तु कटु (चरपरे) तिक्त तथा कसैले-वातल अर्थात् वायु-प्रकोप को बढाने वाले शीतल या ठंडा भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए। गर्म कमरे में तथा गर्म विस्तर के साथ सोना चाहिए।

बसन्त- मीन-मेष १४ मार्च से १४-१५ मई तक-उत्तरायण- आदान काल (आग्नेय) मध्य बल-मध्य रुक्षता कषाय रसोत्पत्ति-हेमन्त काल का संचित कफ बसन्त काल की गर्मी को पाकर शरीर में फैल जाता है-इस समय-भारी भोजन जैसे चर्बी-स्निग्ध-अम्ल-मधुर- आहार से बचाना चाहिए। जौ-गेहूँ की रोटी इक्षु के रस से तैयार मदिरा का सेवन-बनों बाग-बगीचों में टहलना और अल्प मैथुन करना चाहिए। व्यायाम उबटन लगाना तथा गुनगुने पानी से स्नान करना चाहिए।

ग्रीष्म-वृष-मिथुन १४-१५ मई से १६ जुलाई तक उत्तरायण आदान काल (आग्नेय) अल्प बल-तीव्र रुक्षता कटुरसोत्पत्ति-आदाने दुर्बलो दहपक्ता भर्यात दुर्बलः। ग्रीष्म-ऋतु में सूर्य अपनी किरणों से जगत के स्निग्ध (सार-आप्य-जलीय) भाग को सोख लेता है अतएव इस समय सुस्वादु (मधु रस विशिष्ट) ठंडा पानी तथा स्निग्ध अन्नपान हितकर होता है। ठंडा-खाण्ड या चीनी के साथ सत्तू-घी-दूध-शालि चावल का भात इत्यादि का सेवन करना निरोग रखता है। अल्प मात्रा में हो मद्य अधिक मात्रा में जल के साथ अति आवश्यक होने पर ग्रहण करना चाहिए। इन दिनों लवण- अम्ल-कटु तथा गरम भोजन और व्यायाम का त्याग करना चाहिए। मैथुन से सर्वथा पृथक रहना चाहिए। जठराग्नि दुर्बल रहती है। दिन में शीतल गृह (ठंडा जगह अथवा कमरे में) और रात को चाँदनी में खुली हवा में मकान की छत पर शरीर पर चन्दन का लेप लगाकर सोना चाहिए।

इस प्रकार आयुर्वेद के अनुसार सूर्य संक्रान्तियों एवं ऋतुओं में मनुष्य को अपना आहार-विहार, खान-पान रखना चाहिए तथा संयम बरतना चाहिए। यदि ऐसा किया जाय तो बिना किसी औषधी-सेवा के अपने को स्वस्थ्य रखा जा सकता है।

पञ्चाङ्ग परिचय- भारतीय गणितानुसार प्रधानरूप से पाँच प्रकार की गणना होती है- सौर, चान्द्र, सायन, नाक्षत्र और बार्हस्पत्य। जितने समय में मेषादि बारहो राशियों में सूर्य भोग करे उसे सौर वर्ष, जितने दिन में मेषादि प्रत्येक राशि का भोग करे उसको सौर मास तथा जितने काल में प्रत्येक राशि का एक-एक अंश भोग करे उसे सौर दिन कहते हैं। जिस दिन में चन्द्रमा सूर्य एक राशि में हो वह अमावस्या तिथि कहलाती है। एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक के समय को चन्द्रमास कहते हैं। इसका तीसवाँ भाग चान्द्र दिन या एक तिथि कहलाता है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदयों के बीच को सायन दिन कहते हैं। नक्षत्र का अर्थ है नक्षत्र सम्बन्धी, यह समय नाक्षत्री ६० घडी के तुल्य है। एक वर्ष ३६५ दिन १५ घटी ३० पल २२।। विपल का होता है। तिथि, नक्षत्र, वार योग और करण नामक पाँच मुख्य विषयों का निश्चय जिससे किया जाता है उसे पञ्चाङ्ग पंजिका या तिथि पत्र कहते हैं सूर्योदय सब स्थानों में एक समय नहीं होता है। पूरब के स्थानों में पहले और पश्चिम के स्थानों में पीछे सूर्योदय होता है। इसलिये भिन्न-भिन्न स्थानों में भेद होना स्वाभाविक है। पर भिन्न-भिन्न देश में लौकिक कार्यों में भारी भ्रम होना स्वाभाविक है। इसलिए यह नियम बना दिया कि सब स्थान में वार की प्रवृत्ति उस समय से मानी जाय जिस समय उज्जैन में प्रातःकाल ६ बजता है।

दिनमान- सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को दिन मान और सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय को रात्रिमान कहते हैं। सूर्य की गति और दक्षिण के स्थानों के भेद के कारण इनके मानों में भिन्नता रहती है। जब सायन सूर्य मेष पर जाता है तब सब जगह रात्रि और दिन बराबर होते हैं। जब सायन सूर्य कर्क पर जाता है तो उत्तर अक्षांश में दिन सबसे बड़ा और रात सबसे छोटी होती है। जब सायन सूर्य तुला पर जाता है तब रात सबसे बड़ी और दिन सबसे छोटा होता है। किन्तु दक्षिण अक्षांश में इसका विपरीत होता है।

इस पत्रा में दिन मान सूर्योदय सूर्यास्त आदि सब सूर्य घड़ी के अनुसार दिये गये हैं। शुद्ध इष्टकाल के लिए रेलवे घड़ी और सूर्य घड़ी का अन्तर संस्कार आवश्यक है। प्रत्येक पक्ष में रेलवे घड़ी का दैनिक अन्तर दिया गया है। पंडितगण धन-ऋण देख लेवें। पञ्चांग में दिये हुए सूर्य घटी में धन-ऋण घटी में धन-ऋण संस्कार कर देंगे तो रेलवे घटी का स्टैण्डर्ड समय हो जायेगा।

तिथि- जिस समय सूर्य और चन्द्रमा एक सीध में होते हैं अर्थात् जिस समय दोनों के भोग्यांश समान होते हैं, उस समय अमावस्या का अन्त होता है। चन्द्रमा की गति तीव्र होती है, इसलिए अमावस्या के उपरान्त वह आगे हो जाता है। प्रत्येक १२ अंश आगे होने पर एक तिथि बढ़ती जाती है। जब चन्द्रमा सूर्य के १२×१५=१८० अंश आगे हो जाता है तब १५ वीं तिथि पूर्णिमा का अन्त होता है। १६वीं तिथि अथवा कृष्णपक्षकी प्रतिपदा लगती, जब फिर अमावस होती है तब ३० तिथियाँ बीत चुकती हैं। इसलिए अमावस की जगह ३० का अंक लिखा जाता है।

तिथिक्षय और तिथिवृद्धि- सूर्य चन्द्रमा की गतियाँ सदा समान नहीं रहती। कभी सूर्य मन्द या तीव्र होता है। उसी तरह चन्द्रमा भी कभी अधिक गति से कभी मन्द गति से चलता है। इसी कारण तिथियों का भी मान सदा समान नहीं होता। तिथि का मान अधिक से अधिक ६५ घटी के लगभग और कम से कम ५८ घटी के लगभग होता है। परन्तु एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय सर्वदा कल्पित ६० घटी ही होता है। इसलिए एक दिन में किसी समय तिथि बदल जाती है।

कभी-कभी दो तिथियाँ एक ही वार में होती है, और वार के समाप्त होने के पहले तीसरी तिथि लग जाती है। दशा में उस वार के सूर्योदय काल में जो तिथि विद्यमान रहती है वही जाती है। अगले वार तीसरी तिथि होती है दूसरी का मान पञ्चांग में पहली तिथि के नीचे दिया रहता है। परन्तु लौकिक व्यवहार में नहीं मानी जाती। ऐसे तिथि को क्षय तिथि वा अवम कहते हैं। प्रायः कभी-कभी एक ही तिथि दो सूर्योदय काल में विद्यमान रहती है। ऐसी दशा में वह तिथि दो बार मानी जाती है। इसी को तिथि वृद्धि कहते हैं। इन सब कारणों से कभी १६ दिन, कभी १५ दिन और कभी १४ दिन का पक्ष होता है। कई वर्षों के बाद १३ दिन का भी पक्ष हो जाता है जो जगत के लिये अनिष्टकर होता है। शुक्लपक्ष में इसका प्रभाव विशेष रूप से पाया गया है।

करण- आधी तिथि जितने समय में बीतती है उसको करण कहते हैं। यह कुल ११ हैं। इसके नाम ये हैं- बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुन, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न।

नक्षत्र- तारों के बीच पश्चिम से पूरब की ओर खिसकता हुआ जिस मार्ग से सूर्य साल भर में चक्कर लगाता हुआ दीख पड़ता है उसको क्रान्तिवृत्त कहते हैं इसके आस-पास चन्द्रमा भी अपना चक्कर लगाता है जो मध्यम मान से २९ दिन १९ घटी १८ पल और १२ विपल में पूरा होता है। इस मार्ग के २७ वें भाग को नक्षत्र कहते हैं। इसका मान १३ अंश २० कला का होता है।

गोल अयन- यदि आकाश गोल के दो भाग इस प्रकार किये जायें कि एक भाग के मध्य में आकाश का उत्तरी ध्रुव हो और दूसरे मार्ग के मध्य में दक्षिणी ध्रुव हो तो पहले को उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहते हैं। सायन मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या- ये छः राशियाँ उत्तर गोल में हैं। सायन तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन- ये छः राशियाँ दक्षिण गोल में हैं।

एक वर्ष में दो अयन होते हैं- उत्तरायण और दक्षिणायन। सायन मकर संक्रान्ति से उत्तरायण आरम्भ होता है और सायन मिथुन की समाप्ति तक रहता है। सायन कर्क संक्रान्ति से लेकर सायन धनु के अन्त तक दक्षिणायन सूर्य कहलाता है। उत्तरायण में दिन क्रम से बढ़ता है और दक्षिणायन में रात्रि क्रम से बढती है।

अहर्गण- किसी निश्चित काल से किसी अन्त काल तक जितने अहोरात्र होते हैं उस संख्या को अहर्गण कहते हैं। साधारण कलियुग के आदि से अहर्गण की संख्या गिनी जाती है। सूर्य सिद्धान्त में सृष्टयादि से अहर्गण गणना की विधि है। ग्रह लाघव की गणित शक १४४२ से चलती है। इसके अहर्गण के रूप की ११ वर्ष के पश्चात् पुनरावृत्ति होती है। तदनुसार सं. २०३२ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा को अहर्गण १८०८ हुआ।

योग- अश्विनी नक्षत्र के आदि बिन्दु से सूर्य और चन्द्रमा जितने अंशों की दूरी पर हों उसको एक जगह लिखकर जोड़ने और ४०/३ से भाग देने से लब्धि बीते हुए योग और आगे आनेवाला वर्तमान योग होता है। कुल २७ योग होते हैं- १. विष्कुम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान, ४. सौभाग्य, ५. शोभन, ६. अतिगंड, ७. सुकर्मा, ८. धृति, ९. शूल, १०. गण्ड, ११. वृद्धि, १२. ध्रुव, १३. व्याघात, १४. हर्षण, १५. वज्र, १६. सिद्धि, १७. व्यतीपात, १८. वरीयान्, १९. परिघ, २०. शिव, २१. सिद्धि, २२. साध्य, २३. शुभ, २४. शुक्ल, २५. ब्रह्म, २६. ऐन्द्र, २७. वैधृति। योग के भी मान समान नहीं होते और तिथि-नक्षत्रों की तरह इनमें भी क्षय-वृद्धि होती है।

अथारिष्टशा[illegible]महामृत्युञ्जयवैदिकमन्त्रजपविधिः।।

आचम्य, प्राणानायम्य, शान्तिपाठं पठित्वा सुमुख[illegible]दि गणेशस्मरणं च कृत्वा।। संकल्पः।। अमुक[illegible]तिथावमुकवासरे स्वस्य (यजमानस्य वा) शरीरात्पन्नोत्पत्स्यमानाऽखिलारिष्टनिवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादाद्दीर्घायुष्यप्राप्त्यर्थं [illegible]ञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।। ऋष्यादिन्यासः।। वामदेवकहोलवसिष्ठाऋषयः मूर्ध्नि।। पंक्तिगायत्री अनुष्टुपछन्दांसि वक्त्रे।। स[illegible]त्युञ्जय रुद्र देवतायै नमः हृदि।। ह्रीं शक्तये नमो लिंगे।। श्रींबीजाय नमः पादयोः।। इति ऋष्यादिन्यासः।। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।। भूर्भुवः स्वरों जूंसः ह्रौं ॐ।। ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोल वसिष्ठाऋषयः, पंक्ति गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रोदेवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।। ॐ ह्रां ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः।। ॐ ह्रीं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे, ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ ह्रूं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं, ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायै वौषट्।। ॐ ह्रैं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिवबन्धनात्, ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां ह्रीं कवचाय हुं।। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय, ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐ ह्रः ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मामृतात्, ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।। [illegible] षडङ्गन्यासः।।

त्र्यम्बकं शिरसि।। यजामहे भ्रुवोः।। सुगन्धिं नेत्रयोः।। पुष्टिवर्द्धनं मुखे।। उर्व्वारुकं गण्डयोः।। इव हृदये।। बन्धनात् जठरे।। मृत्योः लिङ्गे।। मुक्षीय उर्वोः।। मा जान्वोः।। अमृतात् पादयोः।। इति पदन्यासः।। मूलेनव्यापकं कृत्वाधारं कुर्यात्। अथ ध्यानम्। हस्ताम्भोजयुगस्थ[illegible] कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयंशिरः। सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौकरौ।। अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषार्द्रतनुं [illegible] सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।। चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजंसुरपतिंपीयूषपात्रंवहद्धस्ताब्जेनदधत्[illegible]। करतलं पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।२।। इति ध्यात्वा।। [illegible] समर्पयामि ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।। ॐ [illegible] नैवेद्यं समर्पयामि।। सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। मंत्रं जपेत्।। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः [illegible] मिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः ह्रौं ॐ।। ततोजपानन्तरं देवदक्षिणकरे [illegible] जपम्।। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः।।१।। मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम् [illegible] अर्पणम्- अनेन महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयः प्रीयतां न मम।। इति नि[illegible] यथाकामनाद्रव्येणतद्दशांशदुग्धाज्यसंसिक्तापामार्गसमिद्भिर्होमं तद्दशांशः मार्जनम्।। तद्दशां[illegible]

।।अथारिष्टशान्तये शताक्षरगायत्रीमन्त्रजप[illegible]

ॐ अस्य श्रीशताक्षरगायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्रमरीचिकश्यपवसिष्ठाऋषयो गायत्री [illegible] गायत्र्यक्षराणि बीजानि त्रिष्टुबक्षराणि शक्तयः अरिष्टशान्तये जपे विनियोगः। विश्वामित्रमरी[illegible] बनुष्टुप्छन्दोभ्यां नमः मुखे।। सवितृजातवेदस्त्र्यम्बकदेवेभ्यो नमः हृदये।। गायत्र्यक्षराणि बी[illegible]

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि हृदयाय नमः ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, शिरसे स्वाहा [illegible] शिखायैवौषट्। ॐ स नःपर्षदतिदुर्गाणिविश्वनावेवसिन्धुदुरितात्यग्निः कवचाय हुं। ॐ त्र्यम्ब[illegible] उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् अस्त्राय फट्।। अथ ध्यानम्। स्मर्तव्याखिल[illegible] यत्प्रपंचविहितं मुक्तिश्च यत्सिद्धयति।। यद्वा स्यात् प्रणवत्रिभेदगहनं धृत्वा च यद्गायते तद्वते[illegible] एवं ध्यात्वाशताक्षरां भावयेत्।। अथहोमार्थशताक्षरागायत्रीमन्त्रः।। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं [illegible] जातवेदसेसुनवामसोममरातीयतोनिदहातिवेदः।। ॐ स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेवसिन्धुं[illegible] ऊर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् स्वाहा।।

नवग्रहाणां जपार्थं वैदिकमन्त्राः।। सूर्यस्य।।

ॐ आकृष्णेन रजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।। हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो यातिभुवनानि पश्यन्।। चन्द्रस्य ॐ इमन्देवाऽअ[illegible] सुवध्वं महतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।। इममुष्यपुत्रममुष्यै [illegible] विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानांराजा।। भौमस्य।। ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः क[illegible] पृथिव्याऽअयम्।। अपांरेतांसिजिन्वति।। बुधस्य।। उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टा[illegible] सृजेथामयञ्च।। अस्मिन्सधस्थेअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत।। गुरोः [illegible] बृहस्पतेऽअतियदर्योऽ अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासुद्रविणंधेहि [illegible] शुक्रस्य।। ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रंपयः सोमं प्रजापतिः।। ऋतेनसत्य[illegible] विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।। शनेः।। ॐ शं नोदेवीरभिष्टयआपोभवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।। राहोः।। ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा।। कयाशचिष्ठया वृता।। केतोः।। ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे समुषद्भिरजायथाः।।इति।।

अथ [illegible]

द्रष्टविहीनदृश्यस्य ग्राह्यं राश्यंशतः फलम्। कलादिके गुणगुणं होराद्यं तेन संस्कृतम्। धनर्ण-रीत्या तत्पश्चात् फलग्राह्यंहिद्दृक्फलम्।

अथात्र [illegible]

ल.२	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिवा	र.	शु.	श.	गु.	गु.	सो.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	सो.
रात्रौ	बु.	सो.	बु.	मं.	र.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	सो.

अथ होराचक्रनिर्णयम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	१५
४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	४ सो.	५ र.	१५

अथ द्रेष्काण चक्रनिर्णयम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१०
[illegible] र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	२०
९ गु.	१० श.	११ श.	१२ गु.	१ मं.	२ शु.	३ बु.	४ सो.	५ र.	६ बु.	७ शु.	८ मं.	३०

अथ त्रिंशांशचक्रनिर्णयम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	अं. स्वा.
५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	अं. स्वा.
८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	८ गु.	अं. स्वा.
७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	७ बु.	५ श.	अं. स्वा.
५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	अं. स्वा.

ग्रहनक्षत्र	मूलत्रिकोणफल
सूर्य	सत्
बुध	सत्
शुक्र	सत्
शनि	असत्
चन्द्र	सत्
मंगल	असत्
गुरु	सत्
राहु	असत्
केतु	असत्

नगर | अं. क | नयन | २६।४ | ३१। | २।

॥ ... वरकन्ययोर्भस्य-मेलापकवि... उपयोगीदम् ॥

नक्षत्र	अश्वि.	भर.	कृत्ति	रोहि	मृग.	आर्द्रा	पुन	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
अक्षरः	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई. ऊ.ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की	कू.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.	मू.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रु.रे. रो.ता.	ती.तू. ते.तो.	ना.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.	ये.यो. भा.भी.	भू.धा. फा.ढा.	भे.भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी.	दू.थ. झ.ञ	दे.दो. चा.ची
राशिः	मेष	मेष	मे.१ वृ.३	वृष	वृ.२ मि.२	मिथुन	मि.३ क.१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं.१ क.३	कन्या	कं.२ तु.२	तुला	तु.३ वृ.१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	ध.१ म.३	मकर	म.२ कुं.२	कुम्भ	कुं.३ मी.१	मीन	मीन
वर्णाः	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वै.	वै.२ शु.२	शू.	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.	क्षत्रि.	क्षत्रि.	क्ष.१ वै.३	वैश्य	वै.२ शू.२	शूद्र	शू.३ ब्रा.१	ब्रा.	ब्रा.
वश्य.	चतु.	चतु.	चतु.	चतु.	चतु.२ न.२	नर	न.३ जल.१	जल.	जल.	वन.	वन.	व.१ न.३	नर	नर	नर	न.३ की.१	कीट	कीट	नर	न.।। व.३।।	चतु.	च.१।। ज.२।।	ज.२ न.२	नर	न.३ ज.१	जल.	जल.
योनिः	अश्व	गज	छाग.	सर्प.	सर्प	श्वान	मार्जार	छाग.	मार्जार	मूषक	मूषक	गो.	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग.	मृग.	श्वान	मर्कट	नकुल	मर्कट	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
वैरम्	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग.	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ.	श्वान	श्वान	मृग.	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशाः	मं.	मं.	मं.१ शु.३	शु.	शु.२ बु.२	बु.	बु.३ च.१	चं.	चं.	सूर्यः	सूर्यः	सू.१ बु.३	बुधः	बु.२ शु.२	शुक्रः	शु.३ मं.१	मं.	मं.	गुरु	गुरु	गुरु १ शनि ३	शनि	शनि	शनि	श.३ गु.१	गुरु	गुरु
गणः	देव	मनु.	राक्ष.	मनु.	देव	मनु.	देव	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु.	मनु.	देव	राक्ष.	देव	राक्ष.	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु	मनु	देव	राक्ष.	राक्ष.	मनु	मनु	देव
नाडी.	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

ग्रहाणां नैसर्गिकमैत्रीचक्रम्।

सूर्य	चन्द्रः	मंगल.	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
चं.मं. गुरु	सूर्यः बुधः	सू.चं. गुरु.	सूर्यः शुक्रः	सूर्यः चं.मं.	बुधः शनिः	बुधः शुक्रः	मित्राणि
बुधः	मं.गु. शु.श.	शुक्र शनिः	मं.गु. शनि.	शनिः	मंगल. गुरु	गुरु	समाः
शुक्रः शनिः	०	बुधः	चन्द्रः	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्रः	सूर्यः चं.मं.	शत्रवः

नक्षत्रयुजिभचक्रम्।

रे.अ.भ.कृ. रो. मृ.	आ. पुन. पु. श्ले. म. पूफा. उफा. ह. चि. स्वा. वि. अनु.	ज्ये. मू. पूषा. उषा. श्र. ध. श. पूभा उ. भा.
पूर्वभाग ६	मध्यभाग १२	परभाग ९
पतिः श्रेष्ठ	द्वयोः सुप्रीतिः	कन्या श्रेष्ठा

१ वर्णगुणज्ञानाय चक्रम्। वरः

कन्या — वर्णाः	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुण। वरः

कन्या — वश्यः	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्प	२	१	१	०	१
मानव	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	०	१	०	२

६ गणगुणाः वरः

कन्या — गणाः	देव	मनुष्य	रा.
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

३ तारागुण। वरः

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुण। वरः

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्रः	५	५	४	१	४	।।	।।
मंगल	५	४	५	।।	५	३	।।
बुध	४	१	।।	५	।।	५	४
गुरु	५	४	५	।।	५	।।	३
शुक्रः	०	।।	३	५	।।	५	५
शनि	०	।।	।।	४	३	५	५

(कन्या)

अथोद्वाहलग्ने रेखा प्रदग्रहाः।

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।

सू. श. रा. के. ३।११।६।८ मं. ३।६।११ चं. २।३।११ बु. वृ. १।२।३।४।५।६।९।१०।११ शु. १।२।४।५।९।१०।११ उक्तस्थानस्थग्रहांकान् संयोज्यविवाहलग्ने ग्रहबलविशाज्ञेया। लग्नेशनवलवेशी १।४।७।१०।११। स्थानेषुकेषसमूहं नाशयतचं।।

४ योनिगुण। वरः

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	३	३	१	१	०	४	३	३	२	३	२	१	२
गौ	३	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	२	१	२	२	४

(कन्या)

७ राशिकूटस्य गुणबोधकचक्रम्। वरः

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिं.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कं.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुं.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

अथाष्टौ वर्गास्तद्दोषाश्च

वर्गाः	७अ.	५क.	५च.	५ट.	५त	५प.	४य	४श.
स्वामिनः	गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वैधव्यदोषपरिहारः- लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वामदनाधिपश्च। द्यूनस्थितो हन्त्यपत्यदोषं वैधव्यदोषंच विषाङ्ग-नाख्यम्।। केन्द्रकोणे शुभाढ्यश्चेन्त्रिषडायेऽप्य सद्ग्रहाः। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपेतथा।।

८ नाड़ीकूटस्य गुणचक्रम्। वरस्य

नाड़ी	आ	म	अं.
आदि		८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

(कन्या)

अथ गुणानामैक्येन ग्राह्याग्राह्यविचारः-

गुणैः षोड़षभिनिन्द्यंमध्यमं विंशतिस्तथा- श्रेष्ठंत्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम्।। सद्भकूटे- इतिज्ञेयंदुष्टकूटे नुचान्यथा। निन्द्यंगुणैर विंशतिभिर्मध्यं वाणाधिकैः स्मृतम्। ऊर्ध्वंच पंचविंशत्या श्रेष्ठं श्रेष्ठतरं ततः।।

मेलापक विचारः-

कन्या के लिए वर निश्चित करते समय उसके कुल, शरीर, विद्या, अवस्था, धन गुण और निरोगिता पर अवश्य विचार कर लेना चाहिये। जो वर अन्धा, गूंगा, क्रियाहीन, रोगयुक्त, नपुंसक, दूरस्थ, पतित, कुष्ठरोग पीड़ित, दरिद्री, दीर्घ रोगी या अन्यासक्त हो उसे कदापि कन्या न देवें। अति निकटस्थ, दूरस्थ, अति सम्पन्न या अति दरिद्र बलहीन और मूर्ख को कन्या नहीं देनी चाहिए।

किसी देश में नवविध किसी में दशविध और कहीं कहीं अट्ठारह विध से मेलापक का विधान है। परन्तु नर्मदा के उत्तर के देशों में प्रायः बंगाल से पंजाब तथा गुजरात तक आठ ही प्रकार का मेलापक प्रसिद्ध और शास्त्र सम्मत है।।

अथैव ज्ञातगुणायां निश्चयमुहूर्तमाह।।

पुण्याहे च विवाहर्क्षे चित्रास्वग्निविष्णुभे। लब्ध्वा चन्द्रबलं दद्यात् निश्चयं सत्यया गिरा।।१।। शुभे लग्नेऽग्निसान्निध्ये स्नाता पुण्यामरोगिणीम्। तत्कालोपस्थिते कन्यां पिता तुभ्यं प्रयच्छति।।२।। यदि त्वं पतितो न स्यात्सर्वदोषविवर्जितः। तुभ्यं कन्यां प्रदास्यामि द्विजदेवाग्निसंनिधौ।।३।। तुभ्यं कन्यार्थिने वाचा कन्यादानं प्रयच्छति। तन्निश्चयात मद्दत्तं गृह्यतां साक्षतं फलमिति।।४।।

विवाहेरविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम्।

रविः	चन्द्रः	गुरुः	ग्रहाः
३।६ १०।११	३।६।७ १०।११	२।५।७ ९।११	शुभ स्थानानि
१।२ ५।७।९	१।२ ५।९	१।३ १०।६	पूज्य स्थानानि
४।८ १२	४।८ १२	४ ८।१२	निन्दित स्थानानि

द्विपदादिभानांबोधकचक्रम्।

मानव द्विपद	चतुष्पद	जलचर	कीट
मि कं. तुला	मेष वृष सिंह	कर्क कुम्भ मीन	वृश्चिक
धनु पूर्वार्द्ध	ध.उत्तरा म.पूर्वार्द्ध	मकर उत्तरार्द्ध	

अथ सामान्यविवाहकृत्यम्।

विवाहकृत्यं सकलं विवाह भैर्विलोकेयेत्रैव बलेन्दुतः। नवत्रिपञ्चेऽह्नि विवाहपूर्वतो न वर्णको मण्डपतैलमङ्गलम्। अथ प्रथमं कन्याया तैलं पश्चात्तैलं [illegible]। इदं रात्रेः प्रथमयामे इति।

गणनायां नुदूरविचारः।

भामिनीजन्मनक्षत्राद् द्वितीयं पतिजन्मभम्। न [illegible] भर्तृनाशाय इत्युक्तं रुद्रयामले। परिहारः- भिन्नर्क्षराश्यैककं भिन्नांघ्र्यैकभमेतयोर्गणखगौ नाडी नृदूरं न। अन्यद्विशेषः- वश्याभावे तथाऽन्योऽन्यं ताराशुद्धौ परस्परम्। न चेत्षष्ठाष्टमो दोष स्तदापष्ठाष्टमः [illegible] यदा राशी राशीशो वर्ण उत्तमः। तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिं नैव चिन्तयेत्। नृदूरोदक्षिणदेशे [illegible] मध्यदेशे।

कन्यायाः वैधव्यादि [illegible] विचारः

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजेः। कन्या[illegible] भर्ता पत्नीविनाशकृत्। इदं लग्न चन्द्र[illegible] वरकन्ययोः जन्मकुण्डल्यां विचार्यम्। एवं यदि कन्याकुण्डल्यां लग्नाद्वा चन्द्रात् (१।४।७।८।१२) स्थानेषु कश्चित् पापग्रहो भावेशत्वेन स्थितस्तदाप्यनिष्टकरः। [illegible] अथ तेषां वरकुण्डल्यां *(१।४।७।८।१२) स्थानानामन्यतमे स्थाने [illegible] विवाहः शोभनः। उक्तं च- जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुके [illegible] कन्यायास्सप्तमभावनाथशुक्रादि शुभग्रहाणां शुभस्थानस्थित[illegible] एकं द्वयोः ग्रहसाम्येऽथवा वरस्य ग्रहाधिक्यं मेलापको: [illegible]

शशांक पञ्चाङ्ग शुचौ सौम्ये चैव विवाहभे राज्ञो [illegible] मण्डपोद्वासनं। युग्मे घस्रे षष्ठ हीने च पञ्च सप्ताहे कार्यं [illegible]

जातकोक्तसूत्रात् कन्याः वैधव्यविषाख्यादियोग[illegible] विधवा।।१।। भौमे राहौ सप्तमेऽष्टमे व्यये वा विधवा[illegible] लग्नेन्दु पापान्तरगौ शुभैरदृष्टौ कुलद्वयघ्नी।।४।। द्यूनेऽङ्गे [illegible] षष्ठेऽष्टमे चन्द्रेऽष्टमाब्देरन्डा।।६।। सप्तमे रन्ध्रेशे पापदृष्ट नवोढा [illegible] विधवा।।८।। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा मृतवत्सा वा।।[illegible] सूर्येऽष्टमे पाप युक्ता भवति।।११।। रन्ध्रे राहौ कुल[illegible] पापास्तदा पतित्यक्तापरासक्ता च भवति।।१३।। सप्तमेशोऽष्टमेतस्याः [illegible] पापाश्रयता बाल वैधव्यं लभते ध्रुवम्। सप्ताष्टमपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ। तदा वैधव्य[illegible] नारी नैवात्र संशयः।। मन्दाश्लेषा द्वितीयायां जाता विषाख्या।।१४।। सूर्यवारुणद्वादश्यां जाताविषाख्या।। कुजविशाखासप्तम्यां जाता विषाख्या।।१६।। पापाङ्गं सशुभोपापावरिगौ जाता विषाख्या।।१७।। पुत्रेऽर्के मन्देऽङ्गे भौमेऽङ्ग विषाख्या।। अथ विषाख्या योगस्यापवादमाहलग्नादिन्दोवा यदि जन्मकाले शुभ ग्रहो वा मदनाधिपश्च। द्यूने स्थितोहन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषाङ्गनाख्यम्।।१९।। भौमतुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभदः प्रोक्तः चिरायुपुत्रपौत्रदः।।२०।।

अथ राज्ञां खड्गविवाह

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	
सो.मं.गु.	र.बु.	र.सो.गु.	र.शु	सो.मं.र.	बु.श.	शु.बु.	मित्र
	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.सो.	श.	मं.गु.	गु.	सम
शु.श.		बु.	सो.	शु.बु.	र.सो.	र.चं.मं.	शत्रु

अथात्र ... चक्रमिदम्।

वर्णको	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	रा.
	६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अं.
	गु.	शु.	बु.	मं.	गु.	बु.	श.	मं.	गु.	बु.	शु.	गु.	स्वा.
	६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अं.
	शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	गु.	बु.	गु.	स्वा.
	८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अं.
	बु.	गु.	गु.	बु.	श.	गु.	गु.	बु.	बु.	शु.	गु.	बु.	स्वा.
	५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अं.
	मं.	श.	मं.	गु.	बु.	मं.	शु.	गु.	मं.	श.	मं.	मं.	स्वा.
	५	३	६	४	६	२	२	६	४	४	५	२	अं.
	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	स्वा

अथ वर्षे ... चक्रम्।

र.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	पतयः
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मासाः
१८	०	२२	२४	१८	२७	२२	२१	०	दिनानि

गताब्दप्रमाणंजन्मर्क्षसंख्यायुक्तं द्विघ्नं विधाय नवतष्टे शेषेदशापतिः।

मेषादिराशीनामत्र द्रेष्काणचक्रम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	रा.
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	अं.
मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.	गु.	सू.	श.	ग्रह
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	अं.
र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.	गु.	ग्रह
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	अं.
शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	सो.	मं.	ग्रह

अथात्र नवांशचक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	क.
मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	३	२०
शु.	श.	मं.	सू.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	६	४०
बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	१०	०
सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	१३	२०
र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	१६	४०
बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	२०	०
शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	शु.	सो.	मं.	श.	२३	२०
मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	२६	४०
गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	३०	०

फलम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	अशुभम्	शुभम्
	३	३	४	४	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली मिलाने की रीति

फलित ग्रन्थों के द्वारा स्त्री-नाशक या पति-नाशक, योग प्रसिद्ध है। उन योगों के अनुसार पति के ग्रहों का प्रबल होना आवश्यक है।

कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह का होना प्रायः पतिनाशक या पत्नीनाशक योग होता है, इसमें पति को मङ्गला और स्त्री को मङ्गली कहते हैं। यह पण्डितों का अनुभव है कि सबसे अधिक दोषकारक मङ्गल, उससे कम बाकी पापग्रह होते हैं।

इस योग को चन्द्रमा, शुक्र और सप्तमेश से भी देखना चाहिए। द्वितीय सप्तम भावों में भी पाप योग होता है। स्त्री की कुण्डली में सप्तम अष्टम भावों में भी पाप योग होना अधिक अनिष्टकर है। द्वितीय अष्टम स्थान में शुभ योग होना सौभाग्यवर्द्धक है। सप्तमेश अष्टमेश का योग अथवा अष्टमेश को सप्तम में होना भी उसी प्रकार का योग होता है। सन्तान प्रतिबन्धक योग प्रायः वैधव्य सूचक भी होते हैं। एकादश या पंचम स्थान में विशेष पाप योग वैधव्य सूचक होता है। इन योगों के विचार से यदि ग्रह प्रबल पड़े तो विवाह करना योग्य है। इसके बाद आयु सन्तान और भाग्य योग को देखना युक्ति सङ्गत है।

प्रश्न लग्न से या जन्म लग्न से स्त्री की कुण्डली में छठें या सातवें मङ्गल हो तो भी वैधव्यकारक योग होता है।

यदि कन्या को प्रबल वैधव्य योग हो तो ब्रह्मविवाह, कुम्भ, विवाह या विष्णु प्रतिमादि के साथ विवाह करके चिरंजीवी वर के साथ विवाह किया जाय तो पुनर्विवाह का दोष नहीं होता। परन्तु यह काम गुप्त करना चाहिए। सप्तमेश, षष्ठ, सप्तम, नवम, अष्टम द्वादश में पापयुक्त हो तो भी सौभाग्य के लिए अनिष्ट दोष होता है। सप्तमेश का पंचम भाव में होना अच्छा नहीं होता। ज्योतिष के फलित शास्त्र में दो ही वस्तु की अधिक प्रधानता है। (१) लग्न और (२) चन्द्रमा इनमें लग्न को शरीर और चन्द्रमा का मन कहते हैं। प्रेम मन से होता है, शरीर से नहीं। अतएव जन्मराशि के वश मेलापक विचार किया जाता है। गणना जन्मनाम से देखी जाती है। विवाह, यात्रा, उपनयन, चूड़ा गोचर, विचार, मङ्गल-कृत्य इत्यादि कार्यों में जन्म नाम की ही प्रधान है। जन्म नाम न रहने पर प्रसिद्ध नाम से गणना देखनी चाहिए। प्रसिद्ध नाम कई हों तो अन्तिम नाम ग्रहण कर गणना देखने का विधान है। किसी का जन्म और प्रसिद्ध दोनों नाम हों और दूसरे का केवल प्रसिद्ध ही नाम हो तो मेलापक प्रसिद्ध नाम से और सूर्य-गुरु-चन्द्रमा के बल जन्म नाम से देखना उत्तम है। एक का प्रसिद्ध नाम और दूसरे का जन्म नाम ग्रहण कर मेलापक विचार करने का विधान नहीं है। वर कन्या यदि एक ही गोत्र में हों तो विवाह नहीं करना चाहिए।

चैत्र अयनांशानयनम् एकादिगुणकाः ।। १ गुणितयाः २० गुणितयाः ।। ... शके १८०० वर्षसमुदाय ... नांशाः २२।८।३३ अतोऽग्रे न ।।

कन्या \ वर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
धनु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मकर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुंभ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ काश्यां निरयणसायनादिलग्नमानानि लंकोदयाश्च ।।

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सा. घ.	३	[illegible]	५	[illegible]	५	५	५	५	५	५	४	३
	४१	[illegible]	४	४२	४५	३५	३५	४५	४२	४	१३	४१
नि. घ.	४	[illegible]	५	५	५	५	५	५	५	४	३	३
	५	[illegible]	[illegible]	४४॥	३७॥	३५	४२॥	४२	१३॥	२४॥	३९	४१
पलात्मकं	२२१	[illegible]	[illegible]	३४५	३४५	३३५	३३५	३४५	३४२	३०४	२५३	२२१
लंकोदय	२७८	[illegible]	[illegible]	२९९	२७८	२७८	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८

अथ ग्रहाणां होमार्थं समिधः ।। अर्कः पलाशः ... औदुम्बरः शमी ... क्रमादिति ।।१।। अथग्रहाणां होमप्रमाणम् ।। ... हातव्या मधुसर्पिभ्यां सहस्रम् चाष्टसंयुतम् ।। इति ।।२।। सन्तानप्रदमन्त्रा । ... देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते । देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ।। ... पुत्रणामिल तनसा ... दशांशहवन तद्दशांशब्राह्मणभोजनम् ।।४।। जन्मराशिनामराश्योः प्रधानता निर्णीयते । विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे । जन्मराशिः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नामराशिं चिन्तयेत्सर्वं जन्म न ज्ञायते ...

	चन्द्रदानम्			शुक्रदानम्	शनिदानम्		
माणिक्य	वंशपात्र	विद्रुम		श्वेत चन्दन	नीलम, तिल		
गोधूम, गुड़	श्वेत चावल	मसूर		श्वेत चावल			
सवत्सागा	श्वेत वस्त्र			श्वेत चित्रवस्त्र	कृष्ण वस्त्र		
कमलपुष्प	श्वेत चन्दन	रक्त पुष्प	पीतफल	श्वेत पुष्प		कृष्ण पुष्प	कृष्ण पुष्प
नूतन गृह	श्वेत पुष्प	गुड़	पुखराज	रजत, हीरा			तिल तैल
रक्त चन्दन	चांदी, रजत		हरिद्रा, अश्व	घृत सुवर्ण		तैल, लोह	
रक्त वस्त्र	वृषभ, घृत		पुस्तक मधु				
सुवर्णताम्र	शंख, दधि	सुवर्ण	लवण शर्करा				
केशर, मुगा	मोती कपूर		भूमि छत्र	शर्करा, गौ			
वर्णदक्षिणा	वर्णदक्षिणा						
ज.सं. ७०००	ज.सं. ११०००	ज.सं.					

मंगलामन्त्रः	अथ पिंगलामन्त्रः					
ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा	ॐ ग्लौं पिंगले वैरिष्ट रोगप्रसीदफट् स्वाहा					ॐ हीं संकट

अथात्र ग्रहाणामेक...

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरु
मा.१	दि २।	मा.१॥	मा.१	मा.
आदौ	अन्त्ये	आदौ	सदा	मध्ये
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा.

अथात्र षड्भानि ।

जन्म	१	मृत्युभयः
कर्म	१०	कर्मनाशः
संघात	१६	बन्धुनाशः
समुदाय	१८	सुखनाशः
विनाश	२४	देहनाशः
मानस	२५	मनस्तापः

एकस्मिन्काले ... यन्त्र मणिन्यासक्रमः ।

ऐशान्य	पूर्व	आग्नेय
बुधपन्ना	शुक्र हीरा	चन्द्रमोती
उत्तर	मध्ये	दक्षिणा
गु पुखराज	सूर्यमाणिक	मं. मूंगा
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य
केतु वैडूर्य	शनिनीलम	राहुगोमेद

... ग्रहाणां दोषापनुत्त्यर्थं सामान्यौषधयः

अथात्र मासि जन्मिभेऽविवासरादौ फलम् ।

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

... तिथ्यादौ दानम् ।

मुन्यादानम् वर्षपत्रे
चावल
सुवर्ण
कांस्य
पात्र
घृत
पीतवस्त्र
वर्ण
दक्षिणा

ग्रहाणांतन्त्रसारोक्तमन्त्राः ।

ग्रहाः	मन्त्राः
रवि	ॐ घृणि सूर्याय नमः
सोम	ॐ सां सोमाय नमः
मंगल	ॐ अं अङ्गारकाय नमः
बुध	ॐ बुं बुधाय नमः
गुरु	ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र	ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि	ॐ शं शनैश्चराय नमः
राहु	ॐ रां राहवे नमः
केतु	ॐ कें केतवे नमः

... यदा ।।५।। अन्याप्यावश्यककार्यं ... न दोषकृन्मलमासे गुर्वादित्यादिकं ... षष्ठे । पुत्रे । औषध सेवन । अध्ययने ... भोजनं । शयन दानं । आसनं । ग्राम ।

अथ श्रीणामाधरजोदर्शने श्रेष्ठमासपक्षति[illegible]

तत्र श्रेष्ठ पक्ष मासा	वैशाखे फाल्गुने माघे मार्गशीर्षेज्येष्ठे श्रावणाश्विने।। एषु [illegible] श्वेतवस्त्रे श्रेष्ठोऽयम्।। नान्याम्बरे।।
तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५। एतासु तिथिषुसत्। [illegible] कृष्णपक्षस्यदशमांयावन्मध्यमम्।। तदुपरिकुलटात्वं स्यात्।।
वाराः	चन्द्र।। बुध।। गुरु।। शुक्र।। एषां वारे प्रशस्तम्।।
शुभ नक्षत्राणि	अश्वि.मृ.श.ध.रे.चि.अनु.ह. श्रवण पुष्य, उत्तरा ३, रो. एषु भेषु शुभः।। मू. पुनर्व, म. वि. कृ. एषु मध्यमं परेष्वसत्।। दिवादुर्योगभद्रादिरहिते श्रेष्ठं न रात्रौ।।
शुभ लग्नानि	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्याङ्गेषु सद्भिर्दृष्टे सत्युत्तमम्।। तत्र विवाहवद्ग्रहसंस्थाऽपि विचार्य्या इति।

अथ रजोदर्शने निषिद्धसमयांमाह ।।

अष्टम्यां द्वादशीपष्ठयोरिक्तादर्शेऽथसंक्रमे ।। भद्रा निद्रा व्यतीपाते ग्रहणे रुजि वैधृतौ ।।१।। परतात गृहे मार्गे कुदेशे कृष्णवाससि।। प्राग्रजोदर्शने नेष्टं शान्त्या तु शुभदं भवेत् ।।२।। प्रागुक्तं विलयं यान्ति रजोदर्शनसंभवाः ।।३।।

अथ ऋतुमत्याः स्नानमुहूर्त्तस्य विचारः

ह.स्वा. अश्वि. मृ. अनु. ध. रो. उत्तरा ३ ज्ये. एषुभेषु शुभतिथौ। सद्वारे।। सत्तनौ स्नायादृतुमती नारी।

अथ गर्भाधानमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्र त्रिविधं गण्डान्तम्। जन्मताराम्। मृ. म. अश्वि. रे.। ग्रहणदिनम्। व्यतिपातवैधृतिश्राद्धदिनम्। दिवा परिघाद्यर्द्ध उत्पातहतभम्। जन्मराशितोषष्ठाष्टममं पापग्रहस्य भवनम्। भद्रा पर्वदिन ४।६।९।१४ तिथिषु संध्यायाम् सू. मं. श. वासरान्। रजोदर्शनाच्चतुर्थरात्रिपर्यन्तं न शुभः। उत्तरा ३, म, ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श., एषु भेषु लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैः। लग्नात् ३।६।११ पापैश्चोत्तमः। सू. मं. वृ. इष्टलग्ने विषमराशिनवांशके चन्द्रे शुभम्। युग्म (६।८।१०।१२) रात्रौ चोत्तमं गर्भाधानम्। चि., पुन., पुष्य., अश्वि., एतद्भेषु मध्यमं स्यादिति।।

अथास्यशान्तिः कल्पोक्ताः ।।

घृतदूर्वातिलाक्षतैर - ष्टोत्तरशतं जुहुयादिति। स्वर्णगोभूदानं च विस्तरस्त्वत्रनिबन्धेभ्य ।।इति।।

अथ गर्भादशमासानामधिपाः ।।

१	२	३	४	५	६	मासाः
शु.	मं.	वृ.	सू.	सो.	श.	पतयः
७		८		९	१०	मासाः
बु.	गर्भलग्नपति			सो.	सू.	पतयः

अथ गर्भसंस्कारे विशेषमाह ।।

स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति - विवाहगर्भसंस्कारयोरितर - कर्मसु भुतरिव इति ।

अथ जातकर्मानन्तरकृत्यम् ।।

जन्मलग्नंनिरीक्ष्य-तत्रस्थग्रहदोषपरिहाराय ग्रहदानं जपं वा कुर्यात्। जातमात्रस्य मूलोत्पन्नस्य मुखमालोक्य स्नायादिति।।

अथ पुंसवनसीमन्तयोर्मुहूर्तः

तत्र गर्भतोद्वितीये तृतीये वा मासिपुंसवनंकर्मविधेयर्य।। षष्ठे वाष्टमेमासि मासाधिपतौसबलेसतिस्त्रीमन्तोन्नयनं प्रशस्तम्।। नात्रशुक्रेज्ययोर्मूढत्वदोषः।।

सद्वाराः	सू.मं.वृ. एषां वारे मतान्तरेण त्वेन्दुशुक्राणां वारे वा दम्पत्यो चन्द्रताराशुद्धौ सत्यां पुंसवनसीमन्तसंस्कारौ भवतः।।
सद्भानि	मृ. पुष्य. मू. श्रवण. पुनर्व. हस्त[illegible] उत्तरा ३ एतद्भेषु पुंजन्मभं विना सीमन्तोन्नयनं पुंसवनञ्च प्रश[illegible]
सत्तिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३ एतासु तिथिषु सिते। तिथि १० यावत् कृष्णे चोत्तमः परन्तु पूर्वाह्न एव कार्यो नापराह्ने।।
साङ्गलग्नशुद्धिः	संस्कारद्वयं पुंभस्याङ्गे पुंभांशे च श्रेष्ठम्। तत्रलग्नात् १।४।५।७।९।१० एषु शुभैः। ३।६।११। एषु पापैश्चोत्तमः। चन्द्रे १।६।८।११ वर्जिते श्रेष्ठः। ४।८।१२ पाप एकोप्यसत्।

अथ सूतिकायाः सूतीगृहप्रवेशमुहूर्त्तस्य विचारः ।।

रो. मृ. पुष्य. स्वा. श. पुनर्व. ह. ध. अनु. चि. अश्वि. उ. ३ श्र. एषु भेषु।। शुभवासरे।। सत्तिथौ रिक्ता षष्ठ्यष्टमीवर्जिते।। शुभाङ्गे।। लग्नतः केन्द्रेषु शुभेषु।। ३।६।११ पापेषु।। शुभांशे सत्युत्तमः।।

श्रुत्वा जातं पितापुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत्।। एतच्च रात्रावपि कर्तव्यम् श्राद्धादिकं हेम्ना कर्तव्यम्।। तत्कालाभावे सूतकान्तेऽपि कर्तव्यम्।।

तत्कालातिक्रमणे जातकर्मणि विचारः ।।

सत्तिथयः	१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३ एतासु तिथिषु व्यतिपातसंक्रान्तिभद्रादिदोषरहितासु श्रेष्ठम्।
सद्वाराः	चन्द्रबुधगुरुशुक्राणां वारे। जन्माहात् प्रथम एकादशद्वादशदिने चोत्तमः।।
सद्भानि	मृ., रे., चि., अनु., उत्तरा ३, रो., पुनर्व, स्वा., ध., श्र., श., ह., पुष्य. अश्वि. एषु सत्तनौ चार्यं श्रेष्ठः।।

स्तनपानमुहूर्त्तस्य विचारः ।।

उत्तरा ३, रो., अश्वि., रे., पुष्य, पुनर्व, अनु., ह., चि., मृ., ध., श्र., श. एषु भेषु शुभवासरे।। शुभतिथौ। स्थिराङ्गे स्तनपानं प्रशस्तं स्यादिति।।

अथ सूतकापथ्यम् ।। अन्नप्राशनोक्तभे तिथौ च दुर्योगादरहिते श्रेष्ठम्।।

बालस्यादौ दुग्धपानसमयश्च ।

ई. ४	पू. १	आ. ६	एकत्रिंशद्दिने चैव पयः शंखेन पाययेत् ।
उ. ७	चरयोगिनी	३ द.	अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु ।। इन्द्रवायुयमशूलहस्तिनां बर्हिपाश्रवणरक्षसा क्रमात् ।।
२ वा.	५ प.	८ नै.	अर्द्धयाममनुवासरादितोदिक्षु संभ्रमति योगिनीचरा ।।

अथ चैत्रादि १२ मासानां नामानि ।।

चै.	वै.	ज्ये.	आ	श्रा.	भा.	आ	का.	मा	पौ.	मा.	फा.	मासाः
वैकुण्ठ	जनार्दनः	उपेन्द्रः	यज्ञपुरुषः	वासुदेवः	त्रिविक्रमः	योगीशः	पुंडरीकाक्षः	कृष्णः	अनन्तः	अच्युतः	चक्रधरः	नामानि

अथ खट्वारोहणमुहूर्त्तस्य विचारः। जन्माहात् १०।१२।१६।२२ एषु दिवसेषु। मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३., रो., ह., अश्वि, पुष्य, अभि. एषु भेषु।। शुभाहे।। रिक्तामारहितोतिथौ प्राक्शीर्ष बालकं तत्र विन्यसेत्।।

अथ सूतिकाक्वाथौषधिभक्षणमुहूर्त्तज्ञानम्।। हस्त., अश्विनी, पुष्य, अभि., मृ., अनु., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., मू., भानि। ३।६।९।१२ लग्ने। सू. चं. बृ. शु. वाराः। लग्नात् ७।८।१२ शुद्धेषु। रिक्ताऽमा रहिते तिथौ। पुंलग्ने पूर्णेन्दुयुते श्रेष्ठः। जन्मराशौ न [illegible]

सूतिस्नानमुहूर्त्तस्य विचारः।। रे., उ. ३., रो., ह., स्वा., अश्वि., अनु., एषु भेषु रवि, भौम, गुरु, दिवसेषु १।२।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु सत्। आर्द्रा. पुन. पु. श्र. म. भ. वि. कृ. मू. चि. एषु भेषु बुधशनिवारयोः ४।६।८।९।१२।१४ तिथिषु न सत् एतद्भिन्नतिथिनक्षत्रवारेषु मध्यमम्।

अथ भूम्युपवेशनमुहूर्त्तविचारः। तत्रादौ पृथ्वीवराहश्चाभिः पूज्य भौमबले पञ्चमे मासि कार्यम्।। उ. ३, रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. एतद्भेषु।। रिक्तामारहिततिथौ।। स्थिरभस्याङ्गे।। शुभवासरे च।। बालकस्य कटिस्थले कटिसूत्र बध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।। तत्र मन्त्राः।। रक्षैनं वसुधे दैवि सदा सर्वगते शुभे।। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रियेति। अथात्रैव बालाग्रे इमानि स्थापयेत्।। वस्त्रं।। शस्त्रं।। पुस्तकं।। लेखनीं।। स्वर्णं।। रौप्यं।। एषु एतद्बालो गृह्णाति तैराजीविनी वृत्तिः प्रतिष्ठा च भवेत्।।

अथ निष्क्रमणमुहूर्त्तज्ञानम्। जन्मतश्चतुर्थे मासे यात्रोक्तसमयेऽर्कमितेह्नि वा सत्।

अथ नामकरणमुहूर्त्तस्य विचारः।। सूतकान्ते नामकरणं कर्त्तव्यं स्वकुलोचितं।। बृहस्पतिः।। द्वादशे दिवसे वापि जन्मतो दिवसे शुभे।। षोडशे विंशतौ नैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात्।।

भानि	मृ., रे., चि., अनु., उ.३., रो., ह., अश्वि., पुन., अभि., स्वा., पु., श्र., ध., श., नक्षत्रेषु
वाराः	चं. बु. बृ. शु. एषां वारे नामकर्महितम्।।
तिथयः	१।२।३।५।७।११।१२।१३ तिथौ भद्रारहिते सत्युत्तमम्।
शुद्ध ल.	२।५।८।११ एतद्भस्याङ्गेऽष्टमशुद्धौशुद्धलग्ने शुभांशे चोत्तमम्।
लग्न शुद्धिश्च	लग्नात् १।४।५।७।९।१० शुभैर्लग्नात् ३।५।११ पापैश्चोत्तमः।। लग्नात ६।८।१२ सर्वे न शुभाः।। चन्द्रताराबले पितृपुत्रयोः।। दिवापूर्वाह्णे एव कर्तव्यं। मध्याह्ने मध्यमं तदग्रे न सत्।।

व्यतिपात - संक्रान्त्यमावैधृतिग्रहणाह - श्राद्धाह - पक्षच्छिद्ररिक्तापूर्णा शकुनोकिंस्तुघ्नाविष्टि - करणादीन्वर्जयित्योक्त - तिथ्यादीनामकर्मविहितम्।। अथ विहित-कालातिक्रमे सतीदं गुरुशुक्रयोरस्तादिदोषरहिते सौम्यायने कार्यम्।। नान्यथेति।।

अथान्नप्राशनमुहूर्त्तज्ञानाय चक्रमिदम् ।

तत्र बालानां षण्मासादारभ्य सममासेषु। कन्यकानां पञ्चममासादारभ्य विषममासेषु कार्यम्।। मासगणनासौरेणान्नप्राशनं परमितिज्ञेया।।

सद्भानि	रो. उत्तरा ३ मृ. रे. चि. अनु. ह. पुष्य. अश्वि अभि. पुन. श्र. ध. स्वा. श. एषु भेषु शुभः।। अत्रसप्तशलाकाविद्धं ग्रहणभं त्याज्यम्।
तिथयः	२।३।५।७।१०।१३।१५ सत्। अन्येषु समः। वाराः चं. बु. बृ. शु.

एषां वारे श्रेष्ठः।। नान्यस्मिन्नह्नि। लग्नानि २।३।४।५।६।७।१०।११ एषु जन्माङ्गभयोर्मृत्युभस्याङ्ग तदंशकञ्च हित्वा प्रशस्तम्, नान्यलग्ने।।

अथ प्रथमादिमासेषु बालकानां दन्तजननफलबोधकचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मासाः
स्वयं नाशः	कनिष्ठ भ्रातृ नाशः	भगिनी नाशः	मातृ नाशः	ज्येष्ठ भ्रातृ नाशः	सुभोगम्	तातासुखं	पुष्टता	लक्ष्मी	सौख्यं	सौख्यं	धन संपत्ति	फलानि

अथ जनौसदसनो बोध्यं स्वपित्रादिहा। तदर्थं शान्तिविधेया इति।।

अथ जलपूजनमुहूर्त्तविचारः। तत्र सूतिकायाः मासपूतौ सत्यां शुक्रे ज्योरस्ते चैत्रपौषयोर्मासे तथाधिकमासे जलं न पूजयेत्।। श्र., पुष्य., पुन., मृ., ह., मू., अनु. एषु भेषु विरिक्ते तिथौ।। चं. बु. गु. एषां वारे शुभम्।।

अथ कर्णवेधमुहूर्त्तज्ञानाय चक्रमिदम्। तत्र जन्माहात् १२।१६ दिने।। ततः ६।७।८ मासि।। ततः विषमवर्षे कर्णवेधः शुभः। चैत्रपौषावामाजन्ममासचातुर्मास्यरिक्ता अमासमवर्षजन्मतारां हित्वा प्रशस्तः कर्णवेध इति।।

सत्तिथयः	१।२।३।५।७।१०।१२।१३।१५ एतत्तिथौ सिते।। कृष्णे च ति. १० यावत् शुभः।।
वाराः	चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रारहिते सत्युत्तमः।।
सद्भानि	पुनर्वसु., अश्वि., ह., पुष्य., अभि., मृ., चि., अनु., रे., श्र., ध., एतद्भेषु चन्द्रबले सति प्रशस्तः।।
शु.ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नेस्वंशेषु च सत्।।
लग्न-शुद्धिः	लग्नादष्टमभवनेसंशुद्धे।। लग्नात् १।३।४।५।७।९।१०।११ एषुशुभैः तथा ३।६।११ एषुपापैश्चोत्तमः।। लग्नस्थे गुरौकर्णवेधः शुभावहः।।

अथचौल मुहूर्त्तस्य बोधकार्थमिदं चक्रम्। तत्र वर्षत्रयाद्विषमवर्षे जन्मतः विचैत्रोद्गमने भानौ चोत्तमम् मनुना प्रथमवर्षेऽपि सदुक्तम् चौलम्।।

साद्भानि	ज्ये., मृ., रे., चि., ह., अश्वि., पुष्य., अभि., स्वा., पुनर्वसु., श्र., ध., श., एषु चन्द्रतारानुकूले सति शुभः।।
वाराः	चं. बु. गु. शु. एतद्वारेषु भद्रादिदोषरहिते श्रेष्ठम्।।
सत्तिथयः	२।३।५।७।१०।११।१३ एतत्तिथौ सत्।। परन्तु पूर्वाह्णे।।
शु.ल.	२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नांशे श्रेष्ठोऽयम्।।

अथाक्षरारम्भमुहूर्त्तस्य विचारः ।

तत्रोत्तरायणे रवौ।। पञ्चमेऽब्दे गणेशविष्णुसरस्वती लक्ष्मीकुलदेवानत्वा सविधि सम्पूज्य च शिशोर्नूतनाक्षरलेखनारम्भः कार्यः।

तिथयः	२।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु दुर्योगादिरहितासु शुभः।।
वाराः	चं. बु. गुरु शुक्र एषां वारेषु।। शुक्लपक्षे चाक्षरारम्भः शुभः।।
भानि	अश्वि., आर्द्रा, पुनर्व., पुष्य., ह., चि., स्वा., अनु., श्र., रे. एषु भेषु शुभः।।
लग्न शुद्धिः	२।३।६।९।१२ एतद्भस्याङ्गेतदंशेचोत्तमः।। अत्राष्टमशुद्धेकुम्भा शकं-विनोत्तमः।। जीवे बुध शुक्रे लग्ने खेटबलाढ्ये श्रेष्ठोऽयम्।।

अथ विद्यारम्भमुहूर्त्तस्य विचारः

तत्रादौ अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सौम्यायने रवौ आश्विने कन्यार्के बुधप्राबल्ये

सद्वाराः	बु. सू. बृ. शु. एतद्वारेषु शुभः। गणेशवाग्देवतामभ्यर्च्य कार्यः।।
सद्भानि	अश्वि. पुष्य. आ. अनु. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. श्र. ध. मू. पू. ३. श्लेषा सत.
सत्तिथयः	२।३।५।६।१०।११।१२ एषुसिते।। ति. ५ यावत्कृष्णेचोत्तमः एषु सत्
साङ्ग-लग्न-शुद्धिः	२।३।६।९।१२ एतद्भस्याङ्गेशुभः।। लग्नादष्टमे सर्वेग्रहाः नेष्टाः। लग्नात् १।२।४।५।७।९।१०।११। एषु शुभैः। ३।६।११ एषु पापैश्चोत्तमा अधीतिः ।।इति।।

अथ व्रतबन्धमुहूर्त्तबोधकचक्रमिदम्।

तत्रगुरुशुक्रयोर्वृद्धत्वास्तशिशुत्वकालंविनोत्तरायणे रवौ माघादि ५ मासेषु शुभः।। परन्त्वर्केन्दुगुरुशुद्धिवशेन। चैत्रे सति मीनार्के ब्राह्मणानां व्रतं सत्।।

सद्भानि	अश्वि, ह. पुष्य. उत्तरा ३. रो. ऽश्ले. स्वा. पुन. ध. श्र. श. मू. चि. मृ. अनु. पूर्वा. ३, रेव. आर्द्रा. एतद्भेषुरहितेषु सत्।। परन्त्वपराह्णे
तिथयः	[illegible] एतासु शुक्ले २।३।५ कृष्णे तिथिषु चोत्तमः।
सद्वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रारूयामादिदोषरहिते सत्युत्तमः।।
लग्न-शुद्धि-ज्ञानमाह	त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रोद्विधूनादिकत्रिकः।। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्था [illegible] तेशुभाः।।१।। चं. शु. बृ. लग्नेशोलग्नात् ६।८ नशुभाः।। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ निंद्यौ।। ११।५।८ पापः न शुभः। ६।८।१२ सौम्या न शुभाः।। ३।६।११ पापाः शुभदा। पूर्णेन्दु [illegible] [illegible] चन्द्रांशं विनेति।।

अथ दीक्षाग्रहणमुहूर्त्तस्य बोधकचक्रमिदम् ।

मासाः	चै. वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. फा. [illegible]
भानि	अश्वि. रो. उ.३ पू.३ चि. अनु. पुष्य. स्वा. पुन. मू. श्र. ध. श. एषु सत्।।
वाराः	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम्।।
तिथयः	[illegible] एतासु तिथिषु श्रेष्ठ [illegible]
शुद्धलग्न	[illegible] सति शुभम्।
लग्न शुद्धिश्च	[illegible] ३।६।११ एषु पापैः १।४।५।७।९।१० एषु शुभैश्चोत्तमम्।। [illegible] गुरुशुक्रयोरुदये श्रेष्ठम्।।

[illegible] स्त्रीशूद्रयोरपि [illegible] व्रतबन्धने च।। [illegible] इति।।

[illegible] गर्भाधानमतश्च पुंसवनकं सीमन्तजाताभिधे। नामाख्यं [illegible] सूर्यावलोकं मतं च।। [illegible] व्रतबन्धको - ऽप्यथचतुर्वेद-व्रतानां [illegible] पुनः। [illegible] स्यात् षोडशोकर्मणाम्।। ब्रह्म-क्षत्रियविट्शूद्रा [illegible] वैमन्त्रतः क्रिया।। शूद्रोऽप्येवंविधः [illegible] कार्ये [illegible] स्त्रीणां चौलान्तसंस्कारान् प्रकुर्वीत ह्यमन्त्रकात्। [illegible]

अथ विवाहमुहूर्त्तस्य विचार :- स्त्रीणामष्टमवर्षतश्च अतः परं सम वर्षे [illegible] विवाहसमये स्त्रीणां नृणां क्रमश गुर्वर्कौ सबलौ। तद्दिने उभयो [illegible] विवाहः शुभः प्रोक्तः।

[illegible] :- शु. चं. बु. वारेषु श्रेष्ठः। सत्तिथयः-रिक्ता (४।९।१४) माघ[illegible] तासु तिथिषु श्रेष्ठः। सद्भानि-मृग, ह. अनु. म. रो. उत्तरा ३ स्वा. मूल [illegible] वेधादिदोषरहितेषु शुभः।

लग्नानि :- लग्नात् ३।६।११ एषु स्थानेषु भौमः २।३।११ स्थानेषु चन्द्रः [illegible]।१२ एषु स्थानेष्वतिरिक्तस्थानेषु बुधगुरो ३।६।७।१२।८ एतद्भि[illegible]नेषु शुक्रः शुभः। वर्गोत्तमांशश्च शुभदः स्यात्।

अथ वधू प्रवेश मुहूर्त्तस्य विचार :- विवाहादूर्ध्वं वध्वाः प्रथम भर्तृगृहे प्रवेशो वधूप्रवेशः स च विवाहदिवसात् २।३।४।५।६।९।१०।१२।१४।१६ दिवसेषु शुभः अतः ऊर्ध्वं विषममासवर्षेषु पञ्चवर्षात्परं स्वेच्छया।

सद्वारा :- चं.बृ.शु.बु. दुष्टयोगादिरहितेषु शुभः सत्तिथयः- १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ एषु भद्रादिदोषरहितेषु शुभः।

साङ्गलग्नशुद्धि :- २।३।५।६।८।९।११।१२ एतद्भस्यांगे शुभः। लग्नात् १।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभः। १।६।११ स्थानेषु शुभः ३।६।११ स्थानेषु [illegible] चतुर्थाष्टमशुद्धौ निशिप्रवेशः शुभः।

अग्न्याधानमुहूर्तस्य विचारः:- तथोत्तरायने रवौ स्वशाखेशगुरुसितानामुदये चोत्तमः।

सद्वारा :- सू. चं. बु. गु. श. एपु वारेपु, भद्रादिदोपरहितेपूत्तमः। सत्तिथयः २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एतत्तिथयः शुभाः।

सद्भानि :- वि. कृ. रो. ज्ये. मृ. रे. उत्तरा ३ पुष्य एपु भेपु चन्द्रताराऽनुकूले सति शुभः। न्यूनाधिकमासे न कार्यः।

सल्लग्नानि :- १।२।३।५।६।७।८।९ एतद्भस्य नवांशो चोत्तमः लग्नशुद्धिः त्रिकोणोपचये केन्द्रे सूर्यजीवकुजेन्दुपु। शेपे चोपचये शुद्धरन्ध्रेअग्न्याधानं चोत्तमम् चन्द्रलग्नेन शुभः। रव्यारेन्दुशुक्रेज्य न नीचे नास्तगते वारिगेहे वर्धिते चेत्तदोत्तमः धनुलग्ने जीवयुते वा मेपगे भौमे ८।१० गते वा ३।६।११ गतेपु सूर्य चन्द्र शनि राहु एपामन्यतमे चक्रभेदे सत्युतमः।

वृक्षारोपण मुहूर्त विचार :- वार :- रवि सो. बु. गु. शु.। नक्षत्र :- रो मृ. अ. पुन. पुष्य मघा उ. ३ ह. वि. स्वा. अनु. मू. श. रे.। तिथय :- २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५।

अथ वृक्षारोपणस्य मन्त्रमप्याह :- ओम् वसुधेति च शीतेतिपुण्यदेति वरदेति च।। नमस्ते सुभगे देविद्रुमोऽयं त्वयि रोप्यते।

अथ राज्याभिषेकमुहूर्तस्य विचार :- तथोत्तरायणे रवौ गुर्वीन्दुशुक्रदृश्ये यथा भौमार्कलग्नेशदशमेशवायेन्नेदुत्तमः परन्तु अधिमासे, नैत्रे रात्रौ भौमे न शुभदः।

सद्वारा :- सू. चं. बु. वृ. शु. एपु वारेपु चन्द्रबले कुयोगादिरहिते सति शुभदः।

सत्तिथय :- १।२।३।५।७।८।१०।१२।१३।१५ एपु भद्रादिदोपरहिते शुभः।

सद्भानि :- ज्ये. श्र. ह. अश्वि. पुष्य. मृ. रे. अनु. उत्तरा ३, रो. एपु शुभः।

सल्लग्नानि :- २।३।५।६।७।८।११।१२ एतद्भस्यांशे वा जन्मराशि वा उपचये लग्ने सद्ग्रहेक्षिते शोभनः जन्मांगयोमृत्युराशौ लग्ने नेष्टः।

लग्नशुद्धि :- लग्नाद् पापस्त्रिपष्ठायगतैः शुभः। लग्नाच्छुभग्रह केन्द्रे त्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः शुभः मित्र क्षेत्र गतैः खेटैश्चेच्छुभः अस्तंगतेनीचारि शत्रु गृहे च न सत्। पञ्चदुष्टग्रहैश्चेदुत्तमोऽयम्।

अथ भर्तृ गृहात्पितृगेहगमनमुहूर्त्तस्य विचार :- दारुणोग्रभित्रेपु भेपु शनिसूर्यभौमभित्रवारेपु सत्तिथौ कुयोगादिभद्रादिदोपरहिते शुभलग्नेशुभः।

अथ कोष्ठादौ धान्यस्थापनमुहूर्तस्यात्र विचारः:- मृ. पुन. रे. अनु. श्र. ध. अश्वि. पुष्य. रो. ध. उ. एपु भेपु सत्तिथौ सू. चं. गु. शु. वारेपु।। अथ निष्कासनधान्यानां। उ. ३. रो. ध. श. एपुभेपुसद्वारे शुभांगे सत्तिथौचप्रशस्तः।

अथ जलाशयारामसुरप्रतिष्ठामुहूर्तस्य विचारः:- तत्रोत्तरायणे भानौ जीवेन्दुशुक्रे दृश्ये सिते पक्षे चोत्तमा प्रतिष्ठा।

सद्वारा - सू. चं. बु. गु. शु. एपु वारेपु शुभः।

सत्तिथयः - १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ एतासु तिथिपु भद्रादिदोपरहितासु शुभदः।

सद्भानि - मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३, रो. एपु भेपु चन्द्रतारानुकूलेपु सत्सु शुभः। अथवा यस्य देवस्य प्रतिष्ठा कर्तुमिष्टस्तस्य तत्स्वामिनोक्तकाले तिथौ च प्रशस्तः।

लग्नशुद्धि :- २।३।५।६।८।९।११।१२ एतद्भस्यांशे शुभः चरांगे

शुभः। लग्नाद् १।२।४।७।९।१०।११ स्थानेपु शुभैः ३।८।११ सेन्दुर्भः पापैः [illegible] इष्टाहे शुभांशे श्रेष्ठम्।।

अथ कूपतडागादीनामारम्भः मुहूर्तस्य विचारः तद्वाराः:- चं. बु. वृ. शु एपु वारेपु शुभः।

तिथयः- १।२।३।५।७।८।१०।११।१२।१५ एतत्तिथिपु शुभः। सद्भानि ह. अनु. रो. उत्तरा ३। श. रे. पुष्य. मृ. पूपा एतद्भेपु स्वस्वचक्रशुद्धिसत्यां शुभे मासिगुर्वस्तलोपादि-दोपभद्रादिदुर्योगरहिते दिने शुभः।

लग्नशुद्धिः- लग्ने जीवज्ञोऽथवा दुर्बलक्रूरं शुक्रे चापि मेपूरणस्थे। आप्येचन्द्रे सूर्यौश्रयाणामारम्भाः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम्।

अथ जन्ममुहूर्तस्य बोधकचक्रम्। तत्रविशेषः-ऋतुमत्याः सूतिकायाः शुद्धोत्सादिना च सूनोर्मातरि गर्भिण्यां चूडाकर्म न कारयेत्। पञ्चमाब्दादगोत्रं च गर्भिण्यापि कारयेत्। तत्र जन्मतो द्वितियपंचोन्मितेऽब्दे स्वचराशौ कुर्याच्च [illegible] प्रभवेत् वित्तेऽोद्गयने भानोः तत्रापि ३ वर्षे श्रेष्ठ, ५।७ वर्षे मध्य ९।११ अधमसूतम, सत्तिथयः-२।३।५।७।१०।११।१२।१३ एतत्तिथिपर्वाणि शुभं लग्नशुद्धिः-२।३।४।६।७।९।१२ एतद्भस्य लग्नांशे शोभनम्। [illegible] मृत्युर्भवे विनालग्नात् १।२।४।५।७।९।१०।११ स्थानेपु शुभः ३।६।११ पापस्तथा ६।८।१२ स्थानातिरेके स्थानेष्विन्दो शुक्ररहितास्या [illegible] सत्युतमः। सद्भानिः- मृ. रे. ह. उ. ३ रो. पुनर्व. स्वा. अश्वि. नक्षत्रेषु [illegible]।

द्विरागमनमुहूर्तः- स च विवाहतो द्वितियवर्षे भर्तृगृहे गमो द्विरागमः विषमाब्दमासाश्च [illegible] प्राबल्ये, [illegible] शुक्रकृतदोषपरिहारे [illegible] सत्युतमः। सद्वाराः-चं. बु. वृ. शु. एपु वारेपु दुर्योगादिरहितेषु [illegible] सद्भानि-ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३, रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मृ. रे. अनु. एपुभेपु चन्द्रतारानुकूलेसति शुभः। लग्नशुद्धि लग्नात् ३।६।११ एपु [illegible] १।४।७।१० स्थानेपु भृगो शुभलग्ने शोभनः।

अथ नूतनवध्वाः पाककर्ममुहूर्तः- मृगोत्तराश्विपुष्याः पाककात्मक श्रुतित्रये [illegible] पौष्णम्। शुभे तिथौ शुभांगे प्रकुर्यात्रव [illegible] खेटविहीने [illegible] स्थिरे लग्ने सुखे शुद्धे सप्तमे च वलान्विते रन्ध्रे [illegible]।

व्यवसायमुहूर्तः-नक्षत्राणि- मृ. रे. चि. अनु. उत्तरात्रयं रो. ह. पुष्य अभि. तिथयः-१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५, ३०। वाराः-रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। लग्नानि-कुम्भेतराणि सर्वाणि शुभानि। शुक्रचन्द्रौ लग्ने शुभदौ। ८, १२ स्थानगाः पापाः न शुभदाः २, १०, ११ स्थानेपु शुभा शुभदाः।।

अथ [illegible] शान्तिमुहूर्तविचार :- मृ. ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३, रो. रे. स्वा. ध. श. पुन. अनु. म. एपु शुभांगे वारे सप्तमी, सितेज्यरत्न [illegible] १ लग्ने जीवे [illegible] शुभदः। लग्नात् विधौ ४ स्थे १० रवौ,

हलप्रवहणमुहूर्तः-नक्षत्राणि-मृ. वि. स्वा. पुन. म. ध. श. उ.३ रो. मृ. रे. चि. अनु. ह. आर्द्रा. पुष्य. अभि. वारः-शनि रवि विहाय सर्वे शुभाः। तिथयः-५, ६, ९, १४, ३० विहाय सर्वे शुभाः चन्द्रोदयः। चन्द्र मकर मीन कर्क [illegible] कुम्भ, मेष मकर तुलाराशि लग्नानि

बीजवपनमुहूर्त्तः- नक्षत्राणि-मृ. म. ध. उ.३. रो. मृ. चि. रे. अनु. ह. पुष्य. अश्वि. एपु भेपु। वाराः- [illegible], गुरु, शुक्रः। तिथयः ४, ६, ९, १४, ३० विहाय सर्वे शुभाः।

कणमर्दनमुहूर्त्तः- अनु. अ. म. रे. पू. ज्ये. रोहिणी, कृत्तिका, एपु भेपु सत्तिथो सद्वारे शुभांगे चोत्तमम्।

यात्रामुहूर्त्त-शुभनक्षत्राणि- [illegible] पुष्य ह. अनु. श्र. ध. रे. मध्यमनक्षत्राणि- रो. उ.३, ज्ये. पू.३, श। शुभतिथयः:- भद्रा रहिता २, ५, ७. १०. ११, १३ तथा कृष्णपक्षे प्रतिपदा विशेषः-मराशौ कुम्भनवांशके वा कदापि यात्रा न कर्त्तव्या। शुभलग्ने १, ४, ५, ७, ९, स्थानेपु शुभग्रहाः शुभदाः ३. ६, १०, ११ स्थानेपु पापग्रहाः शुभदाः [illegible], ६, ८, १२ चन्द्रः। दशमे शनिः, शुभः सप्तमे शुक्रः ७, २, ६, ८ स्थानेपु [illegible]।

ध्रुवस्थिर-संज्ञकनक्षत्राणि- उ.३. रो. भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्। तत्र स्थिरं बीजदेह शान्तारामादि सिद्धये।। तीनों उत्तरा, रोहिणी हस्त और रविवार के नक्षत्र दिन योग से ध्रुव या स्थिर संज्ञा होती है इसमें स्थिर कार्य करना, बीज बोना, गृह बनाना, शान्ति करना, बगीचा लगाना आदि कार्य करना शुभ फलदायक होता है।

चल-संज्ञक नक्षत्राणि- स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणिचन्द्रश्चापि चरंचलं। तस्मिनगजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम्।। स्वाती पुनर्वसु, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा और सोमवार इनका चर और चल नाम है इन नक्षत्रों में घोड़ा आदि पर चढ़ना, बगीचे में जाना शुभद होता है।

क्रूरोग्र नक्षत्राणि- पूर्वात्रयं याम्य मघे च क्रूरं कुजस्तथा। तस्मिन् घातान्गि शाठ्यानि विपशस्त्रादि सिद्ध्यति। तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और मंगलवार इनका नाम उग्र और क्रूर है। इनमें शठता, [illegible], विप, शस्त्र, अग्निकार्य करने में सफलता मिलती है।

मिश्र- साधारण संज्ञक नक्षत्राणि- विशाखाग्नेयभे सौम्ये मिश्रं साधारणं स्मृतम्। तत्राग्नि कार्यमिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति। विशाखा कृत्तिका और बुधवार इनका नाम मिश्र और साधारण है। इनमें अग्निकार्य और साँड़ छोड़ना शुभद है।

क्षिप्रं लघु संज्ञक नक्षत्राणि- हस्ताश्वपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघुगुरुस्तथा। तस्मिन्पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम्।। हस्त, अश्विनी पुष्य, अभिजित् और गुरुवार इसका क्षिप्र और लघु नाम है। इसमें व्यवसाय करना, रतिज्ञान, भूषणनिर्माण और रत्न धारण और चित्रकला कार्यारम्भ होने का मुहूर्त होता है।

मृदु-मैत्रसंज्ञक नक्षत्राणि

मृगान्त्य चित्रा मित्रर्क्षं मृदुमैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बर क्रीडा मित्र कार्यं विभूषणम्।

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार इनको मृदु मैत्र कहते हैं। इनमें गीत, कपड़ा, क्रीड़ा मित्र-कार्य और भूषण बनवाना शुभ है।

तीक्ष्ण-दारुण संज्ञक नक्षत्राणि

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम्।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम्।।

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार दारुण है। इनका नाम तीक्ष्ण और दारुण है। इनमें अभिचार घात, भेद पशुदमन आदि तीक्ष्ण कार्य सफल होते हैं।

तात्कालिक करणवशेन संक्रान्तीनां [illegible] आदिज्ञानाय चक्रम्।

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	[illegible]	शकुनि	चतुष्प.	नाग.
स्थिति	निवि	उपवि.	ऊर्ध्व	सुप्त	निविष्ट	निवि	निविष्ट	ऊर्ध्व	सुप्त	सुप्त
तत्फलं	सम	मध्यम	श्रेष्ठ	महर्घ	मध्यम	मध्यम	मध्यम	समर्घ	महर्घ	महर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	अश्व	श्वान	मेष	वृषभ
उपवा.	गज	अश्व	वृषभ	मेष	गर्दभ	उष्ट्र	सिंह	शार्दूल	महिष	व्याघ्र
तत्फलं	भीतिः	भयम्	पीडा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडु	आरक्त	श्याम	कृष्ण	चित्र	कंबल	नग्न
उपव.	श्वेत	रक्त.	चित्र	पीत	नील	कंबल	पट्ट	अंजन	कुसुम	वल्कल
आयुधं	बन्दूक	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुन्त	पाश	अंकुश	शस्त्र
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष	पक्वान्न	दुग्ध	दधि	चित्रान्न	गुड़	मधु	घृत
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चन्दन	मृत्ति.	गौरो.	महावर	ओतु.	हरिद्रा	कज्जल	अगर
जातयः	देवता	भूत	सर्प	पक्षी	पशु	मृग	द्विज	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बिल्व	अर्क.	दूर्वा	कमल	बेला	पाटल
भो. पा.	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लोह	खप्पर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुकुट	मणि	गुंजा	कौड़ी	नीलम	[illegible]
कंचुकी	विचित्र	पीत	हरित	भूर्जप	सित	पांडु	नील	कृष्ण	चर्म	वल्कल
स्नान	गङ्गा	यमुना	सरस्व.	मन्दा	नर्मदा	कृष्णा	गोदा:	भागी.	तुंग	कावेरी
वय	बालं	कुमार	गताल.	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	वन्ध्या	[illegible]	[illegible]

अथ संक्रान्तिवाहनादीनां दुष्टफलं तदाह- वाहनास्त्रायुधभक्ष्यादीनां [illegible] विनाशः स्याच्च संक्रान्तेर्वस्त्रादीनां महर्घता।। स्थितिनिविष्टसुप्तानां तथा ज्ञेयं विनाशनम्।।२।।

मासेपुशून्यतिथ्यादि ज्ञानाय चक्रमिदं शुभे न सत्।

चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मार्ग	पौष	माघ	फा.
[illegible]	१२	कृ.१४	कृ.६	[illegible]	१	१०	कृ.५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	१२	शु.१४	शु.७	२	[illegible]	१२	शु.१४	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अश्वि. रोह.	चि. स्वा.	उ.षा. पुष्य	पू.फा. ध.	उ.षा. श्र.	श. रे.	पू.षा.	पू. म.	[illegible] वि.	आर्द्रा [illegible]	[illegible] मृ.	[illegible] ज्ये.
कु.११	मी.१२	वृ.२	मि.३	मे.१	कं.६	वृ.८	तु.७	ध.९	क.४	म.१०	सिं.५

काष्ठसंचयचक्रमर्कभात्			अश्वचक्रमर्कभात्			शिविकाचक्रमर्कभात्			[illegible]
अधः	६	पाकसुरसः	स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि	स्थान
शीर्षे	२	शवदाहः	शीर्षे	५	सुखम्	पूर्वे	५	शुभम्	मुखे
मध्ये	४	सर्पभयम्	पृष्ठे	१०	लाभदः	दक्षिणे	५	पीडा	कण्ठे
पूर्वे	४	मित्रागमः	पुच्छे	२	स्त्री. नाश	पश्चिमे	५	भयम्	[illegible]
दक्षिणे	४	रोगभयम्	पादे	४	रणेभंग	उत्तरे	५	रोगः	नाभौ
पश्चिमे	४	क्याथादिः	उदरे	५	अश्वनाशः	मौ.लौ.	३	सुखम्	कट्यां
उत्तरे	४	सुखम्	मुखे	२	अर्थलाभः	दंडयोः	४	शुभम्	पुच्छे

अथवारदोषशमनार्थं [illegible]।। भानुस्ताम्बुलदानादपहरतिनृणांवैकृतंवासरोत्थं श्रीखण्डदानादर्वानिवरसुतो भोजनात् पुष्पदानात्।। सौम्यः शुक्रस्यमन्त्रीर्हरिहरनमनाद्भार्गवः तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयो ब्रह्मभक्त्यां परे च।।१।। इति।।

त्रिधाशान्तिः ज्योतिः प्रकाशे ।। यथोक्तमौषधस्नानं ग्रहविप्रार्चनं तथा।। ग्रहान् [illegible] वात्रिधा शांतियुधै स्मृताः।।२।। श्रीगीतः।। देवब्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचः सम्पादनात्प्रत्यहं, सा[illegible] भाषणाद्युतिरथेच्छ्रुयः कथाकर्णनात्।। होमादध्वरदर्शनाच्छुभमनोभावाज्जपाद्दानतो न कुर्वन्ति कदाचि[illegible] ग्रहाः पीडनम्।।२।। इति।।

[illegible]	गु.	शु.	श.	वाराः
[illegible]	६	४	१	दुष्टयोग
[illegible]	१२	६	२	
[illegible] ८	९	४	२ दि.	कुलिका
[illegible]	४	३	१ रा.	कुलिका
[illegible] १४	१२	१०	८	कण्टकक्षण
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	कालवेला
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	अर्धयाम
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	यमघंट

[illegible]

जलाशयारम्भमुहूर्तः

माघि। ह. अनु. रे. उत्तराः ३ ध. श. म. रो. पुष्य. मृ. पू.पा. गुर्वस्तपादिदोषरहितेन. बु. वृ. शु. वारे न रिक्ता तिथौ शुभः। लग्नेजीवेज्ञेऽथवा दुर्बलैः क्रूरैः शुक्रेचापि मेपूरणस्थे। आप्ये चन्द्रे सर्वतोयाश्रयाणामारम्भाः स्युः सिद्धये निर्विकल्पम्।।

द्वारचक्रमर्कभात्

न.	फलानि
४	राज्यलाभः
२	हानिः
४	धनप्राप्ति
२	भयम्
४	मृत्युभयम्
२	मृत्यु
४	द्रव्यप्राप्तिः
२	शोकभयम्
२	धनलाभः

[illegible] चक्रमर्कभात्

स्थान	न.	फलानि
शीर्षे	३	लक्ष्मी
कण्ठे	३	श्रीलाभः
मुखे	२	मरणम्
[illegible]	३	सुखम्
आग्रपदे	४	व्याधिः
पृष्ठपदे	४	भीतिः
पुच्छे	४	मृतिः
पृष्ठे	४	व्याधिः

[illegible] चक्रमर्कभात्			नौकाचक्रसूर्यभुक्तभात्			शनिचक्रं [illegible] भात्		
स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलम्
[illegible]	३	हानिः	स्तनाग्रे	३	अशुभम्	मुखे	१	अर्थनाश
पृष्ठे	४	सिद्धिः	मध्ये	६	शुभम्	द.भुजे	४	सुखसम्पत्ति
कण्ठे	३	मृत्युः	मुखे	३	अशुभम्	अङ्घ्रि	६	भ्रमणम्
हस्ते	४	शत्रुभयम्	छिद्रे	३	अशुभम्	वा.भु.	४	रोगभयम्
हृदये	६	इष्टाप्तिः	पृष्ठे	१	अशुभम्	हृदये	५	मिष्टागमः
[illegible]	३	हानिः	अग्रे	३	अशुभम्	मस्तके	३	राज्यलाभ
कट्यां	३	इष्टाप्तिः	मुखाग्रे	३	अशुभम्	नेत्रे	२	सौख्यं
चरणे	४	धनप्राप्ति	मध्ये	३	शुभम्	गुदे	२	मृत्युभयं

मासदशानयनम् - गतवर्षसंख्यायां द्वादशगुणां विधाय तत्र जन्मवर्षसंख्यां संयोज्यद्विहीनां [illegible] शेषंदशा नायका भवति।। वर्षमुद्रादशायां द्वादशो भागः मासदशाकालः।

शनिचक्रम् - द. कर. ४-रोगः। पादयुगल ६ लाभ। वाम. ४ गमनम्। ज्वर, ५ दरिद्रता। [illegible] लाभम् द. नेत्र वा. नेत्र १ - सौभाग्यम् गुदा. १ अल्प मृत्युः।

अथ पुरुषजन्[illegible]भावस्थ ग्रहफलानि

भावाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः [illegible]	[illegible]	[जा]या ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	ला[भ] [११]	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः अगदः	वक्ता रोगीधनी	सुखी विक्रमी	असुखी सोद्विग्नः	निरस्[illegible] असुतः	[illegible]	[illegible]जितः खलः	नेत्ररोगी अल्पायुः	सुवीर्यः सुखभाक्	सुखशौर्य भाक	बहुधन- वान्	व्यङ्गः पतितः
चन्द्रः	सुरुपः अन्धः	कुटुम्बी धनी	हिस्र सात्विकः	ससुखी सुशीलः	धनी पुत्रवान्	[illegible] बहुशत्रुः	ईर्ष्यस्तीव्र मदः	रोग पीडितः	सौभाग्यः धनीच	धर्मार्थ शौर्ययुतं	ख्यातः सुलाभः	अङ्गहीन हिंस्रः
भौमः	क्रूरः व्रणीः	कोपी कुटिलः	विक्रमी- सुधीः	विसुखः पीड़ितः	असुतः दरिद्रः	अरिजितः सुखी	दाराजित रणरुचिः	अल्पपुत्रः रोगी	पापरतः दुर्मनोरथः	सुखैश्वर्य वान्	बहुधनी सुखी	जातिभ्रष्टः दारहा.
बुधः	विद्वान् सुखी	धनी गुणी	दुर्ज्जनः अरिमर्दनः	पंडितः सुखी	मन्त्री असुतः	अशत्रुः विशीलः	धर्मज्ञः सुकीर्तिः	सद्गुणी धनी	पुत्रार्थः सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	यशस्वी धनी	अज्ञः पतितः
गुरुः	चिरायुः विद्वान्	सुवाक् धनी	कृपणः पापी	सुखी धनी	धीमान् प्रतापी	अशत्रुः कामी	पितृतो- ऽधिकः	नीचः अल्पायुः	तपस्वी पुत्रवान्	सधनः सुकृतः	सलाभः पुत्रप्राप्तः	खलः दरिद्रः
शुक्रः	सुकामी सुखी	धनी सु-वाक्य	पापी कृपणः	सुखी सुधीः	सुखी धीमान्	रोगी अशत्रुः	कलह प्रियः	नीचः दीर्घायुः	प्रतापी तपस्वी	सुधनी मानवान्	सुमतिः सलाभः	खलः बंधुनाशः
शनिः	आलसी रोगी	वक्तारः गोधनी	मति विक्रमवान्	विसुखः दुःखी	दरिद्री विपुत्रः	शत्रुजित सुखी	स्त्रीजित दुःखी	नेत्ररोगी अल्पपुत्रः	सुतीर्थ सुखभाक्	सुखी पराक्रमी	प्रभूत धनवान्	दुखीः पतितः
राहुः	सुकामी रोगी	अधमः विरोधी	सुधी विक्रमी	असुखी मातृहानि	कुमित्रः दुर्भगः	सबलः श्रीयुत	सप्रमेह दुराचारी	रोगी गतायुः	सबलः दैन्ययुक्तः	सुखी मानी	धनीअपुत्र ख्यातः	कष्टः पतितः
केतुः	गतायुः सकामः	खलः धनहानिः	शूरः पराक्रमी	मातृहानि दुःखी	असुतः मूर्खः	धनी सवीर्य्यः	प्रमेह रोगी	क्लेशयुतः व्रणी	पापी दुर्भगः	श्रेष्ठपितृ हानिः	सधनः पराक्रमी	दुर्जनः पतितः
गुलिकः	रोगार्तः सम्बन्धीः	क्रोधी विषयी	विशोदरः अशोकः	रोगी पापकृत	स्वल्पपुत्रः अल्पायुः	रिपुहन्ता विनोदी	कुदारः कृतघ्नः	चिन्तित दुःखी	पापकृत निर्दयी	सुखी विमानः	सुधनी विपुत्रः	हीनाङ्ग नीचरताः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां १२ भावस्थग्रहाणां फलजातकोक्तम्।

श्रीः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखः ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पतिः ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	विधवा सक्रोधा	दरिद्रा दुखार्ता	सुत धनान्विता	दरिद्रा सुपीड़ा	नष्ट- त्मजा	सुख धनाढ्या	सर्वसुख विमुक्ता	विधना दुःखार्ता	धन धर्मा- न्विता	सुकर्म- रता	सुलाभा बहुपुत्रा	सरोगः विधवा
चन्द्रः	अल्पा- युषी	बहुधन पुत्रान्विता	सुखार्थ युक्ता	सुभागार्थ युक्ता	सुपुत्रा संसुता	सरोगा विधवा	पतिप्रिया सुदेहा च	रोगादिता कुनेत्रा	सुख पुत्रा- न्विता	धनधर्म युक्ता	भव्य विधिज्ञा	हीनांङ्गी व्ययाढ्यां
भौमः	विधवा दुःखार्ता	बन्ध्या सरोगा	सहज- विरहिता	दुःखार्ता विधवा	अपुत्रा कुसङ्गता	रोगादि रहिता	विधवा कुलटा	विधवा रोगार्ता	विधर्मा दुःखिनी	कुकर्मरता कुपुत्रा	नृपादर्थ लाभा	खला रुजार्ता
बुधः	सौभाग्य वृद्धिः	धनाढ्या सतीच	धनाढ्या पुत्रवती	सुखगृहा- न्विता	धीकान्ति युक्ता	गतायुषा सकोपा	विदग्धा पतिव्रता	कृतघ्नना भीतियुता	सुभगा- युधर्मा	सत्कर्म बुद्धियुता	सुलाभा पतिव्रता	कृशांगा सुपुत्रा
गुरुः	सती सुभगा	वित्तसौ भाग्ययुक्ता	सहजा- न्विता	सौख्यार्थ युक्ता	साध्वी सगुणा	बहुत्पदा सत्यहोत्री	सौभाग्य कीर्तियुता	सरोगा विशीला	कृतज्ञता पुत्राढ्या	साध्वी सुभगा	सुपुत्रा सुरूपा	सरुजा सुव्यथा
शुक्रः	सुमुखी पतिव्रता	धनी सुवाक्या	धनाढ्या परहन्त्री	सुख कीर्तियुक्ता	सुख सुतान्विता	विसुखा दरिद्रा	पतिव्रता शास्त्ररता	विसुखा प्रमत्ता	धर्मपरा सुभगा	सुकर्मार्थ युक्ता	पुत्रार्थ लाभयुक्ता	सुव्यथा दुःखार्ता
शनिः	बन्ध्या दरिद्रा	निर्धना दुखयुक्ता	सुभगा सुदत्ता	हृद्रोगार्ता बन्ध्या	विपुत्रा विसुखा	सगुणा सुभगा	विधवा सरोगा	विधवा दुःखिता	बन्ध्या शोकार्ता	पापरता सधवा	सुलाभा सुपुत्रा	रोगार्ता सुद्धःच
राहुः केतुः	पुत्रदा दुःखार्ता	दरिद्री दुःखर्ता	सवित्ता रोगाढ्या	रोगार्ता मातृहा	सुतार्थ- रहिता	निरोगार्थ युक्ता	सदुःखा विधवा	सदुःखिता विधवा	बन्ध्या शोकार्ता	कुकर्म- रता	निरोगी सुभगाः	खला सरोगी

अथ संक्रान्तिवाहनादीनां दुष्टफलं तदाह- वाहनावपुपहारादीनां मृत्युपजीविनाम्। विनाशः स्याच्चरसंक्रान्तेर्वस्त्रादीनां महर्घता।। स्थितनिविष्टसुप्तान तथा ज्ञेयं विनाशनम्।।२।।

नक्षत्राणां स्वामिशुभाऽशुभादिविशेषसंज्ञा। नष्टवस्तुज्ञानाय सुलोचनादिसंज्ञा। नक्षत्रस्य पादवशाच्चाकष्टावलोकनचक्रम्। ज्वरादि रोगोत्पत्तौ नक्षत्रस्य पादवशादत्र दिनसंख्या

नक्षत्राणि	स्वामिनः	शुभाशुभः	जातयः	संज्ञाः	मुखम्	घ.उ.ने.	यात्रादोहदम्	नक्षत्र	संज्ञा	दि.	लाभाऽलाभ	ता.	स्वरूपाणि	दि.सं.	दानानि	१च	२च	३च	४च	जपार्थमन्त्राः
अश्विनी	अश्विकु.	शुभम्	वैश्यः	ल.क्षि.	तिर्यक्	५०	तिलतण्डुल	अ.	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	अश्वमुख	दि.९	भोजन	९	११	१०	२०	मृत्युञ्जयमन्त्रजपः
भरणी	यमः	नाशकः	चाण्डालः	क्रू.उग्र.	अधः	२४	साक्षतमाषः	भ.	मध्य	प.	दूरेश्रवण	३	योनिस्वरूपम्	दि.११	गोऽन्नादि	०	८०	४०	११	यमायत्वेतिमन्त्रः
कृत्तिका	वह्नि	अशुभम्	ब्राह्मणः	मि.सा.	अधः	३०	माषः	कृ.	सुलो.	उ.	अलाभ	६	छुरकाकृतिः	दि.९	स्वर्णदान	९	११	१६	२८	अग्निमूर्धेतिमन्त्रः
रोहिणी	ब्रह्मा	शुभम्	शूद्रः	ध्रु.स्थिर.	ऊर्ध्वः	४०	गव्यम्	रो.	अन्ध	पू.	शीघ्रलाभ	५	शकटवत्	दि.७	घृतदान	७	९	१८	३०	ब्रह्मयज्ञेतिमन्त्रः
मृगशिरा	चन्द्रः	शुभम्	कृषकः	मृदुमै.	तिर्यक्	१४	गोघृतम्	मृ.	मन्द	द.	यत्नलाभ	३	मृगास्य	मा.१	तिलदान	९	५	७	१०	इमंदेवेतिमन्त्रः
आर्द्रा	शिवः	अशुभम्	क्रूरजातिः	ती.दा.	ऊर्ध्वः	२१	दुग्धम्	आ.	मध्य	प.	दूरेश्रवण	१	मणिसदृशम्	मृतिः	गोदान	०	१८	०	०	नमस्तेरुद्रमन्त्रः
पुनर्वसु	अदितिः	शुभम्	वैश्यः	चर.च.	तिर्यक्	३०	हरिणमांसम्	पुन.	सुलो.	उ.	अलाभ	४	गृहसदृशम्	दि.७	पित्तल	७	१५	२	२१	अदितिर्द्यौमन्त्रः
पुष्य	गुरुः	शुभम्	क्षत्रियः	ल.क्षि.	ऊर्ध्वः	२०	मृगारक्तम्	पुष्य	अन्ध.	पू.	शी.ला.	३	बाणाकृतिः	दि.७	-तैलान्न	७	७	१०	२१	बृहस्पतेतिमन्त्रः
श्लेषा	सर्पः	अशुभम्	चाण्डालः	ती.दा.	अधः	३२	पायसम्	अ.	मन्द	द.	य.ला.	५	चक्राकारम्	मृतिः	गोऽजानि	०	७	४१	०	नमोस्तुसर्पेभिमन्त्रः
मघा	पितरः	शोकदः	शूद्रः	क्रू.उग्र.	अधः	३०	चापमांसम्	म.	मध्य	प.	दूरेश्रवण	५	गृहसदृशम्	दि.२०	वस्त्राज्य	१५	७	१७	२०	पितृभ्यऽइतिमन्त्रः
पू.फा.	भगः	अशुभम्	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	अधः	२०	मृगमांसम्	पू.	सुलो.	उ.	अला.	२	मञ्चकाकृतिः	मृतिः	भोजन	०	१५	०	३०	[illegible]
उ.फा.	अर्यमा.	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर.	ऊर्ध्वः	१८	शशकमांसम्	उ.	अन्ध	पू.	शी.ला.	२	खट्वाकारम्	दि.७	अन्नदान	७	१४	७	६०	[illegible]
हस्त	सूर्यः	शुभम्	वैश्यः	ल.क्षि.	तिर्यक्	२१	साठी	ह	मन्द	द.	य.ला.	५	हस्ताकारम्	दि.१५	तिलदान	११	१७	१५	[illegible]	[illegible]
चित्रा	त्वष्टा	शुभम्	कृषकः	मृ.मै.	तिर्यक्	२०	प्रियंगु.	चि.	मध्य	प.	दूरेश्रव	१	मौक्तिकम्	दि.११	दुग्धदान	११	९	९	[illegible]	[illegible]
स्वाती	वायुः	शुभम्	क्रूरजातिः	च.च.	तिर्यक्	१४	अपूपम्	स्वा	सुलो.	उ.	अला.	१	प्रवालाकारम्	मृतिः	गो-घृत	६०	१७	३०	[illegible]	[illegible]
विशाखा	इन्द्राग्नि	अशुभम्	चाण्डालः	मि.सा.	अधः	१४	नानापक्षिणः	वि.	अन्ध	पू.	शी.ला.	४	तोरणसमम्	दि.१५	गो-स्वर्ण	१५	०	४	[illegible]	[illegible]
अनुराधा	मित्रः	शुभम्	शूद्रः	मृ.मै.	तिर्यक्	१०	सत्फलम्	अ.	मन्द	द.	य.ला.	४	बलिसदृशम्	स्थिरः	गो-घृत	६०	१२	३६	[illegible]	[illegible]
ज्येष्ठा	इन्द्रः	शुभम्	कृषकः	दा.ती.	तिर्यक्	१४	कूर्ममांसम्	ज्ये.	मध्य	प.	दूरेश्रव	३	कुण्डलीकृतिः	मृतिः	तिलदानं	५९	९	६	[illegible]	[illegible]
मूल	राक्षसः	क्षयः	क्रूरजातिः	दा.ती.	अधः	५६	सारिकमांसम्	मू.	सुलो.	उ.	अ.ला.	११	सिंहपुच्छवत्	दि.९	रौप्योपान	०	९	३५	६	[illegible]
पू.षा.	जलम्	धनहानिः	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	अधः	२४	गोधिकामांसम्	पू.	अन्ध	पू.	शी.ला.	२	गजदन्तम्	मृतिः	गोमुक्ता	०	१५	२५	१०	आपोहिष्ठेतिमन्त्रः
उ.षा.	विश्वदे.	हानिः	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर.	ऊर्ध्वः	२०	शल्वमांसम्	उ.	मन्द	द.	य.ला.	२	विमानसदृशम्	मास१	भोजन	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेतिमन्त्रः
श्रवण	विष्णु	वृद्धिः	चाण्डालः	च.च.	ऊर्ध्वः	१०	कृशरान्नम्	श्र.	सुलो.	उ.	अ.ला.	३	मञ्चकसदृशम्	दि.११	श्रीफल	६०	२४	६	९	[illegible]
धनिष्ठा	वसवः	शुभम्	कृषकः	च.च.	ऊर्ध्वः	१०	मुद्गमोदकम्	घ.	अन्ध	पू.	शी.ला.	४	मृदङ्गाकृतिः	दि.१५	अन्नान्न	१५	४	२०	२१	वसोः पवित्रेतिमन्त्रः
शतभिषा	वरुणः	शुभम्	क्रूरजातिः	च.च.	ऊर्ध्वः	१८	यवपिष्टम्	श.	मन्द	द.	य.ला.	१०	वर्तुलम्	दि.११	भोजनान्न	९	४५	३	२२	[illegible]तम्भेतिमन्त्रः
पू.भा.	अजैकच.	अशुभम्	ब्राह्मणः	क्रू.उग्र.	ऊर्ध्वः	१६	मत्स्यान्नम्	पू.	मध्य	प.	दूरेश्रव	२	मञ्चकारम्	मृतिः	भोजन	०	१२	२१	१८	[illegible]कपदोकमन्त्रः
उ.भा.	अहिर्बु.	शुभम्	क्षत्रियः	ध्रु.स्थिर.	ऊर्ध्वः	२४	चित्रितान्नम्	उ.	सुलो.	उ.	अलाभ	२	युग्मसदृशम्	दि.७	अन्नदान	१०	१	९	१५	अहिर्बुध्नेतिमन्त्रः
रेवती	पूषा.	शुभम्	शूद्रः	मृ.मै.	तिर्यक्	२०	दध्योदनम्	रे.	अन्ध	प.	शी.ला.	३२	मर्दलाकारम्	स्थिरः	वृषभदान	१८	१९	१९	२०	पूषन्तवव्रतेतिमन्त्रः

अथ रोगार्त्तस्येष्टकालवशाद्बाधा ज्ञानम्। तिथिंवारश्च नक्षत्र लग्नयामश्च संपुतम्। वसुभिस्तु हरेत्भागं शेषे बाधा नियोजयेत्।। हये ७ ऽग्नो ३ देवबाधा स्यात् पितरौ नेत्र दन्तिनः २।८ षट् चतुर्थे।। ६।४ मृतबाधा ग्रहाणा मेकपञ्चके १।५।। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीव मरणं वदेत्।। रामबाणरसाष्टौ च नन्दरुद्रश्च (३।५।६।८।९।११) जीवति। एक १ पछी २ युगा ४ सप्तदशा, ७।१० अर्को १२ नात्र जीवति।। अन्यदपि राजमार्तण्डे।। वारक्षश्चतिथिदिशा परिमिति संयोज्य नागैर्भजेल्लब्धांकेनफलं च नाग ८ नयने २ दीर्घ पितुर्नान्यथा।। सप्ते रामतिते ३ सुरस्य विदितं मर्क ६ च वेदे ४ तथा। प्रेतस्यापि च खेचरस्य विदितं चन्द्रे १ बाणाधिके ५।। लब्धांकं त्रि ३ गुणं तथा वसुयुतं [illegible] गुण्यन्ततः। सप्तान्येष्वधिकं यथा विधुमितं कौल्यश्च दोषं वदेत् साम्यं वन्यभवं च राज कुलजं स्याच्छजुजं पंक्तिजं शून्ये व्योमभवं तथास्य विविधोपायश्च शान्ति वदेत्। कौल्ये होमद्विजार्चनैः शुभकरं वाच्यं चतुष्कोण के। होमे वन्यभवे तिथिवरभर्वैर्भोग्यश्च वस्त्रेण वा।। राज्ये तीर्थ पदे तथा प्यरिकृतंशक्तिक्रियादानतो गायत्री जपतोहि पंक्ति विषये आकाशजी दीपतः।। सर्पदशने भेषजम्।। गौमूत्रेनरमूत्रर्वापुराणेन घृतेन वा। हरिद्रापानमात्रेण विषं हन्ति चराचरम्।। दश वर्षात्परं सर्पिः पुराणमिति कथ्यते। गोक्षीरे रजनीक्वाथं पिबेत्सर्व विषापहम्।।

सप्तमांश चक्रमिदम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	४ [illegible]
२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	८ [illegible]
३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	१२ [illegible]
४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	१७ [illegible]
५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	२१ [illegible]
६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ शु.	२५ [illegible]
७ शु.	२ शु.	९ गु.	४ सो.	११ श.	६ बु.	१ मं.	८ मं.	३ बु.	१० श.	५ र.	१२ गु.	३० ०

द्वादशांश चक्रमिदम्।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	कं.
मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	२	३०
शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	५	०
बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	शु.	शु.	७	३०
सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	मं.	बु.	१०	०
र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो	१२	३०
बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	१५	०
शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	१७	३०
मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	२०	०
गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	२२	३०
श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	२५	०
श.	गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श	२७	३०
गु.	मं.	शु.	बु.	सो.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	३०	०

वर्षमुंथानयनम् — गतवर्षु जन्मलग्नं संयोज्य १२ हृतेवर्षे मुंथा राशिस्स्यात् पञ्चाधिकारिणः।

१ जन्मलग्नपतिः
२ वर्षलग्नपतिः
३ त्रिराशिपतिः
४ मुंथापतिः
५ दिवारात्रिपः
६ राशिवत्सरपः

वर्षेश निर्णयः-

लग्नावलोको बलवांश्च वर्षपतिः।

अथैक नक्षत्रजनन शान्तिः।

प्रश्न- एक नक्षत्र में पिता पुत्र व पुत्री तथा सहोदर भाई व सहोदर बहिन या सहोदर भाई बहिन के जन्म लेने का क्या फल होता है?

उत्तर- इसमें से जो पहले पैदा हुआ रहता है उसका नाश होता है या दारुण कष्ट भोगना पड़ता है। परन्तु शान्ति कर देने से कल्याण हो जाता है।

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औद. योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	र.क्रा. द+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	गतिः क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२९	४७	१	गु.	४०	५६	रा.	१०	२५	उत्तराभाद्र	४४	३५	रा	११	५३	शुक्ल	४२	४५	रा.	११	९	किं.	१३	६	बव	४०	५६	छत्र	१८	१६	४	२७				६	३	५	५७	१	१४	११	३	६	५९	४३	+	६	६	५०	चान्द्र संवत्सर,बसन्त नवरात्रारम्भः।शैलपुत्री दर्शनम्।कलश स्थापनम्। ध्वजारोपण [illegible] (क)
२९	५१	२	शु.	३५	५३	रा.	८	२३	रेवती	४१	१८	रा	१०	३३	ब्रह्म	३५	४५	रा.	८	२०	वा.	८	२४	को	३५	५३	श्रीवत्स	१९	१७	५	२८	मेष	४१	१८	६	२	५	५८	१	५०	११	४	६	५९	४१	+	६	७	५३	मेष राशिः ४१।१८ (रा.१०।३३)। पंचक (पचखा) समाप्ति। चन्द्र दर्शनम् मु० [illegible] (ख)
२९	५५	३	श.	३०	११	सा.	६	९	अश्विनी	३७	३१	रा	९	१	ऐन्द्र	२८	२१	दि.	५	२१	तै.	३	६	ग.	२०/५७	११/२२	सौम्य	२०	१८	६	२९				६	१	५	५९	०	२८	११	५	६	५९	३९	+	६	८	५६	भद्रा घ.५७।२२(रा.४।४८) उ.।मु. जिलहिज १२ हिजरी सन् १४१९। चित्रघण्टा दर्शनम् [illegible] सौभाग्य (ग)
२९	५९	४	र.	२४	२५	दि.	३	४६	भरणी	३३	२७	रा	७	२३	वैधृति	२०	४१	दि.	२	१६	वि.	२४	२५	बव	५१	२३	कालदण्ड	२१	१९	७	३०	वृष	४७	२४	६	०	६	०	०	४	११	६	५	५९	३७	+	५	१०	०	वृष राशिः ४७।२४ (रा.१२।५८)। भद्रा घ.२४।२५ (दि.३।४६) या.। कृष्माण्डादर्शनम् [illegible] चतुर्थी ४ व्रतम्। [illegible] (घ)
३०	३	५	सो	१८	२१	दि.	१	१९	कृत्तिका	२९	१७	दि.	५	४२	विष्कुंभ	१२	५४	रा.	११	९	वा.	१८	२१	को.	४५	२०	स्थिर	२२	२०	८	१				५	५९	६	१	०	२३	११	७	५	५९	३५	+	५	११	३	स्कन्द माता दर्शनम्। श्रीपञ्चमी ५। श्रीरामराज्य महोत्सवः। मीनावतारः ५। कल्पा[illegible] (ङ)
३०	७	६	मं.	१२	१९	दि.	१०	५५	रोहिणी	२५	१५	दि.	४	५	प्रीति	५/५२	११/२७	रा.	८/५	१/१	तै.	१२	१९	ग.	३९	३४	मातंग	२३	२१	९	२	मिथुन	५३	२४	५	५९	६	१	०	४५	११	८	५	५९	३३	+	५	१२	२	मिथुन राशिः ५३।२४ (रा.३।२१) कात्यानी देवी दर्शनम्। श्रीस्कन्द षष्ठी, रवि षष्ठी [illegible] (च)
३०	११	७	बु.	६	५०	दि.	८	४२	मृगशिरा	२१	३३	दि.	२	३५	सौभाग्य	५०	३२	रा.	२	११	व.	६	५०	वि.	३४	१६	अमृत	२४	२२	१०	३				५	५८	६	२	१	९	११	९	४	५९	३१	+	४	१२	५०	भद्रा घ.६।५० (दि.८।४२) उ. घ.३४।१६ (रा.७।४०)या.। काल रात्रि दर्शनम प्रातः [illegible] (छ)
३०	१४	८	गु.	१/५५	४२/११	प्रा.	६/४	३८/५०	आर्द्रा	१८	२४	दि.	१	११	शोभन	४३	५४	रा.	११	३१	बव.	१	४२	बा.	२९/५७	२७/१३	काण	२५	२३	११	४				५	५७	६	३	१	३३	११	१०	४	५९	२८	+	४	१	३५	महागौरी दर्शनम्। भवान्युत्पत्तिः ८। तारा ८। क्षयवती नवम्या श्रीराम नवमी ९ व्रतम् [illegible] (ज)
३०	१८	१०	शु.	५३	३५	रा.	३	२२	पुनर्वसु	१६	११	दि.	१२	२४	अतिगण्ड	३७	५५	रा.	९	६	तै.	२५	२४	ग.	५३	३५	लुम्ब	२६	२४	१२	५	कर्क	१	४४	५	५६	६	४	१	५६	११	११	३	५९	२६	+	४	२	१५	कर्क राशिः १।४४ (प्रा.६।३८)। नवरात्र व्रतस्य पारणा। दशम्यामेवनवरात्रव्रतीनाम [illegible]
३०	२२	११	श.	५०	५६	रा.	२	१८	पुष्य	१४	२६	दि.	११	४२	सुकर्मा	३२	४७	रा.	७	३	व.	२२	१५	वि.	५०	५६	मित्र	२७	२५	१३	६				५	५६	६	४	२	२०	११	१२	३	५९	२४	+	४	२	५०	भद्रा घ.२२।१५(दि.२।५०)उ. घ.५०।५६(रा.२।१८)या.। कामदा एकादशी व्रत ११ [illegible] (झ)
३०	२५	१२	र.	४९	२८	रा.	१	४२	श्लेषा	१३	५४	दि.	११	२९	धृति	२८	२६	रा.	५	१७	बव.	२०	१२	वा.	४९	२८	श्रीवत्स	२८	२६	१४	७	सिंह	१३	५४	५	५५	६	५	२	४७	११	१३	२	५९	२२	+	४	३	३६	सिंह राशिः १३।५४ (दि.११।२९)। श्रीविष्णुदमनकोत्सवः। भीम चण्डी विन्ध्याचलो [illegible]
३०	२९	१३	सो.	४९	१५	रा.	१	३६	मघा	१४	३४	दि.	११	४४	शूल	२५	६	रा.	३	५६	को.	१९	२१	तै.	४९	१५	ध्वांक्ष	२९	२७	१५	८				५	५४	६	६	३	८	११	१४	१	५९	२०	+	३	४	१८	सोम प्रदोष व्रतम् १३ पुत्रार्थीभिर्विधेयम्। श्रीमहावीर जयन्ती १३ (जैन)। मु.इदुज्जुहा [illegible]
३०	३३	१४	मं.	५०	१९	रा.	२	१	पूर्वाफाल्गुन	१६	३०	दि.	१२	२९	गण्ड	२२	४३	रा.	२	५८	ग.	१९	४७	व.	५०	१९	धूम्र	३०	२८	१६	९	कन्या	३२	१८	५	५३	६	७	३	३१	११	१५	१	५९	१७	+	३	४	५७	कन्या राशिः३२।१८ (रा.६।४८)। भद्रा घ.५०।१९ (रा.२।१) उ.। श्रीशिव नृसिंह व्रतम् [illegible] (ञ)
३०	३७	१५	बु.	५२	४०	रा.	२	५७	उत्तराफाल्गुन	१९	४२	दि.	१	४६	वृद्धि	२१	२६	रा.	२	२७	वि.	२१	२९	बव	५२	४०	प्रवर्धमान	३१	२९	१७	१०				५	५३	६	७	३	५६	११	१६	०	५९	१४	+	२	+	+	भद्रा घ.२१।२९ (दि.२।२९) या.। स्नान दान व्रतादौ चैत्री पूर्णिमा १५। पुण्यतमा। श्री[illegible] सौभाग्यप्रदम् (ट)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	गु.	११	६	२५	०	६	१७	२४	२	व२	०	११	६	४३	४५	५२	३३	११	१४	३३	४१	१३	४५	०	३	५४	१४	७२	३६	०	६	१४	७	७	५	३	२६	३०	१९
२	शु.	११	२०	३५	३०	६	१७	२२	२	४	१०	११	५	५१	१२	५४	३१	११	१४	४७	२६	१३	४०	०	५	६	५०	७२	२८	०	६	२१	१२	७	१०	३	२६	२७	८
३	श.	०	४	४२	१७	६	१७	१७	५२	७	१०	११	४	५६	४१	५५	१८	११	१५	१	६	१३	४०	०	६	१९	१८	७२	१०	०	६	२८	२२	७	१२	३	२६	२३	५७
४	र.	०	१८	५१	४३	६	१७	१०	४२	१०	४०	११	४	१	२३	५५	०	११	१५	१४	४६	१३	४०	०	७	३१	२८	७१	५०	०	६	३५	३४	७	१३	३	२६	२०	४६
५	सो.	१	३	१	५२	६	१७	०	२	११	३५	११	३	६	२३	५३	१८	११	१५	२८	२६	१३	४०	०	८	४३	१८	७१	५०	०	६	४२	४७	७	१५	३	२६	१७	३५
६	मं.	१	१७	६	५०	६	१६	४८	२७	११	५१	११	२	१३	५	५०	५४	११	१५	४२	६	१३	३८	०	९	५५	८	७१	३३	०	६	५०	२	७	१७	३	२६	१४	२४
७	बु.	२	१	१४	८	६	१६	३६	३६	१२	०	११	१	२२	११	४७	३२	११	१५	५५	४६	१३	३८	०	११	६	४१	७१	२१	०	६	५७	१९	७	२०	३	२६	११	१३
८	गु.	२	१५	१२	२१	६	१६	२४	३६	१२	१२	११	०	३४	३९	४३	२५	११	१६	९	२२	१३	३८	०	१२	१८	२	७१	९	०	७	४	३९	७	२२	३	२६	८	२
१०	शु.	२	२८	५८	७	६	१६	१२	२४	१२	२८	१०	२९	५१	१४	३८	४३	११	१६	२३	०	१३	३८	०	१३	२९	११	७०	५४	०	७	१२	१	७	२४	३	२६	४	५१
११	श.	३	१२	३१	४७	६	१५	५९	५६	१२	३६	१०	२९	१२	३१	३३	३३	११	१६	३६	३८	१३	३५	०	१४	४०	५	७०	२०	०	७	१९	२५	७	२६	३	२६	१	४०
१२	र.	३	२६	५	३६	६	१५	४७	२०	१३	१०	१०	२८	३८	५८	२८	४	११	१६	५०	१३	१३	३५	०	१५	५०	२५	७०	५	०	७	२६	५१	७	२९	३	२५	५८	२९
१३	सो.	४	९	१७	१८	६	१५	३४	१०	१३	३५	१०	२८	१०	५४	२२	२६	११	१७	३	४८	१३	३५	०	१७	०	३०	६९	५०	०	७	३४	२०	७	३१	३	२५	५५	१८
१४	मं.	४	२२	१४	४७	६	१५	२०	३५	१४	४	१०	२७	४८	२८	१६	३०	११	१७	१७	२३	१३	३०	०	१८	१०	२०	६९	५०	०	७	४१	५१	७	३३	३	२५	५२	७
१५	बु.	५	४	५६	४०	६	१५	६	३१	१४	२०	१०	२७	३१	५८	१०	२५	११	१७	३०	५३	१३	३०	०	१९	१०	१०	६९	४१	०	७	४९	२४	७	३४	३	२५	४८	५६

फलम्–१८ मार्च गुरुवार से नव संवत्सर २०५६ प्रारम्भ हो रहा है। माना जाता है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी अतएव इसी मान्यता के अनुसार भारतीय नवसंवत्सर का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। इसी के साथ वासन्तिक नवरात्र भी प्रारम्भ हो जाता है। संवत्सर का प्रारम्भ जिस दिन से होता है वही वर्षेश अथवा राजा होता है। इस प्रकार बृहस्पति इस वर्ष के राजा हुए। नवमी तिथि का क्षय होने से नवरात्र आठ दिनों का एवं पक्ष १४ दिन का ही है। २४ मार्च बुधवार को सबेरे ८।४२ बजे तक सप्तमी है तदुपरान्त अष्टमी लग जायेगी अतएव **महाष्टमी का व्रत २४ मार्च** बुधवार को ही किया जायेगा। **महानवमी एवं श्री रामनवमी का मान** क्षयवती तिथि **नवमी में २५ मार्च गुरुवार** को होगा। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम का जन्मोत्सव सर्वत्र विशेषकर अयोध्या में मध्यान्ह बेला एवं कर्क लग्न में धूम-धाम के साथ मनाया जायेगा। अयोध्या में सरयू स्नान, परिक्रमा, श्रीराम जन्म भूमि का दर्शन एवं मेला से वातावरण उल्लासमय रहेगा। नवरात्र व्रत की पारणा एवं नवरात्र की समाप्ति २६ मार्च शुक्रवार को होगी। **कामदा एकादशी व्रत २७ मार्च शनिवार** को है। २८ मार्च रविवार को भीमचण्डी विन्ध्याचली भगवती का दर्शन करने का विशेष महात्म्य है। पुत्र की कामना से सोम प्रदोष का व्रत एवं जैन समुदाय का सबसे महत्वपूर्ण पर्व श्री महावीर जयन्ती का मान २९ मार्च सोमवार को होगा। २९ मार्च सोमवार को ही मुसलिम पर्व इदुज्जुहा (बकरीद) भी है। स्नान-दान-व्रत सहित **चैत्री पूर्णिमा ३१ मार्च बुधवार** को है। मतान्तर से दक्षिण भारत में प्रसिद्ध **हनुमज्जयन्ती ३१ मार्च बुधवार** को मनाई जायेगी। काशी के विश्व प्रसिद्ध एवं सिद्धपीठ संकट मोचन मन्दिर प्रांगण में हनुमज्जयन्ती से सम्बन्धित विविध समारोह उत्साह पूर्वक मनाया जायेगा। उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य पक्षारम्भ १८ मार्च गुरुवार को दिन ११।१८ बजे से आवेगा एवं रेवती नक्षत्र का सूर्य पक्षान्त ३१ मार्च बुधवार रात ९।५३ बजे से आवेगा। शुक्रवार को चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव स्थिर किन्तु झुकाव तेजी का रखेगा। पक्ष के आरम्भ से ही रस पदार्थ, धान्य, तेल, आदि में तेजी एवं पक्षान्त में जलीय पदार्थ, मोती, रत्न, फल-फूल सुगन्धित पदार्थ को क्षति पहुँचने के योग मिल रहे हैं। गुरु अस्त होकर मुहूर्त्त का निषेध। आँधी-तूफान, ओला पत्थर से खड़ी फसल को क्षति होगी।

पं. १ चैत्र शुक्ल ८ गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २२५८
अयनांशाः २३/४९/५१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	६	११	११	०	०	३	९
१०	१५	१६	०	१६	१२	७	२६	२६
४	१२	२४	३४	९	१८	४	८	८
१३	२१	३६	३९	२२	२	३९	२	२
५९	८४४	१२	४३	१३	७१	७	३	३
२८	११	१२ व	२५ व	३८	९	२२	११	११

१ शु.श. | १२ सू.बु.गु. | ११ | २ | १० के. | ३ चं. | ९ | ६ | ४ रा. | ५ | मं.७ | ८

भौमादीनां चार-

भौमः-(वक्री)स्वात्यां तुलाराशौ।

बुधः-(वक्री) मीन राशौ। तिथि८ गुरुतः वक्रगत्या कुम्भ राशौ घ.५५।५

गुरुः-उत्तराभाद्रपदायां ४ चरणे मीन राशौ। तिथि ११ शनितः रेवत्यां घ.१४।३६।

शुक्रः-मेष राशौ।

शनिः-अश्विन्यांरचरणेमेषराशौ। तिथि ४ रवितः अश्विन्यां ३ चरणे घ.३८।५।

राहुः-श्लेषायां ३ चरणे।

केतुश्च-धनिष्ठायां १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ सो. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	१० शु. घं.	मि.	११ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ सो. घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	१५ बु. घं.	मि.
मीन	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६
मेष	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१५
वृष	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	२०	१०	१६	१०	१२
मिथुन	१	१६	१	१२	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	[illegible]	१२	[illegible]
कर्क	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	[illegible]	२	[illegible]
सिंह	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१३	५	९	५	५	५	१	४	[illegible]
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कन्या	८	१	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३७	७	३३	७	२९	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	[illegible]
तुला	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	[illegible]	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६
वृश्चिक	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५९	११	५५	११	५१	११	४७	११	४३
धनु	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	१२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८
मकर	४	२४	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३
कुंभ	५	५६	५	५२	५	४८	५	५४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ गुरुवासरे उत्तराभाद्रपदायां गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्त, प्रसूतिस्नानं जातकर्म नामकरणं, विपणि-व्यापारः विक्रयः, नव[illegible]धारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं धान्यच्छेदनं, धान्य[illegible]पनं, चूल्हिकास्थापनं, वृक्षारोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्र[illegible]णं निर्माणं च, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदनपत्रलेखनं, इष्टि[illegible]निर्माणं अधिकारीणां दर्शनं, जलाशयारम्भः, नौ[illegible]यानानिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः, नूतनबध्यापाककर्म।

तिथि २ शुक्रे रेवत्यां-जातकर्म, अन्नप्राशनं, अक्षरारम्भः, विपणि-व्यापार क्रयः, गवांक्रय विक्रयः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, कणमर्दनं, धान्यस्थापनं, लतावृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदनपत्रलेखनं, भूमिक्रय, जलाशयारम्भः, संवारम्भः नौकाजलयानानिर्माणं।

तिथि ३ शनौ अश्विन्यां-विपणि-व्यापारः क्रयः गवांक्रय विक्रय बीज-वपनं, इष्टिका-निर्माणं, ऋणग्रहणं, ऋणदानं।

तिथि ४ रवौ भरण्यां-इष्टिकादहनं, रोगविमुक्तस्नानं उपकरणं।

तिथि ५ सोमे कृत्तिकायां- धान्यच्छेदनं, कन्यावरण, वर-वरणं (विप्राणां)

तिथि ६ भौमे रोहिण्यां-प्रसूतिस्नानं, रक्तवस्त्र प्रवालरत्नधारणं।

तिथि ७ बुधे मृगशिरायां-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरण अन्नप्राशनं, विद्यारम्भः वर-वरणं कन्यावरणंच। विप्राणां। विपणि-व्यापार विक्रयः गवांक्रय विक्रयः हलप्रवहणं, धान्यछेदनं धान्यस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः जलाशयारम्भः, संवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ८।९ गुरौ आर्द्रायां-रोगविमुक्तस्नानं. रिक्तादोषश्च।

तिथि १० शुक्रे पुनर्वसौ-नामकरणं, अक्षरारम्भः विद्यारम्भः गवांक्रय विक्रयः, नववस्त्रधारणं, अलंकार निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, धान्यस्थापनं, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, ऋणग्रहणं, भूमिक्रयः, ऋणदानं नौकाजलयान निर्माणं।

तिथि ११ शनौ पुष्ये- विपणि व्यापारः, गवांक्रय विक्रयः बीजवपनं, इष्टिकानिर्माणं, ऋणग्रहणं, ऋणदानं।

तिथि १२ रवौ श्लेषायां-विद्यारम्भः।

तिथि १३ सोमे मघायां-[illegible]कर्म, शय्यासनाद्युपभोगः, जलाशयारम्भः

तिथि १४ भौमे पूर्वाफाल्गुन्यां- प्रसूतिस्नानं (आवश्यकं) इष्टिकादहनं, रोग[illegible]स्नानं, रिक्तादोषः।

तिथि १५ बुधे उत्तराफाल्गुन्यां-जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं। विपणि-व्यापार[illegible] नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यछेदनं, कणमर्दनं, धान्य[illegible]नं, चूल्हिकास्थापनं, वृक्षारोपणं, भृत्यकर्मारम्भः आवेदनपत्रलेखनं, अधि[illegible] दर्शनं, जलाशयारम्भ शिल्पविद्यारम्भः।

(क) [illegible] नन्दन नाम संवत्सर [illegible]। झूले लाल जयन्ती। गुड़ी पड़वा। [illegible] ⊙ उत्तराभाद्रपद [illegible] (ख) घ.४१।१८ (रा.१०।३३) या.। (ग) [illegible] विनाशको रवियोगः [illegible] (घ) [illegible] (ङ) [illegible] रवियोगः [illegible] राष्ट्रीय चैत्रमास शाके १९२१ प्रारम्भः। (छ) [illegible] (ज) [illegible] ओली प्रारम्भ (जैन)। (ज) जन्म भूमि दर्शनम्। सरयू स्नानम्। श्रीदुर्गा नवमी [illegible] पूर्वदिशायाम् बुधोदयः। [illegible] (दि.१।१९) उ.। रवियोग घ.१८।२४ (दि.१।१९) उ.। अन्नपूर्णा परिक्रमा [illegible] (झ) (दि.११।४२) या.। यांव (मुंडे) [illegible] (ञ) [illegible] (ट) सर्वदवदमनकोत्सवः। ओली समाप्ति (जैन) मन्वादि १५। वैशाख स्नान, व्रत नियम संयमारम्भः। ⊙रेवती नक्षत्रे रविः घ.४०।१० (रा.९।५३)। सर्वार्थसिद्धियोग घ.१९।४२ (दि.१।४६) उ.।

राशि–फलम्

मेष	धननाशः
वृष	सुखार्थ लाभः
मिथुन	रोग-हानिः
कर्क	शत्रु कष्टं
सिंह	सुखं, श्रीः
कन्या	हानिः कष्टं
तुला	पीड़ा भयं
वृश्चिक	रोगं शोकं
धनु	लाभः सुखं
मकर	सुख भोगं
कुम्भ	सुखं
मीन	भयं, पापं

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, वैशाख कृष्ण पक्षः।

दिनांक १ अप्रैल - १६ अप्रैल १९९९ ई. (राष्ट्रीय चैत्र ११ - २६)
सौम्यायनं याम्यगोलः मेषार्कस्त सौम्यगोलः, वसन्तऋतुः।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	सौ.	श.	चन्द्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क.	वि.	रे. घं.	वि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	विवरण
३०	४२	१	गु.	५६	११	रा.	४	२०	हस्त	२४	०	दि.	३	३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	दि.	२	१६	वा.	२४	२५	को.	५६	११	राक्षस	१	१	१८	११	तुला	५६	४१	५	५२	६	८	४	१९	११	१६	५९	४४	५९	११	+	१	६	४०	तुलाराशिः ५६।४१ (रा.४।३२)। कच्छपावतारः १। फसली वैशाख मासारम्भः। यावन्मासं प्रपा (पौसरा) दानम्, धर्म घटादिदानम्। तुलसी पत्रेण श्रीविष्णु पूजनम्। अश्वत्थ (पीपल)(क)
३०	४६	२	शु.	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	२९	२३	रा.	५	३६	[illegible]	[illegible]	२३	दि.	२	२४	तै.	२८	२२	ग.	६०	०	मुसल	२	२	१९	१२				५	५१	६	९	४	४२	११	१७	५८	५५	५९	९	+	१	७	३१	गुड फ्राइडे (ईसाई)।' (क) वा नीम्ब मूल जलदानम् विद्यारोग्यार्थ तिलक व्रत। तैलाभ्यग दैनिक स्नानम्। युगादिः १। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.२४।० (दि.३।३८) या.।
३०	४९	२	श.	०	३३	प्रा.	६	३	स्वाती	३५	२९	रा.	८	२	[illegible]	[illegible]	२५	दि.	२	४८	ग.	०	३३	व.	३३	५	सिद्धि	३	३	२०	१३				५	५०	६	१०	५	५	११	१८	५८	४	५९	७	+	१	८	२२	भद्रा घ.३३।५ (रा.७।४) उ.। इस्टर सैटरडे (ईसाई)। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.३५।२९ (रा.८।२) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.०।३३ (प्रा.६।३) उ. घ.३५।२९ (रा.८।२) या.।
३०	५३	३	र.	५	३६	दि.	८	३	विशाखा	४२	३	रा.	१०	३८	वज्र	२३	४९	दि.	३	२१	वि.	५	३६	बव.	३८	१३	उत्पात	४	४	२१	१४	वृश्चिक	२५	२५	५	४९	६	११	५	२९	११	१९	५७	११	५९	५	+	१	९	१३	वृश्चिक राशिः २५।२५ (दि.३।५९)। भद्रा घ.५।३६ (दि.८।३) या.। इस्टर सनडे (ईसाई)। रविवती सकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.९।२३) बादले चन्द्राय अर्घ्यम्।
३०	५७	४	सो.	१०	५०	दि.	१०	८	अनुराधा	४८	३४	रा.	११	१४	सिद्धि	२५	२२	दि.	३	५७	वा.	१०	५०	को.	४३	२३	मानस	५	५	२२	१५				५	४८	६	१२	५	५१	११	२०	५६	१६	५९	३	+	१	१०	४	सर्वार्थसिद्धियोगः घ.४८।३४ (रा.११।१४) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.१०।५० (दि.१०।८) उ. घ.४८।३४ (रा.११।१४) या.। ( ) खरमास समाप्तिः बंगला सन् १४०६ प्रारम्भः। (-)
३१	०	५	मं.	१५	५६	दि.	१२	१०	ज्येष्ठा	५४	४१	रा.	३	४०	व्यतिपात	२६	४२	दि.	४	२९	तै.	१५	५६	ग.	४८	९	मुद्गर	६	६	२३	१६	धनु	५४	४१	५	४८	६	१२	६	१४	११	२१	५५	१९	५९	१	+	१	१०	५४	धनु राशिः ५४।४१ (रा.३।४०)। दोष संघ विनाशका रवियोगः घ.५४।४१ (रा.३।४०) उ.। (ख) विनाशको रवियोगः यावद्दिनम्।
३१	४	६	बु.	२०	२३	दि.	१	५६	मूल	६०	०	स	म	स्त	वरीयान्	२७	३४	दि.	४	४९	व.	२०	२३	वि.	५२	११	ध्वज	७	७	२४	१७				५	४७	६	१३	६	३७	११	२२	५४	२०	५८	५९	+	०	११	४५	भद्रा घ.२०।२३ (दि.१।५६) उ. घ.५२।११ (रा.२।३९) या.। कुलाकुलगणः दुर्लभ सन्धिकर योगः घ.२०।२३ (दि.१।५६) या.। यात्रायाम् निषिद्ध यमघण्ट योगः यावद्दिनम्। दोषसंघ(ख)
३१	७	७	गु.	२३	५९	दि.	३	२२	मूल	०	४	प्रा.	५	४८	परिघ	२७	४०	दि.	४	५०	व.	२३	५९	वा.	५५	११	धूम्र	८	८	२५	१८				५	४६	६	१४	७	०	११	२३	५३	१९	५८	५७	-	०	१२	३४	रवियोगः घ.०।४ (प्रा.५।४८) या.। (ङ) सत्तू संक्रान्तिः। दिनस्य पूर्वार्ध पुण्यकालः। वैशाखी पर्वः। हरद्वारे, काश्यां प्रयाग संगमे स्नानम्। सत्तू, जलकुम्भादिदानम्। सौम्यगोलः ( )
३१	१०	८	शु.	२६	२३	दि.	४	१८	पूर्वाषाढ़ा	४	२२	दि.	७	३०	शिव	२६	५३	दि.	४	३०	को.	२६	२३	तै.	५६	५९	प्रवर्धमान	९	९	२६	१९	मकर	२०	१०	५	४५	६	१५	७	२१	११	२४	५२	१६	५८	५५	-	०	१	२२	मकर राशिः२०।१०(दि.१।४९)। श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्। पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम्। स्थायी (मुद्दालह) जयद् योगः घ.४।२२(दि.७।३०) या.। (-) बहाग बिहू (आसाम)।
३१	१४	९	श.	२७	३६	दि.	४	४७	उत्तराषाढ़ा	७	३३	दि.	८	४६	सिद्ध	२५	१०	दि.	३	४९	ग.	२७	३६	व.	५७	३२	राक्षस	१०	१०	२७	२०				५	४५	६	१५	७	४४	११	२५	५१	११	५८	५३	-	१	२	८	भद्रा घ.५७।३२ (रा.४।४६) उ.। चण्डिका नवमी ९। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.७।३३ (दि.८।४६) उ.। शनि-रिक्ता समायोगे सिद्ध योगः घ.२७।३६ (दि.४।४७) या.। यायि (मुद्दई) (ग)
३१	१७	१०	र.	२७	२८	दि.	४	४३	श्रवण	९	२७	दि.	९	३१	साध्य	२२	२६	दि.	२	४२	वि.	२७	२८	बव.	५६	४७	गद	११	११	२८	२१	कुम्भ	३९	४६	५	४४	६	१६	८	७	११	२६	५०	४	५८	५१	-	१	२	५३	कुम्भ राशिः ३९।४६ (रा.९।३८)। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा घ.२७।२८ (दि.४।४३) या.। (ग) जयद् योगः घ.७।३३ (दि.८।४६) या.।
३१	२०	११	सो.	२६	६	दि.	४	१०	धनिष्ठा	१०	५	दि.	९	४६	शुभ	१८	३८	दि.	१	११	वा.	२६	६	को.	५४	४८	शुभ	१२	१२	२९	२२				५	४४	६	१६	८	३०	११	२७	४८	५५	५८	४९	-	१	३	३७	वरुथिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। यायि (मुद्दई) जयद् योग घ.१०।५ (दि.९।४६) या.। (घ) प्राच्या दिशि ७।५० वादने।
३१	२३	१२	मं.	२३	३१	दि.	३	१७	शतभिषा	९	३३	दि.	९	३२	शुक्ल	१३	५६	दि.	११	१७	तै.	२३	३१	ग.	५१	४४	मृत्यु	१३	१३	३०	२३	मीन	५३	२३	५	४३	६	१७	८	५१	११	२८	४७	४४	५८	४७	-	२	४	२०	मीन राशिः५३।२३(रा.३।४)। भौम प्रदोष व्रतम् १२ ऋणापकर्णायश्रयस्करम्। शुभाशुभत्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः घ.९।३३(दि.९।३२) उ. घ.२३।३१ (दि.३।१७) या.। शनि अस्तः(घ)
३१	२६	१३	बु.	१९	५८	दि.	१	४२	पूर्वाभाद्र	७	५९	दि.	८	५५	ब्रह्म	८	३२	दि.	९	७	व.	१९	५८	वि.	४७	४४	पद्म	१४	१४	३१	२४				५	४३	६	१७	९	१०	११	२९	४६	३१	५८	४५	-	२	५	३	भद्रा घ.१९।५८ (दि.१।४२) उ. घ.४७।४४ (रा.१२।४९) या.। मास शिवरात्रि व्रतम् १३। ☉ स. अश्विन्यां मेष राशौ रवि घ.२३।४४ (दि.११।२३) मु.४५ समर्घताकरम्। (ङ)
३१	३१	१४	गु.	१५	३०	दि.	११	५४	उत्तराभाद्र	५	३८	दि.	७	५७	ऐन्द्र	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	श.	१५	३०	च.	४२	५६	छत्र	१५	१५	१	२५				५	४२	६	१८	९	३०	०	०	४५	१६	५८	४३	-	२	५	४७	सौर वैसाख मासारम्भः। श्राद्धादौ अमा ३०। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.५।३८ (दि.७।५७) उ.। (च) [illegible] सुभिक्ष च प्रजा सुखम्।
३१	३४	३०	शु.	१०	२२	दि.	९	५०	रेवती	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	विष्कुंभ	४८	१९	रा.	१	१	ना.	१०	२२	कि.	३७	३३	श्रीवत्स	१६	१६	२	२६	मेष	२	२७	५	४१	६	१९	९	४८	०	१	४३	५९	५८	४०	-	२	+	+	मेष राशिः२।२७(प्रा.६।४०)। पंचक (पचखा) समाप्तिः। स्नानदानादौ अमावस्या ३०। सर्वार्थऽमृतसिद्धियोगः [illegible] या. तदुपरि सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। शुभ-(च)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	गु.	५	१७	५३	४८	६	१४	५२	११	१८	३९	१०	२७	२२	३३	५	१०	११	१७	४४	२३	१३	२२	०	२०	११	५१	६१	२०	०	७	५६	५८	७	३६	३	२५	४५	४६
२	शु.	६	०	९	२७	६	१४	३७	३२	१५	०	१०	२७	१६	२३	मा०	३०	११	१७	५८	४५	१३	२२	०	२१	२१	११	६१	७	०	८	४	३४	७	३८	३	२५	४२	३५
२	श.	६	१२	१७	४०	६	१४	२२	३२	१५	२८	१०	२७	२३	५३	१	२५	११	१८	११	७	१३	२२	०	२२	३८	१८	६१	०	०	८	१२	१२	७	४०	३	२५	३९	२४
३	र.	६	२४	२०	५६	६	१४	७	४	१५	३०	१०	२७	३३	१८	१३	१८	११	१८	२४	२९	१३	२२	०	२३	४७	१८	६०	५०	०	८	१९	५२	७	४२	३	२५	३६	१३
४	सो.	७	६	२२	३८	६	१३	५०	४८	१८	२८	१०	२७	४६	३६	१७	३०	११	१८	३७	५१	१३	२०	०	२४	५६	८	६०	५०	०	८	२७	३४	७	४४	३	२५	३३	२
५	मं.	७	१८	२१	१३	६	१३	३२	३०	१९	११	१०	२८	४	६	२१	१०	११	१८	५१	११	१३	२०	०	२६	४	५८	६०	४८	०	८	३५	१८	७	४५	३	२५	२९	५१
६	बु.	८	०	५५	५१	६	१३	१२	१९	२०	४५	१०	२८	२५	२६	२६	४२	११	१९	४	३१	१३	१३	०	२७	१३	४६	६०	४८	०	८	४३	३	७	४६	३	२५	२६	४०
७	गु.	८	१३	१९	५६	६	१२	५१	३४	२२	३०	१०	२८	५१	५८	३०	१३	११	१९	१७	४४	१३	१३	०	२८	२२	३४	६०	४८	०	८	५०	४९	७	४७	३	२५	२३	२९
८	शु.	८	२५	४७	६	६	१२	३०	४	२२	०	१०	२९	२२	११	३४	३१	११	१९	३०	५७	१३	१०	०	२९	३१	२२	६०	४५	०	८	५८	३६	७	४८	३	२५	२०	१८
९	श.	९	८	२९	२२	६	१२	८	४	२३	२८	१०	२९	५६	४२	३७	१५	११	१९	४४	७	१३	१०	१	०	४०	७	६०	४५	०	९	६	२४	७	४९	३	२५	१७	७
१०	र.	९	२०	२६	१०	६	११	३४	३६	२४	४०	११	०	३३	५७	४०	१२	११	१९	५७	१७	१३	६	१	१	४८	५२	६०	४५	०	९	१४	१३	७	५०	३	२५	१३	५६
११	सो.	१०	३	३८	५७	६	११	९	५६	२५	४०	११	१	१४	९	४३	१५	११	२०	१०	२३	१३	६	१	२	५७	३७	६०	४१	०	९	२२	३	७	५१	३	२५	१०	४५
१२	मं.	१०	१७	४	२८	६	१०	४४	६	२६	२०	११	१	५७	२४	४५	३६	११	२०	२३	२९	१३	२	१	४	६	१८	६०	४१	०	९	२९	५४	७	५२	३	२५	७	३४
१३	बु.	११	०	४२	३९	६	१०	१७	४६	२६	५६	११	२	४३	०	५०	१०	११	२०	३६	३१	१२	५०	१	५	१४	५९	६०	४०	०	९	३७	४६	७	५३	३	२५	४	२३
१४	गु.	११	१४	३०	२५	६	९	५०	५०	२७	२२	११	३	३३	१०	५४	२८	११	२०	४९	३१	१२	४१	१	६	२३	३९	६०	४०	०	९	४५	३९	७	५४	३	२५	१	१२
३०	शु.	११	२९	३५	८	६	९	२३	२८	२८	०	११	४	२७	३८	५७	३०	११	२१	२	२	१२	४१	१	७	३२	१९	६०	४०	०	९	५३	३३	७	५५	३	२४	५८	१

फलम्–द्वितीया की वृद्धि के कारण यह पक्ष १६ दिन का है। वैशाख मास में प्रातः उठकर स्नान करने, नीम-पीपल-वृक्ष की जड़ में जल देने तथा संयम-नियम का पालन करने से अनेक रोग, (चर्म रोग) का शमन होता है। इस मास में पौसरा चलवाकर प्यासे लोगों को पानी पिलाने से पुण्यफल की प्राप्ति होती है। अभाव में जलपूर्ण घड़े का दान करें। वैशाख मास के देवता मधुसूदन की प्रसन्नता के लिये सुगन्धित वस्तुयें, फूलों की माला और गाय का दान करना चाहिये। इसाई जगत का विश्व प्रसिद्ध पर्व **गुड फ्राइडे २ अप्रैल, शुक्रवार** को है। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान ४ अप्रैल रविवार को होगा। चन्द्रोदय रात (९।२३) बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **श्रीशीतलाष्टमी** व्रत (बसियउरा) का मान **९ अप्रैल शुक्रवार** को होगा। आज के दिन बासी पकवान्न प्रसाद स्वरुप ग्रहण किया जाता है। वरुथिनी एकादशी का व्रत सबके लिये १२ अप्रैल सोमवार को है। इस एकादशी का व्रत करने से व्रती के संचित पाप नष्ट हो जाते है एवं सद्‌गति की प्राप्ति होती है। ऋण से छुटकारा पाने के लिये **भौम प्रदोष व्रत १३ अप्रैल** को किया जायेगा। **मास शिवरात्रि का व्रत १४ अप्रैल**, बुधवार को किया जायेगा। **अश्विनी नक्षत्र मेष राशि की सूर्य संक्रान्ति १४ अप्रैल** बुधवार को दिन में ११।१३ बजे से आयेगी। यही सतू संक्रान्ति एवं वैशाखी का प्रमुख पर्व है। आज के दिन सत्तू ही खाना चाहिए तथा सत्तू, जलघट, ऋतुफल (आम) इत्यादि का दान करना चाहिए। श्राद्ध के लिये अमावस्या का मान १५ अप्रैल गुरुवार को एवं स्नानदान के लिये अमावस्या १६ अप्रैल शुक्रवार को होगी। पक्ष के तीन गुरुवार एवं शुक्रवार, बुधवार की संक्रान्ति शुभफलकारक है। सुभिक्ष-सुविधा का वातावरण। महिलाओं एवं विप्रों का सम्मान समाज में बढ़ेगा तथा उनके उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा। खरमास समाप्त होने के बाद भी शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं हो सकेंगे क्योंकि गुरु-अस्त है।

प. ३ वैशाख कृष्ण ८ शुक्रे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २२७३
अयनांशाः २३/४९/५३

र.	सो.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	६	१०	११	०	०	३	९
२४	२५	१२	२९	१९	२९	८	२१	२१
५२	४७	३०	२२	३०	३१	५८	२०	२०
१६	६	४	११	५७	२२	३६	१८	१८
५८	७४६	२२ ० व	३४ ३१ मा	१३	५८	७	३	३
५५	३०			१०	४५	४८	११	११

शु.१ श. | १२ सू.गु. | ११ बु. | २ | १० के | ३ | ९ चं. | ६ | ४ रा. | ५ | मं.७ | ८

भौमादीनां चारः-
भौमः-(वक्री) स्वात्यां तुला राशौ।
बुधः-(वक्री) तिथि २ शुक्रतः मार्गी। कुम्भ राशौ।
तिथि ९ शनितः मीन राशौ घ.५।१८
गुरुः-रेवत्यां मीन राशौ।
शुक्रः-मेष राशौ। तिथि ८ शुक्रतः वृष राशौ घ.२५।०।
शनिः-अश्विन्यां ३ चरणे मेष राशौ। तिथि ३० शुक्रतः अश्विन्यां ४ चरणे।
राहुः-श्लेषायां ३ चरणे।
केतुश्चः-धनिष्ठायां १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	२ श. घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	४ सो. घं.	मि.	५ मं. घं.	मि.	६ बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	१० र. घं.	मि.	११ सो. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	ल.अं.	१४ गु. घं.	मि.	३० शु. घं.	मि.
मीन	६	३२	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	मेष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मेष	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	वृष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१७	मिथुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन	१२	२१	१२	१७	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	कर्क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	सिंह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	२	कन्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.	
कन्या	७	९	७	२	६	५८	६	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	१८	६	१४	तुला	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१	वृश्चि.	१०	४४	१०	४०
वृश्चि.	११	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	धनु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
धनु	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	मकर	२	३४	२	३०
मकर	३	२९	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	कुम्भ	४	६	४	२
कुम्भ	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	मीन	५	३५	५	३२

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ गुरौ हस्तभेः-गर्भाधानं, पुंसवनसीमन्तौ, प्रसूति स्नानं, जातकर्म, नामकरणं, विपणि-व्यापारः, विक्रयः, गवांक्रयविक्रयः, नववस्त्र धारणं, हल प्रवहणं, बीजवपनं, धान्यस्थापनं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यसनाद्युपभोगः, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिकानिर्माणं, लतावृक्षादीनां रोपणं, अधिकारीणां दर्शनं, जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि २ शुक्रे चित्रायां- जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, विपणि व्यापारः, क्रयः, नववस्त्र धारणं, हलप्रवहणं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदनपत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, ऋणग्रहणं, सेवारम्भः, नौकाजलयान निर्माणं।

तिथि २ शनौ स्वात्यां-क्रयः ऋणग्रहणं, ऋणदानं।

तिथि ३ रवौ विशाखायाः-गवांक्रयविक्रयः, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, शस्त्रधारणं, इष्टिकादहन (चतुर्थ्यां)।

तिथि ४ सोमे अनुराधायां-रिक्तोत्तरम्-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, अक्षरारम्भः, विपणि व्यापारः, हलप्रवहनं, बीजवपनं, कणमर्दनं, धान्यस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदनपत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, ऋणग्रहणं, जलाशयारम्भः।

तिथि ५ भौमे ज्येष्ठायां-उग्रकर्माचरणम्।

तिथि ६ बुधे मूलेः-नामकरणं, विद्यारम्भः, कणमर्दनं, धान्यरोपणं, वृक्षलतादिरोपणं, जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर (ति.दा.)।

तिथि ७ गुरौ मूले (पू.षा.)-पुंसवनं सीमन्तः, प्रसूतिस्नानं विद्यारम्भः, (ति.दा.) धान्यछेदनं, जलयंत्रकर्म, मुकदमा दायर (ति.दा.) भूमिक्रय, जलाशयारम्भः नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि ८ शुक्रे पू.षा. उत्तराषाढायां-जातकर्मनामकरणं, विपणिव्यापारः, नववस्त्रधारणं, अलंकारनिर्माण धारणं च, हल प्रवहणं बीजवपनं, धान्यछेदनं, धान्यस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, आवेदनपत्र लेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, जलाशयारम्भः, नौकाजलयान निर्माणं।

तिथि ९ शनौ उ.षा.- श्रवणे चः-रिक्तोत्तरं इष्टिकानिर्माणं रिक्तादोषः।

तिथि १० रवौ श्रवणे-पुंसवनं सीमन्तः, विद्यारम्भः क्रयः,रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, कणमर्दनं, आवेदनपत्र लेखनं, इष्टिकानिर्माणं।

तिथि ११ सोमे धनिष्ठायां-गर्भाधानं नामकरणं, गवांक्रयविक्रयौ, अलंकारनिर्माण धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं आ. पत्रलेखनं, अधिकारी दर्शनं, ऋणग्रहणं दानं च, जलाशयारम्भः।

तिथि १२ भौमे शतभिषायां-रक्तवस्त्रप्रवाल धारणम् (पू.भा.)-प्रसूतिस्नानं।

तिथि १३ बुधे पूर्वाभाद्रपदायां-धान्यरोपणं, चूल्हीस्थापनं, जलयंत्रकर्म, मुकदमादायरः।

तिथि १४ गुरौ उत्तराभाद्रपदायां-रिक्तोत्तरं इष्टिका निर्माणं।

तिथि ३० शुक्रे रेवतीभे मासान्तदोषः।

[illegible] वैशाख कृष्ण ३० शुक्रे सूर्योदये [illegible]

२ बु. | ९ | चं.बु.१२ गु. | ११ | ३ | सू.श. | ४ श. | के.१० | ७ मं. | ९ | ६ | ८

राशि - फलम्

[illegible]	द्रव्यनाशः पीड़ा
[illegible]	चिन्तादिः सुखम्
मिथुन	सौख्यं कर्म सिद्धि
कर्क	कान्तिक्षयः पापवृद्धिः
सिंह	रोगार्त भयम्
कन्या	गमनम् धनहानि
तुला	रिपुनाशः सुखं
वृश्चिक	दैन्यम् हानिः
धनु	रोगं अपमानं
मकर	सुखम् श्रीप्राप्तिः
कुम्भ	हानिः भयं
मीन	स्थान परिवर्तनं

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	तिथि घ.	तिथि प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औद. योगाः	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
३१	३८	१	श.	४ / ५८	४४ / २	प्रा	७ / ५	१४ / १९	भरणी	५४	४३	रा.	३	३३	प्रीति	४०	४७	रा.	[illegible]	५९	बव	४	४४	ग्रा.	३१ / ५८	४५ / ४९	ध्वांक्ष	१७	१७	३	२७				५	४०	६	२०	१०	९	०	२	४२	[illegible]	३८	+	२	७	४४
३१	४१	३	र.	५२	३८	रा.	२	४३	कृत्तिका	५०	३३	रा.	१	५३	आयुष्मान	३३	३	सा	[illegible]	५३	ते	२५	४२	ग.	५२	३८	धूम्र	१८	१८	४	२८	वृष	८	४१	५	४०	६	२०	१०	३०	०	३	४२	[illegible]	३६	+	३	८	५०
३१	४५	४	सो	४६	४२	रा.	१२	२०	रोहिणी	४६	२९	रा.	१२	१५	सौभाग्य	२५	२४	दि.	[illegible]	४९	व.	११	४०	वि.	४६	४२	प्रवर्धमान	१९	१९	५	२९				५	३९	६	२१	१०	५०	०	४	३१	[illegible]	३४	+	३	९	५६
३१	४८	५	मं.	४१	१	रा.	१०	२	मृगशिरा	४२	४२	रा.	१०	४३	शोभन	१७	५५	दि.	[illegible]	४८	बव	१३	५१	वा.	४१	१	राक्षस	२०	२०	६	३०	मिथुन	१४	३५	५	३८	६	२२	११	१०	०	५	३८	[illegible]	३२	+	३	१०	५८
३१	५१	६	बु.	३५	४९	रा.	७	५८	आर्द्रा	३९	२५	रा.	९	२४	अतिगण्ड	१०	४३	दि.	[illegible]	५५	को	८	२५	ते	३५	४९	मुसल	२१	२१	७	१				५	३८	६	२२	११	३०	०	६	३६	[illegible]	३०	+	३	११	५६
३१	५५	७	गु.	३१	१९	सा	६	९	पुनर्वसु	३६	४९	रा.	८	२१	सुकर्मा	५ / ५८	० / ०	प्रा.	[illegible]	[illegible]	ग.	३	३४	व.	३१ / ५९	१९ / २७	सिद्धि	२२	२२	८	२	कर्क	२२	२८	५	३७	६	२३	११	५०	०	७	३५	[illegible]	२८	+	४	१२	४९
३१	५८	८	शु.	२७	३६	दि.	४	३८	पुष्य	३५	४	रा.	७	३८	शूल	५२	४१	रा.	[illegible]	४०	बव	२७	३६	वा.	५६	१५	उत्पात	२३	२३	९	३				५	३६	६	२४	१२	१०	०	८	३३	[illegible]	२६	+	४	१	३६
३२	२	९	श.	२४	५४	दि.	३	३४	श्लेषा	३४	१९	रा.	७	२०	गण्ड	४८	१२	रा.	[illegible]	५३	को.	२४	५४	ते	५४	८	मानस	२४	२४	१०	४	सिंह	३४	१९	५	३६	६	२४	१२	३०	०	९	३२	[illegible]	२४	+	४	२	१९
३२	५	१०	र.	२३	२२	दि.	२	५६	मघा	३४	४४	रा.	७	२९	वृद्धि	४४	४१	रा.	[illegible]	२७	ग.	२३	२२	व.	५३	१४	मुद्गर	२५	२५	११	५				५	३५	६	२५	१२	५२	०	१०	३०	४७	२२	+	४	२	५८
३२	८	११	सो.	२३	६	दि.	२	४८	पूर्वाफाल्गुनी	३६	२४	रा.	८	८	ध्रुव	४२	११	रा.	[illegible]	२६	वि.	२३	६	बव.	५३	३६	ध्वज	२६	२६	१२	६	कन्या	५२	१०	५	३४	६	२६	१३	१३	०	११	२९	९	२०	+	४	३	३५
३२	११	१२	मं.	२४	६	दि.	३	१२	उत्तराफाल्गुनी	३९	२९	रा.	९	१२	व्याघात	४१	४०	रा.	[illegible]	१४	वा.	२४	६	को.	५५	१३	धाता	२७	२७	१३	७				५	३४	६	२६	१३	३०	०	१२	२७	२१	१८	+	४	४	१०
३२	१५	१३	बु.	२६	२०	दि.	४	५	हस्त	४३	२१	रा.	१०	५३	हर्षण	४०	७	रा.	[illegible]	३६	ते	२६	२०	ग.	५८	१	आनन्द	२८	२८	१४	८				५	३३	६	२७	१३	५०	०	१३	२५	४७	१६	+	४	४	४५
३२	१८	१४	गु.	२९	४२	दि.	५	२५	चित्रा	४८	३४	रा.	१२	५८	वज्र	४०	२८	रा.	[illegible]	४३	व.	२९	४२	वि.	६०	०	चर	२९	२९	१५	९	तुला	१५	५७	५	३२	६	२८	१४	१२	०	१४	२४	३	१४	+	५	५	२०
३२	२२	१५	श.	३३	५९	रा.	७	८	स्वाती	५४	३२	रा.	३	२१	सिद्धि	४१	२६	रा.	[illegible]	६	वि.	१	५०	बव.	३३	५९	गद	३०	३०	१६	१०				५	३२	६	२८	१४	३२	०	१५	२२	१७	१२	+	५	+	+

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१ [illegible] शुक्ल पक्षः।

चन्द्र दर्शनम् मु.१५ जयन्ता [illegible] छत्रपति शिवाजी जयन्ती २। [illegible]
वृषराशिः ८।४१ (दि.१।८)। मु.महर्रम १ हिजरी सन् १४२०। इस्लामी नववर्षारम्भः। अक्ष[illegible]
भद्रा घ.११।४० (दि.१।३१) उ. घ.४[illegible] या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी [illegible]
मिथुनराशिः१४।३५(दि.११।२८)। आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती५। रवियोग घ.४[illegible]
श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती६। कुमारकुमारिणा [illegible] योगः घ.३५।४९(रा.७।५८) या [illegible]
कर्क राशिः २२।२८ (दि.२।३६)। भद्रा घ.३१।१९ (सा.६।९) उ. घ.५९।२७ (रा.शे.५।२४) [illegible]
श्रीदुर्गाष्टमी८। श्रीबगला मुखी जयन्ती। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.[illegible]।४(रा.७।३८) उ. [illegible]
सिंह राशि ३४।१९ (रा.७।२०)। चण्डिका व्रतम्। श्रीसीता नवमी ९। मध्यान्ह जानकी जन्म[illegible]
भद्रा घ.५३।१४ (रा.२।५३) उ.। मृत्युबाणः घ.३०।० (सा.५।३५) या.। यात्रायाम् निषिद्ध [illegible]
कन्या राशिः ५२।१० (रा.२।२६) भद्रा घ.२३।६ (दि.२।४८) या। मोहिनी एकादशी ११ [illegible]
भौम प्रदोष व्रतम्१२। ऋणरपकर्णाय श्रेयस्करम्। शुभाशुभ त्रयग[illegible] घ.२४।६(दि.३ [illegible]
श्रीनृसिंह चतुर्दशीव्रतम्१४। (प्रदोषव्यापिन्या)। सर्वार्थसिद्धियोगघ.४३।२१(रा.१०।५३) या.। दोष[illegible]
तुलाराशिः२५।५७ (दि.११।५५)। भद्रा घ.२९।४२ (दि.५।२५) उ.। मध्यान्ह व्यापिनी चतुर्दश्या[illegible]
भद्रा घ.१।५०(दि.६।१६)या.। स्नान-दान-व्रतादौ वैशाख पूर्णिमा१५। [illegible] पूर्णिमा१५। बुद्ध ज[illegible]

... ई. (राष्ट्रीय चैत्र २७-वैशाख १०) पूर्वदिशायाम गुरु उदय [illegible] दिनांक १७ अप्रैल १९९९ ई.

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति	स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	श.	०	१२	५४	३६	६	८	५५	२८	२८	३७	११	५	२५	८	६०	१२	११	२१	१४	४३	[illegible]	१	८	४०	५९	६८	३६	०	१०	१	२८	७	५६	३	२४	५४	५१
३	र.	०	२७	४	४१	६	८	२६	५१	२८	४०	११	६	२५	२०	६३	१५	११	२१	२७	२१	[illegible]	१	९	४९	३५	६८	३६	०	१०	९	२४	७	५६	३	२४	५१	४०
४	सो.	१	११	१२	५३	६	७	५८	११	२८	५०	११	७	२८	३५	६५	२१	११	२१	३९	५९	[illegible]	१	१०	५८	११	६८	३६	०	१०	१७	२०	७	५६	३	२४	४८	२९
५	मं.	१	२५	१७	९	६	७	२९	२१	२८	५६	११	८	३३	५६	६८	३०	११	२१	५२	२१	[illegible]	१	१२	६	४७	६८	३४	०	१०	२५	१६	७	५६	३	२४	४५	१८
६	बु.	२	९	१६	३१	६	७	०	२५	२९	९	११	९	४२	२६	७१	१२	११	२२	४	५९	[illegible]	१	१३	१५	२१	६८	३४	०	१०	३३	१२	७	५७	३	२४	४२	७
७	गु.	२	२३	७	४०	६	६	३०	१६	२९	६	११	१०	५३	३८	७४	२८	११	२२	१७	२१	[illegible]	१	१४	२३	५५	६८	३१	०	१०	४१	९	७	५७	३	२४	३८	५६
८	शु.	३	६	४८	११	६	६	१	१०	२९	०	११	१२	८	६	७६	२१	११	२२	२९	५४	[illegible]	१	१५	३२	२६	६८	३१	०	१०	४९	६	७	५७	३	२४	३५	४५
९	श.	३	२१	१७	४७	६	५	३२	१०	२९	०	११	१३	२४	२७	७९	१०	११	२२	४२	११	[illegible]	१	१६	४०	५७	६८	३०	०	१०	५७	३	७	५७	३	२४	३२	३४
१०	र.	४	५	३३	२८	६	५	३	१०	२८	४२	११	१४	४३	३७	८१	२५	११	२२	५४	४४	[illegible]	१	१७	४९	२७	६८	३०	०	११	५	०	७	५७	३	२४	२९	२३
११	सो.	४	१७	४३	४१	६	४	३४	२८	२८	०	११	१६	४	४२	८३	३०	११	२३	७	६	[illegible]	१	१८	५७	५७	६८	३०	०	११	१२	५७	७	५७	३	२४	२६	१२
१२	मं.	५	१	२७	१२	६	४	६	२८	२७	२७	११	१७	२८	१२	८५	१०	११	२३	१९	२८	[illegible]	१	२०	६	२७	६८	२७	०	११	२०	५४	७	५७	३	२४	२३	१
१३	बु.	५	१४	०	२९	६	३	३९	१	२७	०	११	१८	५३	२२	८७	१९	११	२३	३१	५०	[illegible]	१	२१	१४	५४	६८	२७	०	११	२८	५१	७	५८	३	२४	१९	५०
१४	गु.	५	२६	१८	३५	६	३	१२	१	२६	१०	११	२०	२०	४१	८९	१५	११	२३	४४	१२	[illegible]	१	२२	२३	२१	६८	२७	०	११	३६	४९	७	५८	३	२४	१६	४०
१५	श.	६	८	२७	२०	६	२	४५	५१	२५	०	११	२१	४९	५६	९१	१३	११	२३	५६	३२	[illegible]	१	२३	३१	४८	६८	२७	०	११	४४	४७	७	५८	३	२४	१३	२९

फलम्—पक्षारम्भ शनिवार को द्वितीया तिथि का क्षय होने से यह पक्ष १४ दिन का है। प्रायः सभी मांगलिक कार्यों के लिये वैशाख शुक्ल पक्ष की प्रतीक्षा रहती है। **अक्षय तृतीया** का पवित्र एवं प्रसिद्ध पर्व तथा **परशुराम जयन्ती का मान १८ अप्रैल** रविवार को है। मंगलकार्यों के लिये अक्षय तृतीया का बड़ा महत्व है एवं आज से ही बद्री-केदार धाम की तीर्थ यात्रा प्रारम्भ की जाती है। अक्षय तृतीया को किया जाने वाला दान अक्षय फलकारी होता है। २२ अप्रैल गुरुवार को गंगा **सप्तमी** है, गंगोत्री से गंगा सागर तक सर्वत्र पतित पावनी गंगा की पूजा-अर्चना-आरती की जायेगी। **मोहिनी एकादशी** व्रत का मान सबके लिये २६ अप्रैल सोमवार को है, इस एकादशी का व्रत रखने से व्रती मोहजाल से मुक्ति प्राप्त करता है। ऋण से छुटकारा पाने के लिये **भौम प्रदोष व्रत २७ अप्रैल** को किया जायेगा। प्रदोष काल में चतुर्दशी मिलने के कारण श्रीनृसिंह चतुर्दशी २८ अप्रैल बुधवार को मानी जायगी। नृसिंह भगवान का अवतारोत्सव मनाया जायेगा। तांत्रिक जगत का यह अत्यन्त महत्वपूर्ण पर्व है। मतान्तर से मध्यान्हव्यापिनी चतुर्दशी २९ अप्रैल गुरुवार को भी नृसिंह चतुर्दशी विचारणीय होगी। स्नान-दान-व्रत सहित **वैशाख पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती**, पूर्णिमा, कूर्म जयन्ती, **३० अप्रैल** शुक्रवार को होगी। मु. **पर्व मुहर्रम २७ अप्रैल मंगलवार** को होगा। भरणी नक्षत्र का सूर्य २७।२८ अप्रैल मंगलवार को रात ३।१० बजे से आवेगा। चावल, जौ, चना, मोठ, तुवर, अलसी, गुड़, घी, अफीम एवं मादक द्रव्य में तेजी का झटका आयेगा। इमारती सामान एवं धातुओं में तेजी। मनुष्यों को रोग से कष्ट। पक्षारम्भ शनिवार का चन्द्र दर्शन मु.१५ दैनिक उपयोग की वस्तुओं में विशेष तेजी का दौरा लायेगा। शेयर बाजार में सूचकांक गिरने के योग मिल रहे हैं। गुरु उदित हो जायेगा फलतः विवाहादि शुभ कार्य प्रारम्भ हो जायेंगे।

(क) दानेन अक्षय फलम् श्री बद्री-केदार यात्रा दिनम्। गंगासागरे वा तीर्थे स्नानम्, दानम् महत् फलम्। हयग्रीव जयन्ती। काश्यां त्रिलोचन यात्रा, गौतमेश्वर जलधरी श्रृंगारारम्भः। गौरी ३।त्रेता युगादिः ३। कल्पादिः ३।जलकुम्भ शर्करा व्यंजनादिदानम् चन्दनेन श्रीविष्णु पूजनमवर्षांतपसमापनं (जैन)।

पं. ५ वैशाख शुक्ल ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २२८७ अयनांशाः २३/४९/५५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	६	११	११	१	०	३	९
८	६	६	१२	२२	१५	१०	२४	२४
३३	४८	१	८	२९	३२	४९	३५	३५
५७	११	१०	६	५४	२६	६	४५	४५
५८	८२४	२९	७६	१२	६८	७	३	३
२६	२	०	२१	२५	३१	५७	११	११

२ शु. | १ सू.श. | बु.१२ गु. | ११ | ३ | ४ चं.रा. | १० के. | ५ | ७ मं. | ९ | ६ | ८

भौमादीनां चारः-
भौमः-(वक्री) स्वात्यां तुला राशौ। वक्रगत्या तिथि ६ बुधतः चित्रायां ४ चरणं घ.४२।०।
बुधः-मीन राशौ।
गुरुः-रेवत्यां मीन राशौ।
शुक्रः-वृष राशौ।
शनिः-अश्विन्यां४चरणं मेष राशौ।
राहुः-श्लेषायां ३ चरणे।
केतुश्चः-धनिष्ठायां १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१थ. (श.) घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	४ सो. घं.	मि.	५ मं. घं.	मि.	६ बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	१० र. घं.	मि.	११ सो. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१३ बु. घं.	मि.	१४ गु. घं.	मि.	१५ शु. घं.	मि.
मेष	[illegible]	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४८	६	४४	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७
वृष	[illegible]	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२२	८	१८	८	१४
मिथुन	[illegible]	१८	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७
कर्क	[illegible]	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५
सिंह	[illegible]	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९
कन्या	[illegible]	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	५	३२	५	२७	५	२३	५	२०	५	१६	५	१२
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
तुला	[illegible]	१९	८	१५	८	११	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८
वृश्चि.	[illegible]	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५
धनु	[illegible]	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०
मकर	[illegible]	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५
कुम्भ	[illegible]	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१९	३	१५	३	११	३	७
मीन	[illegible]	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १/२ शनौ भरण्यां-इष्टिकादहनं (ति.दा.) उग्रकर्माणाम्।

तिथि ३ रवौ कृत्तिकायां- वर-वरणं, कन्यावरणं, रक्तवस्त्र प्रवालरत्नधारणं, धान्यच्छेदनं, इष्टिकादहनं (ति.दा.) नूतनवस्त्र पाककर्म।

तिथि ४ सोमे रोहिण्यां-रिक्तादोषः।

तिथि ५ भौमे मृगशिरायां-पुंसवनं, सीमन्तं, प्रसूतिस्नानं।

तिथि ६ बुधे आर्द्रायां-कर्णवेधः, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भः, चूल्हीस्थापनं, मुकदमादायर।

तिथि ७ गुरौ पुनर्वसौ-पुंसवनं, सीमन्तं, नामकरणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः, मुण्डनं (ल.६) द्विरागमनं, (ल.६) गवांक्रयविक्रये नववस्त्र धारणं, हलप्रवहणं, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, ऋणप्रदानं, दानं च, भूमिक्रय गृहारम्भ (ल.६) [illegible] सर्वदेवप्रतिष्ठा, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः, जलाशयारम्भसुरंगारम्भः।

तिथि ८ शुक्रे पुष्ये- जातकर्म, नामकरणं, कर्णवेधः (ति.दा.) [illegible] विपणि व्यापारः [illegible] नव-वस्त्राभरण अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, धान्यस्थापनं, चूल्हीस्थापनं, [illegible] (ति.दा.) शस्त्रधारणं, (ति.दा.) आ. पत्रलेखनं, [illegible] अधिकारोदर्शनं, [illegible] गृहारम्भः (भू.गृ.) (ल.६) सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः [illegible] नौकाजलयाननिर्माणं पाककर्म।

तिथि ९ शनौ श्लेषायां-उग्रकर्मारम्भः, रिक्तादोषः।

तिथि १० रवौ मघायां-वर-वरणं, कन्यावरणं, कर्णवेधः, जलयन्त्रारम्भः, इष्टिकादहनं (ति.दा.)।

तिथि ११ सोमे पूर्वाफाल्गुन्यां-उपनयन (ल.३) वरवरणं, कन्यावरणं, कर्णवेधः, जलयन्त्रकर्म।

तिथि १२ भौमे उत्तराफाल्गुन्यां-पुंसवनं, सीमन्तं, [illegible]

विवाह मुहूर्त विमर्शः

तिथि ९ शनौ [illegible]
तिथि १० रवौ मघायां मु.भा. [illegible] लग्न [illegible]
तिथि ११ सोमे [illegible] लग्ने ८ इष्टा ५ प्र.व.वि १८। सप्त ४ वा लग्न ९ [illegible] वा लग्न ९१ इष्टा ९ प्र.व.वि १६। सप्त ९ (अष्ट च.श.) वा लग्न १२ [illegible]
तिथि १२ भौमे उत्तराफाल्गुन्यां [illegible] लग्न २ इष्टा ५ प्र.व.वि.१० सप्त १ वा लग्न ३ इष्टा ५ प्र.व.वि.२१। [illegible] इष्टा ४ प्र.व.वि.१० वा लग्नं [illegible] वा लग्नं [illegible] वा लग्न ९ इष्टा ९ प्र.व.वि.२३। सप्त ३ (अष्ट चं.रा.) वा लग्न १० [illegible]
तिथि १३ बुधे हस्ते [illegible] लग्न २ इष्टा ५ प्र.व.वि. [illegible] वा लग्न ५ इष्टा ४ प्र.व.वि.१० [illegible] इष्टा ६ प्र.व.वि १५ सप्त ११।
तिथि १४ गुरौ [illegible]
तिथि १५ शुक्रे [illegible] लग्न २ इष्टा ५ प्र.व.वि १० सप्त ८ वा लग्न [illegible] सप्त ८ वा लग्न ५ इष्टा ४ प्र.व.वि १० सप्त ८ वा [illegible] वा लग्न ८ इष्टा ५ प्र.व.वि १२। (मं.चं.रा.) वा लग्न ९ [illegible] इष्टा ६ प्र.व.वि १३।

(ख) [illegible] उ.। रवियोगः घ.४९।१९ (रा.११।१५) या.। गुरु [illegible] २।५० वादनं।
(ग) [illegible] घ.४२।४४ (रा.[illegible]।४३) उ.।
(घ) [illegible] उ.। राष्ट्रीय वैशाखमासारम्भः।
(ङ) [illegible] गंगा सप्तमी ७श्रीगंगोत्पत्तिः मध्यान्हे सर्वत्र गंगा पूजनम् [illegible] घ.३६।४९ (रा.८।२१) या.। तदुपरि गुरु-पुष्य सर्वार्थ [illegible] यांसि (मृदु) जयद् योगः घ.३१।१९ (सा.६।९) या.। [illegible] मिश्र ७। शर्करा ७। (च) (दि.४।३८)या.। बाबू कुँवर सिंह जयन्ती। (छ) उ.। यांसि (मृदु) जयद् योगः घ.२४।५४ (दि. ३।३४) या.। दोष संघ विनाशको रवियोगः यावदिनम् (झ) रवियोग घ. ४८।३४ (रा.१२।५८) या.। (ञ) अद्य जलपूर्ण कुम्भ, तिल घृत सुवर्णदानम्। वैशाख व्रत, नियम-संयम समाप्तिः।

[illegible] रक्तवस्त्र प्रवालरत्नधारणं।
तिथि १३ बुध हस्तभः-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः, मुण्डनं, (ल.२) वर वरणं, कन्यावरणं, द्विरागमनं, (ल.२) विपणि-व्यापारः गवांक्रय-विक्रयौ, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यस्थापनं, [illegible] शय्यासनाद्युपभोगः, नवायुक्षादिरोपणं, अधिकारोदर्शनं, गृहारम्भः (भूमिसुप्त) गृहप्रवेशः (ल.४) सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, [illegible] जलाशयारामसुरंगारम्भः। तिथि १४ गुरौ चित्रायां-रिक्तादोषः।
तिथि १५ शुक्रे स्वात्यां-नामकरणं, अन्नप्राशनं, वर-वरणं कन्या वरणं, गर्भाधानं, द्विरागमनं ल.२ क्रयः, नववस्त्रधारणं, अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, दत्तकपुत्रग्रहणं (ति.दा.) आ. पत्रलेखनं, ऋणग्रहणं दानं च गृहारम्भः गृहप्रवेशः (ल.४) (नाऽडी चक्र शुद्धि) सर्वदेवप्रतिष्ठा, नौकाजलयाननिर्माणं।

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः।

दिनांक १ मई - १५ मई १९९९ ई. (राष्ट्रीय वैशाख ११ - २५)

सौम्यायनं सौम्यगोलः वसन्तऋतुः।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.
३२	२४	१	श.	३८	५६	रा.	९	६	विशाखा	६०	०	स	म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५३	रा.	१०	४०
३२	२७	२	र.	४४	५	रा.	११	९	विशाखा	१	२	प्रा	८	५६	[illegible]	[illegible]	३०	रा.	११	१९
३२	३०	३	सो.	४९	५	रा.	१	८	अनुराधा	७	३७	दि.	८	३३	[illegible]	४५	५६	रा.	११	५२
३२	३३	४	मं.	५३	२७	रा.	२	५२	ज्येष्ठा	१३	५१	दि.	११	१	शिव	४६	५७	रा.	१२	१६
३२	३६	५	बु.	५६	५८	रा.	४	१६	मूल	१९	२३	दि.	१	१४	सिद्ध	४७	१८	रा.	१२	२४
३२	३९	६	गु.	५९	१७	रा.	५	११	पूर्वाषाढ़ा	२३	५७	दि.	३	३	साध्य	४६	२४	रा.	१२	२
३२	४२	७	शु.	६०	०	स	म	स्त	उत्तराषाढ़ा	२७	२४	दि.	४	२६	शुभ	४५	१८	रा.	११	३५
३२	४५	७	श.	०	२५	प्रा.	५	३७	श्रवण	२९	३३	दि.	५	१६	शुक्ल	४२	४९	रा.	१०	३५
३२	४८	८	र.	०/५८	११/११	प्रा.	५/४	११/५६	धनिष्ठा	३०	२८	दि.	५	३७	ब्रह्म	३९	११	रा.	९	१०
३२	५१	१०	सो.	५६	७	रा.	३	५३	शतभिषा	३०	९	दि.	५	३०	ऐन्द्र	३४	५३	दि.	७	२३
३२	५४	११	मं.	५२	३०	रा.	२	२५	पूर्वाभाद्र	२८	४५	दि.	४	५५	वैधृति	२९	४२	दि.	५	१८
३२	५६	१२	बु.	४७	५९	रा.	१२	३७	उत्तराभाद्र	२६	३४	दि.	४	३	विष्कुंभ	२३	४४	दि.	२	५५
३२	५९	१३	गु.	४२	४७	रा.	१०	३१	रेवती	२३	३१	दि.	२	४९	प्रीति	१७	८	दि.	१२	१५
३३	२	१४	शु.	३७	४	रा.	८	१४	अश्विनी	१९	५५	दि.	१	२२	आयुष्मान	१०	६	दि.	९	२६
३३	४	३०	श.	३१	२	रा.	५	४८	भरणी	१५	५६	दि.	११	४५	सौभाग्य	२/५२	३४/२४	प्रा.	१/३	२५/३३

ति.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योग	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. ठ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
१	वा.	६	२७	कौ.	३८	५६	शुभ्र	१	१	१७	११	वृश्चिक	४४	२५	५	३१	६	२९	१४	५२	०	१६	२०	२९	५८	१०	-	५	७	८
२	तै	११	३०	ग.	४४	५	उत्पात	२	२	१८	१२				५	३१	६	२९	१५	१३	०	१७	१८	३९	५८	८	-	५	७	५९
३	व.	१६	३५	वि.	४९	५	मानस	३	३	१९	१३				५	३०	६	३०	१५	३०	०	१८	१६	४७	५८	६	-	५	८	५०
४	बव.	२१	१६	बा.	५३	२७	मुद्गर	४	४	२०	१४	धनु	१३	५१	५	२९	६	३१	१५	४७	०	१९	१४	५३	५८	४	-	५	९	४०
५	कौ.	२५	१३	तै	५६	५८	ध्वज	५	५	२१	१५				५	२९	६	३१	१६	३	०	२०	१२	५७	५८	२	-	५	१०	३०
६	ग.	२८	७	व.	५९	१७	धाता	६	६	२२	१६	मकर	३९	४९	५	२८	६	३२	१६	२०	०	२१	१०	५९	५८	०	-	५	११	१८
७	वि.	२९	५१	बव.	६०	०	आनन्द	७	७	२३	१७				५	२८	६	३२	१६	३५	०	२२	८	५९	५७	५८	-	५	१२	४
७	बव.	०	२५	बा.	३०	१९	स्थिर	८	८	२४	१८				५	२७	६	३३	१६	५२	०	२३	६	५७	५७	५६	-	६	१२	४८
८	कौ.	०	१३	तै.	२९/५८	३०/४१	मातंग	९	९	२५	१९	कुम्भ	०	१	५	२६	६	३४	१७	१०	०	२४	४	५३	५७	५४	-	६	१	३१
१०	व.	२७	२६	वि.	५६	७	अमृत	१०	१०	२६	२०				५	२६	६	३४	१७	२६	०	२५	२	४७	५७	५२	-	६	२	१२
११	बव.	२४	१८	बा	५२	३०	काण	११	११	२७	२१	मीन	१४	६	५	२५	६	३५	१७	४३	०	२६	०	३९	५७	५०	-	६	२	५४
१२	कौ.	२०	१५	तै	४७	५९	लुम्बक	१२	१२	२८	२२				५	२५	६	३५	१८	०	०	२६	५८	२९	५७	४८	-	६	३	३६
१३	ग.	१५	२३	व.	४२	४७	मित्र	१३	१३	२९	२३	मेष	२३	३१	५	२४	६	३६	१८	१३	०	२७	५६	१७	५७	४६	-	६	४	२१
१४	वि.	९	२५	श.	३७	४	वज्र	१४	१४	३०	२४				५	२४	६	३६	१८	२७	०	२८	५४	३	५७	४४	-	६	५	८
३०	च.	४	२	ना.	११/५७	२/५९	ध्वांक्ष	१५	१५	३१	२५	वृष	२९	५३	५	२३	६	३७	१८	४१	०	२९	५१	४७	५७	४२	-	६	+	+

वृश्चिक राशिः ४४।२५ (रा.११।१७)। फसली ज्येष्ठ मासारम्भः। ज्येष्ठमासे पिष्टेन ब्रह्ममूर्ति स्थापयित्वा विधि पूजनेन महत् फल(क)
शुभाशुभ त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः घ.१।२ (प्रा.५।५६) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.४४।५ (रा.११।९) उ.।
भद्रा घ.१६।३५ (दि.१२।८) उ. घ.४९।५ (रा.१।८) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.७।३७ (दि.८।३३) या.। मृत्युबाणः घ.४४।३६ (रा.११।२०) उ.।
धनुराशिः१३।५१ (दि.११।१)। **अङ्गारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्।** चन्द्रोदये (रा.९।४०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। मृत्युबाणः (ख)
यात्रायाम्निषिद्धः यमघटयोगः घ.१९।२३ (दि.१।१४) या.। (ख) घ.४६।३६ (रा.१२।७) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद्योगः घ.२३।५१ (दि.११।१) या.।
मकरराशिः३९।४९ (रा.९।२४)। भद्रा घ.५९।१७ (रा.शे.५।११) उ.। दोषसंघ विनाशको रवियोगः घ.२३।५७ (दि.३।३) उ.।
भद्रा घ.२९।५३ (सा.५।२४) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.२७।२४ (दि.४।२६) उ.। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.२७।२४ (दि.४।२६) (ग)
सर्वार्थसिद्धियोगः घ.२९।३३ (दि.५।१६) या.। **श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्।** पर्युषितान्नपानादिकमत्र विहितम्। (च) [illegible]
कुम्भ राशिः०।१ (प्रा.५।२६)। पचक (पचखा) आरम्भः। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.०।१३ (प्रा.५।३१) उ. [illegible]
भद्रा घ.२७।२६ (दि.४।२४) उ. घ.५६।७ (रा.३।५३) या.। (क) प्राप्तिः। शुभाशुभ त्रयगुण्यकर त्रिपुष्कर [illegible]
मीन राशिः१४।६ (दि.११।३)। अचला (अपरा) एकादशी ११ व्रतम् स्मार्तानाम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.२८।४५ [illegible] कृत्तिकायां (घ)
अचला (अपरा) एकादशी व्रतम् वैष्णवानाम्। (ग) या.। रवीन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती (७ मई)। (घ) नक्षत्रे [illegible]
मेष राशिः२३।३१ (दि.२।४९)। पचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा घ.४२।४७ (रा.१०।३१) उ.। प्रदोष व्रतम् १३। वट सावित्री व्रतारम्भः (ङ)
भद्रा घ.९।२५ (दि.९।१०) या.। वट सावित्री व्रतस्य द्वितीय दिनम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.१९।५५ (दि.१।२२) या.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् (च)
वृष राशिः २९।५३ (दि.५।२०)। स्नानदान श्राद्धादौ अमा पुण्यतमा ३०। वट सावित्री व्रतम् ३०। [illegible]

विवाह मुहूर्त विमर्शः

तिथि २ रवौ-अनुराधायां सूर्यवेधः। दिवा लग्नं २ रे ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० (चं.सु.श.द.) वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ११¾ वा लग्नं ९ पञ्चेष्टाभावः वा लग्नं ११ इष्टाः ६ ग्र.व.वि १३ वा लग्नं १२ पञ्चेष्टाभावः।

तिथि ३ सोमे अनुराधायां सूर्यवेधः दिवा लग्नं २ रे ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।

तिथि ४ भौमे-रिक्ता मू.वा.व्याप्ति १८ आवश्यके मू.वा.परं मूले रात्रौ लग्ने ११ रे.७ इष्टाः ७ ग्र.व.वि.१८¼।

तिथि ५ बुधे-मूले दिवा लग्नं ३ रे ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. ११¾ वा लग्नं ५ पञ्चेष्टाभावः।

तिथि ६ गुरौ उ.षा.धे लग्नं गोधूलिः वा लग्नं ८ रे ७ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१६¾ वा लग्नं ९ इष्टाः ५ ग्र.व.वि. १३ वा लग्नं ११ इष्टाः ६ ग्र.व.वि १३¾ (के.चं.व.) वा लग्नं १२ इष्टाः ५ ग्र.व.वि १३¾।

तिथि ७ शुक्रे उ.षा.धे महाव्याप्ति सल्लग्नाभावः।

तिथि ११ भौमे-उत्तराभाद्रपदायां लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ८ रे ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.११¾ वा लग्नं ९ इष्टाः ४ ग्र.व.वि ८ वा लग्नं ११ इष्टाः ७ ग्र.व.वि १८¾ वा लग्नं १२ इष्टाः ४ ग्र.व.वि.८¾।

तिथि १२ बुधे उत्तराभाद्रपदायां दिवा लग्नं २ पञ्चेष्टाभावः वा लग्नं ३ रे ८ इष्टाः ६ ग्र.व.वि १३¾ वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ रेवत्यां रे. ८ लग्नं ८ इष्टाः ६ ग्र.व.वि. १३ वा लग्नं ९ पञ्चेष्टा भावः वा लग्नं ११ इष्टाः ७ ग्र.व.वि १८¾ शुभं वा लग्नं १२ पञ्चेष्टाभावः।

तिथि १३ गुरौ-रेवत्यां दिवा लग्ने मृत्युबाण व्याप्तिः परमासान्तादिदोषः।

(छ) राशौ रविः घ.८।३० (दि.८।४७) मु.१५ जघन्या पूर्वा १६ पश्चात् पुण्याः। ग्रीष्म ऋतुप्रारम्भः। गोऽन्न, जल, तिल दानम्, गोदावर्याम् स्नानम्। पापवारान्वितदर्शे दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्। शनैश्चर जयन्ती ३०।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति	
१	श.	६	२०	२१	५५	६	२	२०	५१	२३	३०	११	२३	२१	९	९३	२०
२	र.	७	३	०	५	६	१	५७	२१	२१	१०	११	२४	५४	२९	९५	२८
३	सो.	७	१५	१	४४	६	१	३६	११	१९	१९	११	२६	२९	५७	९७	१२
४	मं.	७	२७	६	३६	६	१	१६	५२	१९	०	११	२८	७	९	९९	३०
५	बु.	८	९	२०	४०	६	०	५७	५२	१७	२०	११	२९	४६	३१	१०१	४५
६	गु.	८	२१	४५	१३	६	०	४०	३२	१५	८	०	१	२८	२४	१०२	११
७	शु.	९	४	२८	२०	६	०	२५	२४	१३	९	०	३	११	३५	१०४	२२
७	श.	९	१७	१८	३७	६	०	१२	१५	१२	०	०	४	५५	५७	१०६	२५
८	र.	९	२९	५९	५९	६	०	०	१५	११	४०	०	६	४२	२२	१०८	२०
१०	सो.	१०	१३	२३	५	५	२९	४८	३५	११	२५	०	७	३०	४२	११०	१८
११	मं.	१०	२७	०	५७	५	२९	३७	१०	११	०	०	९	२१	०	११२	३५
१२	बु.	११	१०	४६	२८	५	२९	२६	१०	१०	३०	०	११	१३	३५	११५	२३
१३	गु.	११	२४	४३	१९	५	२९	१५	४०	१०	१२	०	१३	८	५८	११७	२१
१४	शु.	०	८	५८	२०	५	२९	५	२८	१०	०	०	१५	६	११	११९	३९
३०	श.	०	२३	६	३१	५	२८	५५	२८	९	२२	०	१७	५	५८	१२१	४८

ति.	वा.	स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	श.	११	२४	८	५२	१२	१६	१	२४	४०	५५	६८	२५	०	११	५२	४५	७	५८	३	२४	१०	१९
२	र.	११	२४	२१	८	१२	१६	१	२५	४९	२०	६८	२०	०	१२	०	४३	७	५७	३	२४	७	८
३	सो.	११	२४	३३	२४	१२	१३	१	२६	५७	४०	६८	१५	०	१२	८	४०	७	५७	३	२४	३	५७
४	मं.	११	२४	४५	३७	१२	१३	१	२८	५	५५	६८	१५	०	१२	१६	३७	७	५७	३	२४	०	४६
५	बु.	११	२४	५७	५०	१२	१०	१	२९	१४	१०	६८	१५	०	१२	२४	३४	७	५६	३	२३	५७	३५
६	गु.	११	२५	१०	०	१२	१०	२	०	२२	२५	६८	१२	०	१२	३२	३०	७	५६	३	२३	५४	२४
७	शु.	११	२५	२२	१०	१२	१०	२	१	३०	३७	६८	१२	०	१२	४०	२६	७	५५	३	२३	५१	१३
७	श.	११	२५	३४	२०	१२	१०	२	२	३८	४९	६८	४	०	१२	४८	२१	७	५५	३	२३	४८	२
८	र.	११	२५	४६	३०	१२	८	२	३	४६	५३	६८	४	०	१२	५६	१६	७	५४	३	२३	४४	५१
१०	सो.	११	२५	५८	३८	१२	४	२	४	५४	५७	६८	०	०	१३	४	१०	७	५३	३	२३	४१	४०
११	मं.	११	२६	१०	४२	१२	४	२	६	२	५७	६७	५२	०	१३	१२	३	७	५२	३	२३	३८	२९
१२	बु.	११	२६	२२	४६	१२	१	२	७	१०	४९	६७	४८	०	१३	१९	५५	७	५२	३	२३	३५	१८
१३	गु.	११	२६	३४	४७	१२	०	२	८	१८	३७	६७	४१	०	१३	२७	४७	७	५१	३	२३	३२	७
१४	शु.	११	२६	४६	४७	१२	०	२	९	२६	१८	६७	४०	०	१३	३५	३८	७	५०	३	२३	२८	५६
३०	श.	११	२६	५८	४७	११	५२	२	१०	३३	५८	६७	४०	०	१३	४३	२८	७	५०	३	२३	२५	४५

फलम्– इस पक्ष में सप्तमी तिथि की वृद्धि हुयी है और रविवार को नवमी तिथि का क्षय है इस प्रकार पक्ष १५ दिन का है। खाद्यान्न के व्यवसायी यदि माल संग्रह करेंगे तो आगे अच्छे लाभ की सम्भावना रहेगी। **अङ्गारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** ४ मई को किया जायेगा। चन्द्रोदय रात ९।४० बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। रविन्द्रनाथ टैगोर की जयन्ती ७ मई शुक्रवार को सर्वत्र विशेषकर बंगाल में विविध प्रकार से मनाई जायेगी। ८ मई शनिवार को **श्रीशीतलाष्टमी व्रत** (वसियउरा) किया जायेगा इसमें बासी भोजन माता के प्रसाद स्वरुप स्वजनों परिजनों के साथ ग्रहण करने का विधान है। **गृहस्थों के लिये अचला (अपरा) एकादशी व्रत** का मान ११ मई मंगलवार को होगा तथा वैष्णवजन १२ मई बुधवार को एकादशी मानेंगे। प्रदोष का व्रत १३ मई गुरुवार को किया जायेगा एवं १३ मई को ही **मासशिवरात्रि व्रत** भी होगा। स्नानदान एवं श्राद्ध सहित अमावस्या १५ मई शनिवार को होगी एवं महिलायें आज **वट सावित्री का प्रसिद्ध व्रत रख कर अपने सौभाग्य की कामना करेंगी।** कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य ११ मई मंगलवार को रात ९।४४ बजे से आवेगा। जौ, चावल, गेहूँ, मूँग, मोठ, राई, सरसों के भाव में तेजी का रुख चलेगा। वृष राशि की सूर्य संक्रान्ति १५ मई शनिवार दिन ८।४७ बजे से होगी। पक्ष के तीन शनिवार, शनिवार की अमावस्या को चतुर्ग्रही योग एवं संक्रान्ति भारी पड़ेगी। दैवी प्राकृतिक प्रकोप से धन-जन की हानि सम्भावित। अग्निकाण्ड, आँधी-तूफान, भूकम्प से भारी क्षति होगी। राजनैतिक जगत में संघर्ष के योग रहेंगे। दैनिक उपभोग की वस्तुओं का भाव आसमान छूने लगेगा। कुल मिलाकर यह पक्ष कई दृष्टियों से भारी पड़ेगा। राजनैतिक उलट-फेर सत्ता-परिवर्तन भी सम्भव है।

(ङ) दिन पर्यन्तावत्। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। यायि(मुद्दई) जयद् योगः घ.२३।३१ (दि.२।४९) या.। मृत्युबाणः घ.३।४८ (दि.६।५५) उ.।

पं.७ शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण ८ रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २३०३
अयनांशाः २३/४९/५७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	६	०	११	२	०	३	९
२४	२९	०	६	२५	३	१२	२३	२३
४	५९	०	४२	४६	४६	५६	४४	४४
५३	५९	१५	२२	३०	५३	१६	५१	५१
५७	८०२	४०	१०८	१२	६८	७	३	३
५४	४०	११ व	२०	८	४	५४	११	११

२ | ३ शु. | १ सू.बु.श. | १२ गु. | ११ चं. | ४ रा. | १० के. | ५ | ७ मं. | ९ | ६ | ८

भौमः-(वक्री) चित्रायां तुला राशौ। तिथि ८ रवितः वक्रगत्या कन्या राशौ घ.१।१८।
बुधः-मीन राशौ तिथि ५ बुधतः मेष राशौ घ.७।५८।
गुरुः-रेवत्यां मीन राशौ।
शुक्रः-वृष राशौ तिथि ५ बुधतः मिथुन राशौ घ.४०।८।
शनिः-अश्विन्यां ४ चरणे मेष राशौ। तिथि १२ बुधतः भरण्यां १ चरणे प्रातरेव।
राहुः-श्लेषायां ३ चरणे।
केतुश्चः-धनिष्ठायां १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ श. घं.	मि.	२ र. घं.	मि.	३ सो. घं.	मि.	४ मं. घं.	मि.	५ बु. घं.	मि.	६ गु. घं.	मि.	७ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	८ र. घं.	मि.	१० सो. घं.	मि.	११ मं. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१३ गु. घं.	मि.	१४ शु. घं.	मि.	३० श. घं.	मि.
मेष	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४६	५	४५	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१७
वृष	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५
मिथुन	१०	२३	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८
कर्क	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६
सिंह	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	२०	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०
कन्या	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४४	४	४०	४	३६	४	३२	४	२८	४	२४	४	२०	४	१७	४	१३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
तुला	७	२४	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९
वृश्चि.	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६
धनु	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१
मकर	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६
कुम्भ	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	१२	२	८
मीन	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३	३	४०	३	३६

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ शनौ विशाखायाः-इष्टिकादहनं, (ति.दा.)।

तिथि २ रवौ विशाखायां ततश्चानुराधायां-प्रसूति स्नानं, वर-वरणं, कन्यावरणं, द्विरागमनं,(लग्नं२) विपणि व्यापारः कणमर्दनं, शस्त्रधारणं दत्तकपुत्रग्रहणं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणांदर्शनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा, सेवारम्भः, नौकाजलयान निर्माणः।

तिथि ३ सोमे अनुराधायां भाद्रपूर्व जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः, मुण्डनं ल.२ अक्षरारम्भः व्रतबन्धः ल.२ वर-वरणं कन्यावरणं, वधूप्रवेशः, द्विरागमनं, ल.२ विपणिव्यापारः, हलप्रवहणं, बीजवपनं, कणमर्दनं धान्यस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, आ.पत्र लेखनं, अधिकारीदर्शनम्, ऋणग्रहणं दानंच, गृहारम्भः ल.२ सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः।

तिथि ४ भौमे ज्येष्ठायां-रोगविमुक्तस्नानं, उग्रकर्माचरणं।

तिथि ५ बुधे मूले-नामकरणं, विद्यारम्भः, उपनयनं ल.३ वरवरणं, कन्यावरणं, द्विरागमनं ल.२ हलप्रवहणं, बीजवपनं, कणमर्दनं, धान्यरोपणं, वृक्षादिरोपणं, जलयन्त्रकर्म, मुकदमादायर, गृहारम्भः (च.शु.अग्निबाणः)।

तिथि ६ गुरौ पूर्वाषाढायां-प्रसूतिस्नानं (ति.दा.) विद्यारम्भः. वर-वरणं, कन्यावरणं, जलयंत्रकर्म (ति.दा.) मुकदमादायर (ति.दा.) भूमिक्रयः, जलाशयारम्भः नौकाजलयान निर्माणं।

तिथि ७ शुक्रे उत्तराषाढायां श्रवणे च भद्रोपरान्त गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, वरवरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः द्विरागमनं (लं.६) विपणिव्यापारः, नववस्त्रधारणं, अलंकार निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपन, धान्य स्थापनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीः दर्शनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, नूतनवध्वाःपाककर्म।

तिथि ७ शनौ श्रवणेः-इष्टिकानिर्माणः, ऋणग्रहणं दानं च।

तिथि ८/९ रवौ धनिष्ठायां-रिक्तादोषः। ●

पं.८ शु.ज्येष्ठ [illegible] सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः [illegible]
अयनांशाः [illegible]

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

२ | १२ गु. | ३ शु. | १ सू.बु.श. | ११ | ४ रा. | के.१० | ५ | ९ | ६ मं. | ८

राशि-फल

मेष	स्थान हानिः
वृष	द्रव्यलाभः पीडा भयं
मिथुन	वित्तलाभः सुखम्
कर्क	सौख्यं कार्य सिद्धिः
सिंह	कीर्तिनाशः पापबुद्धिः
कन्या	रोगात्भयम्
तुला	गमनम् धनहानिः
वृश्चिक	रिपुनाशः सुखं
धनु	दैन्यम् हानिः
मकर	रोगभयम्
कुम्भ	सुखम् श्रीः
मीन	हानिः भयं

● **तिथि १० सोमे** शतभिषायां-गर्भाधानं ल.२ अन्नप्राशनं, मुण्डनं, द्विरागमनं (ल.२) क्रयः, गवांक्रय विक्रयौ। अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, धान्यरोपणं, वृक्षलतादिरोपणं, जलयंत्रकर्म, आ.पत्रलेखनं ऋण ग्रहणं दानं चं, जलाशयारम्भः, नूतनवध्वाः, पाककर्म।

तिथि ११ भौमे पूर्वाभाद्रपदायां-पुंसवनसीमन्तौ प्रसूतिस्नानं, इष्टिकादहनं (ति.दा.)।

तिथि १२ बुधे उत्तराभाद्रपदायां- गर्भाधानं जातकर्मनामकरणं, वरवरणं, कन्यावरणं द्विरागमनं लग्नं ३ विपणिःव्यापारः नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, चूल्हीस्थापनं वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्म,आ.पत्र लेखन, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि १३ गुरौ रेवत्यां-पुंसवनसीमन्तौ, प्रसूतिस्नानं, जातकर्म, अन्नप्राशन, कर्णवेधः, वर वरणं कन्या वरणं, वधू प्रवेशः, द्विरागमनं, (लग्नं ३ वा ३) विपणिव्यापारः, क्रयः, गवां क्रयविक्रयः, नववस्त्रधारणं, शय्यासनाधुपभोगः, आ.पत्रलेखन, इष्टिकानिर्माणं, भूमिक्रय जलाशयारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि १४ शुक्रे-अश्विन्यां रोगविमुक्तस्नानम् रिक्तादोष।

तिथि ३० शनौ भरण्यां-मासान्तदोषः।

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१ अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः

दि.मा. घ.	प.	अधिक ज्येष्ठ शुक्ल तिथि ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औद. योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.
३३	७	१	र.	२४	४९	दि.	३	१९	कृत्तिका	११	४६	दि.	१०	५	अतिगण्ड	४७	१९	रा.	१२ १९	बव	२४	४९	बा.	५१	४९	धूम्र	१६	१६	१	२६
३३	९	२	सो	१८	४८	दि.	१२	५३	रोहिणी	७	४१	दि.	८	२६	सुकर्मा	३९	५०	रा.	९ १८	कौ.	१८	४८	तै.	४५	५४	प्रवर्धमान	१७	१७	२	२७
३३	१२	३	मं.	१३	१	दि.	१०	३४	मृगशिरा	३	४९	दि.	६	५४	धृति	३२	३९	रा.	६ २६	ग.	१३	१	व.	४०	२२	राक्षस	१८	१८	३	२८
३३	१४	४	बु.	७	४४	दि.	८	२७	आर्द्रा	०/५७	२१/१४	प्रा.	५/४	३०/३४	शूल	२५	५३	दि.	३ ४२	वि.	७	४४	बव.	३४	५५	मुसल	१९	१९	४	२९
३३	१६	५	गु.	२/५७	६/१२	प्रा.	६/५	११/४	पुष्य	५५	४३	रा.	३	३८	गण्ड	१९	४६	दि.	१ १५	बा.	२	६	कौ.	३०/५९	४२/१८	शुभ	२०	२०	५	३०
३३	१९	७	शु.	५६	३०	रा.	३	५६	श्लेषा	५४	४२	रा.	३	१३	वृद्धि	१४	२०	दि.	११ ४	ग.	२७	५४	व.	५६	३०	मृत्यु	२१	२१	६	३१
३३	२१	८	श.	५४	५०	रा.	३	१६	मघा	५४	५१	रा.	३	१६	ध्रुव	९	४३	दि.	९ १३	वि.	२५	४०	बव.	५४	५०	पद्म	२२	२२	७	१
३३	२३	९	र.	५४	२६	रा.	३	५	पू.फाल्गुनी	५६	१२	रा.	३	४८	व्याघात	६	४	दि.	७ ४५	बा.	२४	३८	कौ.	५४	२६	छत्र	२३	२३	८	२
३३	२५	१०	सो.	५५	१८	रा.	३	२६	उ.फाल्गुनी	५८	५१	रा.	४	५१	हर्षण	३	२५	दि.	६ ४१	तै.	२४	५२	ग.	५५	१८	श्रीवत्स	२४	२४	९	३
३३	२७	११	मं.	५७	२८	रा.	४	१८	हस्त	६०	०	स	म	स्त	वज्र	१	४६	दि.	६ १	व.	२६	२३	वि.	५७	२८	सौम्य	२५	२५	१०	४
३३	२९	१२	बु.	६०	०	स	म	स्त	हस्त	२	४२	दि.	६	२३	सिद्धि	१	६	प्रा.	५ ४४	बव.	२९	७	बा.	६०	०	आनन्द	२६	२६	११	५
३३	३१	१२	गु.	०	४७	प्रा.	५	३७	चित्रा	७	४२	दि.	८	२३	व्यतिपात	१	१८	प्रा.	५ ४९	बा.	०	४७	को	३२	५२	चर	२७	२७	१२	६
३३	३३	१३	शु.	४	५८	दि.	७	१६	स्वाती	१३	३०	दि.	१०	४१	वरीयान	२	१५	दि.	६ ११	तै	४	५८	ग.	३७	२३	गद	२८	२८	१३	७
३३	३५	१४	श.	९	४९	दि.	९	१३	विशाखा	१९	५५	दि.	१	१५	परिघ	३	३७	दि.	६ ४४	व.	९	४९	वि.	४२	२१	शुभ	२९	२९	१४	८
३३	३७	१५	र.	१४	५३	दि.	११	१४	अनुराधा	२६	३०	दि.	३	५३	शिव	५	२०	दि.	७ २५	बव.	१४	५३	बा.	४७	२१	मृत्यु	३०	३०	१५	९

तारीख	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. द+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
१६				५	२३	६	३७	१८	५५	१	०	४९	२९	५७ ४१	-	६	७	३६	चन्द्र दर्शनम् मुं.४५ वृहती समर्घताकरम्। सम श्रृंगम् समताकरम्। अधिकमास (मलमास [illegible]) [illegible] शिवार्चनम् पार्थिवार्चनम्। कार्यो दशाश्वमेधे गंगायाम् (क)
१७	मिथुन	३५	४५	५	२२	६	३८	१९	१०	१	१	४७	१०	५७ ३९	-	६	८	४२	मिथुन राशिः ३५।४५ (रा.७।४०)। मु.सफर २ हिजरी सन् १४२०। सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible] सर्वार्थामृतसिद्धियोगौ यावद्दिनम्।
१८				५	२२	६	३८	१९	२३	१	२	४४	४९	५७ ३७	-	६	९	४४	भद्रा घ.४०।२२ (रा.९।३१) उ.। अगारकी वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। शुक्लेमध्यान्ह [illegible] (ख)
१९	कर्क	४३	१९	५	२१	६	३९	१९	३७	१	३	४२	२६	५७ ३६	-	६	१०	४१	कर्क राशिः४३।१९ (रा.१०।४१)। भद्रा घ.७।४४ (दि.८।२७) या.। दोष संघ विनाशका [illegible] (छ) घ.३।४१ (दि.६।५४) उ.।
२०				५	२१	६	३९	१९	५०	१	४	४०	२	५७ ३४	-	६	११	३२	गुरु पुष्य, सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ घ.५५।४३ (रा.३।३८) या.। दोष संघ विनाशका रवियोगः [illegible] (रा.३।३८) या.।
२१	सिंह	५४	४२	५	२०	६	४०	२०	५	१	५	३७	३६	५७ ३३	-	६	१२	१८	सिंह राशिः ५४।४२ (रा.३।१३)। भद्रा घ.५६।३० (रा.३।५६) उ.। (ग) समाप्तिः। श्रीसि[illegible] अत्र विशेषः- ज्येष्ठ मलमास सति [illegible] ((
२२				५	२०	६	४०	२०	१८	१	६	३५	९	५७ ३१	-	६	१२	५९	भद्रा घ.२५।४० (दि.३।३६) या.। राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारम्भः। ((दशहरा कार्यान्तु शु[illegible]
२३				५	१९	६	४१	२०	२८	१	७	३२	४०	५७ ३०	-	५	१	३७	दोष संघ विनाशको रवियोगः यावद्दिनम्। (क) नद्यातीर्थे वा स्नानारम्भः १० दिनानि याव[illegible] ज्येष्ठ मासारम्भः। यायि (मुद्दई) जयद् योगः()
२४	कन्या	११	५२	५	१९	६	४१	२०	३९	१	८	३०	१०	५७ २८	-	५	२	१३	कन्याराशि ११।५२ (दि.१०।४)। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.५८।५१ (रा.४।५१) या.। [illegible] दशाश्वमेध स्नानम् गंगा स्तोत्रस्य पाठ(ग)
२५				५	१९	६	४१	२०	४९	१	९	२७	३८	५७ २७	-	५	२	४७	भद्रा घ.२६।२३ (दि.३।५२) उ. घ.५७।२८ (रा.४।१८) या.। पुरुषोत्तमी एकादशी ११ स्मा[illegible] (रा.४।४९)।
२६	तुला	३५	१२	५	१८	६	४२	२०	५८	१	१०	२५	५	५७ २५	-	५	३	२२	तुला राशिः३५।१२ (रा.७।२३)। पुरुषोत्तमी एकादशी वैष्णवानाम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ[illegible] दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.२।४२ (दि.६।२३) या.।
२७				५	१८	६	४२	२१	७	१	११	२२	३०	५७ २३	-	५	३	५७	प्रदोष व्रतम् १२। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.७।४२ (दि.८।२३) उ.।
२८				५	१७	६	४३	२१	१६	१	१२	१९	५३	५७ २२	-	५	४	३४	दोषसंघ विनाशको रवियोगः घ.१३।३० (दि.१०।४१) उ.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः घ.१३।३[illegible] (दि.३।११)या.। राजगृह बिहार (-)
२९	वृश्चिक	३	१९	५	१७	६	४३	२१	२६	१	१३	१७	१४	५७ १९	-	५	५	१३	वृश्चिक राशिः ३।१९ (दि.६।३७)। भद्रा घ.९।४९ (दि.९।१३) उ. घ.४२।२१ (रा.१०।२[illegible]) [illegible] पूर्णिमा। (-) [illegible] आरम्भः।
३०				[illegible]	१७	६	४३	२१	३७	१	१४	१४	३३	५७ १७	-	५	+	+	स्नानदानादौ पुरुषोत्तमी पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। यायि (मुद्दइ) जयद् योगः घ.१४।५३ (दि[illegible])

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	र.	१	७	१६	४४	५	२८	४६	६	९	०	०	१९	७	४६	१२२	३३	११	२७	१०	३९	११	५०	२	११	४१	३८	६७	३६	०	१३	५१	१	७	४९	३	२३	२२	३५
२	सो.	१	२१	२५	३८	५	२८	३७	६	८	३६	०	२१	१०	१९	१२३	१५	११	२७	२२	२९	११	५०	२	१२	४९	१४	६७	३०	०	१३	५८	५०	७	४९	३	२३	१९	२४
३	मं.	२	५	३१	१९	५	२८	२८	३०	८	०	०	२३	१३	३४	१२४	३५	११	२७	३४	१९	११	[illegible]	२	१३	५६	४४	६७	२८	०	१४	६	३९	७	४८	३	२३	१६	१३
४	बु.	२	२०	३२	२६	५	२८	२०	३०	८	०	०	२५	१८	९	१२५	४२	११	२७	४६	४	११	[illegible]	२	१५	४	१२	६७	२८	०	१४	१४	२७	७	४७	३	२३	१३	२
५	गु.	३	४	५०	११	५	२८	१२	३०	७	४८	०	२७	२३	५१	१२६	१०	११	२७	५७	४९	११	[illegible]	२	१६	११	४०	६७	२२	०	१४	२२	१४	७	४६	३	२३	९	५१
७	शु.	३	१८	२२	७	५	२८	४	४२	७	३१	०	२९	३०	१	१२५	५५	११	२८	९	३४	११	[illegible]	२	१७	१९	२	६७	१५	०	१४	३०	०	७	४६	३	२३	६	४०
८	श.	४	१	४२	२८	५	२७	५७	११	७	२२	१	१	३५	५६	१२५	४०	११	२८	२१	१९	११	[illegible]	२	१८	२६	१७	६७	५	०	१४	३७	४६	७	४५	३	२३	३	२९
९	र.	४	१५	४५	३४	५	२७	४९	४९	७	१४	१	३	४१	३६	१२५	१०	११	२८	३३	१	११	[illegible]	२	१९	३३	२२	६७	०	०	१४	४५	३१	७	४४	३	२३	०	१८
१०	सो.	४	२८	३३	५२	५	२७	४२	३५	७	२	१	५	४६	४६	१२५	०	११	२८	४४	४३	११	[illegible]	२	२०	४०	२२	६६	५१	०	१४	५३	१५	७	४३	३	२२	५७	७
११	मं.	५	११	३१	४१	५	२७	३५	३३	७	२	१	७	५१	४६	१२४	२५	११	२८	५६	२३	११	[illegible]	२	२१	४७	१३	६६	४७	०	१५	०	५८	७	४२	३	२२	५३	५६
१२	बु.	५	२३	२७	५०	५	२७	२८	३१	७	०	१	९	५६	११	१२३	४०	११	२९	८	३	११	[illegible]	२	२२	५४	०	६६	४०	०	१५	८	४०	७	४०	३	२२	५०	४५
१२	गु.	६	५	४७	११	५	२७	२१	३१	६	५६	१	११	५९	५१	१२३	१०	११	२९	१९	४३	११	[illegible]	२	२४	०	४०	६६	२०	०	१५	१६	२०	७	३८	३	२२	४७	३४
१३	शु.	६	१७	५८	६	५	२७	१४	३५	६	५१	१	१४	३	१	१२२	२०	११	२९	३१	२३	११	[illegible]	२	२५	७	०	६६	१२	०	१५	२३	५८	७	३६	३	२२	४४	२३
१४	श.	६	२९	२५	४	५	२७	७	४४	६	४८	१	१६	५	२१	१२२	५	११	२९	४३	१	११	[illegible]	२	२६	१३	१२	६६	३	०	१५	३१	३४	७	३४	३	२२	४१	१२
१५	र.	७	११	२६	१७	५	२७	०	५६	६	४२	१	१८	७	२६	१२२	०	११	२९	५४	३९	११	[illegible]	२	२७	१९	१५	६६	०	०	१५	३९	८	७	३१	३	२२	३८	१

फलम्–जिस चान्द्रमास में सूर्य की संक्रान्ति न हो वह अधिमास अथवा मलमास कहलाता है।–'यस्मिन् चान्द्रे न संक्रान्ति सोऽधिमासो निगद्यते। तत्र मंगल कार्याणि नैव कुर्यात् कदाचन।।' मलमास में नियमित शिवपूजन, अभिषेक, पार्थिवार्चन, विल्वपत्रार्पण का विशेष महत्व माना जाता है। इस वर्ष ज्येष्ठ मास में अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) १६ मई से प्रारम्भ होकर १३ जून तक रहेगा। मलमास के प्रथम पक्ष में गुरुवार को षष्ठी तिथि का क्षय है तथा द्वादशी वढ़ी हुयी है फलतः पक्ष १५ दिन का है। शास्त्रों में कहा गया है कि यदि जेठ के महीने में मलमास लगता हो तो गंगा दशहरा मलमास में ही किया जायगा न कि शुद्ध में। शास्त्र के इस निर्देश के अनुसार गंगा दशहरा से सम्बन्धित काशी के [illegible] गंगा नदी में, अन्य नदी तीर्थों में प्रतिपदा से दशमी तिथि तक का नियमित स्नान, गंगा स्तोत्र [illegible] दशाश्वमेध में तथा अन्यत्र [illegible] का पाठ पक्षारम्भ १६ मई से प्रारम्भ होकर दशमी तिथि गंगा दशहरा २४ मई सोमवार तक चलेगा। वृद्धि क्रम से गंगा स्तोत्र का पाठ किया जाता है। गंगा दशहरा का पुनीत पर्व २४ मई सोमवार को है वृष लग्न में गंगा का अवतरण मनाया जायेगा। [illegible] ऐसी मान्यता है कि भगवान् राम ने लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व सेतुबन्ध रामेश्वर की प्रतिष्ठा गंगा दशहरा के दिन ही किया था। पुरुषो[illegible]त्तमी एकादशी का व्रत गृहस्थ लोग २५ मई मंगलवार को करेंगे तथा वैष्णवजन २६ मई बुधवार को करेंगे। व्रत के लिये पुरुषो[illegible] प्राण[illegible]मा २९ मई शनिवार को होगी तथा स्नान-दानादि के लिये ३० मई रविवार को होगी। रोहिणी नक्षत्र का सूर्य २५ मई मंगलवार का सायं ६।४९ ब[illegible] से आवेगा। रविवार का चन्द्रदर्शन मु.४५ सस्ती एवं सुविधा का रुख पैदा करेगा। तिल, मूँग में मँहगी। पक्ष के तीन रविवार राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण। गर्मी अपना प्रभाव दिखाना प्रारम्भ कर देगी।

पं.९अ.ज्येष्ठ शुक्ल ८ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २३१६ अयनांशाः २३/४९/५९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	५	१	११	२	०	३	९
६	१	२७	१	२८	१८	१४	२३	२३
३५	४१	५७	३५	२१	२६	३७	३	३
९	२८	२१	५६	११	१७	४६	२९	२३
५७	७१८	७	१२५	११	६७	७	३	३
३१	०	२२ व	४०	४२	५	४५	११	११

शु.३ | २ सू.बु. | १ श. | ४ रा. | १२ गु. | ५ चं. | ११ | ६ मं. | ८ | १० के. | ७ | ९

भौमादीनां चारः-
भौमः-(वक्री) चित्रायां कन्या राशौ
बुधः-मेष राशौ तिथि ७ शुक्रतः वृष राशौ घ.१४।१८।
गुरुः-रेवत्यांमीन राशौ। तिथि१५ रवितःअश्विन्यां मेष राशौ घ.२७।३६
शुक्रः-मिथुन राशौ।
शनिः-भरण्यां १ चरणे मेष राशौ।
राहुः-ति.१ रवितःश्लेषायां२चरणे।
केतुश्चः-श्रवण ४ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ र. घं.	मि.	२ सो. घं.	मि.	३ मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	७ शु. घं.	मि.	८ श. घं.	मि.	९ र. घं.	मि.	१० सो. घं.	मि.	११ मं. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१२ गु. घं.	मि.	१३ शु. घं.	मि.	१४ श. घं.	मि.	१५ र. घं.	मि.
वृष	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	[illegible]
मिथुन	९	[illegible]	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	[illegible]
सिंह	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	[illegible]
कन्या	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३	३	४९	३	४५	३	४१	३	३७	३	३३	३	२९	३	२५	३	२२	३	१८	३	[illegible]
तुला	६	२५	६	२१	६	१७	६	१३	६	९	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८	५	[illegible]	५	[illegible]
रा.			रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृश्चि.	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	[illegible]
धनु	१०	[illegible]	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२
मकर	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	५	१२	१	११	५७	११	५३	११	४९	११	४५	११	४१	११	३७
कुम्भ	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	९
मीन	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४१	२	३७
मेष	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ रवौ कृत्तिकायां-रक्तवस्त्र प्रवालरत्न धारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, शिल्पविद्यारम्भः। [illegible] (ति.दा.)

तिथि २ सोमे रोहिण्यां- मृग.-गर्भाधानं, जातकर्म, अन्नप्राशनं, विपणि व्यापारः गवांक्रय विक्रयो, अलंकार निर्माण धारण च, हलप्रवहणं बीजवपनं, कण मर्दनं, धान्यरोपणं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीदर्शनं, जलाशयारम्भ।

तिथि ३ भौमे मृगशिरायां-पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, उग्रकर्माचरणं (आर्द्रायां) रिक्तातरं।

तिथि ४ बुधे आर्द्रायां पुनर्वसोश्च-पंचम्यां-नामकरणं, अन्नप्राशनं, गवाक्रयविक्रयौ, नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं,

तिथि ५/६ गुरौ पुष्ये-पुंसवनसीमन्तौ, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं, विपणि-व्यापारः, गवांक्रय विक्रयौ नव-वस्त्रधारणं, बीज-वपनं, धान्यस्थापनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, शस्त्रधारणं इष्टिकानिर्माणं, अधिकारी दर्शनं, ऋणग्रहणं दानंच जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ७ शुक्रे श्लेषायां-जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर, भूमिक्रयः।

तिथि ८ शनौ मघायां-इष्टिकादहनं (ति.दा.)

तिथि ९ रवौ पूर्वाफाल्गुन्यां-रिक्तादोषः।

राशि–फलम्
सुखं अर्थागमः
सुखं धनाप्तिः
दुःखं शत्रु नाशः धनागमः
दुःखम् धनागमः
धर्मलाभः असुखं
सुख लाभः
विपत्तिः धनदः
शोकं अतिभयं
शत्रु भयं पीडा
सुखं पुत्रलाभः
धनागमः

तिथि १० सोमे उत्तराफाल्गुन्यां-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणि-व्यापारः, अलंकारनिर्माणं धारणं च हलप्रवहणं बीजवपनं, कर्णवेधनं, धान्यरोपणं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीदर्शनं, जलाशयारम्भः।

तिथि ११ भौमे हस्तभे-पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, रक्तवस्त्रधारणं।

तिथि १२ बुधे हस्तचित्रयोः-जातकर्म नामकरणं विपणिव्यापारः क्रयः, गवांक्रयविक्रयौ, नव वस्त्र धारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि १२ गुरौ चित्रायां स्वात्यां च- गर्भाधानं, प्रसूतिस्नानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, क्रयः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, भृत्यकर्मारम्भः, आ.पत्रलेखनं, लता वृक्षादिरोपणं, अधिकारीणां दर्शनं, ऋणग्रहणं दानं च सेवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि १३ शुक्रे स्वात्यां-रिक्तापूर्वं-नामकरणं अन्नप्राशनं, क्रयः, नववस्त्रधारणं, अलंकारनिर्माणं धारणं व हलप्रवहणं बीजवपनं, आ.पत्रलेखनं, ऋणग्रहणं दानं च, नौका जलयाननिर्माणं।

तिथि १४ शनौ-विशाखायां-इष्टिकादहनं, ततोरिक्तादोषः।

तिथि १५ रवौ अनुराधायां-प्रसूति स्नानं, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनम्, विपणि व्यापारः, अधिकारीदर्शनम्, सेवारम्भः।

घबाड़ मुहूर्त

सूर्य नक्षत्र के दिन नक्षत्र का गिनकर जितनी संख्या हो, उसको ३ से गुणा करे और वर्तमान तिथि संख्या उसमें मिलाकर ७ का भाग दे (कोई आचार्य ९ का भाग देने को लिखते हैं) बाकी ३ शेष रहे तो उस दिन घबाड़ योग है, ऐसा समझना। यह योग प्रयाण (यात्रा) में शुभ माना जाता है।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादि	अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क.	वि.	घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३३	३८	१	सो.	१९	५०	दि.	१	१२	ज्येष्ठा	३२	५४	सा.	६	[illegible]	[illegible]	५७	दि.	८	३	कौ.	११	५०	तै.	५२	०	पद्म	३१	१	१६	१०	धनु	३२	५४	५	१६	६	४४	२१	४७	१	१५	११	५०	५७	१५	-	५	७	३७
३३	४०	२	मं.	२४	१०	दि.	२	५६	मूल	३८	३४	रा.	८	[illegible]	[illegible]	४	दि.	८	३०	ग.	२४	१०	व.	५५	५४	छत्र	१	२	१७	११				५	१६	६	४४	२१	५७	१	१६	९	५	५७	१४	-	५	८	२७
३३	४१	३	बु.	२७	३८	दि.	४	११	पूर्वाषाढ़ा	४३	२२	रा.	१०	[illegible]	८	३४	दि.	८	४३	वि.	२७	३८	बव.	५८	३२	श्रीवत्स	२	३	१८	१२	मकर	५९	१८	५	१६	६	४४	२२	७	१	१७	६	१९	५७	१३	-	४	९	१६
३३	४३	४	गु.	२९	५५	दि.	५	१३	उत्तराषाढ़ा	४७	४	रा.	१२	शुक्ल	८	२०	दि.	८	३५	बा.	२९	५५	कौ.	६०	०	सौम्य	३	४	१९	१३				५	१५	६	४५	२२	१३	१	१८	३	३२	५७	१२	-	४	१०	२
३३	४४	५	शु.	३१	३	दि.	५	४०	श्रवण	४९	३१	रा.	१	ब्रह्म	७	१०	दि.	८	७	कौ.	०	२९	तै.	३१	३	धूम्र	४	५	२०	१४				५	१५	६	४५	२२	१९	१	१९	०	४४	५७	११	-	४	१०	४७
३३	४६	६	श.	३०	५०	दि.	५	३५	धनिष्ठा	५०	३८	रा.	१	ऐन्द्र	४	५७	दि.	७	१४	ग.	०	५६	व.	३०	५०	प्रवर्ध	५	६	२१	१५	कुम्भ	२०	५	५	१५	६	४५	२२	२५	१	१९	५७	५५	५७	१०	-	४	११	२९
३३	४७	७	र.	२९	२२	दि.	५	०	शतभिषा	५०	३६	रा.	१	वैधृति	१/५५	४६/४३	प्रा.	५/४	५७/११	वि.	०	६	बव.	२९/५८	१२/२	राक्षस	६	७	२२	१६				५	१५	६	४५	२२	३०	१	२०	५५	५	५७	९	-	४	१२	१०
३३	४८	८	सो.	२६	४३	दि.	३	५५	पूर्वाभाद्र	४९	२५	रा.	१	प्रीति	५२	२९	रा.	२	१४	कौ.	२६	४३	तै.	५४	५३	मुसल	७	८	२३	१७	मीन	३४	४३	५	१४	६	४६	२२	३५	१	२१	५२	१४	५७	८	-	४	१२	५०
३३	४९	९	मं.	२३	३	दि.	२	२७	उत्तराभाद्र	४७	२४	रा.	१२	आयुष्मान	४६	४०	रा.	११	५४	ग.	२३	३	व.	५०	४८	सिद्धि	८	९	२४	१८				५	१४	६	४६	२२	४२	१	२२	४९	२२	५७	७	-	३	१	३०
३३	५०	१०	बु.	१८	३२	दि.	१२	३९	रेवती	४४	२९	रा.	११	सौभाग्य	४०	१२	रा.	९	१९	वि.	१८	३२	बव.	४५	५५	उत्पात	९	१०	२५	१९	मेष	४४	२९	५	१४	६	४६	२२	४८	१	२३	४६	२९	५७	६	-	३	२	१२
३३	५१	११	गु.	१३	१९	दि.	१०	३४	अश्विनी	४०	१६	रा.	९	शोभन	३३	११	रा.	६	३०	बा.	१३	१९	कौ.	४०	२७	मानस	१०	११	२६	२०				५	१४	६	४६	२२	५४	१	२४	४३	३५	५७	५	-	३	२	५६
३३	५२	१२	शु.	७	३५	दि.	८	१६	भरणी	३७	१	रा.	८	अतिगण्ड	२६	४१	दि.	३	५८	तै.	७	३५	ग.	३४	३२	मुद्गर	११	१२	२७	२१	वृष	५०	५१	५	१४	६	४६	२३	१	१	२५	४०	४०	५७	३	-	३	३	४४
३३	५३	१३	श.	१/५३	३०/४५	प्रा.	५/३	४१/३१	कृत्तिका	३२	५३	सा.	६	सुकर्मा	१८	१७	दि.	१२	३२	व.	१	३०	वि.	२८/५५	२३/१५	ध्वज	१२	१३	२८	२२				५	१३	६	४७	२३	८	१	२६	३७	४३	५७	२	-	३	४	३६
३३	५४	३०	र.	४९	८	रा.	१२	५२	रोहिणी	२८	४२	दि.	४	धृति	१०	३७	दि.	९	२८	च.	२२	१२	ना.	४९	८	धाता	१३	१४	२९	२३	मिथुन	५६	४४	५	१३	६	४७	२३	१०	१	२७	३४	४५	५७	१	-	२	+	+

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः।

दिनांक ३१ मई - १३ जून १९९९ ई. (राष्ट्रीय ज्येष्ठ १० - २३)
सौम्यायन सौम्यगोल ग्रीष्म ऋतुः।

- धनु राशिः३२।५४ (सा.६।२६)।
- भद्रा घ.५५।५४ (रा.३।३८) उ.।
- मकरराशिः५९।१८ (रा.४।५९)। भद्रा घ.२७।३८ (दि.४।२९) या.। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदय रा.९।१६ बादन चन्द्राय अर्घ्यम्। याम्य (मुद्दह) जयद् योग घ.२९।५५ (दि.५।२३) (क)
- याम्य (मुद्दह) जयद् योगः घ.२९।५५ (दि.५।२३) उ. घ.४७।४ (रा.१२।५) या.।
- सर्वार्थसिद्धियोगः घ.४९।३१ (रा.१।३) या.। दोष सर्वविनाशको रवियोगः घ.४९।३१ (रा.१।३) या.। (क) उ. घ.४७।४ (रा.१२।५) या.।
- कुम्भ राशिः२०।५ (दि.१।५७)। पचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा घ.३०।५० (दि.५।३५) उ.। दोष सर्व विनाशक रवियोग घ.५०।३८ (रा.१।३०) या.। पश्चिम दिशायाम् बुधोदयः। चेहल्लुम।
- भद्रा घ.०।६ (प्रा.५।१७) या.। भानु सप्तमी पर्व।
- मीन राशिः३४।४३ (रा.७।७)। श्रीशीतलाष्टमी व्रतम्। पर्युषितान्नपानादिकमत्रविहितम्।
- भद्रा घ.५०।४८ (रा.१।३३) उ.। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.४७।२४ (रा.१२।१२) या.। ⊙मृगशिरा (मृगडाह) नक्षत्र रविः घ.३२।२२ (सा.६।७)।
- मेष राशिः४४।२९ (रा.११।१२)। पचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा घ.१२।३९ (दि.१०।१२) या.। मु. पर्व बारा शब्बा।
- पुरुषोत्तमी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.४०।१६ (रा.१।२०) या.।
- वृष राशिः५०।५१ (रा.१।३८)। प्रदोष व्रतम् १२।
- भद्रा घ.१।३० (प्रा.५।१७) या.। उ. घ.२८।२३ (दि.४।३४) या.। पुरुषोत्तमी मास शिव रात्रि व्रतम् १४। सर्वार्थसिद्धियोग घ.३२।५३ (सा.६।२२) उ.।
- मिथुन राशिः५६।४४ (रा.३।५५)। स्नानदान श्राद्धादौ पुरुषोत्तमी अमावस्या ३०। पुरुषोत्तम मास (मलमास) समाप्ति। पाप कारान्वितं दशौ दुर्भिक्षं च प्रजा भयम्। मु. पर्व शहादते इमामहसन।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	सो.	७	२३	२१	१२	५	२६	५४	१४	६	२५	१	२०	९	२६	१२१	४५	०	०	६	२७	११	३५	२	२८	२५	१५	६५	४९	०	१५	४६	२१	७	३८	३	२२	३४	५१
२	मं.	८	५	४१	५४	५	२६	४७	४९	६	०	१	२२	११	११	१२०	२५	०	०	१७	५२	११	३५	२	२९	३१	४	६५	३५	०	१५	५३	५९	७	२८	३	२२	३१	४०
३	बु.	८	१८	४	१७	५	२६	४१	४९	४	२०	१	२४	११	६	१२०	५	०	०	२९	२७	११	३०	३	०	३६	३९	६५	२९	०	१६	१	२७	७	२५	३	२२	२८	२९
४	गु.	९	०	४०	३६	५	२६	३७	२९	२	२९	१	२६	१२	११	११९	१५	०	०	४०	५७	११	३०	३	१	४२	८	६५	२०	०	१६	८	५२	७	२३	३	२२	२५	१८
५	शु.	९	१३	३१	२३	५	२६	३५	०	मा०	३०	१	२८	११	२६	११८	३५	०	०	५२	२७	११	२४	३	२	४७	२८	६५	२०	०	१६	१६	१५	७	२०	३	२२	२२	७
६	श.	९	२६	३८	८	५	२६	३४	३०	०	४२	२	०	१०	१	११७	४५	०	१	३	५१	११	२४	३	३	५२	३८	६५	१०	०	१६	२३	३५	७	१८	३	२२	१९	५६
७	र.	१०	९	५८	११	५	२६	३५	१२	१	२९	२	२	७	४६	११७	५	०	१	१५	१५	११	२०	३	४	५७	४८	६४	४०	०	१६	३०	५३	७	१५	३	२२	१६	४५
८	सो.	१०	२३	३२	३१	५	२६	३७	४१	२	५०	२	४	४	५१	११६	२५	०	१	२६	३५	११	२०	३	६	२	२०	६४	३१	०	१६	३८	८	७	१२	३	२२	१३	३४
९	मं.	११	७	१६	५	५	२६	४०	३१	४	५६	२	६	१	१६	११५	५०	०	१	३७	५५	११	२०	३	७	६	४१	६४	३	०	१६	४५	२०	७	९	३	२२	१०	२३
१०	बु.	११	२१	२१	२८	५	२६	४५	२७	६	२०	२	७	५७	६	११४	५०	०	१	४९	१५	११	१८	३	८	१०	४४	६३	५३	०	१६	५२	२९	७	६	३	२२	७	१२
११	गु.	०	५	३२	४६	५	२६	५१	३७	९	४२	२	९	५२	५६	११४	५०	०	२	०	३३	११	१८	३	९	१४	३७	६३	३२	०	१६	५९	३५	७	४	३	२२	४	१
१२	शु.	०	१९	४२	५७	५	२७	१	१९	१०	३०	२	११	४७	६	११३	५८	०	२	११	५१	११	१८	३	१०	१८	९	६३	११	०	१७	६	३९	७	२	३	२२	०	५०
१३	श.	१	३	३९	४०	५	२७	११	४९	११	४०	२	१३	४१	४	११३	१०	०	२	२३	९	११	१५	३	११	२१	२०	६३	२	०	१७	१३	४१	६	५७	३	२१	५७	३९
३०	र.	१	१७	४१	३०	५	२७	२४	२९	१२	३९	२	१५	३४	१४	११२	४५	०	२	३४	२४	११	१५	३	१२	२४	२२	६२	४१	०	१७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	२१	५४	२८

फलम्—मलमास का यह दूसरा पखवारा १४ दिन का ही है क्योंकि शनिवार को चतुर्दशी तिथि का क्षय है। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान २ जून बुधवार को होगा एवं चन्द्रोदय समय रात ९।१६ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। ६ जून रविवार को भानु सप्तमी का पर्व मिल रहा है। सप्तमी रविवार के संयोग से भानु सप्तमी का योग बनता है। पुरुषोत्तममास में पड़ने से इसका महत्व बढ़ जाता है। इसमें स्नान-दान का विशेष महत्व होता है। श्रीशीतलाष्टमी व्रत (बसियउरा) ७ जून सोमवार को किया जायेगा। इसमें बासी पकवान प्रसाद स्वरूप ग्रहण करने का विधान है। पुरुषोत्तमी एकादशी का व्रत सबके लिये १० जून गुरुवार को होगा। प्रदोष व्रत ११ जून शुक्रवार को किया जायेगा। पुरुषोत्तम मास में मास शिवरात्रि का व्रत अत्यन्त पुण्यफलदायक होता है, इसका मान १२ जून शनिवार को क्षयवती चतुर्दशी में होगा। १३ जून रविवार को स्नानदान, श्राद्ध सहित पुरुषोत्तमी अमावस्या पड़ रही है और इसी के साथ १३ जून रविवार को मलमास की समाप्ति भी हो जायेगी। मृगशिरा (मृगडाह) नक्षत्र का सूर्य ८ जून मंगलवार की सायं ६।७ बजे से आवेगा। भीषण एवं उमस भरी गर्मी से जनता बेहाल रहेगी। अग्निकाण्ड की भी घटनाएं घटकर धन-जन को क्षति प. [illegible] ायेगी। मानसून पूर्व धूलभरी आँधी के साथ बूँदा-बाँदी वर्षा होने के भी योग मिल रहे हैं किन्तु उमस भरी गर्मी जारी रहेगी। रूई, अलसी, गेहूँ तेल में त. [illegible] रोक र पुनः मन्दी का अवधारणा चलेगी। रविवार की अमावस्या मँहगी एवं उपद्रव कारक है।

पं.११ अ.ज्येष्ठ कृष्ण ८ सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २३३२
अयनांशाः २३/५०/१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	५	२	०	३	०	३	९
२१	२३	२६	४	१	५	१६	२२	२२
५२	३२	३७	४	२६	२	३८	१३	१३
१४	३१	४१	५१	३५	२०	८	३४	३४
५७/८	८०६/४२	२/५०/मा	११६/२५	११/२०	६४/२१	७/१२	३/११	३/११

बु.३ | २ सू. | गु.१श. | ४रा. शु. | १२ | ५ | ११ चं. | ६ मं. | ८ | के. १० | ७ | ९

भौमादीनां चारः-
भौमः-(वक्री) तिथि ५ शुक्रतः मार्गी। चित्रायां कन्या राशौ।
बुधः-वृष राशौ, तिथि ५ शुक्रतः मिथुन राशौ घ.५४।१०।
गुरुः-अश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-मिथुन राशौ तिथि २ भौमतः कर्कराशौ घ.२८।३०।
शनिः-भरण्यां १ चरणे मेष राशौ। तिथि ८ सोमतः भरण्यां २ चरणे घ.१५।४८।
राहुः-श्लेषायां २ चरणे।
केतुश्चः-श्रवणभे ४ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ सो. घं.	मि.	२ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ सो. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	३० र. घं.	मि.
वृष	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३३	५	२९	५	२५	५	२०
मिथुन	८	२५	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४
कर्क	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२
सिंह	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६
कन्या	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५०	२	४६	२	४२	२	३८	२	३४	२	३०	२	२६	२	२३	२	१९
तुला	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृश्चिक	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५६	६	५२
धनु	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२५	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७
मकर	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२
कुम्भ	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	[illegible]
मीन	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१
मेष	४	११	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४८	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ सोमे ज्येष्ठायां-नामकरणं, गवां क्रयविक्रयः।
तिथि २ भौमे मूलभेः-पुंसवनं, सीमन्तः, नामकरणं।
तिथि ३ बुधे पूर्वाषाढायां-जलयंत्रकर्म,मुकदमादायर, जलाशयारम्भः।
तिथि ४ गुरौ उत्तराषाढायां-रिक्तादोषः।
तिथि ५ शुक्रे श्रवणे गर्भाधानं, क्रयः, अलंकार निर्माणं, धारणं च, हलप्रवहणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्र लेखनं, ऋणग्रहणं दानं।
तिथि ६ शनौ धनिष्ठायां-मुहुर्ताभावः।
तिथि ७ रवौ शतभिषायां-गवां क्रयविक्रयौ, रक्तवस्त्र प्रवालरत्नधारणं, धान्यरोपणं, जलयंत्र कर्म, आ. पत्रलेखनं।
तिथि ८ सोमे पूर्वाभाद्रपदायां-धान्यरोपणं, चूल्हीस्थापनं, जलयंत्रकर्म (ति.दा.)।
तिथि ९ भौमे उत्तराभाद्रपदायां-रिक्तादोषः। रिक्तोत्तरं प्रसूतिस्नानं।
तिथि १० बुधे रेवत्यां-जातकर्म, विपणि-व्यापारः क्रयः गवां क्रयविक्रयौ, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।
तिथि ११ गुरौ आ[illegible] गर्भातिस्नानं, जातकर्म, विपणि व्यापारः, क्रयः, गवांक्रय विक्रयौ, नववस्त्रधारणं, हल[illegible], बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, इष्टिकानिर्माणं, अधिकारीदर्शनं, ऋणग्रहणं दानं च, सेवारम्भः, नौकाजलयान निर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।
तिथि १२ शुक्रे भरण्यां-मुकदमादायर।
तिथि १३/१४ शनौ कृतिकायां-इष्टिकादहनं, रोगविमुक्तस्नानं।
तिथि ३० रवौ रोहिण्यां-मासान्तदोषः।

पं.१२ अ.ज्येष्ठ कृ.३० रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः [illegible]
अयनांशाः २३/५०/[illegible]

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

४बु. रा. | २ सू.चं. | ११ | ५ | ६ मं. | ८ | के. १० | ७ | ९

राशि-फलम्

मेष	सुखायं लाभः
वृष	रोगं, धननाशः
मिथुन	कष्टं शत्रुभयं
कर्क	सुखं श्री प्रीतिः
सिंह	धननाश, मनःकष्ट
कन्या	पीडाभयम्
तुला	रोगं शोकश्च
वृश्चिक	लाभ सुखं
धनु	सुखं शोकश्च
मकर	रुग्भयं सुखम्
कुम्भ	भयं पाप बुद्धिः
मीन	कार्यं धननाशः

अधिमास (मलमास) जानने की रीति

शाकः षट्‌ स भूपकैर्विरहितो नन्देन्दुभिर्भाजितः
शेषेऽष्टौ च मधुः शिवे तदपरो ज्येष्ठोऽम्बरे चाष्टके।
आषाढो नृपतौ नभश्च शरके विश्वे नभस्यस्तथा
बाहोश्चाश्विनसंज्ञको मुनिवरैः प्रोक्तोऽधिमासः क्रमात्।।

शाके की संख्या में १६६६ घटाकर शेष में १९ के भाग देने से ३ शेष बचे तो चैत्र, ११ शेष बचे तो वैशाख, १० या ८ शेष बचे तो ज्येष्ठ, १६ शेष बचे तो आषाढ़, ५ शेष बचे तो श्रावण, १३ शेष रह जाय तो भाद्रपद और २ शेष बचे तो आश्विन में अधिमास समझना चाहिए। अन्य शेष बचे तो इस शाके में अधिमास नहीं होगा।

उदाहरण--प्रस्तुत शाके वर्ष १९२१-१६६६=२५५
१९)२५५(१३
२४७
×× ८ = इस प्रकार ८ शेष बचा अतः ज्येष्ठ अधिमास हुआ।

मलमासे च व्रतविशेष उक्तो हेमाद्रौ पाद्मे-"अधिमासे तु संप्राप्ते गुडसर्पिर्युतानि च। त्रयस्त्रिंशदपूपानि दातव्यानि दिनेदिने।। साज्यानि गुडमिश्राणि अधिमासे नृपोत्तम। अधिमासे तु संप्राप्ते त्रयस्त्रिंशत्तु देवताः।। उद्दिश्यापूपदानेन पृथ्वीदानफलं लभेत्। त्रयस्त्रिंशदपूपाश्च कांस्यपात्रे निधाय च।। सघृतं सहिरण्यं च ब्राह्मणाय निवेदयेत्। विष्णुरूपी सहस्रांशुः सर्वपापप्रणाशनः।। अपूपान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु। नारायण जगद्बीज भास्कर प्रतिरूपक।। व्रतेनानेन पुत्राश्च संपद् चाभिवर्धय। यस्य हस्ते गदाचक्रे गरुडो यस्य वाहनम्।। शंखः करतले यस्य स [illegible] विष्णुः प्रसीदतु। कलाकाष्ठादिरूपेण निमेषघटिकादिना।। यो वञ्चयति भूतानि तस्मै काल[illegible]ने नमः। कुरुक्षेत्रमयं देशः कालः पर्व द्विजो हरिः।। पृथ्वीसममिदं दानं गृहाण पुरुषोत्तम। [illegible]नां च विशुद्ध्यर्थं पापप्रशमनाय च।। पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थं तव दास्यामि भास्कर। मंत्रेणानेन यो दद्यात्रयस्त्रिंशतपूपकान्।। प्राप्नोति विपुलां लक्ष्मीं पुत्रपौत्रादिसंपदः।।"

दि.मा. घ.	प.	शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल तिथि ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औद. योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दि.मा. इ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग.वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
३३	५४	१	सो.	४३	१८	रा.	१०	३२	मृगशिरा	२४	४५	दि.	३	७	शूल	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	कि.	१६	१३	बव	४३	१८	आनन्द	१४	१५	३०	२४				५	१३	६	४७	२३	१४	१	२८	३१	४६	५६	-	२	७	२५
३३	५५	२	मं.	३७	५६	रा.	८	२३	आर्द्रा	२१	१२	दि.	१	४२	वृद्धि	४९	१	रा.	११	४९	वा.	१०	३७	को	३७	५६	कालदंड	१५	१६	३१	२५				५	१३	६	४७	२३	१७	१	२९	२८	४६	५७	-	२	८	२६
३३	५५	३	बु.	३३	११	सा.	६	२९	पुनर्वसु	१८	१६	दि.	१२	३१	ध्रुव	४२	४६	रा.	१०	११	ते.	५	३३	ग.	३३	११	गद्	१६	१७	१	२६	कर्क	४	०	५	१३	६	४७	२३	२०	२	०	२५	४५	५७	-	२	९	२२
३३	५६	४	गु.	२९	१७	दि.	४	५६	पुष्य	१६	१०	दि.	११	४१	व्याघात	३७	११	रा.	८	५	व.	१	१४	वि.	३१	१७	शुभ	१७	१८	२	२७				५	१३	६	४७	२३	२२	२	१	२२	४४	५८	-	२	१०	१२
३३	५६	५	शु.	२६	२०	दि.	३	४५	श्लेषा	१४	५४	दि.	११	११	हर्षण	३२	२९	दि.	६	१३	वा.	२६	२०	कौ.	५५	२७	मृत्यु	१८	१९	३	२८	सिंह	१४	५४	५	१३	६	४७	२३	२४	२	२	१९	४२	५८	-	२	१०	५६
३३	५६	६	श.	२४	३५	दि.	३	३	मघा	१४	४५	दि.	११	७	वज्र	२८	३९	दि.	४	४१	ते	२४	३५	ग.	५४	१७	पद्म	१९	२०	४	२९				५	१३	६	४७	२३	२५	२	३	१६	४०	५७	-	१	११	३६
३३	५७	७	र.	२४	०	दि.	२	४९	पू.फाल्गुनी	१५	४७	दि.	११	३२	सिद्धि	२५	४९	दि.	३	३३	व.	२४	०	वि.	५४	२२	छत्र	२०	२१	५	३०	कन्या	३१	२२	५	१३	६	४७	२३	२६	२	४	१३	३७	५७	-	१	१२	१३
३३	५७	८	सो.	२४	४५	दि.	३	७	उ.फाल्गुनी	१८	८	दि.	१२	२८	व्यतिपात	२३	५७	दि.	२	४८	बव.	२४	४५	वा.	५५	४७	श्रीवत्स	२१	२२	६	३१				५	१३	६	४७	२३	२६	२	५	१०	३४	५६	-	१	१२	४९
३३	५७	९	मं.	२६	४९	दि.	३	५७	हस्त	२१	४३	दि.	१	५४	वरीयान	२३	१०	दि.	२	२९	कौ.	२६	४९	ते	५८	२३	सौम्य	२२	२३	७	१	तुला	५४	५	५	१३	६	४७	२३	२६	२	६	७	३०	५६	-	०	१	३०
३३	५७	१०	बु.	२९	५८	दि.	५	१२	चित्रा	२६	२७	दि.	३	४८	परिघ	२३	१४	दि.	२	३१	ग.	२९	५८	व.	६०	०	कालदंड	२३	२४	८	२				५	१३	६	४७	२३	२६	२	७	४	२६	५५	-	०	१	५८
३३	५७	११	गु.	३४	७	सा.	६	५२	स्वाती	३२	३	दि.	६	२	शिव	२४	४	दि.	२	४१	व.	२	२	वि.	३४	७	स्थिर	२४	२५	९	३				५	१३	६	४७	२३	२५	२	८	१	२२	५५	-	०	२	३४
३३	५६	१२	शु.	३८	५३	रा.	८	४६	विशाखा	३८	२०	रा.	८	३३	सिद्ध	२५	२६	दि.	१	२३	बव.	६	३०	वा.	३८	५३	मातंग	२५	२६	१०	४	वृश्चिक	२१	४६	५	१३	६	४७	२३	२४	२	८	५८	१९	५४	+	०	३	१२
३३	५६	१३	श.	४३	५७	रा.	१०	४८	अनुराधा	४४	५५	रा.	११	११	साध्य	२७	७	दि.	१	४	कौ	११	२५	ते	४३	५७	अमृत	२६	२७	११	५				५	१३	६	४७	२३	२३	२	९	५५	१०	५४	+	१	३	५३
३३	५६	१४	र.	४८	५१	रा.	१२	४५	ज्येष्ठा	५१	१९	रा.	१	४५	शुभ	२८	४४	दि.	१	४३	ग.	१६	२४	व.	४८	५१	काण	२७	२८	१२	६	धनु	५१	१९	५	१३	६	४७	२३	२१	२	१०	५२	४	५३	+	१	४	३७
३३	५५	१५	सो.	५३	१०	रा.	२	२९	मूल	५७	११	रा.	४	५	शुक्ल	३०	२	दि.	५	१४	वि.	२१	०	बव	५३	१०	लुम्बक	२८	२९	१३	७				५	१३	६	४७	२३	१८	२	११	४८	५७	५२	+	१	+	+

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१ [illegible] द्ध ज्येष्ठ शुक्ल [illegible]

करवीर १ व्रतम्। सर्वार्थोऽमृतसिद्धियोगौ घ.२४।४५ (दि.३।[illegible]) या.।
चन्द्र दर्शनम् मु.४५ वृहती समर्घताकरम्। सौम्य [illegible] ⊙स.मिथुन राशौ रविः [illegible]
कर्क राशिः४।०(दि.६।४९)। मु. रबिउल अव्वल ३ हिजरी सन् १[illegible]२०। रम्भा ३ व्रतम्। महाराणा [illegible]
भद्रा१।१४ (प्रा.५।४३) उ. घ.२९।१७ (दि.४।५६) [illegible] श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। [illegible]
सिंह राशिः१४।५४ (दि.११।११)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः घ.१४।५४ (दि.११।११) उ.। [illegible]
दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.१४।४५ (दि.११।[illegible]) या.। (ञ) (मुहालेह) जयद् योगः [illegible]
कन्या राशिः३१।२२ (दि.५।४६)। भद्रा घ.२४।० (दि.[illegible]।४९) उ. घ.५४।२२ (रा.२।५८) या. [illegible]
अष्टम्या शुक्लादेव्याः पूजनम्। श्रीदुर्गाष्टमी ८। धूमावती जयन्ती। यायि (मुद्दई)जयद् योगः घ.२४ [illegible]
तुला राशिः ५४।५ (रा.२।५१)। उमा ब्रह्माणि पूजा व्रतम् च नवम्या। ⊙ आर्द्रा नक्षत्रे रविः घ. [illegible]
दोष संघ विनाशको रवियोगः यावद्दिनम्। (ख) दोषसंघ विनाशको रवियोगः घ.१८।१६ (दि. [illegible]
भद्रा घ.२।२(दि.६।२)उ. घ.३४।७(रा.६।५२) या.। निर्जला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। इयम् [illegible]
वृश्चिक राशिः२१।४६(दि.१।५५)। त्रिविक्रम पूजा। काश्या गौतमेश्वर यात्रा दर्शनम्। सर्वार्थसिद्धि [illegible]
शनि प्रदोष व्रतम् १३। पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। दक्षिणात्यानाम वट सावित्री व्रतारम्भः दिन त्रयंयावत् [illegible]
धनु राशिः५१।१९ (रा.१।४५)। भद्रा घ.४८।५१ (रा.१२।४५) उ.। मृत्युबाणः घ.८।२८ (दि.८।३[illegible]
भद्रा घ.२१।० (दि.१।३७) या.। स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५। दक्षिणात्यानाम् वट सावित्री व्रत [illegible]

[illegible] क्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्म ऋतुः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	सो.	२	१	४९	१३	५	२७	३८	५	१४	२५	२	१७	२६	४	१०९	३०	०	२	४५	३९	११	[illegible]	३	१३	२७	११	६२	४०	०	१७	२७	३८	६	५४	३	२१	५१	१८
२	मं.	२	१५	५१	८	५	२७	५२	३०	१५	१९	२	१९	१५	३४	१०७	२५	०	२	५६	५४	११	[illegible]	३	१४	२९	५१	६२	०	०	१७	३४	३२	६	५१	३	२१	४८	७
३	बु.	२	२९	४७	५	५	२८	७	४९	१५	५३	२	२१	२	५९	१०५	५	०	३	७	४	११	[illegible]	३	१५	३२	११	६२	१२	०	१७	४१	२३	६	४८	३	२१	४५	५६
४	गु.	३	१३	३२	४१	५	२८	२३	४२	१५	५९	२	२२	४८	४	१०३	१०	०	३	१८	१४	११	[illegible]	३	१६	३४	२३	६२	०	०	१७	४८	११	६	४५	३	२१	४२	४५
५	शु.	३	२७	७	२८	५	२८	३९	४१	१६	२०	२	२४	३१	१४	१००	२०	०	३	२९	२०	११	[illegible]	३	१७	३६	२३	६१	४०	०	१७	५४	५६	६	४२	३	२१	३९	३४
६	श.	४	१०	२९	११	५	२८	५६	१	१६	३७	२	२६	११	३४	९७	१३	०	३	४०	२२	१०	[illegible]	३	१८	३८	३	६१	२२	०	१८	१	३८	६	३८	३	२१	३६	२३
७	र.	४	२३	३७	४५	५	२९	१२	३८	१६	४३	२	२७	४८	४७	९३	३५	०	३	५१	१६	१०	[illegible]	३	१९	३९	२५	६१	५	०	१८	८	१६	६	३४	३	२१	३३	१२
८	सो.	५	६	२९	१५	५	२९	२९	२१	१६	५८	२	२९	२२	२२	९०	१०	०	४	२	१०	१०	[illegible]	३	२०	४०	३०	६०	४८	०	१८	१४	५०	६	३०	३	२१	३०	१
९	मं.	५	१९	६	३५	५	२९	४६	११	१७	१८	३	०	५२	३२	८६	१०	०	४	१३	२	१०	[illegible]	३	२१	४१	१८	६०	२५	०	१८	२१	२०	६	२७	३	२१	२६	५०
१०	बु.	६	१	२१	४२	६	०	३	३७	१७	३१	३	२	१८	४२	८०	१५	०	४	२३	५४	१०	[illegible]	३	२२	४१	४३	६०	१	०	१८	२४	४७	६	२३	३	२१	२३	३९
११	गु.	६	१३	४२	५१	६	०	२१	१६	१७	४४	३	३	३८	५७	७५	२५	०	४	३४	४४	१०	[illegible]	३	२३	४१	५२	५९	४०	०	१८	३४	१०	६	१९	३	२१	२०	२८
१२	शु.	६	२५	४७	१७	६	०	३९	०	१७	५१	३	४	५४	२२	७२	३०	०	४	४५	३४	१०	[illegible]	३	२४	४१	३२	५९	१३	०	१८	४०	२९	६	१६	३	२१	१७	१७
१३	श.	७	७	४८	५०	६	०	५६	५१	१७	५८	३	६	६	५२	६५	१०	०	४	५६	१६	१०	[illegible]	३	२५	४०	४५	५९	०	०	१८	४६	४५	६	१३	३	२१	१४	६
१४	र.	७	१९	४९	११	६	१	१४	४१	१८	१८	३	७	१२	२	६०	२५	०	५	६	५८	१०	[illegible]	३	२६	३९	४५	५८	३७	०	१८	५२	५८	६	९	३	२१	१०	५५
१५	सो.	८	१	५९	४८	६	१	३३	७	१८	२५	३	८	१२	२७	५७	१२	०	५	१७	४०	१०	[illegible]	३	२७	३८	२२	५८	०	०	१८	५९	७	६	५	३	२१	७	४४

फलम्—यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। विवाहादि सभी मांगलिक कृत्यों के लिये मुहूर्त पक्षारम्भ १४ जून से ही मिलना प्रारम्भ हो जायेंगे। मंगलवार का चन्द्रदर्शन मु.१५ बाजार में तेजी की लहर। दैनिक उपयोग की प्रायः सभी वस्तुओं का भाव चढ़ जायेगा। मिथुन राशि की सूर्य संक्रान्ति १५ जून मंगलवार को सायं ६।२३ बजे से आवेगी। इसके फल से भी मँहगाई बढ़ जायेगी। दूध-फल-तरकारी, का अभाव खटकेगा। **आर्य कुल गौरव महाराणाप्रताप जयन्ती १६ जून** बुधवार को मनाई जायेगी। **भानु सप्तमी पर्व** का योग २० जून रविवार को मिल रहा है। स्नान-दान-पुण्यफलदायक रहेगा। निर्जला एकादशी २४ जून गुरुवार को सबके लिये होगी इसी को **भीम सेनी एकादशी** भी कहा जाता है। इसमें शर्करा (चीनी) एवं स्वर्ण के साथ जलघट का दान किया जाता है। **पुत्र की कामना से शनि-प्रदोष व्रत** २६ जून को किया जायेगा एवं आज ही दक्षिणात्यों में माने जाने वाला वट सावित्री व्रत दिन के लिये आरम्भ होगा। **मुसलिम समुदाय का प्रसिद्ध पर्व वारावफात (ईद-मिलाद)** २७ जून रविवार को सोल्लास मनाया जायेगा। स्नानदान व्रत सहित **पूर्णिमा सन्त कबीर जयन्ती** २८ जून सोमवार को होगी। आर्द्रा नक्षत्र का सूर्य २२ जून मंगलवार को सायं ६।५५ बजे से आवेगा। ग्रहों के बलाबल से ऐसे योग मिल रहे हैं कि २२।२३ जून से उत्तर भारत में मानसून की व्यापक एवं अच्छी वृष्टि प्रारम्भ हो जायेगी। बुध-शुक्र का योग जला एवं अमृतानाड़ी में उत्तम वृष्टिकारक है। पक्ष के तीन सोमवार सामान्यतया शुभ फलकारक हैं। खेती के अनुकूल उत्तम वृष्टि से हर्ष एवं उल्लास का वातावरण।

(क) समर्घता करम्। पूर्वापराः १६ घट्याः पुण्याः। दिनस्य उत्तरार्धे पुण्यकालः। वस्त्र, अन्न, गोदानं, मन्दाकिन्याम् स्नानम्। सोपपदा २ वेदारम्भानध्यायः शुभाशुभे त्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः घ.२१।१२ (दि.१।४२) उ. घ.३७।५६ (रा.८।२३) या.।

पं.१३ शु.ज्येष्ठ शुक्ल८ सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २३४६
अयनांशाः २३/५०/३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	५	२	०	३	०	३	९
५	६	२९	२९	४	२०	१८	२१	२१
१०	२९	२९	२२	२	४०	१४	३०	३०
३४	१५	२१	२२	१०	३०	५०	१	१
५६	७६१	१६	९०	१०	६०	६	३	३
५६	५०	५८	१०	५२	४८	३०	११	११

शु.४ रा. | ३ सू.बु. | २ | श. ९. गु. | ५ | ६ चं.मं. | १२ | ७ | ९ | ११ | ८ | १० के.

भौमादीनां चारः-
भौमः-चित्रायां कन्या राशौ। तिथि ९ भौमतः तुला राशौ घ.४७।३०।
बुधः-मिथुन राशौ तिथि ८ सोमतःकर्क राशौ घ.२५।०।
गुरुः-अश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-कर्क राशौ।
शनिः-भरण्यां २ चरणे मेष राशौ।
राहुः-श्लेषायां २ चरणे।
केतुश्चः-श्रवण भे ४ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ सो. घं.	मि.	२ मं. घं.	मि.	ल.अं.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ सो. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	[illegible]
वृष	५	१६	५	११	मिथुन	७	२३	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन	[illegible]	१०	७	२६	कर्क	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२१	९	१७	९	१३	९	९	९	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	[illegible]	१८	९	४४	सिंह	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२७	११	२३	११	१९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	[illegible]	[illegible]	११	५८	कन्या	२	७	२	३	१	५९	१	५५	१	५१	१	४७	१	४३	१	३९	१	३५	१	३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	[illegible]	[illegible]	२	११	तुला	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	७	४	३	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला	४	११	४	२७	वृश्चि.	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१३	६	९	६	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.		रा.			रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.
वृश्चि.	[illegible]	१८	६	४४	धनु	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	[illegible]
धनु	[illegible]	[illegible]	८	४९	मकर	१०	३१	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	[illegible]
मकर	१०	१८	१०	३५	कुम्भ	१२	२	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुम्भ	११	१०	१२	६	मीन	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन	१	[illegible]	१	३४	मेष	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	[illegible]	२	[illegible]	[illegible]
मेष	१	[illegible]	३	१२	वृष	५	७	५	३	४	५९	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३२	४	[illegible]	४	[illegible]	[illegible]

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ सोमे मृगशिरायां-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, वरवरणं, कन्यावरणं वधूप्रवेशः ल.२ वा ३ विपणि व्यापारः गवां क्रय विक्रयौ, हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, ऋणग्रहणं दानं च सर्वदेवप्रतिष्ठा। नूतनवध्वापाककर्म।

तिथि २ भौमे आर्द्रायां-पुंसवनं,सीमन्तः, उग्रकर्माचरणं (ति.दा.)

तिथि ३ बुधे पुनर्वसौ-नामकरणं,अन्नप्राशनं, कर्णवेधः मुण्डनं, ल.५ अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः उपनयनं ल.४ गवांक्रय-विक्रयौ नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, शय्यासनाद्युपभोगः, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ४ गुरौ पुष्ये-रिक्तादोषः। तिथि ५ शुक्रे श्लेषायां-विद्यारम्भः, यज्ञोपवीतं ल.४ जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर, भूमिक्रयः।

तिथि ६ शनौ मघायां-वधूप्रवेशः, इष्टिकादहनं (ति.दा.)

तिथि ७ रवौ पूर्वाफाल्गुन्यां-प्रसूतिस्नानं, विद्यारम्भः वर-वरणं, कन्यावरणं जलयंत्रकर्म, इष्टिकादहनं, (ति.दा.)।

तिथि ८ सोमे उत्तराफाल्गुन्यां-जातकर्म, नामकरणं, वर-वरणं, कन्यावरणं वधूप्रवेशः (ल.३) विपणि व्यापारः, अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यरोपणं, वृक्षादिरोपणं, अधिकारीदर्शनं सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा।

तिथि ९ भौमे हस्ते-रोगविमुक्तस्नानम् रिक्ता दोषश्च।

तिथि १० बुधे चित्रायां-जातकर्मनामकरणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः ल.५ मुण्डनं ल.५ अक्षरारम्भः, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीतः ल.[illegible] विपणिव्यापारः क्रयः,नववस्त्र धारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः अधिकारी दर्शनं, गृहप्रवेश ल.[illegible] सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्तः, सेवारम्भः शिल्पविद्यारम्भः, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा।

तिथि ११ गुरौ भद्रापूर्वं स्वात्यां-गर्भाधानं, प्रसूतिस्नानं, नामकरणं भद्रापूर्व मुण्डनं,(ल.३) अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, वरवरणं, कन्यावरणं वधूप्रवेशः, (ल.३) क्रयः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं दत्तकपुत्रग्रहणं आ.पत्रलेखनं ऋणग्रहणं दानं च, गृहप्रवेशः ल.[illegible] सर्वदेवप्रतिष्ठा, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा।

तिथि १२ शुक्रे विशाखायां-गवांक्रयविक्रयौ नव-वस्त्रधारणं,

राशि-फलम्	
मेष	धनागमः
वृष	सुखं अर्थलाभः
मिथुन	सुखंधन प्राप्तिः
कर्क	सुख शत्रुनाश
सिंह	धनागम यात्रा
कन्या	दुखम् धनागमः
तुला	धर्माचरणं, कष्टं
वृश्चिक	सुखं लाभः
धनु	विपत्तिः धनदः
मकर	शोकः अतिभयं
कुम्भ	शत्रुभयं पीडाच
मीन	सुखं पुत्र लाभं

विवाह मुहूर्त विमर्शः

तिथि १ सोमे-मृगे मृत्युबाण व्याप्तिः।
तिथि ५ शुक्रे-मघायां केतुवेध रे.१० लग्नं गोधूलि वा लग्नं ११ पञ्चेष्टाभावः वा लग्नं १२ पञ्चेष्टाभावः वा लग्नं ३ पञ्चेष्टाभावः।
तिथि ६ शनौ मघायां केतुवेधः दिवा लग्नं ३ रेखा १० इष्टा ६ प्र.व.वि. १० वा लग्नं ५ पञ्चेष्टाभावः।
तिथि ७ रवौ-उत्तराफाल्गुन्यां-भद्रापूर्व दिवा लग्नं ६ पञ्चेष्टाभावः वा भद्रापरं रात्रौ रेखा ९ लग्नं २ पञ्चेष्टाभावः।
तिथि ८ सोमे उत्तराफाल्गुन्यां व्यतिपातः। व्य.पा. परं [illegible] लग्नं गोधूलि वा रात्रौ लग्नं ११ इष्टाः ४ रेखा ७ प्र.व.वि.८ वा लग्नं १२ इष्टा४ प्र.वि.८½(चं.भौ.दा.) वा लग्नं २ पञ्चेष्टाभावः।
तिथि ९ भौमे हस्ते-दिवा लग्नं ३ रेखा ७ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१० वा लग्नं ५ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१४½।
तिथि १० बुधे-स्वात्यां-लग्नं गोधूलि वा रात्रौ लग्नं ११ रेखा८ इष्टा४प्र.व.वि ८ वा लग्नं १२ इष्टा ४ प्र.व.वि.८½ (अष्टमस्थ चं.भौ.दा.) वा लग्नं २ इष्टाः५ प्र.व.वि १०
तिथि ११ गुरौ-स्वात्यां दिवा लग्नं भद्राव्याप्तिः।
तिथि १२ शुक्रे-अनुराधायां शनिवेधः आ.रात्रौ लग्नं ११ रेखा ७ इष्टाः ४ प्र.व.वि. ८ वा लग्नं १२ इष्टाः ४ प्र.व.वि.८½(भौ.दा.) वा लग्नं २ इष्टाः ४ प्र.व.वि.७।
तिथि १३ शनौ-अनुराधायां मृत्युबाणव्याप्तिः शनिवेधः।
तिथि १४ रवौ मूले रात्रौ भद्राव्याप्तिः।
तिथि १५ सोमे-भद्रोपरं मूले लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ रे.९ का.सा.लग्नं ११ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१३ वा लग्नं १२ इष्टाः ४ प्र.व.वि.८½ वा लग्नं २ इष्टाः ४ प्र.व.वि.७ (अष्टमस्थ चन्द्रदाने)।

२ | श. ९ गु. | ३ सु. | १२ | ११ | ९ चं. | ८ | १० के.

(ग) सिद्धियोगो घ.१६।१० (दि.११।४१) या. दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.१६।१० (दि.११।४१) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.२९।१७ (दि.४।५६) उ.। (घ) घ.१५।४७ (दि.११।३२) उ.। शुभाशुभेत्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः घ.१५।४७ (दि.११।३२) उ. घ.२४।० (दि.२।४९) या.। (च) सूर्य, योगी नाग वाहनं अग्नि नाड़ी तदीशो भौमः अनावृष्टि योगः। **राष्ट्रीय आषाढ़ मासारम्भः।** (छ) अद्य शर्करायुतं जल कुम्भादिदानम्, जलधेनुदानम्, **दानमंत्र**—"देव देव हृषीकेश संसारार्णवतारक। उदकुम्भप्रदानेन यास्यामि हरिमन्दिरम्।" यायि (मुद्दई) जयद् रवियोगो घ.३२।६ (दि.६।२) या.। (झ) (दि.७।१५)। मृत्युबाणः घ.५।६ (दि.७।१५) उ.।(ञ) या.। मु. पर्व ईद मिलाद (वारावफात)। (ट) जलयात्रा, विल्वात्रिरात्रारम्भः। छत्रोपानहअन्नादिदानम्।

नूतनवध्वापाककर्म। तिथि १३ शनौ अनुराधायां-वधूप्रवेशः, (ल.गो.) विपणि व्यापारः, गृह प्रवेशः (ल.८)। तिथि १४ रवौ ज्येष्ठायां-उग्रकर्माचरणं, रोगविमुक्तस्नानं। तिथि १५ सोमे मूले-नामकरणं, वरवरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यरोपणं, वृक्षारोपणं, जलयंत्रकर्म।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	अं.	फ.	सौ.	रा.	राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. उ+ अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३३	५४	१	मं.	५६	४१	रा.	३	५३	पूर्वाषाढ़ा	६०	०	स	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०	४५	दि.	५	३१	बा.	२४	५५	कौ.	५६	४१	मित्र	२९	१	१४	८				५	१३	६	४७	२३	१५	२	१२	४१	४९	५६	५२	+	१	७	१३
३३	५४	२	बु.	५८	५८	रा.	४	४८	पूर्वाषाढ़ा	२	११	दि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३०	३६	दि.	५	२७	ते.	२७	४९	ग.	५८	५८	श्रीवत्स	३०	२	१५	९	मकर	१८	९	५	१३	६	४७	२३	१३	२	१३	४२	४१	५६	५२	+	१	८	१
३३	५३	३	गु.	६०	०	स	म	स्त	उत्तराषाढ़ा	६	४	दि.	७	३९	वैधृति	२९	३८	दि.	५	४	व.	२९	३३	वि.	६०	०	सौम्य	१	३	१६	१०				५	१३	६	४७	२३	८	२	१४	३१	३३	५६	५२	+	२	८	४६
३३	५२	३	शु.	०/५२	८/५०	प्रा.	५/५	१६/१३	श्रवण	८	४७	दि.	८	४४	विष्कुम्भ	२७	३६	दि.	४	१५	वि.	०	८	बव	१०/५१	३/५८	धूम्र	२	४	१७	११	कुम्भ	३९	२७	५	१३	६	४७	२३	४	२	१५	३६	२५	५६	५२	+	२	९	३०
३३	५१	५	श.	५८	३५	रा.	४	४०	धनिष्ठा	१०	६	दि.	९	१६	प्रीति	२४	३४	दि.	३	४	कौ.	२१	१६	ते	५८	३५	प्रवर्धमान	३	५	१८	१२				५	१४	६	४६	२३	०	२	१६	३३	१७	५६	५२	+	२	१०	११
३३	५०	६	र.	५५	५७	रा.	३	३७	शतभिषा	१०	२६	दि.	९	२४	आयुष्मान	२०	३२	दि.	१	२७	ग.	२७	१६	व.	५५	५७	राक्षस	४	६	१९	१३	मीन	५४	४३	५	१४	६	४६	२२	५५	२	१७	३०	९	५६	५२	+	२	१०	५०
३३	४९	७	सो.	५२	१८	रा.	२	९	पूर्वाभाद्र	९	२९	दि.	९	२	सौभाग्य	१५	३९	दि.	११	३०	वि.	२४	७	बव.	५२	१८	मुसल	५	७	२०	१४				५	१४	६	४६	२२	४९	२	१८	२७	१	५६	५२	+	२	११	३०
३३	४८	८	मं.	४७	४९	रा.	१२	२२	उत्तराभाद्र	७	३७	दि.	८	१७	शोभन	९	५५	दि.	९	१२	बा.	२०	३	कौ.	४७	४९	सिद्धि	६	८	२१	१५				५	१४	६	४६	२२	४४	२	१९	२३	५४	५६	५३	+	२	१२	९
३३	४७	९	बु.	४२	३६	रा.	१०	१६	रेवती	४	५२	दि.	७	११	अतिगण्ड	३/५७	३१/४	प्रा	१/६	१८/५१	ते.	१५	१३	ग.	४२	३६	उत्पात	७	९	२२	१६	मेष	४	५२	५	१४	६	४६	२२	३८	२	२०	२०	४७	५६	५३	+	२	१२	५१
३३	४६	१०	गु.	३६	५२	रा.	८	०	अश्विनी	१/५६	२७/७	प्रा	५/४	५०/१७	धृति	४९	१७	रा.	१२	५८	व.	९	४४	वि.	३६	५२	मानस	८	१०	२३	१७				५	१५	६	४५	२२	३२	२	२१	१७	४०	५६	५३	+	२	१	३५
३३	४५	११	शु.	३०	४७	दि.	५	३४	कृत्तिका	५३	२९	रा.	२	३९	शूल	४१	४५	रा.	९	५७	बव.	३	४९	बा.	३०/५७	४०/३१	छत्र	९	११	२४	१८	वृष	१०	२८	५	१५	६	४५	२२	२५	२	२२	१४	३३	५६	५३	+	३	२	२४
३३	४३	१२	श.	२४	३२	दि.	३	४	रोहिणी	४९	१६	रा.	१२	५७	गण्ड	३४	६	रा.	६	५३	ते.	२४	३२	ग.	५१	२७	श्रीवत्स	१०	१२	२५	१९				५	१५	६	४५	२२	२०	२	२३	११	२७	५६	५४	+	३	३	१७
३३	४२	१३	र.	१८	२२	दि.	१२	३६	मृगशिरा	४५	१३	रा.	११	२०	वृद्धि	२६	३२	दि.	३	५२	व.	१८	२२	वि.	४५	२६	सौम्य	११	१३	२६	२०	मिथुन	१७	१४	५	१५	६	४५	२२	१३	२	२४	८	२१	५६	५४	+	३	४	१५
३३	४०	१४	सो.	१२	३०	दि.	१०	१६	आर्द्रा	४१	३३	रा.	९	५३	ध्रुव	१९	११	दि.	१२	५६	श.	१२	३०	च.	३९	४६	कालदण्ड	१२	१४	२७	२१				५	१६	६	४४	२२	७	२	२५	५	१५	५६	५४	+	३	५	१७
३३	३९	३०	मं.	७	२	दि.	८	५	पुनर्वसु	३८	२६	रा.	८	३८	व्याघात	१२	१५	दि.	१०	१०	ना.	७	२	किं.	३४	३८	स्थिर	१३	१५	२८	२२	कर्क	२४	१३	५	१६	६	४४	२१	५७	२	२६	२	९	५६	५५	+	३	+	+

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, आषाढ़ कृष्ण पक्षः।

दिनांक २९ जून - १३ जुलाई १९९९ इ. (राष्ट्रीय आषाढ़ ८-२२)

सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्म ऋतुः।

फसली आषाढ़ मासारम्भः। आषाढ़ मासे प्रथमे च पक्षे निरभ्रदृष्टे रवि मण्डले च। विद्युन्न गर्जत्यतिः नैवमेघामासद्वयं तत्र न वर्षणम्। स्यात्। (क)
मकर राशिः१८।९ (दि.१२।२९)। (ख) (रा.९।३०) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.८।४७ (दि.८।४४) या.। मु. पर्व ईदे मीलाद।
भद्रा घ.२९।३३ (दि.५।२) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.६।४ (दि.७।३९) या.। (क) आर्द्रा नक्षत्रे ३ चरणे रविः घ.३६।० (रा.७।३७)।
कुम्भ राशिः३९।२७ (रा.९।१०)। पंचक (पचखा) आरम्भः। भद्रा घ.०।८ (प्रा.५।१६) या.। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदय(ख)
आर्द्रानक्षत्रे ४ चरणेरविः घ.७।२ (दि.८।२)। यायि(मुद्दई) जयद्योगः घ.१०।६ (दि.९।१६) या.। (ग) यायि (मुद्दई) जयद्योगः घ.९।२९ (दि.९।२) उ.।
मीन राशिः५४।४३ (रा.३.७)। भद्रा घ.५५।५७ (रा.३।३७) उ.। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.१०।२६ (दि.९।२४) उ.।
भद्रा घ.२४।७ (द.२।५३) या.। शीतला ७। मृत्युबाणः घ.३४।४८ (रा.७।९) उ.। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.९।२९ (दि.९।२) या.। (ग)
श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्। पर्युषितान्नपानादिकमत्र। विहितम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.७।३७ (दि.८।१७) या.। ⊙ पुनर्वसु नक्षत्रे रविः घ.३८।२ (घ)
मेष राशिः४।५२ (दि.७।११) पचक (पचखा) समाप्तिः। (ङ) घ.३६।५२ (रा.८।०) उ.। (घ) घ.३०।४७ (दि.५।३४) उ.।
भद्रा घ.९।४४ (दि.९।१) उ. घ.३६।५२ (रा.८।०) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.१।२७ (प्रा.५।५०) या.। दोष संघ विनाशको रवियोग(ङ)
वृष राशिः१०।२८ (दि.९।२६)। योगिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। कुष्ठादि रोग निवृत्तिकामनया स्नाया (मुद्दालेह) जयद् योग (च)
शनि प्रदोष व्रतम् १२। पुत्रार्थिभिर्विधेयम्। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगो घ.४९।१६ (रा.१२।५७) या.। पुनर्वसु नक्षत्रे २ चरणे रविः घ.९।० (छ)
मिथुन राशिः१७।१४ (दि.१२।९)। भद्रा घ.१८।२२ (दि.१२।३६) उ. घ.४५।२६ (रा.११।२५) या.। मास शिवरात्रि व्रतम् १३।
श्राद्धादौ अमावस्या ३०। (छ) (दि.८।५१)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.२४।३२ (दि.३।४) उ.।
कर्क राशिः२४।१३ (दि.२।५७)। स्नानदानादौ भौमवती अमावस्या पुण्यतमा ३०। पुनर्वसु नक्षत्रे ३ चरणे रविः घ.[illegible] (ज)

विवाह मुहूर्त विमर्शः

तिथि २ बुधे उत्तराषाढ़ायां दिवा लग्नं ५ रे. ९ इष्टाः ५ प्र.व.वि.११ वा लग्नं ८ इष्टाः ७ प्र.व.वि १८ वा लग्नं गोधूलिः वा लग्नं ११ इष्टाः ४ प्र.व.वि. ८ (ध.के.रा.) वा लग्नं १२ इष्टाः ४ प्र.व.वि.११ वालग्नं २ इष्टाः ४ प्र.व.वि.७।
तिथि ७ सोमे उत्तराभाद्रपदायां-भद्रापरं दिवा लग्नं ८ रेखा ८ इष्टाः ६ प्र.व.वि १३ वा लग्नं गोधूलिः परं मृत्युबाणः।
तिथि ८ भौमे-मृत्युबाणात्परं रात्रौ रेवत्यां लग्नं ११ रेखा ८ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१३ वा लग्नं १२ पञ्चेष्टाभावः वा लग्नं २ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१२ (गु.श.दा.)
तिथि ११ शुक्रे-रात्रौ रोहिण्यां लग्नं २ पञ्चेष्टाभावः।
तिथि १२ शनौ-रोहिण्यां दिवा लग्नं ५ रेखा ८ इष्टाः ५ प्र.व.वि.११ वा लग्नं गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ११ इष्टाः ५ प्र.व.वि ८ वा मृगभे लग्नं १२ इष्टाः ४ प्र.व.वि ११ वा लग्नं २ इष्टाः ४ प्र.व.वि.७।
तिथि १३ रवौ मृगभे-भद्रापूर्व दिवालग्नं ५ रेखा ८ इष्टाः ५ प्र.व.वि.११ परभद्राव्याप्तिः। परंमासान्तादिदोषः।

(घ) (रा.८।२७) स्त्री-पुरुष, चन्द्र-चन्द्र योगौ, मण्डूक वाहनं, वह्नि नाड़ी तदीशो भौमः सुवृष्टि योगः मेघाडम्बरम्। मृत्युबाणः घ.३८।२ (रा.८।२७) या.।
(ज) 'अमायाञ्च यदा वारो भवद् भूमि सुतस्यवै गंगायाम् यदि लभ्येत् कोटि सूर्य ग्रहैः समा।'

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	मं.	८	१४	३	१०	६	१	५१	३२	१८	३८	३	९	९	३१	५५	५	०	५	२८	२०	१०	३३	३	२८	३६	२२	५७	१०	०	१९	५	१२	६	२	३	२१	४	३३
२	बु.	८	२६	५	३४	६	२	१०	१०	१८	५०	३	१०	४	४४	४९	११	०	५	३८	५३	१०	३३	३	२९	३३	३२	५५	२८	०	१९	११	१४	५	५८	३	२१	१	२२
३	गु.	९	८	३८	१७	६	२	२९	०	१९	४	३	१०	५३	५५	४५	१९	०	५	४९	२६	१०	३०	४	०	२९	०	५२	३५	०	१९	१७	१२	५	५४	३	२०	५८	११
३	शु.	९	२१	२६	५५	६	२	४८	४	१९	२०	३	११	३९	१४	४१	३०	०	५	५९	५६	१०	२६	४	१	२१	३५	५१	३०	०	१९	२३	६	५	५०	३	२०	५५	०
५	श.	१०	४	३०	११	६	३	७	२४	१९	३५	३	१२	२०	४४	३६	१०	०	६	१०	२२	१०	२२	४	२	१३	५	४७	२६	०	१९	२८	५६	५	४६	३	२०	५१	५०
६	र.	१०	१७	४६	३९	६	३	२६	५९	१९	४३	३	१२	५६	५४	३२	२८	०	६	२०	४४	१०	११	४	३	०	३१	४५	२४	०	१९	३४	४२	५	३८	३	२०	४८	३९
७	सो.	११	१	१८	४०	६	३	४६	४२	१९	५७	३	१३	२९	२२	२८	१७	०	६	३०	५५	१०	६	४	३	४५	५५	४३	०	०	१९	४०	२०	५	३४	३	२०	४५	२८
८	मं.	११	१५	०	२४	६	४	६	३९	२०	१२	३	१३	५७	३९	२३	३५	०	६	४१	१	१०	६	४	४	२८	५५	४१	५	०	१९	४६	१४	५	४०	३	२०	४२	१७
९	बु.	११	२८	५१	२६	६	४	२६	५१	२०	४१	३	१४	२१	१४	१९	१६	०	६	५१	७	१०	१	४	५	१०	०	३८	५१	०	१९	५१	५४	५	३६	३	२०	३९	६
१०	गु.	०	१२	५२	८	६	४	४७	४०	२०	५९	३	१४	४०	३०	१४	२९	०	७	१	८	९	४७	४	५	४८	५१	३६	३१	०	१९	५७	३०	५	३४	३	२०	३५	५५
११	शु.	०	२६	४३	३०	६	५	८	३९	२१	७	३	१४	५५	५९	११	२१	०	७	१०	५५	९	४७	४	६	२५	२२	३५	१८	०	२०	३	४	५	३०	३	२०	३२	४४
१२	श.	१	१०	५४	१९	६	५	२९	४६	२१	३४	३	१५	७	२०	८	३६	०	७	२०	४२	९	४२	४	७	०	४०	३३	२२	०	२०	८	३४	५	२६	३	२०	२९	३३
१३	र.	१	२५	२	३७	६	५	५१	२०	२२	०	३	१५	१५	५६	५	४२	०	७	३०	२४	९	४०	४	७	३४	२	३३	०	०	२०	१४	०	५	२२	३	२०	२६	२२
१४	सो.	२	१०	६	२८	६	६	१३	२०	२२	४५	३	१५	२१	३८	४	५५	०	७	४०	४	९	४०	४	८	७	२	३२	१५	०	२०	१९	२२	५	१८	३	२०	२३	११
३०	मं.	२	२४	३	१५	६	६	३६	५	२३	३०	३	१५	२६	३३	४५	४०	०	७	४९	४४	९	३६	४	८	३१	२७	३०	१०	०	२०	२४	४०	५	१४	३	२०	२०	०

फलम्—शास्त्र-मत है कि आषाढ़ मास के प्रथम पक्ष में ही बादल बिजली, गर्जना अथवा वर्षा न हो तो आगामी दो माह तक वर्षा का अभाव रहता है। इस पक्ष में तृतीया तिथि की वृद्धि है एवं शुक्रवार को चतुर्थी तिथि का क्षय है फलतः पक्ष १५ दिन का है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान **अनुदया चतुर्थी** २ जुलाई शुक्रवार को होगा, चन्द्रोदय रात ९।३० बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **श्री शीतलाष्टमी (बसियउरा)** का व्रत पूजन ६ जुलाई मंगलवार को किया जायेगा। आज बासी भोजन का प्रसाद स्वयं खाये एवं स्वजनों परिजनों को खिलाये। **योगिनी एकादशी** का व्रत सबके लिये ९ जुलाई शुक्रवार को होगा। इस एकादशी का व्रत रखने तथा भगवान पुण्डरीकाक्ष का विधिवत् पूजन कर उनके ऊपर चढ़ाये गये जल से शरीर का मार्जन (मालिश) करने से चर्म रोग एवं कुष्ठ रोग का शमन होता है। पुत्र की कामना से **शनि प्रदोष** का व्रत १० जुलाई कि किया जायेगा। **मास शिवरात्रि व्रत** का मान ११ जुलाई रविवार को होगा। **श्राद्ध के लिये अमावस्या** १२ जुलाई सोमवार को होगी तथा स्नान दान सहित **भौमवती अमावस्या** १३ जुलाई को होगी। भौमवती अमावस्या में गंगा स्नान का फल अनन्त माना गया है। पुनर्वसु नक्षत्र का सूर्य ६ जुलाई मंगलवार को रात्रि ८।२७ बजे से आवेगा। इसमें आकाश बादलों से घटाटोप रहेगा और उत्तम वर्षा भी होगी किन्तु ग्रहों के बलाबल के अनुसार कुछ ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि आकाश में छाये बादलों का जितना पानी बरसाना चाहिये उतना नहीं बरसा पा रहे है। पक्ष के तीन मंगलवार एवं मंगलवार को अमावस्या भारी पड़ेगी। राजनैतिक, सामाजिक समरसता में व्यवधान पैदा होंगे तथा लड़ाई-झगड़ा-दंगा-फसाद का वातावरण। दैवी प्राकृतिक दुर्घटनाएँ भी सम्भावित है। रसायन, रस पदार्थ, कषैले पदार्थ, लवण इनके भाव में घटा-बढ़ी चलेगी। लाल रंग की वस्तुओं एवं मादक द्रव्यों में तेजी।

पं.१५ आषाढ़ कृष्ण ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २३६१
अयनांशाः २३/५०/५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	६	३	०	४	०	३	९
१९	१५	४	१३	६	४	१९	२०	२०
२३	०	६	५७	४१	२८	४६	४२	४२
५४	२४	३९	३९	१	५५	१४	१७	१७
५६	८२५	२०	२३	१०	४१	५	३	३
५३	४१	१२	३४	६	५	४०	११	११

बु.४ रा. | ३ सू. | २ | १ गु. | ५ शु. | ६ | चं.१२ | ७ मं. | ८ | ९ | १० के. | ११

भौमादीनां चारः-
भौमः-चित्रायां तुलाराशौ। तिथि ३० भौमतः स्वात्यां घ.१०।१०।
बुधः-कर्क राशौ।
गुरुः-अश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-कर्क राशौ तिथि २ बुधतः सिंह राशौ घ.२८।३६।
शनिः-भरण्यां २ चरणे मेष राशौ। तिथि १० गुरुतः भरण्यां ३ चरणे घ.२६।५६।
राहुः-श्लेषायां २ चरणे।
केतुश्चः-श्रवण भे ४ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	३ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ सो. घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ सो. घं.	मि.	३० मं. घं.	मि.
मिथुन	६	३१	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६
कर्क	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४
सिंह	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८
कन्या	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५६	१२	५२	१२	४८	१२	४४	१२	४०	१२	३६	१२	३२	१२	२८	१२	२४	१२	२०
तुला	३	३२	३	२८	३	२४	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	४	३	१	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७
वृश्चि.	५	४९	५	४५	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
धनु	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	५९
मकर	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४
कुम्भ	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३२	१०	२७	१०	२३	१०	२०	१०	१६
मीन	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५२	११	४८	११	४४
मेष	२	१७	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२
वृष	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९

पं.१६ आषाढ़ कृष्ण ३० भौमे सूर्योदये [illegible]
[illegible]

[illegible]

बु.रा.४ | ३ चं.सू. | २ | १ गु. श. | ५ शु. | ६ | १२ | ७ मं. | ८ | ९ | १० के. | ११

गोचर-फलम्

मेष	सुखम् श्रीः
वृष	हानिः भयम्
मिथुन	स्थान नाश पंथाः
कर्क	द्रव्यनाशः पीड़ा
सिंह	विनाशिः सुखम्
कन्या	सौख्यं कर्म सिद्धिः
तुला	कालिक्षयः कुचेष्टा
वृश्चिक	रोगाभयम्
धनु	गमनम् धनहानिः
मकर	रिपुनाशः सुखं
कुम्भ	दैन्यम् अर्थनाशः
मीन	रोगं अपमानं

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ भौमे पूर्वाषाढायां-पुंसवनंसीमन्तः प्रसूतिस्नानं, इष्टिकादहनं (ति.दा.)।

तिथि २ बुधे पू.षा. उत्तराषाढ़ायां च- गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, उपनयनं (ल.५) वर-वरणं, कन्यावरणं, बीजवपनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः अधिकारी दर्शनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा, नूतनवध्वापाककर्म।

तिथि ३ गुरौ उत्तराषाढायां श्रवणे च गर्भाधानं, पुंसवनं सीमन्त, प्रसूतिस्नानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः, ल.५ मुण्डनं, ल.५ अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, उपनयनं,(ल.५) वर-वरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः क्रयः, हलप्रवहणं, शय्यासनाद्युपभोगः आ.पत्रलेखनम्, इष्टिकानिर्माणं, ऋणग्रहणं, दानं च, सर्वदेवप्रतिष्ठा, शिल्पविद्यारम्भः, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा, नूतनवध्वा पाककर्म।

तिथि ३/४ शुक्रे श्रवणे रिक्तादोषः।

तिथि ५ शनौ धनिष्ठायां-गवांक्रयविक्रयौ, मुहूर्ताभावः।

तिथि ६ रवौ शतभिषायां-विद्यारम्भः, क्रयः रक्तवस्त्र प्रवालरत्नधारणं, धान्यरोपणं, जलयंत्रकर्म (ति.दा.) आ.पत्रलेखन, नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि ७ सोमे पूर्वाभाद्रपदायां-वर-वरणं, कन्यावरणं, हलप्रवहणं, बीज-वपन, धान्यरोपणं, चूल्हीस्थापनं, जलयंत्रकर्म। ततश्च उत्तराभाद्रपदायां गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, वधूप्रवेशः, (ल.गोधूलि) विपणिव्यापारः, अलंकारनिर्माणं धारणं च, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं जलाशयारम्भः, नूतनवध्वापाकारम्भः।

तिथि ८ भौमे उत्तराभाद्रपदायां-पुसंवनं, जातकर्म, प्रसूतिस्नानं रक्तवस्त्र प्रवाल धारणं।

तिथि ९ बुधे रेवत्यां-अश्विन्यांच-रिक्तादोषः।

तिथि १० गुरौ अश्विन्यां, भरण्यां च प्रातः प्रसूतिस्नानं, शय्यासनाद्युपभोगः, मुकद्मादायर।

तिथि ११ शुक्रे कृत्तिकायां-वर-वरणं कन्यावरणं, नूतनवध्वाः पाकारम्भः।

तिथि १२ शनौ रोहिण्यां-विपणि-व्यापारः, इष्टिकानिर्माणं।

तिथि १३ रवौ मृगभे-पुंसवनं, सीमन्तः, प्रसूतिस्नानं वर-वरणं, कन्यावरणं, विपणि व्यापारः गवांक्रय विक्रयः रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, शस्त्रधारणं, आ.पत्रलेखनं अधिकारीदर्शनं, सेवारम्भः नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि १४ सोमे आर्द्रायां- रिक्तादोषः।

तिथि ३० भौमे पुनर्वसौ-मासान्तदोषः।

स्थानेपु शुभैः ३१८।२२ सेन्दुभिः | बीजवपनमुहूर्तः- नक्षत्राणि-मू. म. [illegible] | तिथयः

दि.मा.		तिथि (आषाढ़ शुक्ल)							नक्षत्र						योग						करण					औ.	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		र.क्रां. उ +		स्पष्ट सूर्यः				गतिः		रे.अं.		
घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	क.	घ.	प.	योगाः	अं.	फ.	सौ.	रा.	राशि	घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	वि.	[illegible]
३३	३८	[illegible]	बु.	२ ५६	१४ १	प्रा.	६ ४	१० ३४	पुष्य	३६	९	रा.	७	४४	हर्षण	५	५३	दि.	७	३७	व	२	बा.	३० ५६	१४ १५	मातंग	१४	१६	२९	२३				५	१६	६	४४	२१	४५	३	२६	५९	३	५६	५५	+	४	[illegible]
३३	३६	४	गु.	५५	२३	रा.	३	२२	श्लेषा	३४	३८	सा.	७	८	वज्र	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	तै.	२६	ग.	५५	१३	अमृत	१५	१७	३०	२४	सिंह	३४	३८	५	१७	६	४३	२१	३३	३	२७	५५	५८	५६	५५	+	४	[illegible]
३३	३५	५	शु.	५३	२०	रा.	२	३७	मघा	३४	१०	सा.	६	५७	व्यतिपात	५१	१५	रा.	२	४७	व.	२४	वि.	५३	२०	काण	१६	१८	३१	२५				५	१७	६	४३	२१	२१	३	२८	५२	५३	५६	५७	+	४	३१
३३	३३	६	श.	५२	३८	रा.	२	२०	पू.फाल्गुनी	३४	५८	सा.	७	१६	वरीयान	४८	१२	रा.	१२	३४	बव.	२२	बा	५२	३८	लुम्बक	१७	१९	३२	२६	कन्या	५०	२८	५	१७	६	४३	२१	१०	३	२९	४९	५०	५६	५७	+	४	[illegible]
३३	३१	७	र.	५३	२५	रा.	२	३६	उ.फाल्गुनी	३६	५१	रा.	८	६	परिघ	४६	११	रा.	११	४६	कौ.	२२	नै	५३	२५	मित्र	१८	२०	१	२७				५	१८	६	४२	२१	०	३	०	४६	४७	५६	५८	+	४	[illegible]
३३	२९	[illegible]	सो.	५५	२३	रा.	३	२३	हस्त	४०	११	रा.	९	२६	शिव	४५	१२	रा.	११	२३	ग.	२४	व.	५५	१३	वज्र	१९	२१	२	२८				५	१८	६	४२	२०	४९	३	१	४३	४५	५६	५८	+	४	[illegible]
३३	२७	८	मं.	५८	२३	रा.	४	३६	चित्रा	४४	४५	रा.	११	१३	सिद्ध	४५	३	रा.	११	२०	वि.	२६	बव.	५८	१३	ध्वांक्ष	२०	२२	३	२९	तुला	२२	३२	५	१९	६	४२	२०	३८	३	२	४०	४३	५६	५९	+	४	[illegible]
३३	२५	९	बु.	६०	०	स	म	स्त	स्वाती	५०	१२	रा.	१	२४	साध्य	४५	४३	रा.	११	३६	बा.	३०	कौ.	६०	०	धूम्र	२१	२३	४	३०				५	१९	६	४१	२०	२७	३	३	३७	४२	५६	५९	+	४	३३
३३	२३	९	गु.	२	२८	दि.	६	२४	विशाखा	५६	१९	रा.	३	५१	शुभ	४७	२	रा.	१२	७	कौ.	२	तै.	३४	४०	प्रवर्ध	२२	२४	५	३१	वृश्चिक	३१	४८	५	१९	६	४१	२०	१६	३	४	३४	४१	५७	०	+	४	[illegible]
३३	२१	१०	शु.	६	१	दि.	८	८	अनुराधा	६०	०	स	म	स्त	शुक्ल	४८	३७	रा.	१२	४७	ग.	७	व.	३९	३३	राक्षस	२३	२५	६	१				५	२०	६	४०	२०	३	३	५	३१	४१	५७	०	+	४	[illegible]
३३	१९	११	श.	१२	४	दि.	१०	१०	अनुराधा	२	५०	दि.	६	२८	ब्रह्म	५०	१८	रा.	१	२७	वि.	१२	बव.	४४	३२	अमृत	२४	२६	७	२				५	२०	६	४०	१९	५०	३	६	२८	४१	५७	१	+	४	३३
३३	१६	१२	र.	१६	५१	दि.	१२	१	ज्येष्ठा	९	१८	दि.	९	४	ऐन्द्र	५१	३६	रा.	२	५१	बा.	१६	कौ	४९	११	काण	२५	२७	८	३	धनु	९	१८	५	२१	६	३९	१९	३७	३	७	२५	४२	५७	२	+	४	[illegible]
३३	१४	१३	सो.	२१	२३	दि.	१	५४	मूल	१५	१८	दि.	११	२८	वैधृति	५२	२४	रा.	२	१९	तै.	२१	ग.	५३	११	लुम्ब	२६	२८	९	४				५	२१	६	३९	१९	२४	३	८	२२	४४	५७	३	+	४	[illegible]
३३	१२	१४	मं.	२४	५१	दि.	३	२२	पूर्वाषाढ़ा	२०	३३	दि.	१	३५	विष्कुंभ	५२	२६	रा.	२	२१	व.	२४	वि.	५६	११	मित्र	२७	२९	१०	५	मकर	३६	३५	५	२२	६	३८	१९	१२	३	९	१९	४७	५७	४	+	४	[illegible]
३३	९	१५	बु.	२७	२३	दि.	४	३१	पूर्वाषाढ़ा	२४	४०	दि.	३	१४	प्रीति	५२	३४	रा.	१	५९	बव.	२७	बा.	५८	२	वज्र	२८	३०	११	६				५	२२	६	३८	१९	०	३	१०	१६	५१	५७	५	+	४	[illegible]

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, आ[illegible] शुक्ल पक्षः।

दिनांक १४ जलाई - २८ जलाई १९९९ ई. (राष्ट्रीय आषाढ़ [illegible] श्रावण ६)

[illegible] गोल शीत ऋतु। [illegible] दक्षिणायन वर्षा ऋतु।

- चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। रथयात्रा २। पुष्य नक्षत्र युता द्वितीयायां प्रशस्त [illegible]
- सिंह राशिः३४।३८ (रा.७।८)। मु.रवि उस्सानी ४ हिजरी सन् १४२०। याम्य (मुहूर्त) जयद योग घ.[illegible] [illegible] (रा.७।८) (क)
- भद्रा घ.२४।२७ (दि.३।०) उ. घ.५३।२० (रा.२।३७) या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। [illegible] (दि.७।३०) (ख)
- कन्या राशिः५०।२८ (रा.२।२८)। ☉स.कर्क राशौ पुनर्भ ४ चरणे रवि घ.१०।४२ (दि.९।३८)। [illegible] (ग)
- श्रीस्कन्द षष्ठीव्रतम्। कौमारिकी ६। सर्वार्थसिद्धियोग घ.३६।५१ (रा.८।६) या.। तदुपरि सर्वार्थ[illegible] (घ)
- भद्रा घ.५५।२३ (रा.३।२३) उ.। विवस्वत् सूर्यपूजा ७। याम्य (मुहूर्त) जयद योग घ.४०।११ (रा.९।२६) [illegible]
- तुला राशि २२।३२ (दि.१०।२०)। भद्रा घ.२६।४३ (दि.४।०) या.। ☉पुष्य नक्षत्रे रवि घ. [illegible] (ङ)
- ऐन्द्री पूजा ९। दोष संघ विनाशको रवियोग घ.५०।१२ (रा.१।२४) उ.। (अ) [illegible]
- वृश्चिक राशिः३१।४८ (रा.९।१४)। सर्वार्थसिद्धियोग घ.५६।१९ (रा.३।५१) उ.। दोषसंघ विनाशको [illegible]
- भद्रा घ.३१।३३ (रा.९।९) उ.। गिरिजा पूजा १०। मन्वादि १०, सर्वार्थसिद्धियोग यावद्दिनम् [illegible]
- भद्रा घ.१२।४ (दि.१०।१०) या.। श्रीहरिशयनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। [illegible] (च)
- धनु राशिः९।१८ (दि.९।४) या.। प्रदोष व्रतम् १२। चातुर्मास्य व्रतारम्भः। [illegible] (छ)
- दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.१५।१८ (दि.११।२८) उ.। (क) रवि घ.४१।४० (रा.[illegible]) [illegible]
- मकर राशिः घ.३६।३५ (रा.८।०)। भद्रा घ २४।५१ (दि.३।२२) उ. घ.५६।११ (रा.३।५०) या.। [illegible] (ज)
- स्नान-दान-व्रतादौ गुरु पूर्णिमा १५। गुरु व्यासयोः पूजनम्। धर्मगुरु, पंथ गुरु, मंत्र गुरु पूजनं। [illegible] चन्द्रग्रहणम् (सुदूर पूर्वोत्तर भारते दृश्यं)। (झ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
२	बु.	३	७	५०	४६	६	६	५९	३५	२४	९	३	२६	२०	५३	७	३०	०	७	५९	२०	९	०	४	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	२०	२२	५६	५	२४	३	२०	१६	५०
३	गु.	३	२१	२८	३८	६	७	२३	४४	२४	५२	३	२६	१३	२३	१२	२५	०	८	८	२०	८	४२	४	९	[illegible]	[illegible]	२०	१३	०	२०	३०	४०	५	८	३	२०	१३	३९
४	शु.	४	४	५४	२०	६	७	४८	३५	२५	१०	३	२६	०	५८	१५	५०	०	८	१७	२	८	२५	४	९	[illegible]	[illegible]	१८	८	०	२०	४०	२८	५	२	३	२०	१०	२८
५	श.	४	१८	४	२३	६	८	१३	४५	२५	४६	३	२५	४५	८	२२	४०	०	८	२५	२७	८	९	४	१०	[illegible]	[illegible]	१७	०	०	२०	४५	२०	४	५७	३	२०	७	१७
६	र.	५	२	०	५७	६	८	३९	३१	२६	०	३	२५	२३	२८	२५	५०	०	८	३३	३६	८	४	४	१०	[illegible]	[illegible]	१५	५	०	२०	५०	२०	४	५०	३	२०	४	६
७	सो.	५	१६	४०	३५	६	९	५	३१	२६	२२	३	२४	५७	३८	२८	३१	०	८	४१	४०	८	०	४	१०	[illegible]	[illegible]	१४	०	०	२०	५५	[illegible]	४	५०	३	२०	०	५५
८	मं.	६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	९	३१	०	२६	५८	३	२४	२९	७	३०	४५	०	८	४९	४०	७	५३	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	२०	[illegible]	[illegible]	४	४४	३	१९	५७	४४
९	बु.	६	१०	२	५२	६	९	५८	५८	२७	१५	३	२३	५८	२२	३६	४२	०	८	५७	३३	७	५०	४	११	[illegible]	[illegible]	१२	२०	०	२१	४	२३	४	३८	३	१९	५४	३३
९	गु.	६	२२	९	२५	६	१०	२६	२३	२७	५०	३	२३	२१	४०	३९	३५	०	९	५	२३	७	२५	४	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	०	२१	८	४८	४	३१	३	१९	५१	२२
१०	शु.	७	४	४५	३८	६	१०	५४	३	२८	२२	३	२२	४२	५	४०	२०	०	९	१२	४८	७	७	४	११	[illegible]	८	०	०	२१	१३	६	४	२४	३	१९	४८	११
११	श.	७	१६	३१	९	६	११	२२	२५	२८	५५	३	२२	१	४५	४१	३७	०	९	१९	५५	६	५२	४	११	[illegible]	[illegible]	६	१२	०	२१	१७	२६	४	१८	३	१९	४५	०
१२	र.	७	२८	३३	४५	६	११	५१	२०	२९	२८	३	२१	२०	८	४२	०	०	९	२६	४७	६	३३	४	११	[illegible]	[illegible]	४	४	०	२१	२१	२०	४	११	३	१९	४१	४९
१३	सो.	८	१०	४१	२९	६	१२	२०	३८	२९	५६	३	२०	३८	८	४३	२८	०	९	३३	२०	६	२१	४	११	[illegible]	[illegible]	२	८	०	२१	२५	२०	४	४	३	१९	३८	३८
१४	मं.	८	२२	५८	१२	६	१२	५०	३४	३०	२०	३	१९	५४	४०	४६	५६	०	९	३९	४२	५	४५	४	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	२१	२९	२५	३	५७	३	१९	३५	२७
१५	बु.	९	५	२३	४४	६	१३	२०	५४	३०	३९	३	१९	९	४४	४०	४४	०	९	४५	२६	५	२३	४	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	२१	४२	४२	३	४२	३	१९	३२	१६

पं.१७ आषाढ़ शुक्ल ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २३०५ अयनांशाः २३।५०।७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	६	३	०	४	०	३	९
२	२६	९	२६	८	११	२०	१९	१९
४०	[illegible]	३२	२१	४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४३	८	०	७	४०	२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५६	[illegible]	२५	३०	७	१३	४	३	३
५३	५७	५८	[illegible]	५३	३६	३८	११	११

कुण्डली: ६ चं. | ५ शु. | ४ बु. सू. रा. | ३ | २ | ७ मं. | १ गु. श. | १० के. | ८ | ९ | ११ | १२

भौमादीनां चारः-
भौमः-स्वात्यां तुला राशौ।
बुधः-(वक्री) कर्क राशौ।
गुरुः-अश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-सिंह राशौ।
शनिः-भरण्यां ३ चरणे मेष राशौ।
राहुः-श्लेषायां २ चरणे।
केतुश्चः-श्रवण भे ४ चरणे तिथि ७ सोमतः।
राहुः-श्लेषायां १ चरणे केतुश्च श्रवण भे ३ चरणे घ.१६।५८।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ बु. घं. मि.	२ गु. घं. मि.	३ शु. घं. मि.	५ र. घं. मि.	ल.अं.	६ र. घं. मि.	७ सो. घं. मि.	८ मं. घं. मि.	९ बु. घं. मि.	९ गु. घं. मि.	१० शु. घं. मि.	११ श. घं. मि.	१२ र. घं. मि.	१३ सो. घं. मि.	१४ मं. घं. मि.	१५ बु. घं. मि.
मिथुन	५ ३१	५ २७	[illegible]	५ ११	कर्क	७ ३४	७ ३०	७ २६	७ २३	७ १९	७ १५	७ ११	७ ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	७ ४०	७ ३६	[illegible]	७ २०	सिंह	९ ४८	९ ४४	९ ४०	९ ३२	९ ३३	९ २९	९ २५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कन्या	१२ १	११ ५७	११ ५३	११ ४९	११ ४५	११ ४१	११ ३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	१२ १३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तुला	२ १५	२ १३	२ ९	२ ५	२ २	१ ५८	१ ५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला	२ ३३	२ २९	[illegible]	[illegible]	वृश्चि.	४ ३४	४ ३०	४ २६	४ २२	४ १८	४ १४	४ १०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृश्चि.	४ ५१	४ ४७	[illegible]	[illegible]	धनु	६ ३९	६ ३५	६ ३२	६ २८	६ २४	६ २०	६ १६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
धनु	६ ५५	६ ५१	[illegible]	६ ३९	मकर	८ २५	८ २२	८ १७	८ १३	८ ९	८ ५	८ १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मकर	८ ३१	८ २७	[illegible]	८ १५	कुम्भ	९ ५६	९ ५२	९ ४८	९ ४४	९ ४०	९ ३६	९ ३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुम्भ	१० १२	१० ८	[illegible]	१० ०	मीन	११ २४	११ २०	११ १६	११ १२	११ ८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन	११ ४०	११ ३६	[illegible]	[illegible]	मेष	१ २	१२ ५८	१२ ५५	१२ ५१	१२ ४७	१२ ४३	१२ ३९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मेष	१ १८	१ १४	[illegible]	[illegible]	वृष	२ ५९	२ ५५	२ ५१	२ ४७	२ ४३	२ ४०	२ ३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष	३ १५	३ ११	[illegible]	३ ३	मिथुन	५ १५	५ ११	५ ७	५ ३	४ ५९	४ ५५	४ ५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फलम्-पक्षारम्भ बुधवार को द्वितीया तिथि का क्षय है एवं नवमी बढ़ी हुयी है, पक्ष १५ दिन का है। रथयात्रा का पुनीत पर्व अनुरक्ता द्वितीया तिथि में १४ जुलाई बुधवार को पूरे देश में विशेषकर जगन्नाथ पुरी में सोल्लास मनाया जायेगा। रथस्थ श्रीकृष्ण, बलराम, सुभद्रा का दर्शन कर लोग पुण्य फल को प्राप्त करेंगे। ऐसी मान्यता है कि 'रथस्थं ये प्रपश्यन्ति न तेषां जायते विपत्' अर्थात् रथ खींचने से प्रस्तुत सभी कठिनाइयाँ दूर होती है। कर्कराशि की सूर्य संक्रान्ति १७ जुलाई शनिवार को दिन ९।३८ बजे से आवेगी एवं इसी के साथ ही दक्षिणायन हो जायेंगे और विवाहादि मांगलिक कृत्यों के लिये मुहूर्त का अभाव हो जायेगा। श्रीहरिशयनी एकादशी व्रत का मान सबके लिये २४ जुलाई शनिवार को है। आज अर्ध रात्रि में भगवान् विष्णु का पूजन कर उनको सुलाया जाता है। चातुर्मास २५ जुलाई रविवार से प्रारम्भ हो जायेगा। प्रदोष का व्रत २५ जुलाई रविवार को किया जायेगा। स्नान-दान-व्रत सहित गुरु-पूर्णिमा २८ जुलाई बुधवार को है। आज भारतीय संस्कृति के इस अनुपम पर्व में महर्षि गुरु वेदव्यास एवं अपने-अपने धर्म गुरु, पंथ गुरु, मंत्र गुरु को देवतुल्य मानकर उनकी पूजा की जाती है एवं उनका सम्मान किया जाता है। आज के दिन गाय के गोबर से अपने भवन को गाँठ देना चाहिये। इससे सर्प भय से रक्षा होती है। **२८ जुलाई बुधवार को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** सुदूर पूर्वोत्तर भारत में दिखाई देगा। पुष्य नक्षत्र का सूर्य २० जुलाई मंगलवार को रात १।५५ बजे से आवेगा। इसमें बादलों का जमाव तो खूब होगा किन्तु बादल बिना बरसे निकल जायेंगे ऐसे योग मिल रहे हैं। पक्षारम्भ बुधवार का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार में स्थिरता का वातावरण। रुख सस्ती का। पक्षारम्भ में अच्छी वृष्टि के भी योग है। शेयर के भाव में तेजी के योग बन रहे हैं।

विविध मुहूर्त तालिका

तिथि १/२ बुधे पुष्ये-जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशनं, कर्णवेध, ल.५ वा ६ मुण्डन (ल.५ वा.६) अक्षरारम्भः विद्यारम्भः, उपनयनं, विपणि-व्यापार, गवाक्रयविक्रयौ, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपन पूर्वाप्रस्थापन, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, नवान्नकर्म, शय्यासनाद्युपभोगः, सर्वदेवप्रतिष्ठा जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः, नौकासंचालनारम्भः, यानविज्ञापनारम्भः।

तिथि ३ गुरौ [illegible] विद्यारम्भः, अन्नप्राशनं (ल.५ वा.६) जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर भूमिक्रयः।

तिथि ४ शुक्रे मघायां [illegible] रिक्तादोषः।

तिथि ५ शनौ पूर्वाफाल्गुन्यां-इष्टिकादहनं, (ति.दा.)।

तिथि ६ रवौ उत्तराफाल्गुन्यां-पुंसवनं सीमन्तः (ति.दा.) प्रसूतिस्नानं, विपणि-व्यापार रत्नवस्त्रप्रवालधारणं, धान्यरोपणं, शस्त्रधारणं आ.पत्रलेखनं, इष्टिकानिर्माणं अधिकारी दर्शनं।

तिथि ७ सोमे हस्ते गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः ल.६, विपणि व्यापारः, गवाक्रयविक्रयः, अलंकारनिर्माणं, धारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आ पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, जीर्णगृहप्रवेशः जलाशयारम्भः।

तिथि ८ भौमे चित्रायां रक्तवस्त्रप्रवालधारणं।

तिथि ९ बुधे स्वात्यां रिक्तादोषः।

तिथि ९ गुरौ विशाखायां-रिक्तापि-गवांक्रयविक्रयौ नव-वस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, धान्यरोपणं, वृक्षादिरोपणं, शस्त्रधारणं, दत्तकपुत्रग्रहणं, ऋणग्रहणं दानं च भूमिक्रयः।

तिथि १० शुक्रे अनुराधायां-गर्भाधानं, जातकर्म नामकरणं, कर्णवेध, (ल.६) विपणि व्यापारः नववस्त्र धारणं हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्ष-लतादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, [illegible], दत्तकपुत्रग्रहणं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, ऋणग्रहणं दानं च भूमिक्रयः, जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, नौकाजलयान निर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ११ शनौ अनुराधायां ज्येष्ठायां च-मुहूर्ताभावः।

तिथि १२ रवौ ज्येष्ठायां-गवांक्रय विक्रयौ, मुकदमासंबन्धीकार्यं।

तिथि १३ सोमे मूलभे-नामकरणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यरोपणं, वृक्षादिरोपणं, जलयंत्रकर्म।

तिथि १४ भौमे पूर्वाषाढ़ायां रिक्तादोषः।

तिथि १५ बुधे उत्तराषाढ़ायां- जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनम्, विपणि-व्यापारः, नव-वस्त्रधारणं,हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं भृत्यकर्मारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।

विवाह मुहूर्त विमर्शः

तिथि ३ गुरौ-मघायामुत्तराषाढ़े-सत्लग्नाभावः। तिथि ४ शुक्रे मघायां पू.फा.पू. [illegible] भद्रा च [illegible] संक्रान्तिः मुहूर्ताभावः।

गोचर-फलम्

मेष	[illegible] धननाशः
वृष	सुखार्थलाभः
मिथुन	[illegible] धननाशः
कर्क	[illegible] शत्रुभयं
सिंह	सुख श्रीप्राप्तिः
कन्या	धननाशः भ्रान्तिः
तुला	[illegible] भयम्
वृश्चिक	रोगं शोकं
धनु	लाभः सुख प्राप्तिः
मकर	सुख शोकञ्च
कुम्भ	लाभम् सुखम्
मीन	भय पाप बुद्धिः

साढ़े तीन मुहूर्त-१ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २ वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) ३ अश्विन शुक्ल दशमी (विजया दशमी) ४ कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा ये चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त हैं। इनमें कोई भी शुभ कार्य करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं। इन समय में बालकों को विद्यारम्भ करवा सकते हैं।

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, श्रावण कृष्ण पक्षः।

दिनांक २९ जुलाई - ११ अगस्त १९९९ ई. (राष्ट्रीय श्रावण ७-२०) सौम्यायनं सौम्यगोलः वर्षा ऋतुः। शुक्रास्तः पश्चिमे दिनांक १० अगस्त १९९९

३ प. कुरुक्षेत्र | ३२ प. कूचबिहार | ६ पू. के.आ.दीप | १ प. क्वेटा | स. काबुल

दि.मा. घ.	प.	ति. वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औद. योगाः	अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट रा.	अं.	क.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रोदय घं.	मि.
३३	७	१ गु.	२८	४१	दि.	४	५१	श्रवण	२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आयुष्मान	४९	४१	रा.	१	१५	को.	२८	४१	ते.	[illegible]	३९	ध्वज	२९	१	१२	७	कुम्भ	५८	३२	५	२३	६	३७	१८	४७	३	११	[illegible]	५७	६	+	४	७	२८
३३	४	२ शु.	२८	३८	दि.	४	५०	धनिष्ठा	२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सौभाग्य	४६	४८	रा.	१२	६	ग.	२८	३८	व.	५७	५९	धाता	३०	२	१३	८				५	२३	६	३७	१८	३४	३	१२	[illegible]	५७	७	+	४	८	११
३३	२	३ श.	२७	२०	दि.	४	२०	शतभिषा	२९	५२	[illegible]	[illegible]	२१	शोभन	४३	५५	रा.	१०	५८	वि.	२७	२०	बव	५६	४	आनन्द	३१	३	१४	९				५	२४	६	३६	१८	२२	३	१३	८	५७	८	+	४	८	५१
३२	५९	४ र.	२४	४६	दि.	३	१९	पूर्वाभाद्र	२९	१०	दि.	५	४	अतिगण्ड	३८	८	रा.	८	३९	बा.	२४	४६	को.	५३	२	चर	१	४	१५	१०	मीन	२४	२१	५	२४	६	३६	१८	९	३	१४	५	५७	९	+	४	९	३१
३२	५६	५ सो.	२१	१६	दि.	१	५५	उत्तराभाद्र	२७	२६	दि.	४	२३	सुकर्मा	३२	३२	सा.	६	२६	ते.	२१	१६	ग.	४९	४	गद	२	५	१६	११				५	२५	६	३५	१७	५७	३	१५	[illegible]	५७	१०	+	४	१०	१०
३२	५४	६ म.	१६	५१	दि.	१२	९	रेवती	२४	५२	दि.	३	२२	धृति	२६	१६	दि.	३	५५	व.	१६	५१	वि.	४४	२६	शुभ	३	६	१७	१२	मेष	२४	५२	५	२५	६	३५	१७	४०	३	१५	[illegible]	५७	११	+	४	१०	५०
३२	५१	७ बु.	११	४१	दि.	१०	६	अश्विनी	२१	३५	दि.	२	४	शूल	१९	२१	दि.	१	१०	बव	११	४१	बा.	३८	५०	मृत्यु	४	७	१८	१३				५	२६	६	३४	१७	२३	३	१६	[illegible]	५७	१२	+	४	११	३३
३२	४८	८ गु.	५ / ५३	२१ / ५५	प्रा.	९ / ५	३० / २४	भरणी	१७	४८	दि.	१२	३३	गण्ड	१२	६	दि.	१०	१६	को	५	५९	ते.	३२ / ५१	५७ / ५५	पद्म	५	८	१९	१४	वृष	३१	४७	५	२६	६	३४	१७	७	३	१७	५३	५७	१३	+	४	१२	१८
३२	४५	१० शु.	५३	४३	रा.	२	५६	कृत्तिका	१३	४२	दि.	१०	५६	वृद्धि	४ / ५१	२९ / ३०	प्रा.	७ / १	१५ / ४०	व.	२६	४९	वि.	५३	४३	छत्र	६	९	२०	१५				५	२७	६	३३	१६	५०	३	१८	५१	५७	१४	+	४	१	८
३२	४३	११ श.	४७	३३	रा.	१२	२८	रोहिणी	९	२८	दि.	९	१४	व्याघात	४९	१४	रा.	१	९	बव.	२०	३८	बा.	४७	२३	श्रीवत्स	७	१०	२१	१६	मिथुन	३७	२५	५	२७	६	३३	१६	३४	३	१९	[illegible]	५७	१५	+	४	२	३
३२	४०	१२ र.	४१	४०	रा.	१०	८	मृगशिरा	५	२२	दि.	७	३४	हर्षण	४१	४८	रा.	१०	११	को.	१४	३६	ते.	४१	४०	सौम्य	८	११	२२	१७				५	२८	६	३२	१६	१०	३	२०	४५	५७	१६	+	४	३	१
३२	३७	१३ सो.	३६	११	रा.	७	५७	आर्द्रा	१ / ५५	३५ / ४४	प्रा.	६ / ४	७ / ४१	वज्र	३४	४२	रा.	७	२२	ग.	८	५५	व.	३६	११	कालदण्ड	९	१२	२३	१८	कर्क	४२	३३	५	२९	६	३१	१६	०	३	२१	४२	५७	१८	+	४	४	३
३२	३४	१४ म.	३१	२०	सा.	६	१	पुष्य	५५	४५	रा.	३	४७	सिद्धि	२८	१२	दि.	४	४६	वि.	३	४५	श.	३१ / ५९	२० / २०	प्रवर्ध	१०	१३	२४	१९				५	२९	६	३१	१५	४४	३	२२	४०	५७	१९	+	३	५	५
३२	३१	३० बु.	२७	२३	दि.	४	२६	श्लेषा	५४	२	रा.	३	७	व्यतिपात	२२	१९	दि.	२	२६	बा.	२७	२१	किं.	५५	४९	राक्षस	११	१४	२५	२०	सिंह	५४	२	५	३०	६	३०	१५	२७	३	२३	३७	५७	२१	+	३	+	+

कुम्भराशिः ५८।३२ (रा.शे.४।४८)। पंचक (पचखा) आरम्भः। फसली श्रावणमासारम्भः। श्रीकाशी विश्वनाथाय नित्य बिल्वपत्रार्पणम् नैमित्तिकं पार्थिवार्चनम् च। श्रावणे वर्जयेच्छाकम् [illegible]

भद्रा घ.५७।५१ (रा.४।३५) उ.।

भद्रा घ.२७।२० (दि.४।२०) या.। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.८।५१) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। पुष्य नक्षत्रे ४ चरणे रविः घ.२२।३० (दि.१०।२४)। [illegible]

मीनराशिः २४।२१ (दि.११।८)। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.२१।१० (दि.५।४) उ.। यायि (मुहई) जयद् योगः [illegible]

श्रावण सोमवार व्रतम्। प्रदोष व्रत वदस्य विधिः। सायं उमामाहेश्वर पूजनम्। [illegible]

मेष राशिः २४।५२ (दि.३।२२)। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा [illegible] भौम व्रतम्, दुर्गायात्रा, हनुमद्दर्शनम्। [illegible]

शीतला सप्तमी ७। कौमारी पूजा ७। रोग संघ विनाशको रवियोगः [illegible] पूर्व दिशायाम् बुधोदयः। कालाष्टमी ८। [illegible]

वृष राशिः ३१।४७ (सा.६।१९)। यायि (मुहई) जयद् योगः [illegible]

भद्रा [illegible] यात्रायां निषिद्धः यमघंट योगः [illegible]

मिथुन राशिः ३७।२५ (रा.८।२५)। कामदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। [illegible]

शुभाशुभमध्यपुण्ये स्नानदानादौ [illegible]

कर्क राशिः ४२।३३ (रा.१०।३०)। भद्रा [illegible] श्रावण सोम प्रदोष व्रतम् १३। [illegible] मास शिवरात्रि व्रतम् १३। [illegible]

भद्रा घ.३१।५९ (दि.६।४२)। भौम व्रतम्, दुर्गायात्रा, हनुमद्दर्शनम्। [illegible]

सिंह राशिः ५४।२ (रा.३।७)। स्नानदान श्राद्धादौ अमापुण्यतमा ३०। हरियाली अमावस्या ३०। [illegible]

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषां दैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	गु.	९	१८	१३	४६	६	१३	५१	३०	३०	५७	३	८	२९	०	३५	२०	०	९	५०	५३	५	०	४	११	५९	५४	व१	५०	०	२१	३६	१४	३	२५	३	११	२९	६
२	शु.	१०	१	१३	३५	६	१४	२२	२७	३१	२८	३	७	५३	४०	३०	०	०	९	५५	५३	४	४२	४	११	५८	४	४	९	०	२१	३९	३९	३	१७	३	११	२५	५५
३	श.	१०	१४	३९	५१	६	१४	५३	५५	३१	५९	३	७	२३	४०	२८	२१	०	१०	०	३५	४	२९	४	११	५३	५५	६	४२	०	२१	४२	५६	३	१०	३	११	२२	४४
४	र.	१०	२८	७	१२	६	१५	२५	२४	३२	५०	३	६	५४	११	२५	११	०	१०	५	४	४	११	४	११	४७	१३	१२	५०	०	२१	४६	६	३	४	३	११	१९	३३
५	सो.	११	११	४८	७	६	१५	५८	४४	३३	१५	३	६	२९	०	२२	३५	०	१०	९	१५	४	२	४	११	३४	२३	१५	४५	०	२१	४९	१०	३	५६	३	११	१६	२२
६	म.	११	२५	३९	३३	६	१६	३१	५९	३३	३३	३	६	६	२५	१९	३०	०	१०	१३	१७	३	५४	४	११	१८	३८	१९	५६	०	२१	५२	६	२	५०	३	११	१३	११
७	बु.	०	९	३८	२७	६	१७	५	३२	३३	४८	३	५	४६	५५	१४	१०	०	१०	१७	११	३	३४	४	१०	५८	४२	२२	२०	०	२१	५४	५६	२	४२	३	११	१०	०
८	गु.	०	२३	४३	५०	६	१७	३९	२०	३४	०	३	५	३२	४५	९	४२	०	१०	२०	४५	३	२३	४	१०	३६	२२	२२	५३	०	२१	५७	३८	२	३६	३	११	६	४९
१०	शु.	१	७	५२	८	६	१८	१३	२०	३४	२४	३	५	२३	३	५	५	०	१०	२४	८	३	१५	४	१०	१३	२९	२३	२३	०	२२	०	१४	२	२९	३	११	३	३८
११	श.	१	२२	३	१९	६	१८	४७	४४	३४	३९	३	५	१७	५८	मा४	२०	०	१०	२७	२३	३	१०	४	९	५०	६	२४	४८	०	२२	२	४३	२	२०	३	११	०	२७
१२	र.	२	६	१२	३७	६	१९	२२	२३	३४	५४	३	५	२२	१८	१२	३५	०	१०	३०	३३	३	३	४	९	२५	१८	२५	०	०	२२	५	३	२	१४	३	१०	५७	१६
१३	सो.	२	२०	१७	४५	६	१९	५७	२७	३५	२८	३	५	३४	५३	२५	३१	०	१०	३३	३६	२	५६	४	९	०	१८	२५	१८	०	२२	७	१७	२	८	३	१०	५४	५
१४	म.	३	४	४९	११	६	२०	३२	४५	३५	५०	३	६	०	२४	३४	३४	०	१०	३६	३२	२	३१	४	८	३५	०	२६	१५	०	२२	९	२५	२	१	३	१०	५०	५५
३०	बु.	३	१८	४०	२८	६	२१	२८	३५	३५	५८	३	६	३४	५८	४०	१५	०	१०	३९	३	२	२६	४	८	८	४५	२६	५१	०	२२	११	२६	२	१	३	१०	४७	४४

पं.११ श्रावण कृष्ण ८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २३११ अयनांशाः २३/५०/१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	६	३	०	४	०	३	९
१७	२३	१७	५	१०	१०	२१	११	११
५३	४३	३९	३२	२०	३६	५७	६	६
५१	५०	२०	४५	४५	२२	३८	४९	४९
५७	८५३	२४	९	३	२२	२	३	३
१३	५०	०	४२ व	२३	५३ व	३६	११	११

शु.५ | ६ | ४ सू.बु.रा. | ३ | २ | ७ मं. | चं.गु.श.१ | ८ | १० के. | १२ | ९ | ११

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ सो. घं.	मि.	६ म. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	१० शु. घं.	मि.	११ श. घं.	मि.	१२ र. घं.	मि.	१३ सो. घं.	मि.	१४ म. घं.	मि.	३० बु. घं.	मि.
कर्क	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	६	३५	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	०
सिंह	९	४	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४
कन्या	११	१८	११	१४	११	१०	११	६	११	२	१०	५८	१०	५४	१०	५०	१०	४६	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३१	१०	[illegible]
तुला	१	३४	१	३०	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६	१	३	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	[illegible]	१२	[illegible]
वृश्चि.	३	५१	३	४७	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	२०	३	१६	३	१२	३	८	३	[illegible]	३	[illegible]
धनु	५	[illegible]	५	[illegible]	५	४८	५	४४	५	४०	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मकर	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	१०	७	६	७	२	६	५८	६	[illegible]	६	[illegible]
कुम्भ	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	५३	८	४९	८	४५	८	४१	८	३७	८	३३	८	२९	८	२६	८	२२
मीन	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	५०
मेष	१२	११	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८
वृष	२	१९	२	३२	२	८	२	४	२	०	१	५६	१	५२	१	४८	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९	१	२५
मिथुन	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	[illegible]	३	[illegible]

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ गुरौ श्रवणे-गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तः क्रयः, हलप्रवहणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीदर्शनं, ऋणग्रहणं दानं च, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि २ शुक्रे धनिष्ठायां-गर्भाधानं, नामकरणं, अन्नप्राशनं, गवांक्रयविक्रयः, नववस्त्रधारणं, अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, गृहारम्भः (च.शु.) जीर्ण गृहप्रवेशः (ना.३१ व.शु.)।

तिथि ३ शनौ शतभिषायां-गवांक्रयविक्रयः, गृहारम्भः भद्रोपरं ल.९, जीर्णगृहप्रवेश नात्र चक्रशुद्धिः।

तिथि ४ रवौ पूर्वाभाद्रपदायां-इष्टिकादहनं। ततो रिक्तादोषः।

तिथि ५ सोमे उत्तरभाद्रपदायां-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, विपणिव्यापारः, अलंकार निर्माणं धारणं च हलप्रवहणं, बीजवपनं, चूल्हीस्थापनं वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदनपत्र लेखनं, अधिकारीदर्शनं।

तिथि ६ भौमे रेवत्यां-प्रसूतिस्नानं, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं।

तिथि ७ बुधे अश्विन्यां-जातकर्म, विपणिव्यापारः क्रयः गवांक्रयविक्रयः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः अधिकारीणांदर्शनं, सेवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ८/९ गुरौ, भरण्यां-शय्यासनाद्युपभोगः मुकदमादायरः। ततोरिक्तादोषः।

तिथि १० शुक्रे कृत्तिकायां-मुहूर्ताभाव रोहिण्यां जीर्णादिगृहप्रवेशः (भद्रापूर्वे)(ल.८)।

तिथि ११ शनौ रोहिण्यां विपणि व्यापारः मृगभे जीर्णादि

तिथि १२ रवौ मृगशिरायां-पुंसवनं, जातकर्म, प्रसूतिस्नानं, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, विपणि व्यापारः, गवांक्रयविक्रयः, शस्त्रधारणं आ.पत्रलेखनं सेवारम्भः।

तिथि १३ सोमे आर्द्रायां पुनर्वसौ च-नामकरणं गवांक्रयविक्रयः, अलंकारनिर्माणं धारणं, हलप्रवहणं, शय्यासनाद्युपभोगः, ऋणग्रहणं दानं च।

तिथि १४ भौमे पुष्ये-रोगविमुक्तस्नानं, उग्रकर्माचरणं ततो रिक्तादोषः।

तिथि ३० बुधे श्लेषायां- मासान्तदोषः।

(क) अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदये व्यापिनी द्वितीयायां चातुर्मास्ये [illegible] चन्द्रोदये (रा.७।२८) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। श्रीलक्ष्मी युतं [illegible] सुख प्राप्ति हेतवे। प्रार्थनामंत्रः- [illegible]

(ख) [illegible] ३।७२२ (दि.३।२२) उ.। ⊙ श्लेषा [illegible] स्त्री-पुरुष, चन्द्र-चन्द्रयोगे, [illegible]

(ग) प्रदोष, मास शिवरात्रिश्च दुर्लभ योगाः समुपस्थितम्। यायि (मुहई) जयद् योगः घ.३।३५ (प्रा.६।१७) उ. घ.३६।११(रा.७।५७)या.

प्रदोष व्रत निर्णयः

तत्र त्रयोदशी शुक्ला पूर्वा कृष्णा परायुक्ताभिः माधवः। शुक्ला त्रयोदशी पूर्वा परा कृष्ण त्रयोदशी। श्रावणे सोमवासरे व्रतं काम्यम् सोमवार व्रतं कार्य श्रावणे वै यथाविधिः। शक्तेनोपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनमिति।

राशि—फलम्

मेष	पुत्र सुखं लाभः धनागमः
वृष	सुखं अर्थलाभः
मिथुन	सुखं धनप्राप्तिः
कर्क	सुखं शत्रुनाशः
सिंह	धनागमः
कन्या	दुःखं धनागमः
तुला	धर्माचरणं
वृश्चिक	सुख लाभः
धनु	विपत्ति धनदः
मकर	शोकं अतिभयं
कुम्भ	शत्रु भयं पीड़ा च
मीन	

फलम्—श्रावण मास में रुद्राभिषेक का विशेष महत्व होता है क्योंकि यह महीना भगवान शिव को बहुत प्रिय है। गुरुवार को नवमी तिथि का क्षय होने से पक्ष १४ दिन का ही है। चातुर्मास में किया जाने वाला **अशून्यशयन** व्रत चन्द्रोदय के समय द्वितीया तिथि मिलने के कारण पक्षारम्भ २९ जुलाई गुरुवार को किया जायेगा। चन्द्रोदय सायं ७।२८ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। दाम्पत्य जीवन को अक्षुण बनाये रखने के लिये यह व्रत महत्व पूर्ण है। इसमें लक्ष्मी-विष्णु की मूर्ति को पलंग पर स्थापित कर उनका विधिवत् पूजन करना चाहिये। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत** ३१ जुलाई शनिवार को किया जायेगा एवं चन्द्रोदय रात ८।५१ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **सावन के महीने में सोमवार का व्रत** प्रदोष व्रत की तरह करने से भगवान शिव की अनुकम्पा प्राप्त होती है एवं **मंगलवार को माता दुर्गा एवं महावीर हनुमानजी का दर्शन** पूजन करना पुण्यफलकारक तथा मनोकामना पूर्ण करने वाला होता है। **कामदा एकादशी व्रत** सबके लिये ७ अगस्त शनिवार को है। इस एकादशी में श्रीकृष्ण भगवान को तुलसी दल और मञ्जरी अर्पित कर घी का दीपक जलाकर पूजन करना तथा ब्राह्मण को यथा शक्ति दान देना पुण्यफल दायक होता है। ९ **जुलाई को श्रावण मास-सोमवार त्रयोदशी-प्रदोष एवं मासशिवरात्रि का दुर्लभ संयोग मिल रहा है।** अतः इसका लाभ जन-जन को शिवार्चन-अभिषेक, कर अवश्य उठाना चाहिये। स्नान-दान श्राद्ध सहित हरियाली अमावस्या ११ जुलाई बुधवार को है। **११ अगस्त बुधवार को ग्रस्तास्त पूर्ण सूर्य ग्रहण लगेगा जो दृश्य होगा।** श्लेषा नक्षत्र का सूर्य ३ अगस्त मंगलवार को रात १०।२२ बजे से आवेगा। इसमें बादल तो घेर कर आयेंगे किन्तु वर्षा सामान्य ही होगी। गेहूँ, चना, अलसी, तिल, तेल गुड़ नील, मालवे का अफीम में तेजी का रुख। देश के पूर्वोत्तर राज्यों में बाढ़-वर्षा से क्षति पहुँचेगी। इस पक्ष के मध्य से शेयर का भाव मन्दा पड़ने लगेगा। कुल मिलाकर यह पक्ष सामान्य शुभफलदायक रहेगा। पक्षान्त में शुक्रास्त उपद्रव कारक है। देश के कुछ भागों में भीषण वर्षा से जल-प्रलय का दृश्य, बाढ़ का प्रकोप। श्रावण मास में शुक्रास्त तथा १५ दिन के अन्तराल में दो ग्रहण अनिष्टकारी परिणाम देने वाले होंगे।

भौमादीनां चारः-

भौमः-स्वात्यां तुला राशौ तिथि-१३ सोमतः विशाखायां प.४।३४।

बुधः-(वक्री) कर्क राशौ। तिथि ११ शनितः मार्गी।

गुरुः-अश्विन्यां मेष राशौ।

शुक्रः-ति.८गुरुतः वक्री सिंह राशौ।

शनिः-भरण्यां ३ चरणे मेष राशौ।

राहुः-श्लेषायां १ चरणे।

केतुश्चा-श्रवणे ३ चरणे।

चन्द्रबाणशुद्धौ सत्यां पुंसवनसीमन्तसंस्कारः भवतः।

दि.मा. घ.	प.	श्रावण शुक्ल तिथि ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औद. योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
३२	२८	१	गु.	२४	१७	दि.	३	१३	मघा	५३	२०	रा.	२	५०	वरीयान	१७	१४	दि.	[illegible]	२४	बव	२४	१७	वा	५३	१९	मुसल	१२	१५	२६	२१				५	३०	६	३०	१५	११	३	२४	३४	५५	५७	[illegible]	+	३	७	२३
३२	२५	२	शु.	२२	२०	दि.	२	२७	पू.फाल्गुनी	५३	४१	रा.	३	३	परिघ	१२	५५	दि.	[illegible]	४१	को.	२२	२०	ते.	५१	५७	सिद्धि	१३	१६	२७	२२				५	३१	६	२९	१४	५२	३	२५	३२	१८	५७	[illegible]	+	३	८	४
३२	२२	३	श.	२१	३५	दि.	२	१०	उ.फाल्गुनी	५५	३२	रा.	३	४५	शिव	९	४०	दि.	[illegible]	२४	ग.	२१	३५	व.	५१	५१	उत्पात	१४	१७	२८	२३	कुम्भ	९	१५	५	३२	६	२८	१४	३४	३	२६	२९	४३	५७	[illegible]	+	३	८	४३
३२	१९	४	र.	२२	८	दि.	२	२३	हस्त	५८	३३	रा.	४	५७	सिद्ध	७	२२	दि.	[illegible]	२१	वि.	२२	८	बव.	५३	५	मानस	१५	१८	२९	२४				५	३२	६	२८	१४	१५	३	२७	२७	१०	५[illegible]	[illegible]	+	३	९	१९
३२	१५	५	सो.	२४	३	दि.	३	१०	चित्रा	६०	०	स	म	स्त	साध्य	६	९	दि.	[illegible]	१	वा.	२४	३	को.	५५	३३	मुद्गर	१६	१९	३०	२५	तुला	३०	३६	५	३३	६	२७	१३	५६	३	२८	२४	३७	५७	[illegible]	+	२	९	५५
३२	१२	६	मं.	२७	२	दि.	४	२३	चित्रा	२	४०	दि.	६	३८	शुभ	५	४७	दि.	[illegible]	५३	ते.	२७	२	ग.	५९	३	ध्वांक्ष	१७	२०	३१	२६				५	३४	६	२६	१३	३७	३	२९	२२	१०	५७	[illegible]	+	२	१०	३१
३२	९	७	बु.	३१	३	सा.	५	५९	स्वाती	७	५३	दि.	८	४३	शुक्ल	६	१८	दि.	[illegible]	५	व.	३१	३	वि.	६०	०	धूम्र	१८	२१	१	२७	वृश्चिक	५७	२१	५	३४	६	२६	१३	१७	४	०	११	४३	५७	[illegible]	+	२	११	८
३२	६	८	गु.	३५	४६	रा.	७	५३	विशाखा	१३	५१	दि.	११	७	ब्रह्म	७	२४	दि.	[illegible]	३३	वि.	३	२५	बव.	३५	४६	प्रवर्धमान	१९	२२	२	२८				५	३५	६	२५	१२	५८	४	१	१७	१८	५७	[illegible]	+	२	११	४७
३२	२	९	शु.	४०	५१	रा.	९	५६	अनुराधा	११	११	दि.	१	२०	ऐन्द्र	८	५३	दि.	[illegible]	९	वा.	८	१८	को.	४०	५१	राक्षस	२०	२३	३	२९				५	३६	६	२४	१२	४०	४	२	१४	५४	५७	[illegible]	+	२	१२	२८
३१	५९	१०	श.	४५	५०	रा.	११	५६	ज्येष्ठा	२६	४९	दि.	४	२०	वैधृति	१०	२७	दि.	[illegible]	४७	ते.	१३	२१	ग.	४५	५०	मुसल	२१	२४	४	३०	धनु	२६	४९	५	३६	६	२४	१२	२०	४	३	१२	३२	५७	[illegible]	+	२	१	१३
३१	५६	११	र.	५०	१७	रा.	१	४४	मूल	३२	५५	सा	६	४७	विष्कुंभ	११	४७	दि.	[illegible]	२०	व.	१८	३	वि.	५०	१७	सिद्धि	२२	२५	५	३१				५	३७	६	२३	१२	१	४	४	१०	१२	५७	[illegible]	+	२	२	१
३१	५३	१२	सो.	५३	५८	रा.	३	१२	पूर्वाषाढ़ा	३८	२२	रा.	८	५८	प्रीति	१२	४१	दि.	[illegible]	४१	बव.	२२	७	वा.	५३	५८	उत्पात	२३	२६	६	१	मकर	५४	२८	५	३७	६	२३	११	४०	४	५	७	५३	५७	३३	+	२	२	५२
३१	४९	१३	मं.	५६	३१	रा.	४	१४	उत्तराषाढ़ा	४२	४५	रा.	१०	४४	आयुष्मान	१२	४८	दि.	[illegible]	४५	कौ.	२५	१४	ते.	५६	३१	मानस	२४	२७	७	२				५	३८	६	२२	११	१९	४	६	५	३६	५७	३५	+	१	३	४६
३१	४६	१४	बु.	५७	५६	रा.	४	४९	श्रवण	४६	२	रा.	१२	४	सौभाग्य	१२	२	दि.	[illegible]	२८	ग.	२७	१३	व.	५७	५६	छत्र	२५	२८	८	३				५	३९	६	२१	१०	५८	४	७	३	२१	५७	४७	+	०	४	४२
३१	४२	१५	गु.	५८	१	रा.	४	५२	धनिष्ठा	४८	२	रा.	१२	५३	शोभन	१०	२२	दि.	[illegible]	४९	वि.	२७	५८	बव	५८	१	श्रीवत्स	२६	२९	९	४	कुम्भ	१७	२	५	४०	६	२०	१०	३७	४	८	१	८	५७	४८	+	०	+	+

चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समासमताकरम्। सौम्य श्रृंगम सुभिक्षं। श्रीविष्णु शिवात्मिकाभिषेक [illegible]
मु. जमादिउल अव्वल ५ हिजरी सन् १४२०। धर्मसम्राट स्वामी करपात्रि जयन्ती २। [illegible] ((भारतीय स्वतंत्रता दिवसः।
कन्या राशिः९।१५ (दि.९।१४)। भद्रा घ.५१।५१ (रा.२।१६) उ.। मधुश्रवा ३। (पश्चिम प्र[illegible] ठकुराइन जयन्ती ३। [illegible] घ.५५।३२ (रा.३।४५) या.।(क)
भद्रा घ.२२।८ (दि.२।२३) या.। रविवती वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। सर्वार्थाऽमृत [illegible] यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.२२।८ (दि.२।२३)उ.।((
तुलाराशिः३०।३६(सा.५।७४)। श्रीनाग पञ्चमी ५। भीत्यादौ लिखिता मृण्मयादि नागाः [illegible] श्रावण सोमवार व्रतम्। सत्य उमामहेश्वर(ख)
कल्कि जयन्ती ६। कल्कि अवतारः। सायंकाले तस्योत्सवः। भौम व्रतम्, दुर्गायात्रा हनुम[illegible] मु.१५ जघन्याफलम् (ग)
वृश्चिक राशिः५७।२१ (रा.श.४।३०)। भद्रा घ.३१।३ (सा.५।५९) उ.। गोस्वामी तुलसीदास [illegible] ७।५३ (दि.८।४३) या.।
भद्रा घ.३।२५ (दि.६।५७) या.। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.१३।५१ (दि.११।७) उ.। यायि (मुद्दई) जय[illegible] राष्ट्रीय भाद्रपद मासारम्भः।
कौमारी व्रतम् ९। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.११।११ (दि.१।२०) या.। दोषसंघ विनाशकी रवियो[illegible]
धनु राशिः२६।४९ (दि.४।२०) दोष संघ विनाशकी रवियोगः यावद्दिनम्, मघायां २ चरणे [illegible] घ.३२।५५ (सा.६।४७) या.।
भद्रा घ.१८।३(दि.१२।५०) उ. घ.५०।१७ (रा.१।४४) या.। पुत्रदा एकादशी व्रतम् स्मार्ता[illegible] घ.३२।५५ (सा.६।४७) या.। दोषसंघ(घ)
मकर राशिः५४।२८ (रा.३।२४)। पुत्रदा एकादशी व्रतम् वैष्णवानाम्। श्रावण सोमवार [illegible] व्रतारम्भः न तु (ङ)
भौम प्रदोष व्रतम् १३। ऋणापकर्णाय श्रेयस्करम्। भौम व्रतम्। दुर्गायात्रा, हनुमद्दर्शनम्। दोष[illegible] मघायां ३ चरणे रविः घ.३५।४५(च)
भद्रा घ.५७।५६ (रा.४।४९) उ.। सर्वदेव पवित्रारोपणम्। श्रीशिवाधिवासन पवित्रारोपणम् [illegible] या.।
भद्रा घ.२७।५८(दि.४।५१)या.। कुम्भ राशिः१७।२ (दि.१२।२९)। पंचक (पचखा) आरम्भः। [illegible] रक्षा बन्धन (भद्रापरे दि.४।५१ वादनात्परं)(छ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	गु.	४	१	५८	३०	६	२१	४४	३३	३६	५	३	७	१५	१३	४५	२४	०	१०	४१	२१	२	[illegible]	४	७	४१	५४	२७	२७	०	२२	१३	२७	१	५६	३	१८	४४	३३
२	शु.	४	१५	१२	४१	६	२२	२०	३८	३६	११	३	८	०	३७	५२	३४	०	१०	४३	४४	२	[illegible]	४	७	१३	२७	२८	८	०	२२	१५	२३	१	५१	३	१८	४१	२२
३	श.	४	२८	१२	९	६	२२	५६	४९	३६	२०	३	८	५३	११	६०	२०	०	१०	४५	५४	२	[illegible]	४	६	४५	१९	२८	३२	०	२२	१७	१४	१	४७	३	१८	३८	११
४	र.	५	१०	५६	४६	६	२३	३३	९	३६	२७	३	९	५३	३१	६५	२८	०	१०	४८	२	२	[illegible]	४	६	१६	४७	२९	११	०	२२	१९	१	१	४१	३	१८	३५	०
५	सो.	५	२३	५८	१२	६	२४	९	३६	३६	३६	३	१०	५८	५९	६९	२१	०	१०	५०	७	२	[illegible]	४	५	४७	२८	२९	४१	०	२२	२०	४२	१	३६	३	१८	३१	५०
६	मं.	६	६	४६	३७	६	२४	४६	१२	३६	४५	३	१२	८	२०	७५	३६	०	१०	५२	८	१	[illegible]	४	५	१७	४७	३०	०	०	२२	२२	१८	१	३१	३	१८	२८	३९
७	बु.	६	१९	४	५१	६	२५	२२	५७	३६	५०	३	१३	२३	५६	८०	२६	०	१०	५४	५	१	[illegible]	४	४	४७	४७	३३	२२	०	२२	२३	४९	१	२५	३	१८	२५	२८
८	गु.	७	१	१२	२२	६	२५	५९	४७	३६	५६	३	१४	४४	२२	८४	३२	०	१०	५५	५८	१	[illegible]	४	४	१४	२५	३६	९	०	२२	२५	१४	१	२१	३	१८	२२	१७
९	शु.	७	१३	२७	५०	६	२६	२६	४३	३६	५९	३	१६	८	५४	९०	३१	०	१०	५७	४८	१	[illegible]	४	३	३८	१६	३०	१६	०	२२	२६	३५	१	१६	३	१८	१९	६
१०	श.	७	२५	१७	१९	६	२७	१३	४२	३७	०	३	१७	३९	२५	९५	१०	०	१०	५९	३३	१	[illegible]	४	३	८	०	२८	०	०	२२	२७	५१	१	११	३	१८	१५	५५
११	र.	८	७	२४	४१	६	२७	५०	४२	३७	५	३	१९	१४	३५	९८	१४	०	११	१	३	०	[illegible]	४	२	४०	०	२६	५०	०	२२	२९	२	१	७	३	१८	१२	४४
१२	सो.	८	१९	३९	१३	६	२८	२७	४७	३७	११	३	२०	५२	४९	१००	५	०	११	१	५३	०	[illegible]	४	२	१३	१०	२५	२५	०	२२	३०	९	१	१	३	१८	९	३३
१३	मं.	९	२	७	२०	६	२९	४	५८	३७	१६	३	२२	३२	५४	१०३	४१	०	११	२	१८	०	[illegible]	४	१	४७	४५	२४	२१	०	२२	३१	१०	०	५४	३	१८	६	२२
१४	बु.	९	१४	४८	११	६	२९	४२	१४	३७	२०	३	२४	१६	३५	१०५	१८	०	११	२	२४	व०	[illegible]	४	१	२३	२४	२४	०	०	२२	३२	४	०	४६	३	१८	३	११
१५	गु.	९	२७	४४	५६	७	०	१९	३४	३७	२८	३	२६	१	५३	१०९	१०	०	११	२	१४	०	[illegible]	४	०	५९	२४	२३	२८	०	२२	३२	५०	०	३५	३	१८	०	०

फलम्—यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पक्ष के तीन गुरुवार एवं गुरुवार का चन्द्र दर्शन सामान्यतया शुभफददायक है। ब्राह्मणों का आदर एवं सम्मान बढ़ेगा। सुख -सुविधा-सन्तोष एवं सुभिक्ष का वातावरण। पश्चिमी प्रदेशों में विशेष रुप से प्रचलित **मधुश्रवा तीज, ठकुराईन जयन्ती** १४ अगस्त शनिवार को है। नाग देवता सहित नाग जाति के प्रति सम्मान प्रकट करने वाला एवं बल-पौरुष के प्रदर्शन का पर्व **नाग पञ्चमी** १६ अगस्त सोमवार को ज्ञान-शक्ति-बुद्धि की प्रतिद्वान्दिता के साथ सोल्लास मनाया जायेगा। इसमें नाग पूजा, तक्षक पूजा की जायेगी। कविकुल शिरोमणि **गोस्वामी तुलसीदास की जयन्ती** श्रावण शुक्ल सप्तमी १८ अगस्त बुधवार को विविध समारोह के साथ मनाई जायेगी। गृहस्थों के लिये पुत्रदा एकादशी का मान २२ अगस्त रविवार को तथा वैष्णवों के लिये २३ अगस्त सोमवार को होगा। ऋण से मुक्ति पाने के लिये [illegible] **भौम प्रदोष व्रत** २४ अगस्त को किया जायेगा। स्नान-दान व्रत सहित **श्रावणी पूर्णिमा रक्षाबन्धन, श्रावणी उपाकर्म, संस्कृत दिवस,** हयग्रीव जयन्ती २६ अगस्त गुरुवार को धूम-धाम के साथ मनाई जायेगी। भाई-बहन के पारस्परिक स्नेह-सम्मान का प्रतीक यह पर्व भारतीय संस्कृति की अनुपम निधि है। विप्रजन श्रावणी उपाकर्म करेंगे तथा 'येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबलः तेनैवत्वाम्प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल' मंत्रोच्चार करते हुए अपने यजमान को रक्षासूत्र बाँधेंगे तथा उनसे यथेष्ट दक्षिणा प्राप्त करने के अधिकारी होंगे। मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि का सूर्य १७ अगस्त मंगलवार को रात ९।२२ बजे से आवेगा, इसमें व्यापक एवं अति उत्तम वृष्टि के योग बन रहे हैं। पक्षान्त में गुरु वक्री हो रहा है एवं शुक्र पहले से ही वक्री है फलतः बाढ़ वर्षा का क्रम जारी रहेगा एवं देश के कुछ भागों में जल प्लावन के योग हैं। पक्ष के तीन गुरुवार दुर्भिक्ष कारक हैं।

पं.२१ श्रावण शुक्ल ८ गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २४०५
अयनांशाः २३/५०/११

र.	खो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	६	३	०	४	०	३	९
१	१	२५	१४	१०	४	२२	१८	१८
१७	१२	५९	४४	५५	१४	२५	२२	२२
१८	२२	४७	२२	५८	२५	१४	१७	१७
५७	७२७	३६	८४	१	२६	१	३	३
३६	१६	५६	३२	५०	९	२१	११	११

६ बु.४रा.
७ मं. ५ शु.सू. ३
८ चं. २
९ ११ १गु. श.
के.१० १२

भौमादीनां चारः-
भौमः-विशाखायां तुला राशौ।
तिथि १४ बुधतः वृश्चिक राशौ घ.२८।३६।
बुधः-कर्क राशौ।
गुरुः- अश्विन्यां मेष राशौ।
तिथि १४ बुधतः वक्री।
शुक्रः-(वक्री) सिंह राशौ।
शनिः-भरण्यां ३ चरणे मेष राशौ।
राहुः-श्लेषायां १ चरणे।
केतुश्चः-श्रवणे ३ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ सो. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	ल.अं.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ सो. घं.	मि.	१३ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	१५ गु. घं.	मि.
कर्क	५	५५	५	५१	५	४७	५	४३	५	३९	५	३५	सिंह	७	४५	७	४२	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	[illegible]	[illegible]
सिंह	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४	७	५०	कन्या	९	५९	९	५५	९	५१	९	४७	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	[illegible]	[illegible]
कन्या	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	१०	७	१०	३	तुला	१२	१५	१२	११	१२	८	१२	४	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	[illegible]	[illegible]
तुला	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	वृश्चि.	२	३२	२	२८	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	९	२	५	[illegible]	[illegible]
वृश्चि.	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	धनु	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	[illegible]	[illegible]
धनु	५	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	४१	मकर	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मकर	६	[illegible]	६	४३	६	३९	६	३५	६	३१	६	२७	कुम्भ	७	५४	७	५०	७	४६	७	४२	७	३८	७	३४	७	३०	७	२६	[illegible]	[illegible]
कुम्भ	८	[illegible]	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८	मीन	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	२	८	५८	८	५४	[illegible]	[illegible]
मीन	९	[illegible]	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	मेष	११	०	१०	५७	१०	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	[illegible]	[illegible]
मेष	११	[illegible]	११	२०	११	१६	११	१२	११	८	११	४	वृष	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	[illegible]	[illegible]
वृष	१	[illegible]	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	१	मिथुन	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	[illegible]	[illegible]
मिथुन	३	[illegible]	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	कर्क	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	२	[illegible]	[illegible]

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ गुरौ मघायां-जलयंत्रकर्म, शय्यासनाद्युपभोगः, भूमिक्रयः।

तिथि २ शुक्रे पूर्वाफाल्गुन्यां-जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर, भूमिक्रयः (ति.दा.)

तिथि ३ शनौ उत्तराफाल्गुन्यां-विपणिव्यापारः।

तिथि ४ रवौ हस्ते-रिक्तादोषः।

तिथि ५ सोमे चित्रायां-जातकर्म,नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः हलप्रवहणं, बीजवपनं वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, आ.पत्रलेखनं जीर्णगृहप्रवेशः (ल.८)।

तिथि ६ भौमे चि.स्वात्यां-प्रसूतिस्नानं।

तिथि ७ बुधे स्वात्यां-गर्भाधानं,नामकरणं, अन्नप्राशनं क्रयः, नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं, बीजवपनं आ.पत्रलेखनं, वृक्षादिरोपणं।

तिथि ८ गुरौ विशाखायां-गवांक्रयविक्रयः नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, धान्यरोपणं, शस्त्रधारण (ति.दा.) दत्तकपुत्रग्रहणं, वृक्षादिरोपणं, ऋणग्रहणं दानं च।

तिथि ९ शुक्रे अनुराधायां-रिक्तादोषः।

तिथि १० शनौ ज्येष्ठायां-गवांक्रयविक्रयः, उग्रकर्माचरणं (ति.दा.)।

तिथि ११ रवौ मूले - पुंसवनं, सीमन्तः, धान्य रोपणं, जलयंत्रकर्म, नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि १२ सोमे पूर्वाषाढायां-जलयंत्रकर्म ति.दा.।

तिथि १३ भौमे उत्तराषाढायां-पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, हलप्रवहणं।

तिथि १४ बुधे श्रवणे-रिक्तादोषः। ●

(क) या.। सुकृत व्रतम् ३। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.२२।३५ (दि.२।१०) या.। श्लेषा नक्षत्रे ४ चरणे रविः घ.[illegible] (दि.९।५०)। यात्रायाम् निषिद्ध यमघंट योगः घ.५५।३२ (रा.शे.३।४५) उ.।(ख) पूजनम्। नागपञ्चम्यां [illegible] विविध व्यायाम प्रदर्शनम्। दोष संघ विनाशको रवियोगः यावद्दिनम्। (ग) महर्घता। पूर्वा १६ घट्यः पुण्याः। दिनस्य उत्तरार्धे पुण्यकालः। छत्र-सुवर्णदानम् गंगायाम् स्नानम्। स्त्री-स्त्री, चन्द्र-सूर्य योगो मृगवाहनं, वाता नाडी तदीशो सूर्यः स्वल्पवृष्टि योगः। मनसा पूजा समाप्ति (बंगाल)। (च) (रा.७।५६) पूर्व दिशायाम् शुक्रोदय रात्रि १०।३० वादने।(छ) श्रावणी उपाकर्म। संस्कृत दिवस)। हयग्रीवो उत्पत्तिः। काश्यां भदैनी स्थित मन्दिरे दर्शन पूजनञ्च। शुद्ध [illegible] ऋग्वेदिनामुपाकर्म। झूलनयात्रा समापनम्। अमरनाथ यात्रा। पूर्व दिशायाम् बुधास्तः।

राशि-फलम् [illegible]

राहुकेतु के व्रत के विधि

शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरु करना चाहिए। यह व्रत १८ करें। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीजमन्त्र की माला जपे। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी मुरमा, तिल के बने मीठा पदार्थ सेवन कर और यही दान में भी दे। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल को जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष में विजय मिलती है।

● तिथि १५ गुरौ धनिष्ठायां- प्रसूतिस्नानं नामकरणं, अन्नप्राशनं, गवांक्रयविक्रयः नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणांदर्शनं, ऋणग्रहणं, दानं, शिल्पविद्यारम्भः, गृहारम्भः, भद्रोपरं (ल.११)

२२ | श्रावण कृष्ण पक्ष तिथि | योग | करण | औद. | तारीखें | चंद्र राशि प्रवेश | सूर्योदय | सूर्यास्त | र.क्रा. | स्पष्ट | गतिः | चन्द्रोदय

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, भाद्रपद कृष्ण पक्षः।

दिनांक २७ अगस्त – ९ सितम्बर १९९९ ई. (राष्ट्रीय भाद्रपद ५–१८)

याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षा ऋतुः।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	[illegible]	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क.	वि.	[illegible]	[illegible]	चन्द्रोदय घं.	मि.
३१	३९	१	गु.	५६	५१	रा.	४	२४	शतभिषा	४८	४७	रा.	१	१	[illegible]	[illegible]	४०	दि.	८	४४	वा.	२७	२६	को.	५६	५१	[illegible]	२७	१	१०	५				५	४०	६	२०	१०	१६	४	८	५८	५६	५७	५०	-	१	६	४१
३१	३५	२	श.	५४	२८	रा.	३	२८	पूर्वाभाद्र	४८	२०	रा.	१	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	ते.	२५	३१	ग.	५४	२८	कालदण्ड	२८	२	११	६	मीन	३३	२७	५	४१	६	१९	९	५५	४	९	५६	४६	५७	५२	-	१	७	२९
३१	३२	३	र.	५१	१	रा.	२	६	उत्तराभाद्र	४६	४७	रा.	१२	२५	शूल	५३	४५	रा.	३	११	व	२२	४४	वि.	५१	१	स्थिर	२९	३	१२	७				५	४२	६	१८	९	३४	४	१०	५४	३८	५७	५४	[illegible]	१	८	१०
३१	२९	४	सो.	४६	४४	रा.	१२	५४	रेवती	४४	२७	रा.	११	२९	गण्ड	४७	३७	रा.	१२	४५	बव.	१८	५३	वा.	४६	४४	मातंग	३०	४	१३	८	मेष	४४	२७	५	४२	६	१८	९	१३	४	११	५२	३२	५७	५६	[illegible]	१	८	५०
३१	२५	५	मं.	४१	३५	रा.	१०	२१	अश्विनी	४०	१५	रा.	९	४९	वृद्धि	४०	४७	रा.	१०	[illegible]	को.	१४	९	ते.	४१	३५	अमृत	३१	५	१४	९				५	४३	६	१७	८	५२	४	१२	५०	२८	५७	५८	[illegible]	[illegible]	९	३३
३१	२२	६	बु.	३६	१	रा.	८	८	भरणी	३७	३६	रा.	८	४६	ध्रुव	३३	३२	रा.	७	९	ग.	८	४८	व.	३६	१	काण	१	६	१५	१०	वृष	५१	३५	५	४४	६	१६	८	३२	४	१३	४८	२६	५८	०	[illegible]	[illegible]	१०	१७
३१	१८	७	गु.	३०	१	सा	५	४४	कृत्तिका	३३	३२	रा.	७	९	व्याघात	२५	५८	दि.	४	७	वि.	३	१	बव	[illegible]	[illegible]	लुम्बक	२	७	१६	११				५	४४	६	१६	८	११	४	१४	४६	२६	५८	२	[illegible]	[illegible]	११	५
३१	१५	८	शु.	२३	५२	दि.	३	१८	रोहिणी	२९	१७	दि.	५	२८	हर्षण	१८	१३	दि.	१	[illegible]	को.	२३	५२	ते.	५०	४८	मित्र	३	८	१७	१२	मिथुन	५७	१३	५	४५	६	१५	७	४८	४	१५	४४	२८	५८	४	[illegible]	[illegible]	११	५७
३१	११	९	श.	१८	४४	दि.	१२	५२	मृगशिरा	२५	९	दि.	३	५०	वज्र	१०	३२	दि.	९	५१	ग.	१७	४४	व.	४४	४७	वज्र	४	९	१८	१३				५	४६	६	१४	७	२६	४	१६	४२	३२	५८	६	[illegible]	३	१२	५३
३१	८	१०	र.	११	५१	दि.	१०	३०	आर्द्रा	२१	१४	दि.	२	१६	सिद्धि	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	वि.	११	५१	बव.	३९	६	ध्वांक्ष	५	१०	१९	१४				५	४६	६	१४	७	३	४	१७	४०	३८	५८	८	[illegible]	३	१	५२
३१	४	११	सो.	६	२२	दि.	८	२०	पुनर्वसु	१७	४८	दि.	१२	५४	वरीयान	४९	३	रा.	१	२४	वा.	६	२२	को.	३३	५६	धूम्र	६	११	२०	१५	कर्क	३	४०	५	४७	६	१३	६	४१	४	१८	३८	४६	५८	१०	[illegible]	३	२	५२
३१	०	१२	मं.	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	पुष्य	१५	१	दि.	११	४८	परिघ	४२	५८	रा.	१०	५१	ते.	१	३१	ग.	[illegible]	[illegible]	प्रवर्धमान	७	१२	२१	१६				५	४८	६	१२	६	१९	४	१९	३६	५६	५८	१३	-	४	३	५३
३०	५७	१४	बु.	५४	३०	रा.	३	३७	श्लेषा	१३	८	दि.	११	४	शिव	३७	३६	रा.	८	५१	वि.	२६	१	श.	५४	३०	राक्षस	८	१३	२२	१७	सिंह	१३	८	५	४९	६	११	५	५६	४	२०	३५	९	५८	१५	-	४	४	५३
३०	५३	३०	गु.	५२	३२	रा.	२	५०	मघा	१२	७	दि.	१०	४०	साध्य	३३	५	रा.	७	३	च.	२३	३१	ना.	५२	३२	मुसल	९	१४	२३	१८				५	४९	६	११	५	३४	४	२१	३३	२४	५८	१८	-	४	+	+

भाद्रपदे दधिवर्जयेत् नतुक्रादीनाम् त्यागः। फसली भाद्रपदमासारम्भः। शुक्रवालत्व निवृत्तिः रात्रि ९।३० वादनात्। [illegible]

मीन राशिः३३।२७(रा.७।४)। अशून्य शयन व्रतम् २। चन्द्रोदय(रा.७।२९)वादन चन्द्राय अर्घ्यम्। विन्ध्याचली भीम चण्डी [illegible]

भद्रा घ.२२।४४(दि.२।४८) उ. घ.५१।१(रा.२।६) या.। कज्जली ३ (कजरी)। गोपूजा ३। गवामलंकरणम् [illegible]

मेष राशिः४४।२७ (रा.११।२९)। पंचक (पचखा) समाप्तिः। संकष्टी श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी ४ व्रतम्। [illegible]

रक्षा पञ्चमी ५। (उड़ीसा)। भौमाश्विनी, सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ घ.४०।१५ (रा.९।४९) या.। ७पूर्वाफाल्गुनी [illegible]

वृषराशिः५१।३५(रा.२।२२)। भद्रा घ.३६।१ (रा.८।८) उ.। हलषष्ठी (ललही छठ) व्रतम् ६। सर्वार्थसिद्धि[illegible]

भद्रा घ.३।१ (दि.६।५३) या.। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतम् सर्वेषाम्। अर्धरात्रौ अष्टमी-रोहिणी प्रसक्त[illegible]

मिथुन राशिः५७।१३ (रा.४।३८)। श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रतम् वैष्णवानाम्। गोकुलाष्टमी ८। [illegible]

भद्रा घ.४४।४७ (दि.११।४१) उ.। गोगा नवमी ९। दुर्गाबोधनम्।

भद्रा घ.११।५१ (दि.१०।३०) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.२१।१४ (दि.२।१६) उ.। (च) [illegible]

कर्क राशिः३।४० (दि.७।१५)। जया एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.१७।४८ (दि.१२[illegible]

भद्रा घ.५७।३२ (रा.श.४।४८) उ.। भौम प्रदोष व्रतम् १३। ऋणापकर्षणायश्रेयस्करम्। पर्युषणपर्वारम्भः [illegible]

सिंह राशिः२३।८ (दि.११।४)। भद्रा घ.२६।१ (दि.४।१३)या.। मास शिवरात्रि व्रतम् १४। अघोर चतुर्दशी [illegible]

स्नानदान श्राद्धादौ कुशोत्पाटिनी अमावस्या ३० पुण्यतमा। पञ्च पुष्करिणी स्नानम् ३०। अद्य [illegible]

(क) [illegible] द्विपुष्कर योगः घ.४८।२० (रा.१।१)। या.। (ख) याथि (मुद्दई) जयद् योगः घ.५१।१ (रा.२।६) या.। (ग) [illegible] अति वृष्टियोग। (घ) [illegible] (रा.८।४६)। चन्द्र षष्ठी ६ (कपिला षष्ठी ६)। चपा षष्ठी ६। (ङ) [illegible] रोहिणीयुक्ता संयुता। भवेत्प्रोष्ठपदेमासि जयन्तीनाम [illegible] कृष्णावतारः ८। दोषसंघ [illegible] राशिप्रवेशः घ.३३।३२ (रा.७।१) या.। यात्रायाम् निषिद्धः [illegible] (च) नभस्यमासस्य तु लग्ने दर्भोच्चयमीमतः आयातयामास्तदर्भा [illegible] सुखम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	शु.	१०	१०	५५	१३	७	०	४७	२	३७	३५	३	२७	५१	३	११०	१३	०	११	२	०	०	२५	४	०	३५	५६	२३	१८	०	२२	३३	२५	०	२५	३	१७	५६	५०
२	श.	१०	२४	२१	३६	७	१	२४	३७	३७	४२	३	२९	४१	१६	११२	२५	०	११	१	३५	०	३०	४	०	१२	३८	२३	५	०	२२	३३	५०	०	१६	३	१७	५३	३९
३	र.	११	८	४	२५	७	२	२	१९	३७	५०	४	१	३३	४१	११३	३३	०	११	१	५	०	३६	३	२९	४९	३३	२३	०	०	२२	३४	६	०	१०	३	१७	५०	२८
४	सो.	११	२१	५२	४३	७	२	४०	९	३७	५३	४	३	२७	१४	११६	४५	०	११	०	२९	०	४५	३	२९	२६	३३	२२	५६	०	२२	३४	१६	०	५	३	१७	४७	१७
५	मं.	०	६	२	१८	७	३	१८	२	३८	४	४	५	२३	५९	११७	२२	०	१०	५९	४४	०	५२	३	२९	३	३७	२२	५०	०	२२	३४	२१	व०	१०	३	१७	४४	६
६	बु.	०	१९	२४	४०	७	३	५६	६	३८	१०	४	७	२१	२१	११९	३५	०	१०	५८	५२	०	५७	३	२८	४०	४७	२२	०	०	२२	३४	११	०	१५	३	१७	४१	५५
७	गु.	१	४	३	२१	७	४	४४	१६	३८	१५	४	९	२०	५६	१२०	२३	०	१०	५७	५५	१	५	३	२८	१८	४७	२१	४७	०	२२	३३	५६	०	२०	३	१७	३८	४४
८	शु.	१	१७	१४	२९	७	५	२२	३१	३८	१९	४	११	२१	१९	१२१	१९	०	१०	५६	५०	१	१०	३	२७	५७	०	२१	३५	०	२२	३३	३६	०	२५	३	१७	३५	३३
९	श.	२	[illegible]	२४	३६	७	६	०	५०	३८	२५	४	१३	२१	३८	१२१	०	०	१०	५५	४०	१	१७	३	२७	३५	२५	२१	०	०	२२	३३	११	०	३०	३	१७	३२	२२
१०	र.	२	१५	३१	४२	७	६	३९	१५	३८	३२	४	१५	२०	३८	११८	२०	०	१०	५४	२३	१	२४	३	२७	१४	२५	२०	४८	०	२२	३२	४१	०	३५	३	१७	२९	११
११	सो.	२	२९	३२	५१	७	७	१७	४७	३८	४०	४	१७	१८	५८	११६	४५	०	१०	५२	५९	१	३६	३	२६	५३	३७	२०	४६	०	२२	३२	६	०	४०	३	१७	२६	०
१२	मं.	३	१३	२५	१०	७	७	५६	२७	३८	४२	४	१९	१५	४३	११५	९	०	१०	५१	२३	१	४३	३	२६	३२	५१	२०	१५	०	२२	३१	२६	०	४५	३	१७	२२	४९
१४	बु.	३	२७	८	३०	७	८	३५	९	३८	४५	४	२१	१०	५२	११५	०	०	१०	४९	४०	१	५०	३	२६	१२	३६	२०	०	०	२२	३०	४१	०	५०	३	१७	१९	३८
३०	गु.	४	१०	४०	५४	७	९	१३	५४	३८	५०	४	२३	५	५२	११४	२	०	१०	४७	५०	२	१०	३	२५	५२	३६	१८	५६	०	२२	२९	५१	०	५५	३	१७	१६	२७

फलम्–भादों के महीने में सजाव दधि से परहेज करना स्वास्थ्य के लिये अच्छा माना जाता है किन्तु मट्ठे का सेवन किया जा सकता है। [illegible] सितम्बर को त्रयोदशी तिथि का क्षय होने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। चातुर्मास में किया जाने वाला अशून्यशयन व्रत २८ अगस्त शनिवार को किया जायेगा, चन्द्रोदय रात ७।२९ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। विन्ध्याचली भीम चण्डी देवी की जयन्ती एवं कजरी का रतजगा २८ अगस्त शनिवार होगा। २९ अगस्त रविवार को कज्जली का प्रसिद्ध पर्व मनाया जायगा। पूर्वी उत्तर प्रदेश विशेषकर मिर्जापुर जनपद में यह त्यौहार सोल्लास कजरी गायन हंसी-विनोद के साथ मनाया जाता है। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी (बहुला चतुर्थी) का मान ३० अगस्त सोमवार को होगा। चन्द्रोदय रात ८।५० बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। हलषष्ठी (ललही छठ) १ सितम्बर बुधवार को है। २ सितम्बर गुरुवार को सायं ५।४४ बजे से अष्टमी तिथि लग जायेगी एवं रात [illegible] बजे से रोहिणी भी लग जायेगी। इस प्रकार अर्ध रात्रि में अष्टमी तिथि एवं रोहिणी नक्षत्र का संयोग मिलने के कारण जन्माष्टमी व्रत-पर्व का मान निर्विवाद रूप से होगा। श्रीकृष्ण भगवान का जन्मोत्सव सर्वत्र सोल्लास मनाया जायेगा। घर-घर में 'नन्द घर आनन्द भयो जय कन्हैयालाल की' का स्वर गूंजेगा। परम्परानुसार वैष्णवमतावलम्बी ३ सितम्बर शुक्रवार को उदय मान से कृष्ण जन्माष्टमी मनायेंगे। जया एकादशी व्रत का मान सबके लिये ६ सितम्बर सोमवार को होगा। इसे कृष्ण एकादशी तथा अजा एकादशी भी कहते हैं। इस एकादशी का व्रत करने से पुनर्जन्म से छुटकारा मिलता है। ऋण से मुक्ति के लिये भौम प्रदोष व्रत ७ सितम्बर को किया जायेगा। मास शिवरात्रि व्रत का मान ८ सितम्बर बुधवार को किया जायेगा। एवं आज ही अघोर चतुर्दशी है, सन्त अघोरपन्थ का अवतरणोत्सव काशी के क्रीं कुण्ड में तपस्वी समारोह के साथ मनाया जायेगा। स्नान-दान श्राद्ध आदि कुशोत्पाटिनी अमावस्या [illegible] सितम्बर गुरुवार को होगी। '३ॐ हूं फट्' मन्त्र का साथ उखाड़ा गया कुशा वर्ष भर पूजनादि में व्यवहार किया जा सकता है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र [illegible] ३१ अगस्त मंगलवार को सायं ६।१० बजे से आयेगा। [illegible] अतिवृष्टि के [illegible] इस पक्ष में [illegible] जा सकता है। [illegible] भी बढ़ी हो रहा है जिसका परिणाम अनिष्टकारी होगा। बाढ़-वर्षा, भूकम्प, भूस्खलन से [illegible] है। चाँदी में तेजी, वस्तुएं, कपास सूती वस्त्र, अन्न, गेहूं, सरसों, तिल ज्वार, जीरा, घी, मालवे के अफीम में तेजी आवश्यक में मन्दी।

पं.२३ भाद्रपद कृष्ण ८ शुक्रे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २४२०
अयनांशाः २३/५०/१३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	७	४	०	३	०	३	९
१५	१७	५	११	१०	२७	२२	१७	१७
४४	१४	२२	२१	५६	५७	३३	३५	३५
२८	२९	३१	१९	५०	०	३६	३३	३३
५८	८६०	३८	१११	१	२१	०	३	३
४	५१	११	१९	१० व	३५ व	२५ व	११	११

६ | ५ सू.बु. | ४ | ७ | ३ | ८ मं. | २ | ९ | ११ | गु.१ श. | १० के. | १२

भौमादीनां चारः-
[illegible] यां वृश्चिक राशौ। [illegible] अनुराधायां [illegible] कर्क राशौ। तिथि [illegible] राशौ घ.१०।० [illegible] (वक्री) [illegible] तिथि ५ भौमतः वक्री। राहुः-श्लेषायां १ चरणे। केतुश्चः-श्रवणे ३ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ गु. घं.	मि.	२ श. घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	४ सो. घं.	मि.	५ मं. घं.	मि.	६ बु. घं.	मि.	७ गु. घं.	मि.	८ शु. घं.	मि.	९ श. घं.	मि.	१० र. घं.	मि.	११ सो. घं.	मि.	१२ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	३० गु. घं.	मि.
सिंह	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४४	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०
कन्या	९	२४	९	२०	९	१६	९	१२	९	८	९	४	९	०	८	५६	८	५२	८	४८	८	४४	८	४०	८	३७	८	३३
तुला	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४	११	२०	११	१६	११	१२	११	९	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३	१०	४९
वृश्चि.	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	२६	१	२२	१	१८	१	१४	१	१०	१	६
धनु	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११
मकर	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३२	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कुम्भ	७	११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन	८	४७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मेष	१०	२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष	१२	२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन	२	३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	४	५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विविध मुहूर्त तालिका:

तिथि १ शुक्रे शतभिषायां-गर्भाधानं, क्रयः [illegible] क्रयविक्रयः अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, [illegible]कर्म, आ.पत्रलेखनं, धान्यरोपणं, वृक्षारोपणं, [illegible] ऋणग्रहणं दानं च गृहारम्भः (ति.दा.)।

तिथि २ शनौ पूर्वाभाद्रपदायां मुहूर्ताभावः।

तिथि ३ रवौ उत्तराभाद्रपदायां प्रसूतास्नानं, विपणिव्यापारः, शस्त्रधारण, आ.पत्रलेखनं।

तिथि ४ सोमे रेवत्यां रिक्तादोषः।

तिथि ५ भौमे अश्विन्यां प्रसूतास्नानं, रत्नप्रवाल धारणं।

तिथि ६ बुधे भरण्यां-मुकदमादायरः।

तिथि ७ गुरौ कृत्तिकायां मुहूर्ताभावः।

तिथि ८ शुक्रे रोहिण्यां-जातकर्म, नामकरणं, विपणिव्यापारः, अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपन, वृक्षारोपणं, भृत्यकर्मारम्भः (ति.दा.) शय्यासनाद्युपभोगः (ति.दा.) आ.पत्रलेखनं, औषधिसेवनं।

तिथि ९ शनौ मृगशिरसि-रोगविमुक्तस्नानम्। तत्र रिक्तादोषः।

तिथि १० रवौ आर्द्रायां पुंसवनं, सीमन्तः, मुकदमासम्बन्धीकार्यं।

तिथि ११ सोमे पुनर्वसौ-नामकरणं, [illegible] अलंकारनिर्माणं धारणं, हलप्रवहणं, शय्यासनाद्युपभोगः ऋणग्रहणं दानं च।

तिथि १२/१३ भौमे पुष्ये-पुंसवनं सीमन्तः, रत्नप्रवालधारणं [illegible] (ति.दा.)

तिथि १४ बुधे श्लेषायां-रिक्तादोषः।

तिथि ३० गुरौ मघायां-मासान्तदोषः।

पं.२४ भाद्रपद कृ ३० गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः [illegible]
अयनांशाः २३/५०/[illegible]

[illegible]

६ | ५ सू.बु. | ७ | ८ मं. | ९ | ११ | १० के.

राशि-फलम्

राशि	फलम्
मेष	[illegible]
वृष	[illegible]
मिथुन	[illegible]
कर्क	[illegible]
सिंह	[illegible]
कन्या	[illegible]
तुला	[illegible]
वृश्चिक	[illegible]
धनु	[illegible]
मकर	[illegible]
कुम्भ	[illegible]
मीन	[illegible]

'तथा भाद्रपदे मासि कृष्णाष्टम्यां कलौ युगे। अष्टाविंशतिमे जातः कृष्णोऽसौ देवकीसुतः' इति [illegible] 'दिवा वा यदि वा रात्रौ नास्ति [illegible] विशेषेणेन्दुसंयुता' इति [illegible] 'श्रावणे बहुले पक्षे कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्। न करोति नरो यस्तु भवति क्रूरराक्षसः' इति भविष्योत्तरे च। केवलाष्टम्यां [illegible] रोहिणीयुक्ता जयन्ती। 'कृष्णाष्टम्यां भवेद्यत्र कलैका रोहिणी यदि। जयन्ती नाम सा प्रोक्ता उपोष्या सा प्रयत्नतः' [illegible] 'अष्टमी कृष्णपक्षस्य रोहिणीऋक्षसंयुता। भवेत्प्रोष्ठपदे मासि जयन्ती नाम सा स्मृता' इति विष्णुरहस्यादिवचनाच्च।। [illegible] रोहिणी योगश्चाहोरात्रं मुख्यः। निशीथमात्रे [illegible] 'अहोरात्रं तयोर्योगे ह्यसम्पूर्णे भवेद्यदि। मुहूर्तमप्यहोरात्रे योगश्चेत्तमुपोषयेत्' इति वसिष्ठसंहितोक्तेः। अर्धरात्रे तु योगोऽयं तारापत्युदये सति। नियतात्मा शुचिः स्नात्वा पूजां तत्र प्रवर्तयेत्' इति विष्णुधर्मोक्तेः। "वासरे वा निशायां वा यत्र [illegible] रोहिणी। विशेषेण नभोमासे सैवोपोष्या मनीषिभिः" इति पुराणान्तराच्च।।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदयिका योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क.	वि.	रे. घं.	वि.	अस्त मि.
३०	५०	१	शु.	५२	४७	रा.	२	२३	पू.फाल्गुनी	१२	१०	दि.	१०	४५	साध्य	२४	३२	सा	५	३८	कि.	[illegible]	१	बव	५१	४७	सिद्धि	१०	१५	२४	१९	कन्या	२७	३८	५	५०	६	१०	५	११	४	२२	३१	४२	५८	२०	-	[illegible]	३८
३०	४६	२	श.	५२	२०	रा.	२	१२	उ.फाल्गुनी	१३	४१	दि.	११	२२	शुभ	२६	४५	सा.	४	३१	वा.	[illegible]	३	को.	५२	२०	उत्पात	११	१६	२५	२०				५	५१	६	९	४	४९	४	२३	३०	२	५८	२३	-	[illegible]	१५
३०	४३	३	र.	५४	१६	रा.	३	३४	हस्त	१६	२०	दि.	१२	२४	शुक्ल	२५	२२	दि.	४	१	तै.	[illegible]	१८	ग.	५४	१६	मानस	१२	१७	२६	२१	तुला	४८	१६	५	५२	६	८	४	२७	४	२४	२८	२५	५८	२५	-	[illegible]	५२
३०	३९	४	सो.	५७	१६	रा.	४	४६	चित्रा	२०	१२	दि.	१	५७	ब्रह्म	२४	२२	दि.	३	४६	व.	[illegible]	४६	वि.	५७	१६	मुद्गर	१३	१८	२७	२२				५	५२	६	८	४	४	४	२५	२६	५०	५८	२७	-	[illegible]	२८
३०	३५	५	मं.	६०	०	स	म	स	स्वाती	२४	३	दि.	३	३३	ऐन्द्र	२४	५९	दि.	३	५३	बव.	[illegible]	१८	वा.	६०	०	ध्वज	१४	१९	२८	२३				५	५३	६	७	३	४०	४	२६	२५	१७	५८	३०	[illegible]	[illegible]	४
३०	३१	५	बु.	१	१९	दि.	६	२६	विशाखा	३१	०	सा.	६	१८	वैधृति	२५	५०	दि.	४	१४	वा	[illegible]	१९	को.	३३	४१	धाता	१५	२०	२९	२४	वृश्चिक	१४	३३	५	५४	६	६	३	१७	४	२७	२३	४७	५८	३२	[illegible]	[illegible]	४५
३०	२८	६	गु.	४	६	दि.	७	२३	अनुराधा	३६	२२	रा.	८	२७	विष्कुंभ	२७	१०	दि.	४	४६	तै.	[illegible]	४	ग.	३८	३९	आनन्द	१६	२१	३०	२५				५	५४	६	६	२	५४	४	२८	२२	१९	५८	३४	[illegible]	[illegible]	२३
३०	२४	७	शु.	११	१४	दि.	१०	२५	ज्येष्ठा	४३	५३	रा.	११	२६	प्रीति	२८	३९	दि.	५	२३	व.	[illegible]	२४	वि.	४३	४६	चर	१७	२२	३१	२६	धनु	४३	५३	५	५५	६	५	२	३१	४	२९	२०	५३	५८	३६	[illegible]	[illegible]	६
३०	२१	८	श.	१६	२७	दि.	१२	२७	मूल	५०	७	रा.	१	५९	आयुष्मान	३०	०	सा	५	५६	बव	[illegible]	२७	वा.	४८	३४	गद	१८	२३	१	२७				५	५६	६	४	२	८	५	०	१९	२९	५८	३९	[illegible]	[illegible]	५२
३०	१७	९	र.	२०	५२	दि.	२	१३	पूर्वाषाढा	५५	४२	रा.	४	१४	सौभाग्य	३०	५७	सा.	६	२०	को.	[illegible]	५२	तै.	५२	४६	शुभ	१९	२४	२	२८				५	५७	६	३	१	४५	५	१	१८	८	५८	४१	-	८	४१
३०	१४	१०	सो.	२४	४०	दि.	३	४९	उत्तराषाढा	६०	०	स	म	स	शोभन	३१	२४	सा	६	२७	ग.	[illegible]	४०	व.	५५	५८	मृत्यु	२०	२५	३	२९	मकर	११	५२	५	५७	६	३	१	२२	५	२	१६	४९	५८	४३	-	८	३४
३०	९	११	मं.	२७	२६	दि.	४	५४	उत्तराषाढा	०	२१	प्रा.	६	९	अं.ग.	३०	३५	सा	६	१२	वि.	[illegible]	१६	बव.	५८	२	पद्म	२१	२६	४	३०				५	५८	६	२	०	५८	५	३	१५	३२	५८	४५	-	९	३०
३०	५	१२	बु.	२८	४८	दि.	५	३०	श्रवण	३	५४	दि.	७	३३	सुकर्मा	२९	७	सा	५	३८	वा.	[illegible]	४८	को.	५८	५५	छत्र	२२	२७	५	३१	कुम्भ	३५	४	५	५९	६	१	०	३५	५	४	१४	१७	५८	४८	-	९	२५
२९	५९	१३	गु.	२९	४०	दि.	५	५०	धनिष्ठा	६	१३	दि.	८	२९	धृति	२६	४२	दि.	४	४१	तै.	[illegible]	२	ग.	५८	३०	श्रीवत्स	२३	२८	६	१				५	०	६	०	+०	११	५	५	१३	५	५८	५०	-	९	२४
२९	५६	१४	शु.	२७	४९	दि.	५	०	शतभिषा	७	१२	दि.	८	५४	शूल	२३	३	दि.	३	१४	व.	[illegible]	५९	वि.	५६	५१	सौम्य	२४	२९	७	२	मीन	५२	३	५	१	६	५९	-०	१२	५	६	११	५५	५८	५२	-	१०	२३
२९	५४	१५	श.	२५	४२	दि.	४	१८	पू.भाद्रपद	७	०	दि.	८	४९	गण्ड	१८	३२	दि.	१	२६	बव.	[illegible]	४२	वा.	५४	२	का.दं.	२५	३०	८	३				५	१	६	५९	०	३५	५	७	१०	४७	५८	५४	-	१०	+

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, भाद्र[illegible]क्ल पक्षः।

दिनांक [illegible]

कन्याराशिः२७।३८ (दि.४।५३)। महत्तमाख्य शिवव्रतम्। मोन व्रतम् १। [illegible]र जन्म वांचन (जैन)। [illegible]

चन्द्र ◡ दर्शनम् मु.३० समासमताकरम्। सौम्य श्रृगम् सुभिक्ष। शुभाशुभत्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः घ.१३।[illegible]

तुलाराशिः४८।१६ (रा.१।१०)। मु.जमादि उस्सानी ६ हिजरी सन् १४२०। हरितालिका व्रतम् (तीज) [illegible]

भद्रा घ.२५।४६ (दि.४।१०) उ. घ.५७।१६ (रा.शे.४।४६) या.। [illegible]नायकी सिद्धि विनायक वरद श्रीगणे[illegible]

श्रीऋषि पञ्चमी ५ व्रतम्। मध्यान्हे सप्तर्षि पूजन स्वर्णमयी प्रतिमा सप्त वर्षाणि सम्पूज्य ब्राह्मणाय निवेद[illegible]

वृश्चिकराशिः१४।३३ (दि.११।४३)। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगा घ.३१।० (सा.६।१८) उ.। दोष संघ विनाश[illegible]

लोलार्क षष्ठी ६ व्रतम्। पुत्रार्थिनाम् काश्या भदैनी स्थित कुण्डे स्नानम् विधेयम्। सूर्य षष्ठी ६ व्रतम्। [illegible]

धनुराशिः४३।५३ (रा.११।२८)। भद्रा घ.११।१४ (दि.१०।२५) उ. घ.४३।४६ (रा.११।२५) या.। महाल[illegible]

राधाष्टमी ८। श्रीदुर्वाष्टमी ८। ज्येष्ठा देव्याः विसर्जनम्। शनि-रिक्ता समायोग सिद्धयोगः घ.१६।१७ [illegible]

श्रीचन्द्र जयन्ती ९। श्रीचन्द्र नवमी ९। नन्दा नवमी ९। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.५५।४२ (रा.शे.४।१४) [illegible]

मकर राशिः११।५२ (दि.१०।४२)। भद्रा घ.५५।५८ (रा.शे.४।२०) उ.। दशावतार १० व्रतम्। दोषसंघ विन[illegible]

भद्रा घ.२७।१६ (दि.४।५२) या.। पद्मा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। कर्मा एकादशी। (बिहार प्रान्त[illegible]

कुम्भराशिः३५।४ (रा.८।१)। पंचक (पचखा) आरम्भः। प्रदोष व्रतम् १२। श्रीविष्णु परिवर्तनोत्सवः। [illegible]

राष्ट्रीय आश्विन मासारम्भः। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.६।१३ (दि.८।२९) उ.।

मीन राशिः५२।३ (रा.२।५०)। भद्रा घ.२७।५१ (सा.५।१३) उ. घ.५६।५१ (रा.शे.४।४५) या.। श्रीअनन्त[illegible]

स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५। लोकपाल पूजा १५। उमामाहेश्वर पूजनम्। नान्दीमातामह श्राद्धम्। मा[illegible]

१९९९ ई. (राष्ट्रीय भाद्रपद ११ - आश्विन ३) [illegible]

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	शु.	४	२३	५८	५	७	९	५२	४४	३८	५७	४	२४	५९	५५	११३	४५	०	१०	४५	४०	२	२५	३	२५	[illegible]	४०	१८	२०	०	२२	२८	५६	१	४	३	१७	१२	१७
२	श.	५	७	१	३८	७	१०	३१	४१	३९	०	४	२६	५३	४०	११३	५	०	१०	४३	१५	२	३९	३	२५	[illegible]	२०	१५	४५	०	२२	२७	५२	१	१२	३	१७	१०	६
३	र.	५	१९	४९	११	७	११	१०	४१	३९	११	४	२८	४६	४५	११२	०	०	१०	४०	३६	२	५३	३	२४	[illegible]	३५	८	४५	०	२२	२६	४०	१	२०	३	१७	६	५५
४	सो.	६	२	२३	४१	७	११	४९	५२	३९	२०	५	०	३८	४५	१११	१७	०	१०	३७	४३	३	३०	३	२४	[illegible]	५०	४	०	०	२२	२५	२०	१	२८	३	१७	३	४४
५	मं.	६	१४	४३	१९	७	१२	८	१२	३९	३३	५	२	३०	२	११०	७	०	१०	३४	१३	३	५७	३	२४	[illegible]	४०	मा५	५	०	२२	२३	५२	१	३६	३	१७	०	३३
५	बु.	६	२६	५३	२८	७	१३	२८	४५	३९	४०	५	४	२०	९	१०९	१२	०	१०	३०	१६	४	६	३	२४	[illegible]	५५	१०	१३	०	२२	२२	१६	१	४५	३	१६	५७	२२
६	गु.	७	९	९	५०	७	१३	४८	२५	३९	४४	५	६	९	२१	१०८	१३	०	१०	२६	१०	४	१८	३	२५	[illegible]	८	१६	३६	०	२२	२०	३१	१	५३	३	१६	५४	११
७	शु.	७	२०	५९	१७	७	१४	२८	९	३९	५०	५	७	५७	३४	१०७	६	०	१०	२१	५२	४	३०	३	२५	[illegible]	४४	१८	४५	०	२२	१८	३८	१	५८	३	१६	५१	०
८	श.	८	३	४	४८	७	१५	०७	५९	३९	५६	५	९	४४	४०	१०६	५३	०	१०	१७	२२	४	५०	३	२५	[illegible]	२१	२०	३५	०	२२	१६	४०	२	४	३	१६	४७	४९
९	र.	८	१५	१७	२५	७	१५	४७	५५	४०	१	५	११	३१	३३	१०५	२०	०	१०	१२	३२	४	५८	३	२५	[illegible]	४	२३	३६	०	२२	१४	३६	२	८	३	१६	४४	३८
१०	सो.	८	२७	४६	५२	७	१६	२७	५६	४०	७	५	१३	१६	५२	१०४	१५	०	१०	७	३४	५	३	३	२६	[illegible]	४०	२५	२०	०	२२	१२	२८	२	१२	३	१६	४१	२७
११	मं.	९	९	५६	१२	७	१७	८	३	४०	२०	५	१५	१	७	१०४	७	०	१०	२	३१	५	११	३	२६	[illegible]	०	२५	४८	०	२२	१०	१६	२	१७	३	१६	३८	१६
१२	बु.	९	२२	३४	२०	७	१७	४८	२३	४०	२५	५	१६	४५	७	१०३	३३	०	९	५७	२०	५	१७	३	२७	[illegible]	४८	२६	६	०	२२	७	५९	२	२२	३	१६	३५	५
१३	गु.	१०	५	२६	३१	७	१८	२८	४८	४०	२९	५	१८	२८	४०	१०२	२६	०	९	५२	३	५	२३	३	२७	[illegible]	५४	२६	२२	०	२२	५	३७	२	२७	३	१६	३१	५५
१४	शु.	१०	१८	३४	२७	७	१९	९	१७	४०	३३	५	२०	११	६	१०२	०	०	९	४६	४०	५	२९	३	२८	[illegible]	१६	२७	१०	०	२२	३	१०	२	३२	३	१६	२८	४४
१५	श.	११	१	५६	४१	७	१९	४१	५०	४०	३६	५	२१	५३	६	१०१	२८	०	९	४०	११	५	३०	३	२८	[illegible]	२६	२७	२८	०	२२	०	३८	२	३६	३	१६	२५	३३

पं.२५ भाद्रपद शु.८ शनौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २४३५
अयनांशाः २३/५०/१५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	७	५	०	३	०	३	९
०	३	१५	९	१०	२५	२२	१६	१६
१९	४	७	४४	१७	३७	१८	४७	४७
२९	४८	५९	४०	१२	२१	४०	४९	४९
५८	७३४	३९	१०६	४	२०	२	३	३
३९	४२	५६	४३	५० व	३५ मा	४ व	११	११

८ मं.	७	५
	६ बु.सू.	४ शु. रा.
९ चं.	१२	३
१० के.	११	२
	१ श.गु.	

भौमादीनां चारः-
भौमः-अनुराधायां वृश्चिक राशौ ति.१० सोमतः ज्येष्ठायां घं.१७।५४। बुधः-सिंह राशौ तिथि ३ रवितः कन्या राशौ घं.३९।४६। गुरुः-(वक्री) अश्विन्यां मेष राशौ। शुक्रः-(वक्री) कर्क राशौ तिथि ५ भौमतः मार्गी। शनिः-(वक्री) भरण्यां ३ चरणे मेष राशौ। राहुः-श्लेषायां १ चरणे। केतुश्चः-श्रवणे ३ चरणे तिथि १० सोमतः। राहुः-पुष्ये ४ चरणे। केतुश्च श्रवणे २ चरणे घं.२५।२४।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ शु. घं.	मि.	२ श. घं.	मि.	३ र. घं.	मि.	४ सो. घं.	मि.	५ म. घं.	मि.	५ बु. घं.	मि.	६ गु. घं.	मि.	७ शु. घं.	मि.	ल.अं.	८ श. घं.	मि.	९ र. घं.	मि.	१० सो. घं.	मि.	११ म. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१३ गु. घं.	मि.	१४ शु. घं.	मि.	१५ श. घं.	मि.
सिंह	६	१५	६	११	[illegible]	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१	५	४६	कन्या	७	५७	७	५३	७	४९	७	४५	७	४१	७	३८	७	३४	७	३०
कन्या	८	२९	८	२५	[illegible]	२१	८	१७	८	१३	८	९	८	५	८	१	तुला	१०	१३	१०	१०	१०	६	१०	२	९	५८	९	५४	९	५०	९	४६
तुला	१०	४५	१०	४१	१०	३७	१०	३३	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	वृश्चि.	१२	३०	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१५	१२	११	१२	७	१२	३
वृश्चि.	१	२	१२	५८	[illegible]	[illegible]	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	धनु	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०	२	१६	२	१२	२	८
धनु	३	७	३	३	[illegible]	[illegible]	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	४०	मकर	४	२१	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१	३	५७	३	५३
मकर	४	५३	४	४९	[illegible]	[illegible]	४	४१	४	३७	४	३३	४	२९	४	२५	कुम्भ	५	५२	५	४८	५	४४	५	४०	५	३६	५	३३	५	२९	५	२५
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कुम्भ	६	२४	६	२०	[illegible]	[illegible]	६	१२	६	८	६	४	६	०	५	५६	मीन	७	२०	७	१६	७	१२	७	८	७	४	७	०	६	५७	६	५३
मीन	७	५२	७	४८	[illegible]	[illegible]	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	मेष	८	५९	८	५५	८	५१	८	४७	८	४३	८	३९	८	३५	८	३१
मेष	९	३०	९	२६	[illegible]	[illegible]	९	१८	९	१४	९	१०	९	६	९	३	वृष	१०	५५	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८
वृष	११	२७	११	२३	[illegible]	[illegible]	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	मिथुन	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४२
मिथुन	१	४१	१	३७	[illegible]	[illegible]	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	कर्क	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९
कर्क	३	५८	३	५४	[illegible]	[illegible]	३	४६	३	४२	३	३८	३	३५	३	३१	सिंह	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ शुक्रे पूर्वाफाल्गुन्यां-जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर (ति.दा.) भूमिक्रयः। तिथि २ शनौ उत्तराफाल्गुन्यां-विपणिःव्यापारः। तिथि ३ रवौ हस्तभे-पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नानं गवांक्रयः विक्रयः, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, बीजवपनं, शस्त्रधारणं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारी दर्शनं, सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि ४ सोमे चित्रायां रिक्तादोषः। तिथि ५ भौमे स्वात्यां प्रसूतिस्नानं। तिथि ५/६ बुधे विशाखायां-गवांक्रयविक्रयः, नववस्त्रधारणं वृक्षादिरोपणं। तिथि ६ गुरौ अनुराधायां-सप्तम्यां गर्भाधानं, पुंसवनं, प्रसूतिस्नानं सीमन्तः, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणि-व्यापारः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, ऋणग्रहणं दानं, सेवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः। तिथि ७ शुक्रे ज्येष्ठायां-नामकरणं, गवांक्रयविक्रयः शस्त्र धारणं मुकदमादायर। तिथि ८ शनौ मूले-नववस्त्र रोगविमुक्तस्नानं, उग्रकर्माचरणं। तिथि ९ रवौ पूर्वाषाढायां-रोगविमुक्तस्नानं, रिक्तादोषः। तिथि १० सोमे उत्तराषाढायां-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापारः, अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं। तिथि ११ भौमे उ.षा. श्रवणे च - पुंसवनं, सीमन्तः, प्रसूतिस्नानं रक्तवस्त्रप्रवालधारणं। तिथि १२ बुधे श्रवणे धनिष्ठायां च-गर्भाधान, नामकरणं गवांक्रयविक्रयः, नव-वस्त्रधारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीदर्शनं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि १३ गुरौ धनिष्ठायां शतभिषायां च-गर्भाधानं, प्रसूतिस्नानं, नामकरणं, अन्नप्राशनं, गवांक्रयविक्रयः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, वृक्षादिरोपणं, जलयंत्रकर्म, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणांदर्शनं, ऋणग्रहणं दानं, शिल्पविद्यारम्भः। तिथि १४ शुक्रे शतभिषायां-रिक्तादोषः। तिथि १५ शनौ पूर्वाभाद्रपदायां-मुहूर्ताभावः।

फलम्—पंचमी तिथि की वृद्धि के कारण यह पक्ष १६ दिन का है। शनिवार का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार भाव को स्थिर रखेगा। विप्रजनों को किन्हीं कारणों से पीड़ा पहुँचेगी। खाद्यान्नों के भाव में तेजी का रुख। नारी जगत के नित्य सौभाग्य सुख को अक्षुण बनाये रखने वाला पुनीत पर्व हरितालिका का व्रत (तीज) १२ सितम्बर रविवार को होगा। सिद्धि विनायक वरद श्रीगणेश चतुर्थी का प्रसिद्ध पर्व १३ सितम्बर सोमवार को पूरे देश में गणपति पूजन के साथ मनाया जायेगा। महाराष्ट्र प्रान्त का यह सबसे महत्वपूर्ण एवं दर्शनीय पर्व है। आज के दिन चन्द्रदर्शन निषिद्ध रहता है दिख पड़ जाने पर स्यमन्तक मणि की कथा सुखसागर से सुनकर दोष शान्ति कर लेनी चाहिये। ऋषि पंचमी १४ सितम्बर मंगलवार को मनाई जायेगी। मध्यान्ह काल में स्वर्ण निर्मित सप्तर्षि-प्रतिमा का पूजन कर उसको ब्राह्मण को दान कर देने का विधान है। लोलार्क षष्ठी का मान १६ सितम्बर गुरुवार को है आज पुत्र की कामना से काशी में भदैनी स्थित लोलार्क कुण्ड में स्नान किया जायेगा एवं स्वामी कार्तिकेय का दर्शन किया जायेगा। महालक्ष्मी व्रतारम्भ एवं काशी के लक्ष्मी कुण्ड में १६ दिन तक चलने वाला सोरहिया का मेला, स्नान लक्ष्मी पूजन १७ सितम्बर से प्रारम्भ होगा। श्रीचन्द्र नवमी १९ सितम्बर रविवार को है। दशावतार का व्रत २० सितम्बर सोमवार को किया जायेगा। बिहार प्रान्त में कर्मा एकादशी के नाम से प्रसिद्ध पद्मा एकादशी व्रत का मान सबके लिये २१ सितम्बर मंगलवार को है। प्रदोष का व्रत २२ सितम्बर बुधवार को किया जायेगा। श्रीअनन्त चतुर्दशी का प्रसिद्ध पर्व २४ सितम्बर शुक्रवार को मनाया जायेगा। मध्यान्ह काल में अनन्त भगवान् का पूजन कर एवं अनन्त भगवान की कथा का श्रवण कर अनन्त धारण किया जायेगा। आज के दिन केवल मीठा भोजन करने का विधान है। स्नान-दान व्रत सहित पूर्णिमा का मान २५ सितम्बर शनिवार को होगा। भाद्रपद पूर्णिमा से ही महालयारम्भ मान लिया जाता है क्योंकि पूर्णिमा तिथि को मरने वाले पितरों का श्राद्ध आज ही किया जाता है। उत्तराफाल्गुनी**

[illegible] (ङ) विश्वकर्मा पूजा। [illegible] (ज) [illegible] श्रवण द्वादशी १२। दधिदानम्। दुग्धव्रतारम्भः। (झ) [illegible] धारणम्। श्रीविष्णुपरिवर्तनोत्सवः। [illegible] कदली व्रतम् १३। रवियोगः घ.७।१२ (दि.८।५४) उ.। [illegible] पश्चिम दिशाशूल बुधवारः। उत्तराफाल्गुन्यां ४ चरणे रवि घं. २८।३८ (दि.५।२८)।

**नक्षत्र सूर्य १४ सितम्बर मंगलवार को दिन ११।५४ बजे से आयेगा इसमें सामान्य वृष्टि के ही योग बन रहे हैं। कन्या राशि की सूर्य संक्रान्ति १७ सितम्बर शुक्रवार को रात १।५५ बजे से आयेगी। इसके फल में भदई एवं अगहनी की फसल अच्छी उतरने के संकेत है।

...दृणयादिविना नरैरिति।। ... च। प्रातः स्नानं ... न विद्यते इति।। ... सर्वेषु सीमन्ते च ऋतुत्रये। ... दाहः। तत्रपूजा - देशा...

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	तिथि घ.	तिथि प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.
२९	५१	१	र.	२२	२३	दि.	२	५९	उत्तराभाद्र	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृद्धि	१३	१३	दि.	११	१९
२९	४७	२	सो.	१८	११	दि.	१	१९	रेवती	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्रुव	७	९	दि.	८	५५
२९	४३	३	मं.	१३	९	दि.	११	१९	अश्विनी	०/५६	[illegible]	प्रा.	४	१७/५१	व्याघा	०/५२	२५/४५	प्रा.	१/३	११/११
२९	४०	४	बु.	७	३९	दि.	९	८	कृत्तिका	५३	१	रा.	३	१६	वज्र	४५	३७	रा.	१२	१९
२९	३६	५	गु.	१/५३	२४/५४	प्रा.	९/४	[illegible]/३०	रोहिणी	४९	५२	रा.	२	१	सिद्धि	३७	५४	रा.	९	१४
२९	३२	७	शु.	४९	३६	रा.	१	५५	मृगशिरा	४४	४१	रा.	११	५७	व्यतिपात	३०	५	सा	६	७
२९	२९	८	श.	४३	४७	रा.	११	३७	आर्द्रा	४०	४१	रा.	१०	२२	वरीयान	२२	२५	दि.	३	४
२९	२५	९	र.	३८	२१	रा.	९	२७	पुनर्वसु	३७	८	रा.	८	५८	परिघ	१५	२	दि.	१२	८
२९	२२	१०	सो.	३३	३३	रा.	७	३३	पुष्य	३४	१२	रा.	७	४९	शिव	८	९	दि.	९	२४
२९	१८	११	मं.	२९	३६	सा.	५	५८	श्लेषा	३२	८	रा.	६	५९	सिद्ध	१/५८	४८/३०	प्रा.	७/५	५१/३५
२९	१४	१२	बु.	२६	२	दि.	४	३४	मघा	३०	५३	सा	६	३०	शुभ	५०	१८	रा.	२	१६
२९	११	१३	गु.	२४	४१	दि.	४	२	पू.फाल्गुनी	३०	४५	सा	६	२८	शुक्ल	४७	२४	रा.	१	८
२९	७	१४	शु.	२४	०	दि.	३	४७	उ.फाल्गुनी	३१	४९	रा.	६	५५	ब्रह्म	४४	३१	रा.	११	५९
२९	३	३०	श.	२४	३६	दि.	४	१	हस्त	३४	११	रा.	७	५१	ऐन्द्र	४१	३१	रा.	११	११

ति.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदयिका योगाः	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि	प्रवेश प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा.द. अं.	क.	स्पष्ट रा.	अं.	रे.अं.	चन्द्रोदय घं.	मि.
१	को.	२२	३२	ते.	[illegible]०	१७	स्थिर	२६	१	९	४			६	२	५	५८	०	५८	५	८	-१०	६	४६
२	ग.	१८	११	व.	४५	४०	मातंग	२७	२	१०	५	मेष	३६	६	३	५	५७	१	२२	५	९	-११	७	२१
३	वि.	१३	९	बव.	४०	२४	अमृत	२८	३	११	६			६	३	५	५७	१	४५	५	१०	-११	८	१३
४	वा.	७	३९	को.	३४	४२	सिद्धि	२९	४	१२	७	वृष	३५	६	४	५	५६	२	९	५	११	-११	९	१
५	ते.	१	४५	ग.	३८/५५	४२/११	उत्पात	३०	५	१३	८			६	४	५	५६	२	३३	५	१२	-११	९	५३
७	वि.	२२	३७	बव.	४९	३६	मानस	१	६	१४	९	मिथुन	१७	६	५	५	५५	२	५६	५	१३	-१२	१०	४८
८	वा.	१६	४१	को.	४३	४७	मुद्गर	२	७	१५	१०			६	६	५	५४	३	२०	५	१४	-१२	११	४६
९	ते.	११	४	ग.	३८	२१	ध्वज	३	८	१६	११	कर्क	२	६	७	५	५३	३	४३	५	१५	-१२	१२	४६
१०	व.	५	५७	वि.	३३	३३	धाता	४	९	१७	१२			६	८	५	५२	४	६	५	१६	-१३	१	४५
११	बव.	१	३५	वा.	२१/५७	३६/४९	आनन्द	५	१०	१८	१३	सिंह	८	६	८	५	५२	४	२९	५	१७	-१३	२	४४
१२	ते.	२६	२	ग.	५५	२२	चर	६	११	१९	१४			६	९	५	५१	४	५२	५	१८	-१३	३	४२
१३	व.	२४	४१	वि.	५४	२०	गद	७	१२	२०	१५	कन्या	१	६	१०	५	५०	५	१५	५	१९	-१४	४	३७
१४	श.	२४	०	च.	५४	१८	शुभ	८	१३	२१	१६			६	११	५	४९	५	३८	५	१९	-१४	५	३२
३०	ना.	२४	३६	कि.	५५	३६	मृत्यु	९	१४	२२	१७			६	११	५	४९	६	१	५	२०	-१५	+	+

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति	
१	र.	११	१५	४४	५६	७	२०	३०	२६	४०	४०	५	२३	३४	३४	१००	१५
२	सो.	११	२९	२१	२२	७	२१	११	६	४०	४४	५	२५	१४	४९	९९	४०
३	मं.	०	१३	२५	१०	७	२१	५१	५०	४०	५०	५	२६	५४	२९	९८	३१
४	बु.	०	२७	२६	४५	७	२२	२२	४०	४०	५७	५	२८	३३	०	९७	८
५	गु.	१	११	२४	२८	७	२३	१३	३७	४०	५९	६	०	१०	८	९६	१२
७	शु.	१	२५	४६	३७	७	२३	५४	३६	४१	३	६	१	४६	२०	९५	१९
८	श.	२	९	५४	१०	७	२४	३५	३९	४१	१०	६	३	२१	३९	९४	६
९	र.	२	२३	५६	५९	७	२५	१६	४९	४१	१५	६	४	५५	४५	९२	२९
१०	सो.	३	७	५३	१८	७	२५	५८	४	४१	१९	६	६	२८	१४	९०	२१
११	मं.	३	२१	३८	४२	७	२६	२९	२३	४१	२५	६	७	५८	३५	८८	१८
१२	बु.	४	६	१३	२५	७	२७	२०	४८	४१	२९	६	९	२६	५३	८७	०
१३	गु.	४	१९	३५	४१	७	२८	२	१७	४१	३२	६	१०	५३	५३	८५	२५
१४	शु.	५	२	४२	१९	७	२८	४३	४९	४१	३७	६	१२	१९	१८	८३	३०
३०	श.	५	१५	३४	५४	७	२९	२५	२६	४१	४२	६	१३	४२	४८	८१	४५

ति.	वा.	स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	र.	०	९	३४	४१	५	३८	३	२८	५९	५४	२८	२५	०	२१	५८	२	२	४०	३	१६	२२	२२
२	सो.	०	९	२९	३	५	४३	३	२९	२८	१९	२९	३१	०	२१	५५	२२	२	४३	३	१६	१९	११
३	मं.	०	९	२३	२०	५	४८	३	२९	५७	५०	२९	५२	०	२१	५२	३१	२	४६	३	१६	१६	०
४	बु.	०	९	१७	३२	५	५०	४	०	२७	४२	३०	२२	०	२१	४९	५३	२	५०	३	१६	१२	५०
५	गु.	०	९	११	४२	५	५५	४	०	५८	४	३०	४९	०	२१	४७	३	२	५४	३	१६	९	३९
७	शु.	०	९	५	४७	६	०	४	१	२८	५३	३२	१०	०	२१	४४	१	२	५८	३	१६	६	२८
८	श.	०	८	५९	४७	६	६	४	२	१	३	३३	४५	०	२१	४१	११	३	३	३	१६	३	१७
९	र.	०	८	५३	४१	६	११	४	२	३४	४८	३४	२०	०	२१	३८	८	३	७	३	१६	०	६
१०	सो.	०	८	४७	३०	६	१७	४	३	९	८	३५	१५	०	२१	३५	१	३	११	३	१५	५६	५५
११	मं.	०	८	४१	१३	६	२४	४	३	४४	२३	३६	२५	०	२१	३१	५०	३	१५	३	१५	५३	४४
१२	बु.	०	८	३४	४१	६	२८	४	४	२०	४८	३७	१०	०	२१	२८	३५	३	२०	३	१५	५०	३३
१३	गु.	०	८	२८	२१	६	३५	४	४	५७	४८	३७	२५	०	२१	२५	१५	३	२४	३	१५	४७	२२
१४	शु.	०	८	२१	४६	६	४०	४	५	३५	१३	३८	१०	०	२१	२१	५१	३	२९	३	१५	४४	११
३०	श.	०	८	१५	६	६	४५	४	६	१३	२३	३९	२५	०	२१	१८	२२	३	३३	३	१५	४१	०

फलम्– २६ सितम्बर रविवार से **पितृपक्ष आरम्भ** हो रहा है। गृहस्थ जीवन में पितरों का श्राद्ध एवं तर्पण कर उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करना वर्ष का सबसे पुनीत एवं आवश्यक कृत्य है। गुरुवार को षष्ठी तिथि का क्षय होने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। चातुर्मास में किया जाने वाला **अशून्य शयन** व्रत चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया में पक्षारम्भ २६ सितम्बर रविवार को किया जायेगा। चन्द्रोदय समय सायं ६।४६ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान २८ सितम्बर मंगलवार को है। चन्द्रोदय रात ८।१३ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। मंगलवार की गणेश चतुर्थी अत्यन्त पुण्यफलदायिनी होती है एवं इसको अंगारकी कहते हैं। पुत्र की कुशलता एवं दीर्घायु की कामना से किया जाने वाला **जीवत्पुत्रिका का प्रसिद्ध व्रत पर्व** २ अक्टूबर शनिवार को होगा एवं आज ही **महालक्ष्मी व्रत पूजन सोरहिया** मेले की समाप्ति भी हो जायेगी। जीवत्पुत्रिका व्रत की पारणा ३ अक्टूबर रविवार को प्रातः की जायेगी। सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध जिसे **मातृ नवमी** का श्राद्ध कहा जाता है ३ अक्टूबर रविवार को किया जायेगा। **इन्दिरा एकादशी व्रत** का मान सबके लिये ५ अक्टूबर मंगलवार को होगा। **प्रदोष का व्रत** ६ अक्टूबर बुधवार को किया जायेगा। **मास शिव रात्रि व्रत** का मान ७ अक्टूबर गुरुवार को होगा। शस्त्र आदि से अथवा लड़ाई में मारे गये पितरों का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन ८ अक्टूबर शुक्रवार को किया जायेगा। स्नान-दान सहित **सर्वपैतृ अमावस्या, पितृ विसर्जन** ९ अक्टूबर शनिवार को है। जिन पितरों के मृत्यु की तिथि ज्ञात न हो उनका श्राद्ध पितृ विसर्जन के दिन करना चाहिये। परिवार की सुख-शान्ति एवं पितरों की प्रसन्नता के लिये पितृविसर्जन के दिन श्राद्ध एवं ब्राह्मण भोजन कराना अत्यन्त आवश्यक माना गया है। हस्त नक्षत्र का सूर्य २७।२८ सितम्बर को रात्रि २।५९ बजे से आवेगा। इसमें वायु वेग के साथ सामान्य वृष्टि के योग बन रहे हैं।

पं.२७ आश्विन कृष्ण ८ शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २४३९ अयनांशाः २३/५०/१७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	७	६	०	४	०	३	९
१४	९	२४	३	८	२	२१	१६	१६
३	५४	३५	२१	५९	१	४१	३	३
५०	१०	३९	३९	४७	३	११	१७	१७
५९	८५७	४१	९४	६	३३	३	३	३
१०	८	१०	६	६ व	४५ मा	३ व	११	११

बु.७ | ६ सू. | शु.५ | ८ मं. | ४ रा. | ९ | ३ चं. | १२ | १० के. | २ | ११ | १ गु.श.

भौमादीनां चारः-
भौमः-ज्येष्ठायां वृश्चिक राशौ ति.३० शनितः मूले धनुषि घ.४१।४०
बुधः-कन्या राशौ, तिथि ४ बुधतः तुला राशौ घ.१६।४०।
गुरुः-(वक्री) अश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-कर्क राशौ, तिथि ३ भौमतः सिंह राशौ घ.५।२
शनिः-(व) भरण्यां १चरणे मेषराशौ
राहुः-पुष्ये ४ चरणे।
केतुश्चः-श्रवणे २ चरणे।

दिनांक २६ सितम्बर - ९ अक्टूबर १९९९ ई. (राष्ट्रीय आश्विन ४-१७)
याम्यायनं सौम्यगोलः शरद् ऋतुः।

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, आश्विन कृष्ण पक्षः।

फसली आश्विनमास न्ववर्षश्च १४०७ आरम्भः। पितृपक्षारम्भः। प्रतिपदा श्राद्धम्। चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीयां अशून्यशयन व्रतम् २। चन्द्रोदये (रा.६।४६) वादने चन्द्राय अर्घ्यम्। (क)
मेषराशिः३।३६ (दि.७।२९)। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा घ.४५।४० (रा.१२।१९) उ.। द्वितीया श्राद्धम्। ⊙ हस्त नक्षत्रे रविः घ.५२।२० (रा.२।५९) स्त्री-पुरुष, सूर्य, (ख)
भद्रा घ.१३।९ (दि.११।१९) या.। तृतीया श्राद्धम्। चतुर्थी श्राद्ध अद्यैव। भरणी श्राद्धम्। अङ्गारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.८।१३) वादने चन्द्राय अर्घ्यम् (ग)
वृष राशिः२०।३५ (दि.१०।१८)। पञ्चमी श्राद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। (घ) (प्रा.६।४६) या.। (च) (मुई) जयद् योगः घ.३७।८ (रा.८।५८) या.।
भद्रा घ.५५।३९ (रा.शे.४।२०) उ.। अनुदया षष्ठ्यां षष्ठी श्राद्धम्। चन्द्र षष्ठी ६ व्रतम्। दाम्पत्य विनाशको रवियोगः घ.४९।५२ (रा.२।२) उ.। याम्य (मुई) जयद् योगः घ.२।४५ (ब)
मिथुन राशिः२७।१७ (दि.१।१०)। भद्रा घ.२२।३७ (दि.३।८) या.। सप्तमी श्राद्धम्। हस्त नक्षत्रे २ चरणे रविः घ.१५।३० (दि.१२।२७)। दाम्पत्य विनाशको रवियोगः घ.४४।४१ (रा.१२।५७) या.
अष्टमी श्राद्धम्। जीवत्पुत्रिका व्रतम् ८। महालक्ष्मी व्रतम् ८। चन्द्रोदय (रा.११।४६) वादने [illegible] जीमूत वाहन पूजनम्। अथवा महालक्ष्मी पूजनम्। काश्यां लक्ष्मी कुण्डे स्नानम् (ङ)
कर्क राशिः२३।२ (दि.३।३०) पारणा जीवत्पुत्रिकाव्रतस्य प्रातरेव। मातृ नवमी श्राद्धम्। सौभाग्यवती स्त्रीणामपि अद्यैव श्राद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.३०।८ (रा.८।५८) उ.। याम्य (च)
भद्रा घ.५।५७ (दि.८।३२) उ. घ.३३।३३ (रा.७।३३) या.। दशमी श्राद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.३४।२२ (रा.७।४९) या.। हस्त नक्षत्रे ३ चरणे रविः घ.३२।१८ (रा.९।२७)।
सिंह राशिः३२।८ (रा.६।५९)। इन्दिरा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। एकादशी श्राद्धम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.३२।८ (रा.६।५९) या.। स्थायी (मुई) जयद् योगः [illegible]
प्रदोष व्रतम् १२। द्वादशी श्राद्धम्। साधु यति, वैष्णवानामपि अद्यैव श्राद्धम्। मघा श्राद्धम्। (छ) [illegible] त्रयोदशी श्राद्धम्। [illegible] मासशिवरात्रि १३ व्रतम्।
कन्या राशिः४६।१ (रा.१२।३४)। भद्रा घ.२४।४१ (दि.४।२) उ. घ.५४।२० (रा.३।५४) या.। [illegible] (ज)
चतुर्दशी श्राद्धम्। शस्त्रादि हतानाम् अद्यैव श्राद्धम्। हस्त नक्षत्रे ४ चरणे रविः घ.१४२ [illegible]
स्नानदान श्राद्धादौ सर्वपैतृ अमावस्या३०। पितृविसर्जन३०। अज्ञाततिथिनामपि अद्यैव श्राद्धम् ३०। पार्वण श्राद्धम् ३०। [illegible] पितृभ्यश्च जलं देयं तेन

दैनिक लग्न सारिणी

लग्न	१ र. घं. मि.	२ सो. घं. मि.	३ मं. घं. मि.	४ बु. घं. मि.	५ गु. घं. मि.	७ शु. घं. मि.	८ श. घं. मि.	९ र. घं. मि.	१० सो. घं. मि.	११ मं. घं. मि.	१२ बु. घं. मि.	१३ गु. घं. मि.	१४ शु. घं. मि.	३० श. घं. मि.
कन्या	७ २६	७ २२	७ १८	७ १४	७ १०	७ ६	७ २	६ ५८	६ ५४	६ ५०	६ ४६	६ ४३	६ ३९	६ ३५
तुला	९ ४२	९ ३८	९ ३४	९ ३०	९ २६	९ २२	९ १८	९ १५	९ ११	९ ७	९ ३	८ ५९	८ ५५	८ ५१
वृश्चि.	११ ५९	११ ५५	११ ५१	११ ४७	११ ४३	११ ३९	११ ३५	११ ३२	११ २८	११ २४	११ २०	११ १६	११ १२	११ ८
धनु	२ ४	२ ०	१ ५६	१ ५२	१ ४८	१ ४५	१ ४१	१ ३७	१ ३३	१ २९	१ २५	१ २२	१ १७	१ १३
मकर	३ ५०	३ ४६	३ ४२	३ ३८	३ ३४	३ ३०	३ २६	३ २२	३ १८	३ १४	३ १०	३ ६	३ २	२ ५८
कुम्भ	५ २१	५ १७	५ १३	५ ९	५ ५	५ १	४ ५७	४ ५३	४ ४९	४ ४५	४ ४१	४ ३७	४ ३४	४ ३०
[illegible]	रा.	रा.	रा.	६ ३७	६ ३३	६ २९	६ २५	६ २१	६ १७	६ १३	६ ९	६ ५	६ २	५ ५८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८ ८	८ ४	८ ०	७ ५६	७ ५२	७ ४८	७ ४४	७ ४०	७ ३६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१० ८	१० ४	१० ०	९ ५६	९ ५३	९ ४९	९ ४५	९ ४१	९ ३७	९ ३३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२ १८	१२ १४	१२ १०	१२ ६	१२ २	११ ५८	११ ५४	११ ५०	११ ४६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२ ४०	२ ३६	२ ३२	२ २८	२ २४	२ २०	२ १६	२ १२	२ ८	२ ४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४ ५३	४ ४९	४ ४६	४ ४२	४ ३८	४ ३४	४ ३०	४ २६	४ २२	४ १८

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ रवौ उ.भाद्रपदायां रेवत्यां च- पुंसवनं, सीमन्तः [illegible] विक्रयः, प्रसूतिस्नानं, विपणि-व्यापारः, क्रयः गवांक्रय विक्रयः, रत्नवस्त्रप्रधारणं, शस्त्रधारणं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, सेवारम्भः नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि २ सोमे रेवत्यां अश्विन्यां च- जातकर्म, विपणि व्यापारः क्रयः, गवांक्रयविक्रयः, अलंकारनिर्माणं, धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, ऋणग्रहणं दानं च।

तिथि ३ भौमे अश्विन्यां भरण्यां च-उग्रकर्मारम्भः (ति.दा.)।

तिथि ४ बुधे कृत्तिकायां-रिक्तादोषः।

तिथि ५/६ गुरौ रोहिण्यां-गर्भाधानं, प्रसूतिस्नानं जातकर्म, अन्नप्राशनं, विपणि व्यापारः, वृक्षादिरोपणं भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, इष्टिकानिर्माणं अधिकारीदर्शनं, शिल्पविद्यारम्भः, नौकाजलयान यंत्र निर्माणं।

तिथि ७ शुक्रे मृगशिरायां-गर्भाधानं जातकर्म, नामकरणं विपणि-व्यापारः गवांक्रय विक्रय हलप्रवहणं बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं ऋणग्रहणं दानं च, भूमिक्रयः, सेवारम्भः नौका जलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ८ शनौ आर्द्रायां-उग्रकर्मारम्भः (ति.दा.)।

तिथि ९ रवौ पुनर्वसौ-रिक्तादोषः।

तिथि १० सोमे पुष्ये-नामकरणं, गवांक्रयविक्रयः

पं.२८ आश्विन कृ.३० शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः [illegible]

८ मं. | ५ बु. | ६ शु. | १० के. | ११ | १२ | ९ | ३ | २ | ४ | १ गु.श.

मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुम्भ मीन — राशि-फलम् [illegible]

(क) [illegible] मध्याह्ने पितृभ्यश्च जलं देयं तेन [illegible]
(ख) [illegible] सर्वार्थसिद्धियोगः घ.५।४२ [illegible] जयद् योगः घ.२२।२३दि.२।५९) या [illegible] तदोशे सूर्यः
(ग) अमृता, सौभाग्यवती, सर्वार्थसिद्धियोगः घ.०।३५ (प्रा.६।१७) या.। अद्य भरणी श्राद्धम् विशेषः "भरणी पितृपक्षे तु महती परिकीर्तिता। अस्यां श्राद्धं कृते येन स गया श्राद्ध कृद्भवेत्।"
(ङ) १६ दिनात्मिकायाम् लक्ष्मीपूजनम् च समाप्तिः। अद्य अष्टका श्राद्धम्। गया मध्याष्टमी श्राद्धम्। अशोकाष्टमी ८। महात्मा गांधी लाल बहादुर शास्त्रीश्च जयन्ती।

रोग शान्त्यर्थ मन्त्र

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसमें जीवन में किसी न किसी रोग का सामना न किया हो। अनेक विध रोगों से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत मन्त्र हमें यहाँ जनता के कल्याणार्थ दे रहे हैं, (मन्त्रों के व्याकरणदोष को शुद्ध करने का प्रयास न करें) - ॐ नमः परमात्मन परब्रह्म मम शरीरं पाहि पाहि कुरु कुरु स्वाहा। इस मन्त्र को १०८ बार गंगाजल पर पढ़े और रोगी व्यक्ति को पिला दें रोगी में स्वास्थ्य लाभ के लक्षण दिखाई देंगे, प्रतिदिन ४१ दिन तक करें, रोग की विषमता को दृष्टि में रखते हुए यह प्रयोग अधिक दिन मास तक कर सकते हैं।

अलंकारनिर्माणं, धारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, जलयंत्रकर्म, शय्यासनाद्युपभोगश्च आ.पत्रलेखनं, ऋण ग्रहणं दानं च।

तिथि ११ भौमे श्लेषायां मुहूर्ताभावः।

तिथि १२ बुधे मघायां-जलयंत्रकर्म, शय्यासनाद्युपभोगः।

तिथि १३ गुरौ पूर्वाफाल्गुन्यां-प्रसूतिस्नानं, जलयंत्रकर्म, मुकदमादि [illegible] भूमिक्रयः।

तिथि १४ शुक्रे उत्तराफाल्गुन्यां-रिक्तादोषः।

तिथि ३० शनौ हस्ते-मासान्तदोषः।

दि. मा.		आश्विन शुक्ल तिथि							नक्षत्र						योग						करण						औदयिका	तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश			सूर्योदय		सूर्यास्त		क्रा.		स्पष्ट सूर्यः				गति		रे.अं.	
घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	योगाः	अं.	फ.	सौ.	रा.	राशि	घ.	प.	घं	मि	घं	मि	अं.	क.	रा.	अं.	क.	वि.	क.	वि.	घं.	मि.
२९	०	१	र.	२६	३७	दि.	४	५१	चित्रा	३७	४८	रा.	९	१९	वैधृति	४१	३२	रा	१०	४९	बव	२६	३७	वा	५८	९	पद्म	१०	१५	२३	१८	तुला	६	०	६	१२	५	४८	६	२४	५	२१	५८	११	५९	२७	-	१५
२८	५६	२	सो.	२९	४०	सा	६	५	स्वाती	४२	३२	रा.	११	१४	विष्कुं	४१	२६	रा	१०	४७	को	२९	४०	ते	६०	०	छत्र	११	१६	२४	१९				६	१३	५	४७	६	४७	५	२२	५७	३८	५९	३०	-	१६
२८	५२	३	मं.	३३	४९	रा.	७	४६	विशाखा	४८	९	रा.	१	३०	प्रीति	४२	४	रा	११	४	तै.	१	४४	ग.	३३	४९	श्रीवत्स	१२	१७	२५	२०	वृश्चिक	३१	४५	६	१४	५	४६	७	१०	५	२३	५७	८	५९	३२	-	१६
२८	४९	४	बु.	३८	४०	रा.	९	४२	अनुराधा	५४	२५	रा.	४	०	आयुष्मान	४३	१४	रा	११	३२	व.	६	१४	वि.	३८	४०	सौम्य	१३	१८	२६	२१				६	१४	५	४६	७	३३	५	२४	५६	४०	५९	३४	-	१६
२८	४६	५	गु.	४३	५५	रा.	११	४९	ज्येष्ठा	६०	०	स	म	स्त	सौभाग्य	४४	३८	रा	१२	६	बव.	११	१७	वा.	४३	५५	का.द.	१४	१९	२७	२२				६	१५	५	४५	७	५८	५	२५	५६	१४	५९	३६	-	१६
२८	४२	६	शु.	४९	४	रा.	१	५४	ज्येष्ठा	०	५७	प्रा	६	३९	शोभन	४५	५९	रा	१२	४०	को.	१६	२१	ते.	४९	४	स्थिर	१५	२०	२८	२३	धनु	०	५७	६	१६	५	४४	८	२३	५	२६	५५	५०	५९	३८	-	१६
२८	३८	७	श.	५३	४४	रा.	३	४६	मूल	७	१९	दि.	९	१४	अ.गं.	४६	५७	रा	१	३	ग.	२१	२४	व	५३	४४	गद	१६	२१	२९	२४				६	१६	५	४४	८	४५	५	२७	५५	२८	५९	४०	-	[illegible]
२८	३४	८	र.	५७	३८	रा.	५	२०	पूर्वाषाढ़ा	१३	५	दि.	११	३१	सुकर्मा	४७	२४	रा	१	१५	वि.	२५	४१	बव	५७	३८	शुभ	१७	२२	३०	२५	मकर	२९	१९	६	१७	५	४३	९	१०	५	२८	५५	८	५९	४२	-	१७
२८	३१	९	सो.	६०	०	स	म	स्त	उत्तराषाढ़ा	१८	१	दि.	१	३०	धृति	४६	४७	रा	१	५	वा.	२९	०	को	६०	०	मृत्यु	१८	२३	३१	२६				६	१८	५	४२	९	३४	५	२९	५४	५०	५९	४४	-	१७
२८	२७	९	मं.	०	२१	प्रा.	६	२७	श्रवण	२१	४१	दि.	३	३	शूल	४५	४३	रा	१२	३६	को.	०	२१	तै	३१	९	लुम्बक	१९	२४	१	२७	कुम्भ	५३	८	६	१९	५	४१	९	५८	६	०	५४	३४	५९	४७	-	१७
२८	२४	१०	बु.	१	५८	दि.	७	६	धनिष्ठा	२४	२७	दि.	४	६	गण्ड	४३	२४	रा	११	४१	ग.	१	५८	व	३२	६	मित्र	२०	२५	२	२८				६	१९	५	४१	१०	२०	६	१	५४	२१	५९	४९	-	१७
२८	२०	११	गु.	२	१५	दि.	७	१४	शतभिषा	२५	४८	दि.	४	३९	वृद्धि	४०	४	रा	१०	२४	वि.	२	१५	बव	३१	४५	वज्र	२१	२६	३	२९	मीन	११	३८	६	२०	५	४०	१०	४४	६	२	५४	१०	५९	५१	-	१७
२८	१७	१२	शु.	१ ५७	१४ ४८	प्रा.	६ ५	५१ ५०	पूर्वाभाद्र	२६	५५	सा	५	७	ध्रुव	३५	४७	रा	८	४०	वा.	१	१४	को.	३० ५९	८ २	ध्वांक्ष	२२	२७	४	३०				६	२१	५	३९	११	८	६	३	५४	१	५९	५४	-	१७
२८	१३	१४	श.	५५	४८	रा.	४	४०	उत्तराभाद्र	२४	५३	दि.	४	१८	व्याघात	३०	३७	रा	६	३६	ग.	२७	२५	व	५५	४८	धूम्र	२३	२८	५	१				६	२१	५	३९	११	२७	६	४	५३	५५	५९	५६	-	१७
२८	१०	१५	र.	५१	४१	रा.	३	२	रेवती	२२	५७	दि.	३	३३	हर्षण	२४	४१	दि	४	१४	वि.	२३	४४	बव	५१	४१	प्रवर्ध	२४	२९	६	२	मेष	२२	५७	६	२२	५	३८	११	४५	६	५	५३	५१	५९	५८	-	१८

तुलाराशिः ६।० (दि.८।३६)। शारदीयनवरात्रारम्भः। कलश स्थापनम् अभि[illegible] मुहूर्ते। (मध्यान्हे ११।३७ [illegible]) [illegible] शैलपुत्री दर्शनम्। ध्वजारोपणम्। (क)
चन्द्र ☾ दर्शनम् मु.१५ जघन्या फलम् महर्घता। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्ष। ब्रह्मचारिणी दर्शनम्। 'पट्टोदर द्वितीया [illegible]' [illegible] (ख)
वृश्चिक राशिः३१।४५ (रा.६।५६)। मु.रज्जब ७ हिजरी सन् १४२०। चन्द्रघण्टादेवी दर्शनम्। '[illegible]' [illegible] (ग)
भद्रा घ.६।१४ (दि.८।४४) उ.घ.३८।४० (रा.९।४२) या.। कूष्माण्डा देवी दर्शनम्। 'मधुपर्क चतुर्थ्यान्तु तिलक[illegible]' [illegible] (घ)
उपांग ललिता ५ व्रतम्। स्कन्दमाता दर्शनम्। 'पञ्चम्यामङ्गरागञ्च शक्त्यालंकरणानि च।' (ङ) सरस्व[illegible] [illegible] या.।
धनु राशिः०।५७ (प्रा.६।३९)। कात्यायनी देवी दर्शनम्। 'षष्ठ्या बिल्वातरोबोधसाय सन्ध्यासुकारयेत्।' [illegible] नवपद ओली प्रारम्भ (जैन)।
भद्रा घ.५३।४४ (रा.३।४६) उ.। कालरात्रि दर्शनम्। 'सप्तम्यांप्रातरानीय गृहमध्ये प्रपूजयेत्।' पत्रिका प्रवेश [illegible] मूल नक्षत्र (छ)
मकर राशिः २९।१९ (सा.६।१)। भद्रा घ.२५।४१ (दि.४।३३) या.। महागौरी दर्शनम्। महाष्टमी ८ व्रतम्। [illegible] अन्नपूर्णा परिक्रमा [illegible] (च)
महानवमी ९ व्रतम। नवम्यामुग्रचण्डायाः पूजा कुर्याद् बलितथा। यावन्नवमी होमादिकञ्च। मन्वादि ९। सर्वेषां [illegible] (ज)
कुम्भ राशिः५३।८ (रा.३।२४)। पंचक (पचखा) आरम्भः। विजया दशमी १०। 'श्रवणर्क्ष यदा काले [illegible]' [illegible] श्रवण(झ)
भद्रा घ.३२।६ (रा.७।१९) उ.। दोष संघ विनाशको रवियोग घ.२४।२७ (दि.४।६) या.।
भद्रा घ.२।१५ (रा.७।१४) या.। पापांकुशा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। काश्यां नाटी इमली स्थान भरत [illegible]
मीन राशिः११।३८ (दि.११।०)। प्रदोष व्रतम् १३। पद्मनाभ द्वादशी १२ व्रतम्। दोष संघ विनाशको रवियोग [illegible] (प्रा.६।५१) या.।
भद्रा घ.५५।४८ (रा.४।४०) उ.। शनि-रिक्ता समायोग सिद्धयोगः घ.५५।४८ (रा.४।४०) या.।
मेष राशिः२२।५७ (दि.३।३३)। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा घ.२३।४४, (दि.३।५२) या.। स्नान-दान [illegible] पूर्णिमा। कोजागरी १५। महर्षि वाल्मीकि(ञ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	र.	५	२८	११	५८	८	०	७	८	४१	४५	६	१५	४	३३	८०	२७	०	८	८	२१	७	०	४	६	५२	४८	४२	२०	०	२१	१४	४१	३	३८	३	१५	३७	५०
२	सो.	६	१०	३४	४५	८	०	४८	५३	४१	४५	६	१६	२५	०	७८	२५	०	८	१	२१	७	१६	४	७	३५	८	४३	३५	०	२१	११	११	३	४३	३	१५	३४	३९
३	मं.	६	२२	४६	१८	८	१	३०	३८	४१	४८	६	१७	४३	२५	७५	१२	०	७	५४	५	७	२०	४	८	१८	४३	४५	३१	०	२१	७	२८	३	४८	३	१५	३१	२८
४	बु.	७	४	५७	२१	८	२	१२	२६	४१	५०	६	१८	५८	३७	७३	३०	०	७	४६	४५	७	२८	४	९	४	१४	४७	५५	०	२१	३	४०	३	४३	३	१५	२८	१७
५	गु.	७	१७	१०	१९	८	२	५४	१६	४१	५३	६	२०	१२	७	७१	३५	०	७	३९	१७	७	३२	४	९	५२	१	४८	०	०	२०	५६	४७	३	५८	३	१५	२५	६
६	शु.	७	२९	२९	३	८	३	३६	९	४१	५५	६	२१	२३	४२	७०	२९	०	७	३१	४५	७	३५	४	१०	४०	९	४८	३१	०	२०	५२	४१	४	२	३	१५	२१	५५
७	श.	८	११	४१	४२	८	४	१८	४	४१	५८	६	२२	३४	११	६९	०	०	७	२४	१०	७	४०	४	११	२८	१८	५०	५३	०	२०	४८	४७	४	६	३	१५	१८	४४
८	र.	८	२४	०	५५	८	५	०	२	४२	०	६	२३	४३	११	६८	२५	०	७	१६	३०	७	४६	४	१२	१९	४१	५२	३५	०	२०	४४	४१	४	१०	३	१५	१५	३३
९	सो.	९	६	२१	४७	८	५	४२	२	४२	५	६	२४	५१	३६	६८	०	०	७	८	४४	७	५२	४	१३	१२	१६	५३	४६	०	२०	४०	३१	४	१४	३	१५	१२	२२
९	मं.	९	१९	५६	४	८	६	२४	७	४२	१४	६	२५	५९	३६	६६	३८	०	७	०	५२	७	५२	४	१४	६	२	५५	५२	०	२०	३६	१७	४	१७	३	१५	९	११
१०	बु.	१०	२	४४	१७	८	७	६	२१	४२	२०	६	२७	६	१४	६४	२०	०	६	५३	०	७	५५	४	१५	१	५४	५६	०	०	२०	३२	०	४	१९	३	१५	६	०
११	गु.	१०	१५	४८	२०	८	७	४८	४१	४२	२८	६	२८	१०	३४	६०	२९	०	६	४५	५	७	५८	४	१५	५७	५६	५६	५०	०	२०	२७	४१	४	२२	३	१५	२	४९
१२	शु.	१०	२८	५५	५१	८	८	३१	९	४२	३५	६	२९	११	३	५८	३५	०	६	३७	७	८	०	४	१६	५४	४४	५८	३६	०	२०	२३	१९	४	२५	३	१४	५९	३८
१४	श.	११	११	३९	२८	८	९	१३	४४	४२	५०	७	०	९	३८	५५	२१	०	६	२९	७	७	५६	४	१७	५३	२०	६०	३१	०	२०	१८	५४	४	२७	३	१४	५६	२७
१५	र.	११	२५	२३	२०	८	९	५६	३४	४२	५५	७	१	४	५९	५३	३८	०	६	२१	११	७	५४	४	१८	५३	५१	६०	४८	०	२०	१४	२७	४	३०	३	१४	५३	१६

पं.२९ आश्विन शुक्ल ८ रवौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २४६४
अयनांशाः २३/५०/१९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	८	६	०	४	०	३	९
२८	२४	५	२३	७	१२	२०	१५	१५
५५	०	०	४३	१६	१९	४४	१५	१५
८	५५	२	११	३०	४१	४१	३३	३३
५९	७२१	४२	६८	७ ४६	५२	४ १०	३	३
४२	५१	०	२५	व	३५	व	११	११

भौमादीनां चारः-

भौमः-मूल नक्षत्रे धनुराशौ।

बुधः-तुलाराशौ, तिथि १२ शुक्रतः वृश्चिक राशौ घ.५०।१०।

गुरुः-(वक्री) आश्विन्यां मेष राशौ।

शुक्रः-(वक्री) भरण्यां ३ चरणे मेष राशौ।

राहुः-पुष्ये ४ चरणे केतुश्च श्रवणे २ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ र. घं.	मि.	२ सो. घं.	मि.	३ मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	६ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	८ र. घं.	मि.	९ सो. घं.	मि.
कन्या	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९
तुला	८	४७	८	४३	८	[illegible]	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	१६
वृश्चि.	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३३
धनु	१	९	१	५	१	[illegible]	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३८
मकर	२	५५	२	५१	२	[illegible]	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१	२	२७	२	२३
कुम्भ	४	२६	४	२२	४	[illegible]	४	१४	४	१०	४	६	४	२	३	५८	३	५४
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मीन	५	५४	५	५०	५	[illegible]	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२
मेष	७	३२	७	२८	७	[illegible]	७	२०	७	१६	७	१३	७	९	७	५	७	१
वृष	९	२९	९	२५	९	[illegible]	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७
मिथुन	११	४३	११	३९	११	[illegible]	११	३१	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५	११	११
कर्क	२	०	१	५६	१	[illegible]	१	४८	१	४४	१	४०	१	३७	१	३३	१	२९
सिंह	४	१४	४	१०	४	[illegible]	४	२	३	५८	३	५४	३	५०	३	४७	३	४३

ल.अं.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१४ श. घं.	मि.	१५ र. घं.	मि.
तुला	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६	७	५२
वृश्चि.	१०	२९	१०	२५	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	[illegible]
धनु	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	[illegible]
मकर	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	२	०
कुम्भ	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	[illegible]
मीन	५	१८	५	१४	५	१०	५	६	५	३	४	५९
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मेष	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७
वृष	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४
मिथुन	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४८
कर्क	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५
सिंह	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	३	२३	३	१९
कन्या	५	५३	५	४९	५	४५	५	४०	५	३६	५	३२

फलम्--शारदीय नवरात्रारम्भ १० अक्टूबर रविवार से हो रहा है, चित्रा नक्षत्र और वैधृति का संयोग होने के कारण कलश स्थापन आदि नवरात्रारम्भ से सम्बन्धित धार्मिक अनुष्ठान मध्यान्ह अभिजित् मुहूर्त ११।३७ से १२।२३ बजे के बीच में होंगे। १० दिनों का नवरात्र शुभ एवं वृद्धि का सूचक है। भारतीय संस्कृति में शारदीय नवरात्र अनुपम एवं अद्वितीय है। पूरा देश मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के चरित्र पर आधारित रामलीला एवं सत, रज, तम गुणों को प्रकट करने वाली भगवती जगदम्बिका महाकाली महालक्ष्मी व महासरस्वती का विभिन्न कलात्मक मुद्राओं में प्रदर्शन मन-मोहक रहेगा। [illegible] अन्नपूर्णा परिक्रमा १६ अक्टूबर शनिवार को सप्तमी तिथि को समाप्ति रात ३।४६ बजे से प्रारम्भ होकर १७ अक्टूबर रविवार को अष्टमी की समाप्ति रात्रिशेष ५।२० बजे तक चलेगी। महाष्टमी का महत्वपूर्ण व्रत १७ अक्टूबर रविवार को किया जायेगा। महानवमी का मान १८ अक्टूबर सोमवार को है। नवरात्र के दुर्गापाठ-अनुष्ठान की समाप्ति नवमी-दशमी के सन्धिकाल पर १९ अक्टूबर मंगलवार को पूर्वान्ह में की जायेगी और नवरात्र व्रत का पारण होगा। १९ अक्टूबर मंगलवार को दशमी तिथि श्रवण नक्षत्र के योग में विजया दशमी का पर्व शास्त्र सम्मत रीति से मनाया जायेगा। दुर्गा प्रतिमा का विसर्जन परम्परानुसार मंगलवार को दृष्टिगत रखते हुए २० अक्टूबर बुधवार को भी उदय तिथि दशमी का मान रखते हुए किया जायेगा। पापांकुशा एकादशी व्रत सबके लिये २१ अक्टूबर गुरुवार है। आज काशी के नाटी इमली की विश्वप्रसिद्ध भरत मिलाप अपनी विशिष्टताओं के साथ सम्पन्न होगा। प्रदोष व्रत का मान २२ अक्टूबर शुक्रवार को अनुदय व्यापिनी से होगा। २४ अक्टूबर रविवार को शरद् पूर्णिमा स्नान-दान-व्रत वाल्मीकि जयन्ती सहित सम्पन्न होगी। कोजागरी में आरोग्य धी का दीपक जलाकर लक्ष्मी कोजागरण करने से धन-ऐश्वर्य में वृद्धि होती है। पचखारम्भ सोमवार का चन्द्रदर्शन मु.१५ महंगी की सूचना किन्तु दाहिना सिरा सुभिक्षकारक है। चित्रा नक्षत्र में सूर्य ११ अक्टूबर सोमवार को दिन में ३।१५ बजे से आवेगा। इसके फल में अनावृष्टि के योग है। तुला राशि को सूर्य संक्रान्ति १८ अक्टूबर सोमवार को दिन में ८।२४ बजे से आवेगी। अगहनी की फसल बहुत अच्छी उतरने की पूर्व सूचना। सुभिक्ष सम्पन्नता का वातावरण। स्वाती नक्षत्र का सूर्य २४ अक्टूबर सोमवार को दिन में ८।२४ बजे से आवेगा। स्वल्प वृष्टि के योग है।

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ रवौ चित्रायां-विपणि-व्यापारः, क्रयः रक्त वस्त्र प्रवाल धारणं, शस्त्रधारणं, आ.पत्रलखने अधिकारीणां दर्शनं, सेवारम्भः, नौकाजलयान निर्माणं।

तिथि २ सोमे स्वात्यां-नामकरणं, अन्नप्राशन, क्रयः अलंकारनिर्माण धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, आ.पत्रलखनं, ऋणग्रहणं दानं च।

तिथि ३ भौमे विशाखायां-रक्तवस्त्रप्रवाल धारणं, हलप्रवहणं, इष्टिकादहनं (ति.दा.)। तिथि ४ बुधे अनुराधायां-रिक्तादोषः।

तिथि ५ गुरौ ज्येष्ठायां-नामकरणं, गर्भाधर्याविक्रयः शस्त्रधारणं, मुकदमादायरः। तिथि ६ शुक्रे ज्येष्ठायां मूले च-नामकरणं, वृक्षारोपणं, जलयंत्रकर्म, मुकदमादायरः, भूमिक्रयः।

तिथि ७ शनौ मूले पूर्वाषाढ़ायां च-मुहूर्ताभावः।

तिथि ८ रवौ पूर्वाषाढ़ायां-पुंसवनं, सीमन्तः, प्रसूति स्नानं, जलयंत्रकर्म, (ति.दा.) मुकदमादायरः।

तिथि ९ सोमे उत्तराषाढ़ायां-रिक्ता दोषः।

तिथि ९ भौमे श्रवणे दशम्यां- पुंसवनं, सीमन्तः, अन्नप्राशनं, रक्तवस्त्रप्रवाल धारणं, हलप्रवहणं।

तिथि १० बुधे धनिष्ठायां-गर्भाधानं, नामकरणं गर्भाधर्याविक्रयः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, अधिकारीणां दर्शनं, शिल्पविद्यारम्भः। तिथि ११ गुरौ शतभिषायां-गर्भाधानं, अन्नप्राशनं, क्रयः गर्भाधर्याविक्रयः, हलप्रवहणं, वृक्षारोपणं जलयंत्रकर्म आ.पत्रलेखनं, ऋणग्रहणं दानं च, नौकाजलयान निर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि १२/१३ शुक्रे पूर्वाभाद्रपदायां-चूल्हीस्थापन जलयंत्रकर्म, मुकदमादायरः, भूमिक्रयः (ति.दा.)।

तिथि १४ शनौ उत्तराभाद्रपदायां-रिक्तादोषः।

तिथि १५ रवौ रेवत्यां-प्रसूतिस्नानं गर्भाधर्याविक्रयः, रक्तवस्त्र प्रवालधारणं, शस्त्रधारणं, आ.लेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, सेवारम्भः।

पं.३० आश्विन [illegible] सूर्योदये [illegible]

राशि फलम्
मेष
वृष
मिथुन
कर्क
सिंह
कन्या
तुला
वृश्चिक
धनु
मकर
कुम्भ
मीन
[illegible]

(क) दुर्गासप्तशतीपाठारम्भः। दौहित्रकर्तृक मातामह (नाना) श्राद्धम्। केशसंस्कार द्रव्याणि प्रदद्यात्प्रतिपदिने।' अथ कलशस्थापने:-'सम्पूर्णाप्रतिपद्येव चित्रा युक्तापदा [illegible] महाराजा अग्रसेन जयन्ती। (ख) [illegible] रवि, सूर्य-सूर्य योगो, जम्बुक वाहनं, वाता नाड़ी [illegible] अनावृष्टि कारकः। (ग) (रा.११३०) उ.। [illegible] घ.३३।४६ (रा.१४६) उ.। (घ) घ.५४।२५ (रा.४।७) [illegible] रवियोग घ.५४।२५ (रा.४।७) या.। पूर्वाषाढ़ायां। (छ) घ.५०।३८ (रा.३।५।२०) या.। पूर्वाषाढ़ायां [illegible] सर्वोषांदिद्ध्योग घ.१३।२० (दि.११।३१) उ.। (ड) घ.४५ महती समर्घतारकम्। पूर्वा फा.१६ [illegible] याम्यागोलः। दीप. तिल, गोरस आदि दानम् गोदावर्याम् स्नानम्। दोष संघ विनाशको रवियोग घ.१८।१ (दि.१।३०) उ.। याचि (दूब) जयद् योग घ.१८।१ (दि.१।३०) या.। (झ) सरस्वतीविसर्जनम्। शमी पूजनम् १०। अपराजिता पूजा १०। नीलकंठ दर्शनम्। राज्ञो पट्टाभिषेकं, आयुध पूजनम्, सीमोल्लंघनम्। विजय यात्रा। बौद्धावतार १०। दुर्गा प्रतिमा विसर्जनम्। दोष संघ विनाशको रवियोग यावद्दिनम्। सौर कार्तिक मासारम्भः। अत्र विशेषः-'हेमाद्रौस्कन्दे:-'स च द्वितीय दिने श्रवण योग भावे पूर्वाग्राह्यः।' (ञ) जयन्ती १५। रात्रौ लक्ष्मीन्द्र कुबेरादि पूजनम्। अहोरात्रि पूर्णतीय प्रज्वलितम् धन-ऐश्वर्यप्राप्ति हेतवे। ०स्वाती नक्षत्रे रविः घ.४४।१० (रा.१२।१५०)। स्त्री-पुरुष-सूर्य-चन्द्र योगो, चातक वाहनं, वाता नाड़ी तदोशो सूर्यः स्वल्पवृष्टि योगः। कार्तिक मासस्य, दीपदानम्, स्नान यम नियम संयम आरम्भः। मु.पर्व हजरत अली जयन्ती। नवपद ओली समापन (जैन)।

दि.मा. घ.	प.	कार्तिक कृष्ण तिथि ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदयिका योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट रा.	अं.
२८	६	१	सो.	४६	४४	रा.	१	५	अश्विनी	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२६	वज्र	१८	३	दि.	१	३६	वा	१९	१२	को	४६	४४	राक्षस	२५	१	७	३				६	२३	५	३७	१२	२	६	६
२८	३	२	मं.	४१	११	रा.	१०	५५	भरणी	१६	८	[illegible]	प्रा.१	३	सिद्धि	१०	५४	दि.	१०	४५	तै.	१४	१	ग.	४१	११	मुसल	२६	२	८	४	वृष	३०	४१	६	२३	५	३७	१२	२०	६	७
२७	५९	३	बु.	३५	२९	रा.	८	३६	कृत्तिका	१२	४५	दि.	११	३०	व्यतिपात	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	व.	८	२४	वि.	३५	२९	सिद्धि	२७	३	९	५				६	२४	५	३६	१२	३९	६	८
२७	५६	४	गु.	२९	२९	रा.	६	१३	रोहिणी	८	३८	दि.	९	५२	परिघ	४७	४६	रा	१	३१	बव	२	२९	वा	[illegible]	[illegible]	उत्पात	२८	४	१०	६	मिथुन	३६	३०	६	२५	५	३५	१२	५८	६	९
२७	५३	५	शु.	२३	३०	दि.	३	४९	मृगशिरा	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	शिव	३९	५१	रा	१०	२५	तै	२३	३०	ग.	५०	३८	मानस	२९	५	११	७				६	२५	५	३५	१३	१७	६	१०
२७	४९	६	श.	१७	४६	दि.	१	३२	पुनर्वसु	५६	३९	रा.	५	६	सिद्ध	३२	२६	रा	७	२४	व	१७	४६	वि.	४५	६	छत्र	३०	६	१२	८	कर्क	४२	२६	६	२६	५	३४	१३	३५	६	११
२७	४६	७	र.	१२	२५	दि.	११	२५	पुष्य	५३	३१	रा.	३	५१	साध्य	२५	१७	दि	४	३४	बव	१२	२५	वा.	३९	३४	श्रीवत्स	३१	७	१३	९				६	२७	५	३३	१३	५४	६	१२
२७	४३	८	सो.	७	४४	दि.	९	३३	श्लेषा	५१	१४	रा.	२	५७	शुभ	१८	४३	दि	१	५६	को	७	४४	तै.	३५	१८	सोम्य	१	८	१४	१०	सिंह	५१	१४	६	२७	५	३३	१४	१३	६	१३
२७	३९	९	मं.	३	५२	दि.	८	१	मघा	४९	४३	रा.	२	२१	शुक्ल	१२	४६	दि	११	३४	ग.	३	५२	व.	३२	२५	का.दं.	२	९	१५	११				६	२८	५	३२	१४	३२	६	१४
२७	३६	१०	बु.	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	पू.फाल्गुनी	४९	१७	रा.	२	१२	ब्रह्म	७	३८	दि	९	३२	वि	०	५८	बव	[illegible]	[illegible]	स्थिर	३	१०	१६	१२				६	२९	५	३१	१४	५०	६	१५
२७	३३	१२	गु.	५८	३०	रा.	५	५३	उ.फाल्गुनी	५०	५	रा.	२	३१	ऐन्द्र	[illegible]	[illegible]	प्रा	[illegible]	[illegible]	को	२८	४९	तै.	५८	३०	मातंग	४	११	१७	१३	कन्या	४	२९	६	२९	५	३१	१५	७	६	१६
२७	३०	१३	शु.	५९	१३	रा.	६	११	हस्त	५२	७	रा.	३	२१	विष्कु.	५७	३८	रा	५	३३	ग	२८	५२	व	५९	१३	अमृत	५	१२	१८	१४				६	३०	५	३०	१५	२४	६	१७
२७	२७	१४	श.	६०	०	स	म	स्त	चित्रा	५५	२६	रा.	४	४१	प्रीति	५६	२०	रा	५	३	वि	२९	४७	श.	६०	०	काण	६	१३	१९	१५	तुला	२३	४७	६	३१	५	२९	१५	४२	६	१८
२७	२४	१४	र.	१	२१	दि.	७	३	स्वाती	५९	५२	रा.	६	२८	आयुष्मान	५५	५२	रा	४	५२	श.	१	२१	च.	३२	५६	लुम्प	७	१४	२०	१६				६	३१	५	२९	१६	८	६	१९
२७	२१	३०	सो.	४	३१	दि.	८	२०	विशाखा	६०	०	स.	म	स्त	सौभाग्य	५६	१५	रा	५	२	ना.	४	३१	कि.	३६	३८	मित्र	८	१५	२१	१७	वृश्चिक	४८	५७	६	३२	५	२८	१६	२६	६	२०

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, कार्तिक कृष्ण पक्षः।

चन्द्रोदय घं.	मि.	
६	४	फसली कार्तिक मासारम्भः। आयुर्वेदानुसारेणऽपि द्विदलं (दाल) तक्रश्च (मट्ठा) कार्तिके त्यजेत्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.२०।८ (दि.२।२६) उ. घ.४६।४४ (रा.१।५) या.। शुभाशुभेत्रयगुण्यकरः। त्रिपुष्कर (क)
६	५२	वृष राशिः३०।४१ (रा.६।३९)। अशून्यशयन २ व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.६।५२) वादे चन्द्राय अर्घ्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.१६।४० (दि.१।३) उ.। शुभाशुभेत्रयगुण्यकरः। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्।
७	४४	भद्रा घ.८।२४ (दि.९।४६) उ. घ.३५।२९ (रा.८।३६) या.। संकष्टी श्रीगणेश करक चतुर्थी (करवा) ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.७।४४) वादे चन्द्राय अर्घ्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्।
८	४०	मिथुन राशिः३६।३० (रा.९।१)।
९	३९	दाष संघ विनाशको रवियोगः घ.५४।५६ (रा.शे.६।८) उ.।
१०	३९	कर्कराशिः४२।२६ (रा.११।२४)। भद्रा घ.१७।४६ (दि.१।३२) उ. घ.४५।६ (रा.१२।२८) या.। दाष संघ विनाशको रवियोग घ.५६।३९ (रा.शे.५।६) या.। शुभाशुभेत्रयगुण्यकरः (ख)
११	४०	भानु सप्तमी पर्वः। सूर्य ग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.५३।३१ (रा .३।५१) या.। (ख) त्रिपुष्कर योगः [illegible] उ.।
१२	३९	सिंह राशिः५१।१४ (रा.२।५७) अहोई ८ व्रतम्। राधाष्टमी ८ व्रतम्। राधा जयन्ती। अरुणोदये मथुरायाम् राधाकुण्डे स्नानम्। (क) [illegible]
१	३७	भद्रा घ.३२।२५ (रा.७।२६) उ.।
२	३२	भद्रा घ.०।५८ (प्रा.६।५२) या.। अनुदया रम्भा एकादशी व्रतम् ११ स्मार्त्तानाम्।
३	२६	कन्याराशिः४।२९ (दि.८।१७)। वैष्णवानमेकादशी। गोवत्स द्वादशी १२। सवत्सायास्त्विनां गा पूजयेत्। सायं गोवत्स [illegible] जयन्ती।
४	१९	भद्रा घ.५९।१३ (रा.शे.६।११) उ.। प्रदोष व्रतम् १३। धन्वन्तरि जयन्ती १३। धनत्रयोदशी (धनतेरस)। कामेश्वरी जयन्ती १३। [illegible] गौतमेश्वर जयन्ती। [illegible] पंचकारम्भः। (ग)
५	११	तुला राशिः२३।४७ (दि.४।२)। भद्रा घ.२१।४७ (रा.६।२६) या.। मास शिवरात्रि व्रतम् १४। नरक चतुर्दशी १४। [illegible] हनुमज्जन्म। [illegible] पूजा। निशीथे महानिशा पूजा। रोग रात्री (घ)
६	३	श्राद्धादौ अमा ३०। दीपावली ३०। प्रातः हनुमद्दर्शनम्। सायं शिवादीनां भवनेषु मंदेषु [illegible] दीपदानम्। [illegible] पूजा। [illegible] सायं [illegible]। तद्त्पूर्व विद्धा प्रतिपदि (ङ)
+	+	वृश्चिक राशिः४८।५७(रा.२।७)। स्नानदानादौ सोमवती अमावस्या३०। अन्नकूट। काशीतोऽन्यत्र गोवर्धन पूजा। [illegible]

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	सो.	०	९	१७	२५	८	१०	३१	२१	४२	५८	७	१	५८	३७	५०	४०	०	६	१३	१७	७	५२	४	१९	५४	३९	६२	३५	०	२०	९	४७	४	३१	३	१४	५०	६
२	मं.	०	२३	१८	४८	८	११	२२	२७	४३	०	७	२	४९	१७	४८	४२	०	६	५	२५	७	५२	४	२०	५७	१४	६२	५२	०	२०	५	१६	४	३२	३	१४	४६	५५
३	बु.	१	७	२५	३०	८	१२	५	२७	४३	६	७	३	३७	५९	४५	२१	०	५	५७	३३	७	५०	४	२२	०	६	६२	५८	०	२०	०	४४	४	३३	३	१४	४३	४४
४	गु.	१	२१	३४	४३	८	१२	४८	३३	४३	१५	७	४	२६	२०	४१	३१	०	५	४९	४३	७	५०	४	२३	३	४	६३	१५	०	१९	५६	११	४	३४	३	१४	४०	३३
५	शु.	२	५	४५	११	८	१३	३१	४८	४३	१८	७	५	४	५१	३८	३०	०	५	४१	५३	७	५०	४	२४	६	११	६३	२२	०	१९	५१	३७	४	३५	३	१४	३७	२२
६	श.	२	२०	३७	२९	८	१४	१५	६	४३	२०	७	५	४३	११	३५	३५	०	५	३४	३	७	४८	४	२५	९	४१	६३	३०	०	१९	४७	२	४	३६	३	१४	३४	११
७	र.	३	४	३५	५५	८	१४	५८	२६	४३	२५	७	६	१८	४६	३०	११	०	५	२६	१५	७	४६	४	२६	१३	११	६३	३९	०	१९	४२	२६	४	३५	३	१४	३१	०
८	सो.	३	१८	२२	३६	८	१५	४१	५१	४३	२८	७	६	४८	५७	१८	३६	०	५	१८	२९	७	४५	४	२७	१६	५०	६३	४५	०	१९	३७	५१	४	३६	३	१४	२७	४९
९	मं.	४	२	५०	४१	८	१६	२५	१९	४३	३०	७	७	७	३३	१५	४३	०	५	१०	४४	७	४२	४	२८	२०	३५	६३	५१	०	१९	३३	१५	४	३७	३	१४	२४	३८
१०	बु.	४	१६	१५	२८	८	१७	८	४९	४३	३३	७	७	२३	१६	११	११	०	५	३	२	७	४०	४	२९	२४	२६	६३	५८	०	१९	२८	३८	४	८	३	१४	२१	२७
१२	गु.	४	२९	२५	५१	८	१७	५२	२२	४३	३५	७	७	३४	३५	६	६	०	४	५५	२२	७	३६	५	०	२८	२४	६४	०	०	१९	२४	०	४	३९	३	१४	१८	१६
१३	शु.	५	१२	२१	१९	८	१८	३५	५७	४३	३७	७	७	४०	४१	व५	०	०	४	४७	४६	७	३२	५	१	३२	२४	६४	०	०	१९	१९	२१	४	४०	३	१४	१५	६
१४	श.	५	२५	१	२०	८	१९	१९	३४	४३	४०	७	७	३५	४१	१२	४१	०	४	४०	१४	७	२५	५	२	३६	२४	६४	५	०	१९	१४	४१	४	४०	३	१४	११	५५
१४	र.	६	७	२८	४३	८	२०	३	१४	४३	४५	७	७	२३	०	३०	३१	०	४	३२	४९	७	१५	५	३	४०	२९	६४	१४	०	१९	१०	१	४	३९	३	१४	८	४४
३०	सो.	६	१९	४५	३४	८	२०	४६	५१	४३	५०	७	६	५२	२१	४२	२५	०	४	२५	३४	७	९	५	४	४४	४३	६४	३०	०	१९	५	२२	४	३८	३	१४	५	३३

फलम्--एकादशी तिथि का क्षय एवं चतुर्दशी की वृद्धि होने से पक्ष १५दिन का है। पक्ष के तीन सोमवार, सोमवती अमावस्या सुभिक्षकारक हैं। चावल-चीनी का भंडार भरेगा। सुभिक्ष एवं सस्ती। चावल-चीनी फल-दूध, सब्जी की उपलब्धता से जनता में प्रसन्नता। चातुर्मास में किया जाने अशून्यशयन का अन्तिम व्रत २६ अक्टूबर मंगलवार को किया जायेगा। चन्द्रोदय समय रात ६।५२ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी जिसको करवा चौथ के नाम से जाना जाता है २७ अक्टूबर बुधवार को है। चन्द्रोदय रात्रे ७।४४ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। भारतीय स्त्रियों के लिये यह व्रत सबसे महत्त्वपूर्ण है एवं इस व्रत को करने से उनके पति सौभाग्य सुख में वृद्धि होती है। करक चतुर्थी के दिन काशी के चेतगंज की विश्व प्रसिद्ध नक्कटैया को रामलीला आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के चमत्कार पूर्ण अद्भुत प्रदर्शन के साथ हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न होगी। अहोई अष्टमी, राधाष्टमी एवं राधा जयन्ती का मान १ नवम्बर सोमवार को है, आज अरुणोदय वेला में मथुरा के राधा कुण्ड में स्नान करने से पुण्यफल की प्राप्ति होने का विधान है। ३ नवम्बर बुधवार को अनुदया रम्भा एकादशी व्रत का मान गृहस्थों के लिये होगा तथा वैष्णवजन ४ नवम्बर गुरुवार को एकादशी का मान करेंगे। गोवत्स द्वादशी भी ४ नवम्बर गुरुवार को होगी आज के दिन बछड़े सहित दुधारु गाय को सजाकर उसकी पूजा की जाती है। प्रदोष व्रत, धन्वन्तरि जयन्ती, धन त्रयोदशी (धनतेरस) कामेश्वरी जयन्ती गौतमेश्वरी जयन्ती, ५ नवम्बर शुक्रवार को होगी। आज के दिन नया बर्तन खरीदने की परम्परा है। लक्ष्मी पूजन -धन-ऐश्वर्य में वृद्धि कारक रहेगा। मास शिवरात्रि व्रत एवं हनुमज्जयन्ती ६ नवम्बर शनिवार को है आज सायंकाल मेष लग्न में हनुमानजी का जन्म हुआ है अतएव प्रत्येक हनुमानजी के मन्दिर में जन्मोत्सव मनाया जायेगा। सूर्योदय से पूर्व हनुमान जी का दर्शन कर लेना अत्यन्त पुण्यफलदायक माना जाता है। दीपावली का प्रसिद्ध एवं अति महत्वपूर्ण पर्व ७ नवम्बर रविवार को प्रदोष एवं निशीथ व्यापिनी अमावस्या में होगा। गणेश -लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेर का पूजन होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में लक्ष्मी गणेश का पूजन कर खाता बदला जायेगा। अर्ध रात्रि में महानिशा एवं काली पूजा की जायेगी। तांत्रिक जगत एवं मन्त्र सिद्धि के लिये यह अमावस्या महत्वपूर्ण सिद्धि प्रदान करने वाली होती है। आज के दीपक से बनाया हुआ काजल शिशुजन विशेष हितकारी एवं रोगक्षयकारी है। शेष रात्रि में सूप बजाकर दरिद्र का निस्सारण एवं लक्ष्मी का पदार्पण सुख सन्तोषकारी रहेगा। स्नानादानादि के लिये सोमवती अमावस्या ८ नवम्बर को होगी। विहित मन्त्र 'अश्वत्थ मूले..... के साथ पीपल वृक्ष की १०८ परिक्रमा पति सौख्य वृद्धिकारी रहेगा। ८ नवम्बर सोमवार को सवेरे ८।२० बजे के बाद अमावस्या समाप्त होकर प्रतिपदा लग जायेगी। अतः अन्नकूट एवं काशी से अन्यत्र गोवर्धन पूजा का मान आज ही हो जायेगा। विशाखा नक्षत्र का सूर्य ७ नवम्बर रविवार के दिन में ७।५३ बजे से आयेगा।

पं.३१ कार्तिक कृष्ण ८ सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २८७९
अयनांशाः २३/५०/२१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	८	७	०	४	०	३	९
१३	१८	१५	६	५	२७	१९	१४	१४
५४	२२	४१	४८	१८	१६	३७	२७	२७
३४	३६	५१	५७	२९	५७	५१	४९	४९
६०	८३०	४३	१८	७	६३	४	३	३
१५	३९	२८	३६	४५ व	४५	३६ व	११	११

बु.८ — ७ सू. — ६ — ५ शु. — ९ मं. — १० के. — चं.रा. ४ — ११ — १ श.गु. — ३ — १२ — २

भौमादीनां चारः-

भौमः-मूल नक्षत्रे धनुराशौ। तिथि ४ गुरौ पूर्वाषाढ़ायाम् घ.४३।३६।

बुधः-वृश्चिक राशौ। तिथि १३ शुक्रतः वक्री।

गुरु-(वक्री) आश्विन्यां मेष राशौ।

शुक्रः-सिंह राशौ तिथि १० बुधतः कन्या राशौ घं.३३।४०।

शनिः-(वक्री) भरण्यां ३ चरणे मेष राशौ, वक्रगत्या तिथि ३ बुधतः भरण्यं २ चरणे घं.८।१२।

राहुः-पुष्य नक्षत्रे ४ चरणे केतुश्च श्रवणे २ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ सो. घं.	मि.	२ मं. घं.	मि.	३ बु. घं.	मि.	४ गु. घं.	मि.	५ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ सो. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	१० बु. घं.	मि.	१२ गु. घं.	मि.	१३ शु. घं.	मि.	१४ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	३० सो. घं.	मि.
तुला	७	४८	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२५	७	२१	७	१७	७	१३	७	९	७	५	७	१	६	५७	६	५३
वृश्चि.	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३	९	४९	९	४५	९	४२	९	३८	९	३४	९	३०	९	२६	९	२२	९	१८	९	१४	९	१०
धनु	१२	१०	१२	६	१२	२	११	५८	११	५४	११	५१	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३२	११	२७	११	२३	११	१९	११	१५
मकर	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०	१	३६	१	३२	१	२८	१	२४	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०
कुम्भ	३	२७	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९	२	३५	२	३१
मीन	४	५५	४	५१	४	४७	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	१९	४	१५	४	११	४	८	४	४	४	०
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मेष	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७	६	१४	६	१०	६	६	६	२	५	५८	५	५४	५	५०	५	४६	५	४२	५	३८
वृष	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५
मिथुन	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४९
कर्क	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६
सिंह	३	१५	३	११	३	७	३	३	२	५९	२	५५	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४	२	२०
कन्या	५	२८	५	२४	५	२०	५	१६	५	१२	५	८	५	४	५	०	४	५६	४	५२	४	४८	४	४५	४	४१	४	३७	४	३३

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ सोमे अश्विन्यां-जातकर्म, विपणि व्यापारः क्रयगवांक्रय विक्रयः, अलंकारनिर्माणं, धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः ,आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणांदर्शनं, ऋणग्रहणं दानं च।

तिथि २ भौमे भरण्यां-इष्टिकादहनं (ति.दा.) उग्रकर्माचरणं (ति.दा.)।

तिथि ३ बुधे कृत्तिकायां-मुहूर्ताभावः, ततश्च रोहिण्यां गर्भाधानं, जातकर्म, विपणिव्यापारः हलप्रवहणं, बीजवपनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं,भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः जलाशयारम्भः शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ४ गुरौ रोहिण्यां मृगभे च- रिक्तादोषः।

तिथि ५ शुक्रे मृगशिरायां आर्द्रायां च-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणि, व्यापारः गवांक्रयविक्रयः, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः आ.पत्रलेखनं ऋणग्रहणं, दानं च, सेवारम्भः।

तिथि ६ शनौ पुनर्वसौ-गवांक्रयविक्रयः, ऋणग्रहणं, उग्रकर्म।

तिथि ७ रवौ पुष्ये-पुंसवनं सीमन्तः, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणि-व्यापारः, गवांक्रयविक्रयः रत्नवस्त्रप्रवालधारणं, जलयंत्रकर्म, शस्त्रधारणं दत्तकपुत्रग्रहणं, आ.पत्रलेखनं, इष्टिकानिर्माणं अधिकारीदर्शनं, नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि ८ सोमे श्लेषायां-जलयंत्रकर्म (ति.दा.)।

तिथि ९ भौमे मघायां-उग्रकर्माचरणं, इष्टिकादहनं, ततश्च

१३ कार्तिक कृ ३० सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः [illegible]
अयनांशाः [illegible]

[illegible]

बु.८ — ७ — शु.६ — ९ मं. — चं.सू. — ५ — रा. ४ — १० के. — ११ — १ श.गु. — ३ — १२ — २

राशि फलम्

मेष	लाभयम् सुखम्
वृष	भयं पाप पीडा
मिथुन	कार्य धननाशः
कर्क	सुखाय लाभः
सिंह	लाभयम् धननाशः
कन्या	कष्टं शत्रुभयं
तुला	सुखं श्रीप्राप्तिः
वृश्चिक	धननाशः नेमांति
धनु	पीड़ा भयम्
मकर	रोग शोके
कुम्भ	लाभ सुखप्राप्तिः
मीन	सुखं शोकञ्च

(ग) [illegible] दीपदानम्। यम तर्पणम्। [illegible]। [illegible] शाकभोजनम्। चन्द्रोदये तिल तैलेन [illegible]। शनि-रिक्ता समायोगेसिद्धयोगः यावद्दिनम्।

श्रीमहावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक।

(घ) दरिद्र निस्सारणम्। तुलासंस्थेसहस्रांशो प्रदोषे भूतदर्शयोः उल्काहस्तानराः कुर्युः पितृणां मार्गदर्शनम्। ⊙विशाखा नक्षत्रे रविः घ.३।२४ (दि.७।५३)। मु.पर्व-शबेमीराज।

(ङ) कार्तिकम् रात्रौ बलिपूजा मार्गपाली बन्धनम्। यष्ट्याकर्षणम्। [illegible] निवृत्तिः। सोमवती अमायां–अश्वत्थमूले प्रणिधाय विष्णुं सम्पूज्य सम्यग्विविधोपचारैः प्रदक्षिणाभीष्ट फलादि द्रव्यैः स्त्रीभिर्विधेया पति सौख्य वृद्धये। इति मंत्रेण १०८ परिक्रमा कार्या। शुभ वारान्वितेदर्शे सुभिक्षं च प्रजा सुखम्।

रिक्तादोषः।

तिथि १०/११ बुधे पूर्वाफाल्गुन्यां-जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर।

तिथि १२ गुरौ उत्तराफाल्गुन्यां-गर्भाधानं, प्रसूतिस्नानं जातकर्म, नामकरणं, विपणि व्यापारः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षलतादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं इष्टिकानिर्माणं, अधिकारीणांदर्शनं नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि १३ शुक्रे हस्तभे-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, विपणि-व्यापारः, गवांक्रयविक्रयः, नववस्त्रधारणं अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, शय्यासनाद्युपभोगः आ.पत्रलेखनं, सेवारम्भः।

तिथि १४ शनौ चित्रायां-रोगविमुक्तस्नानं, ततश्च रिक्तादोषः।

तिथि १४ रवौ स्वात्यां-रिक्तादोषःमासान्तदोषश्च।

तिथि ३० सोमे विशाखायां-मासान्तदोषः।

दि.मा. घ.	प.	कार्तिक शुक्ल तिथि ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.
२७	१७	१	मं.	८	४६	दि.	१०	३	विशाखा	५	१९	दि.	८	४१	शोभन	५७	११	रा	५	२५
२७	१४	२	बु.	१३	४३	दि.	१२	२	अनुराधा	११	२७	दि.	११	८	अ.गं.	५८	३०	रा	५	५७
२७	११	३	गु.	१९	४	दि.	२	१२	ज्येष्ठा	१७	५६	दि.	१	४४	सुकर्मा	५९	५१	रा	६	३०
२७	९	४	शु.	२४	१८	दि	४	१७	मूल	२४	२१	दि.	४	१८	धृति	६०	०	रा	म	स्त
२७	६	५	श.	२९	२	रा	६	१२	पूर्वाषाढ़ा	३०	१८	रा	६	४२	धृति	०	५६	प्रा.	६	५७
२७	३	६	र.	३३	०	रा	७	४७	उत्तराषाढ़ा	३५	२९	रा	८	४७	शूल	१	३२	दि.	७	१२
२७	०	७	सो.	३५	४५	रा	८	५४	श्रवण	३९	३२	रा	१०	२५	गण्ड	१	२३	दि.	७	९
२६	५७	८	मं.	३७	२५	रा	९	३४	धनिष्ठा	४२	२८	रा	११	३५	वृद्धि	० / ५७	११ / ५८	प्रा	६ / ५	४४ / ५५
२६	५५	९	बु.	३७	४३	रा	९	४२	शतभिषा	४४	७	रा	१२	१६	व्याघात	५५	१४	रा	४	४३
२६	५२	१०	गु.	३६	४५	रा	९	२०	पूर्वाभाद्र	४४	३४	रा	१२	२८	हर्षण	५१	११	रा	३	६
२६	५०	११	शु.	३४	३३	रा	८	२७	उत्तराभाद्र	४३	४८	रा	१२	९	वज्र	४६	१५	रा	१	८
२६	४७	१२	श.	३१	१८	रा	७	१०	रेवती	४२	२	रा	११	२८	सिद्धि	४०	३०	रा	१०	५६
२६	४५	१३	र.	२७	१३	सा	५	३२	अश्विनी	३९	२६	रा	१०	२५	व्यतिपात	३४	३	रा	८	१६
२६	४३	१४	सो.	२२	१८	दि	३	३५	भरणी	३६	७	रा	९	७	वरीया	२७	०	सा	५	२८
२६	४०	१५	मं.	१६	५७	दि	१	२७	कृत्तिका	३२	२०	रा	७	३६	परिघ	१९	३०	दि	२	२८

करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औद.	तारीखें अं.	फ.	सो.	रा.	चन्द्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.
बव	८	४६	वा	४१	१४	श्रीवत्स	९	२६	२२	१८			
को	१३	४३	ते	४६	२३	सौम्य	१०	२७	२३	१९			
ग.	१९	४	व	५१	४१	काढ.	११	२८	२४	२०	धनु	१७	५६
वि.	२४	१८	बव	५५	४६	स्थिर	१२	२९	२५	२१			
वा.	२९	२	को	६०	०	मातंग	१३	३०	२६	२२	मकर	४६	३६
को.	१	१	ते	३३	०	अमृत	१४	३१	२७	२३			
ग.	४	२२	व	३५	४५	सिद्धि	१५	१	२८	२४			
वि.	६	३५	बव	३७	२५	उत्पात	१६	२	२९	२५	कुम्भ	११	०
वा.	७	३४	को	३७	४३	मानस	१७	३	१	२६			
ते.	७	१४	व	३६	४५	मुद्गर	१८	४	२	२७	मीन	२९	२७
व	५	३१	वि	३४	३३	ध्वज	१९	५	३	२८			
बव	२	५५	वा	[illegible]	[illegible]	धाता	२०	६	४	२९	मेष	४२	२
ते.	२७	१३	वि	५४	४५	आनन्द	२१	७	५	३०			
व	२२	१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चर	२२	८	६	१	वृष	५०	१०
बव.	१६	५७	वा	४४	३	गद	२३	३०	७	२			

चन्द्र दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रृंगम् सुभिक्षं। काश्यां गोवर्धन पूजा [illegible]तीया २। यमुनास्नानम् [illegible]
मु.सावान ८ हिजरी सन् १४२०। यमपञ्चक निवृत्तिः। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगी घ.११।२७ (दि.११।८) या.
धनु राशिः१७।५६ (दि.१।४४)। भद्रा घ.५१।४१ (रा.३।१४) उ.। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.१७।५[illegible]
भद्रा घ.२४।१८(दि.४।१७)या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। सूर्य षष्ठी व्रतारम्भः। दिन त्रय यावत्। [illegible]
मकर राशिः४६।३६ (रा.१।१३)। ज्ञान पचमी (जैन)। सूर्य षष्ठी व्रतस्य द्वितीयदिनम्। दोष संघ विनाशको रवियोग[illegible]
सूर्य षष्ठी (डाला छठ) व्रतम् ६। सायंकाले सूर्यार्घ्यदानम्। अरुणोदये द्वितीयार्घ्यम्। स्कन्द ६। सर्वार्थसिद्धियोगः [illegible]
भद्रा घ.३५।४५ (रा.८।५४) उ.। पारणा सूर्य षष्ठी व्रतस्य। सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगी घ.३९।३२ (रा.१०।२[illegible]
कुम्भ राशिः११।० (दि.११।०)। पंचक (पचखा) प्रारम्भः। भद्रा घ.६।३५ (दि.९।१४) या.। गोपाष्टमी ८ व्रतम्। [illegible]
अक्षय नवमी ९। संक्रान्ति जन्य पुण्यकाल मध्यान्हयावत्। रत्नगर्भकुष्माण्डादिदानम्, धात्री (आँवला) मूल भोजनम्। [illegible]
मीन राशिः२९।२७ (रा.६।२५)। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.४४।३४ (रा.१२।२८) या.।
भद्रा घ.५।३९ (दि.८।५४) उ.घ.३४।३३ (रा.८।२७) या.। हरिप्रबोधिनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। [illegible]
मेष राशिः४२।२ (रा.११।२८)। पंचक (पचखा) समाप्तिः। चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः। गोवत्स १२। [illegible]
प्रदोष व्रतम् १३। प्रदोषनिशीथोभयव्यापिन्या चतुर्दशी वैकुण्ठ चतुर्दशी १४ व्रतम्। सा विष्णु पूजायां [illegible]
वृष राशिः५०।१० (रा.२।४४)। भद्रा घ.२२।१८ (दि.३।३५) उ. घ.४९।३८ (रा.२।३१) या.। अरुणोदये [illegible]
स्नान-दानादौ कृत्तिका नक्षत्रयुता कार्तिक पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। गुरुनानक जयन्ती। सर्वत्र गंगा स्नानम् [illegible]

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	मं.	७	२	१	५४	८	२१	३०	४१	४३	५८	७	६	१०	४	५४	३३	०	४	१७	२५	७	४	५	५	४९	१३	६४	३६	०	१९	०	४४	४	३७	३	१४	२	२२
२	बु.	७	१४	७	३९	८	२२	१४	४७	४४	३	७	५	१५	३१	५८	४५	०	४	१०	२१	७	०	५	६	५३	४९	६४	४३	०	१८	५६	७	४	३७	३	१३	५९	११
३	गु.	७	२६	१	३५	८	२२	५८	५०	४४	१०	७	४	१६	४६	६१	२९	०	४	३	२१	६	५५	५	७	५८	३२	६४	५०	०	१८	५१	३०	४	३७	३	१३	५६	०
४	शु.	८	८	१२	१०	८	२३	४३	०	४४	१४	७	३	१५	१७	६५	४५	०	३	५६	२६	६	५१	५	९	३	२२	६४	५३	०	१८	४६	५३	४	३६	३	१३	५२	५०
५	श.	८	२०	२१	४४	८	२४	२७	१४	४४	२०	७	२	९	३२	७०	२६	०	३	४९	३५	६	४७	५	१०	८	१५	६४	५५	०	१८	४२	१७	४	३६	३	१३	४९	३९
६	र.	९	२	३१	[illegible]	८	२५	११	३४	४४	२८	७	०	५९	६	७६	४३	०	३	४२	४८	६	४२	५	११	१३	१०	६४	५९	०	१८	३७	४१	४	३६	३	१३	४६	२८
७	सो.	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	२५	[illegible]	२	४४	[illegible]	६	२९	४२	२३	८०	२३	०	३	३६	६	६	३७	५	१२	१८	९	६५	३	०	१८	३३	५	४	३५	३	१३	४३	१७
८	मं.	९	२७	५५	४६	८	२६	४०	३७	४४	४०	६	२८	२२	०	९१	३२	०	३	२९	३४	६	२७	५	१३	२३	१२	६५	१०	०	१८	२८	३०	४	३५	३	१३	४०	६
९	बु.	१०	१०	५५	२६	८	२७	३५	१७	४४	४४	६	२६	५०	२८	९५	१५	०	३	२३	७	६	२०	५	१४	२८	२२	६५	२५	०	१८	२३	५५	४	३४	३	१३	३६	५५
१०	गु.	१०	२४	१०	४७	८	२८	२०	[illegible]	४४	४८	६	२५	१५	१३	९०	२४	०	३	१६	४७	६	१४	५	१५	३३	४७	६५	३६	०	१८	१९	२१	४	३४	३	१३	३३	४४
११	शु.	११	७	३९	५२	८	२९	४	४९	४४	५२	६	२४	४४	४९	८३	३३	०	३	१०	३३	६	१०	५	१६	३९	२३	६५	४०	०	१८	१४	४७	४	३३	३	१३	३०	३३
१२	श.	११	२१	२०	१८	८	२९	४९	४१	४४	५५	६	२३	२१	१६	६०	४२	०	३	४	२३	५	५७	५	१७	४५	३	६५	४४	०	१८	१०	१४	४	३२	३	१३	२७	२२
१३	र.	०	५	११	३१	९	०	३४	३६	४४	५८	६	२२	२०	३४	३०	२८	०	२	५८	२६	५	३३	५	१८	५०	४७	६५	५०	०	१८	५	४२	४	३१	३	१३	२४	११
१४	सो.	०	१९	११	२०	९	१	१९	३४	४५	०	६	२१	५०	६	१९	१९	०	२	५२	५३	५	२५	५	१९	५६	३७	६५	५६	०	१८	१	११	४	३०	३	१३	२१	०
१५	मं.	१	३	१६	५९	९	२	४	३४	४५	९	६	२१	३०	४७	१५	०	०	२	४७	२८	५	२०	५	२१	२	३३	६६	०	०	१७	५६	४१	४	२८	३	१३	१७	४९

फलम्– यह पक्ष पूर १५ दिन का है। मंगलवार का चन्द्र दर्शन मु.३० बाजार भाव का स्थिर रखेगा। **काशी में गोवर्धन पूजा एवं भइया दूज,** चित्र गुप्त पूजा, यम द्वितीया, का मान ९ नवम्बर मंगलवार को होगा। विहार प्रान्त का सबसे महत्वपूर्ण पर्व **सूर्य षष्ठी (डाला छठ)** व्रत का आरम्भ १२ नवम्बर शुक्रवार से प्रारम्भ होकर तीन दिन तक चलेगा। १४ नवम्बर रविवार को सायंकाल सूर्यास्त समय स्पर्श भगवान को अर्घ्य दिया जायेगा। पुनः आज ही भोर में अरुणोदय समय द्वितीय अर्घ्य दिया जायेगा। तत् पश्चात् व्रत का पारण किया जायेगा। १६ नवम्बर मंगलवार को **गोपाष्टमी** है इसमें गायों को अलंकृत कर उनका पूजन किया जाता है। **अयोध्या-मथुरा की परिक्रमा १६** नवम्बर को अष्टमी तिथि की समाप्ति रात ९।३४ बजे से प्रारम्भ होकर नवमी तिथि १७ नवम्बर बुधवार को रात ९।४२ बजे तक चलेगी। **अक्षय नवमी** का पावन पर्व १७ नवम्बर बुधवार को मनाया जायेगा। आज आँवला वृक्ष के नीचे स्वादिष्ट पक्वात्र बनाकर ब्राह्मणों को भोजन कराने तथा परिजनों सहित स्वयं भोजन करने एवं सदक्षिणा रत्नगर्भ कुष्माण्ड का दान करने का विधान हैं। १९ नवम्बर शुक्रवार को **हरि प्रबोधिनी एकादशी** है इसी को दिठवन एकादशी भी कहते हैं। भद्रा पूर्व दिन ८।५४ बजे के पूर्व गन्ने का पूजन कर गन्ना चूसा जायेगा। आज रात में भगवान विष्णु का पूजन कर उनको जगाया जायेगा। २० नवम्बर शनिवार से चातुर्मास समाप्त हो जायेगा और आज ही रेवती नक्षत्र में तुलसी-शालिग्राम का विवाहोत्सव मनाये जाने का योग है। **प्रदोष का व्रत २१** नवम्बर रविवार को किया जायेगा एवं आज ही रात में चतुर्दशी मिलने से वैकुण्ठ चतुर्दशी का मान भी हो जायेगा। **व्रत के लिये पूर्णिमा** २२ नवम्बर सोमवार को होगी तथा **स्नान-दान सहित कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयन्ती २३** नवम्बर मंगलवार को है। हरिद्वार से गंगा सागर तक सर्वत्र गंगा नदी में स्नान कर दान दिया जायेगा। विश्व प्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र सोनपर का मेला धूम-धाम एवं अपनी विशालता-भव्यता के साथ सम्पन्न होगा। जैन जगत में स्वामी महावीर स्वामी का संदेश**

पं.३३ कार्तिक शुक्ल ८ भौमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २४९४
अयनांशाः २३/५०/२३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	८	६	०	५	०	३	९
२९	२७	२६	२८	३	१३	१८	१३	१३
१	५५	५०	२२	२९	२३	२८	४०	४०
३७	४६	३७	०	३४	१२	३०	६	६
६०	७६२	४४	९१	६	६५	४	३	३
४२	४२	४०	३२ व	२७ व	१०	३५ व	११	११

कुण्डली: ८ | ७ सू.बु. | शु.६ | ५ | ९ मं. | १० के.चं. | रा.४ | ११ | १ श.गु. | ३ | १२ | २

भौमादीनां चारः-
भौमः-पू.षा.धनु राशौ तिथि ७ सोमतः उ.षा.घं.४५।४५, तिथि १२ रासितः मकर राशौ घं.१३।३६।
बुधः-(वक्री) वृश्चिक राशौ। वक्रगत्या।
गुरुः-(वक्री) आश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-कन्या राशौ।
शनिः-(वक्री) भरण्यां २ चरणे मेष राशौ।
राहुः-पुष्य नक्षत्रे ४ चरणे केतुश्च श्रवणे २ चरणे। तिथि १४ सोमतः राहुः पुष्ये ३ चरणे केतुश्च श्रवणे १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ सो. घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.
तुला	६	४८	६	४४	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२३	६	१९
वृश्चि.	९	६	९	२	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	८	४२	८	३९
धनु	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४
मकर	१२	५७	१२	५३	१२	[illegible]	१२	४५	१२	४१	१२	३७	१२	३३	१२	२९
कुम्भ	२	२८	२	२४	२	[illegible]	२	१६	२	१२	२	८	२	४	२	०
मीन	३	५६	३	५२	३	[illegible]	३	४४	३	४०	३	३६	३	३२	३	२८
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मेष	५	३४	५	३०	५	[illegible]	५	२२	५	१८	५	१५	५	११	५	७
वृष	७	३१	७	२७	७	[illegible]	७	१९	७	१५	७	११	७	७	७	३
मिथुन	९	४५	९	४१	९	[illegible]	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१	९	१७
कर्क	१२	२	११	५८	११	[illegible]	११	५०	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५
सिंह	२	१६	२	१२	२	[illegible]	२	४	२	०	१	५६	१	५३	१	४९
कन्या	४	२९	४	२५	४	[illegible]	४	१७	४	१३	४	९	४	५	४	१

ल.अं.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ सो. घं.	मि.	१५ मं. घं.	मि.
वृश्चि.	८	३५	८	३१	८	२७	८	२३	८	१९	८	[illegible]	८	[illegible]
धनु	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	[illegible]	१०	[illegible]	१०	[illegible]
मकर	१२	२५	१२	२१	१२	१७	१२	१३	१२	९	१२	[illegible]	१२	[illegible]
कुम्भ	१	५६	१	५२	१	४८	१	४४	१	[illegible]	१	[illegible]	१	[illegible]
मीन	३	२४	३	२०	३	१६	३	[illegible]	३	[illegible]	३	[illegible]	३	[illegible]
मेष	५	३	४	५९	४	५५	४	[illegible]	४	[illegible]	४	[illegible]	४	[illegible]
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृष	७	०	६	५६	६	५२	६	[illegible]	६	[illegible]	६	[illegible]	६	[illegible]
मिथुन	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५७	८	[illegible]	८	[illegible]
कर्क	११	३१	११	२७	११	२३	११	[illegible]	११	[illegible]	११	[illegible]	११	[illegible]
सिंह	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	[illegible]	१	[illegible]	१	[illegible]
कन्या	३	५७	३	५३	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४
तुला	६	१५	६	११	६	७	६	३	५	५९	५	५५	५	५१

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ भौमे विशाखायां-ततश्चानुराधायां-प्रसूतिस्नानंरक्त-वस्त्रप्रवालधारणं।

तिथि २ बुधे अनुराधायां-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, विपणिव्यापार, नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं, बीजवपन, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भ, शय्यासनाद्युपभोग, अधिकारीदर्शनं, जलाशयारम्भ, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ३ गुरौ ज्येष्ठायां-नामकरण, गवांक्रयविक्रयं, शस्त्रधारणं मुकदमादायरः। तिथि ४ शुक्रे मूलम्-रिक्तादोषः। तिथि ५ शनौ पूर्वाषाढायां-मुहूर्ताभावः। तिथि ६ रवौ उत्तराषाढायां-पुंसवनं (ति.दा.) सीमन्तः, प्रसूतिस्नानं, रक्तवस्त्रप्रवाल धारणं, शस्त्रधारणं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीदर्शनं।

तिथि ७ सोमे श्रवणे-गर्भाधानं, अन्नप्राशनं, क्रयः अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं धान्यच्छेदनं, शय्यासनाद्युपभोग आ.पत्रलेखनं, ऋण ग्रहणं, दानं च, जंगमगृहप्रवेशः।

तिथि ८ भौमे धनिष्ठायां-प्रसूतिस्नानं।

तिथि ९ बुधे शतभिषायां-रागविमुक्तस्नानं ततो रिक्तादोषः।

तिथि १० गुरौ पूर्वाभाद्रपदायां-पुंसवनं सीमन्तः प्रसूति स्नानं, वर-वरणं, कन्यावरणं, धान्यच्छेदनं, चूल्होस्थापनं, जलयंत्रारम्भः, मुकदमादायरः, भूमिक्रयः।

तिथि ११ शुक्रे उत्तराभाद्रपदायां-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, भद्रायां वा भद्रांते वर-वरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेश द्विरागमनं, ल.८ व ३ विपणि व्यापारः नववस्त्र धारणं, अलंकारनिर्माणं धारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, चूल्होस्थापनं, वृक्षादिरोपणं भृत्यकर्मारम्भ, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोग, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीदर्शनं, जलाशयारम्भः।

तिथि १२ शनौ रेवत्यां-वधूप्रवेशः (ल.१) विपणि व्यापारः क्रयः गवांक्रयविक्रयः, इष्टिकानिर्माणं, गृहारम्भः जीर्ण नूतन गृहप्रवेशः (ल.११)। तिथि १३ रवौ अश्विन्यां-प्रसूति स्नानं, विपणि व्यापार [illegible] धारणं [illegible]।

तिथि १४ सोमे भरण्यां-रिक्तादोषः। तिथि १५ भौमे कृत्तिकायां-रक्तवस्त्रप्रवाल धारणं इष्टिकादहनं (ति.दा.)।

विवाह मुहूर्त विमर्शः

तिथि ११ शुक्रे उत्तराभाद्रपदायां [illegible] लग्ने [illegible] प्र.व.वि.१३ वा लग्ने [illegible] लग्ने [illegible] प्र.व.वि.[illegible] वा लग्ने [illegible]।

तिथि १२ शनौ-रेवत्यां [illegible] लग्ने ११ [illegible] प्र.व.वि.[illegible] वा लग्ने १२ [illegible] वा लग्ने [illegible] प्र.व.वि.१३)।

तिथि १५ भौमे रोहिण्यां [illegible] लग्ने ३ [illegible] प्र.व.वि.[illegible] वा (उ.वि.) लग्ने ५ [illegible] प्र.व.वि.१० [illegible] प्र.व.वि.१० वा लग्ने [illegible]।

(क) [illegible] २। चित्र गुप्त पूजा २। लेखन्यादि पूजा। [illegible] गृह भोजनम् तस्य द्रव्य वस्त्रादिभिस्सम्मानम् स्नेह [illegible] सायं मंगलमालिका। साध्यां [illegible] (ख) दोष संघ विनाशको [illegible] (ग) [illegible] (घ) [illegible] (ङ) मथुरा परिक्रमा [illegible] (च) [illegible] (छ) [illegible] (ज) विष्णुपूजनम् [illegible] (झ) [illegible] (ञ) स्नानम् [illegible] कार्तिक्य [illegible] पूर्णिमा [illegible] महावीर (जैन) [illegible] [illegible]

राशि फलम्

मेष	[illegible]
वृष	[illegible]
मिथुन	[illegible]
कर्क	[illegible]
सिंह	[illegible]
कन्या	[illegible]
तुला	[illegible]
वृश्चिक	[illegible]
धनु	[illegible]
मकर	[illegible]
कुम्भ	[illegible]
मीन	[illegible] अतिभय

**मुहूर्त होगा। वृश्चिक राशि की सूर्य संक्रान्ति १६ नवम्बर मंगलवार को रात को ५।४२ बजे से आयेगी। इसका पुण्यकाल अगले दिन १७ नवम्बर बुधवार को माना जायेगा। अनुराधा नक्षत्र का सूर्य २० नवम्बर शनिवार को दिन १२।४३ बजे में आयेगा। खाद्यान्नों, चावल, रसायन, रस पदार्थों का संग्रह आगे तीन माह में लाभकारी रहेगा। एक के तीन मंगलवार एवं मंगलवार की संक्रान्ति भारी पड़ेगी। राजनीतिक सामाजिक सामंजस्य बिगड़ सकता है। अस्थिरता। अनिश्चय।

दिनांक २४ नवम्बर - ७ दिसम्बर १९९९ ई. (राष्ट्रीय मार्गशीर्ष ३ - १६)
याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः।

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	मार्गशीर्ष कृ. तिथि ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औद. योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट रा.	अं.	क.	रे.अं.	चन्द्रोदय घं.	मि.
२६	३७	१	बु.	११	१०	दि.	११	९	रोहिणी	२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शिव	११	४६	दि.	११	२३	को.	११	[illegible]	ते.	[illegible]	१२	शुभ	२४	१	८	३	मिथुन	५६	६	६	४१	५	१९	२०	२४	७	७	[illegible]	-१५	६	२४
२६	३५	२	गु.	५/५४	१४/५	प्रा	८/६	४०/२०	मृगशिरा	२३	[illegible]	नगर	[illegible]	६	सिद्ध	३/५३	५०/१०	प्रा.	६/६	११/५	ग.	५	१४	व	१२/५९	१६/१९	मृत्यु	२५	२	९	४				६	४१	५	१९	२०	३५	७	८	[illegible]	-१५	७	२४
२६	३३	४	शु.	५३	४१	रा.	४	९	आर्द्रा	१९	५२	दि.	२	३८	शुभ	४८	२०	रा.	२	१	बव	२६	३०	वा	५३	४१	पद्म	२६	३	१०	५				६	४१	५	१९	२०	४६	७	९	[illegible]	-१५	८	२६
२६	३१	५	श.	४८	२७	रा.	२	५	पुनर्वसु	१६	५	दि.	१	८	शुक्ल	४०	५९	रा.	११	६	को	२१	४	ते.	४८	२७	छत्र	२७	४	११	६	कर्क	२	३	६	४२	५	१८	२०	५९	७	१०	[illegible]	-१५	९	२९
२६	२९	६	र.	४३	५२	रा.	१२	१५	पुष्य	१२	५०	दि.	११	५०	ब्रह्म	३४	१०	रा.	८	२२	ग.	१५	४०	व	४३	५२	श्रीवत्स	२८	५	१२	७				६	४२	५	१८	२१	१०	७	११	[illegible]	-१४	१०	३१
२६	२७	७	सो.	४०	७	रा.	१०	४५	श्लेषा	१०	१५	दि.	१०	४८	ऐन्द्र	२७	५७	प्रा	५	५३	वि	११	५९	बव	४०	७	सौम्य	२९	६	१३	८	सिंह	१०	१५	६	४२	५	१८	२१	२१	७	१२	[illegible]	-१४	११	३२
२६	२५	८	मं.	३७	१९	रा.	९	३९	मघा	८	३४	दि.	१०	९	वैधृति	२२	२६	दि.	३	४१	वा	८	४३	को	३७	१९	कालदण्ड	३०	७	१४	९				६	४३	५	१७	२१	३२	७	१३	[illegible]	-१४	१२	२८
२६	२३	९	बु.	३५	३१	रा.	८	५९	पूर्वाफा.	७	५१	दि.	९	५२	विष्कुंभ	१७	४६	दि.	१	४९	ते.	६	२९	ग	३५	३१	स्थिर	१	८	१५	१०	कन्या	२२	५९	६	४३	५	१७	२१	४३	७	१४	[illegible]	-१४	१	२२
२६	२१	१०	गु.	३५	२०	रा.	८	५२	उत्तराफा.	८	२३	दि.	१०	५	प्रीति	१४	६	दि.	१२	२२	व	५	२९	वि	३५	२०	मातंग	२	९	१६	११				६	४४	५	१६	२१	५५	७	१५	[illegible]	-१३	२	१५
२६	२०	११	शु.	३६	१	रा.	९	८	हस्त	१०	७	दि.	१०	४७	आयुष्मान	११	२४	दि.	११	१८	बव	५	४०	वा	३६	१	अमृत	३	१०	१७	१२	तुला	४१	३८	६	४४	५	१६	२२	३	७	१६	[illegible]	-१३	३	७
२६	१८	१२	श.	३८	१४	रा.	१०	२	चित्रा	१३	९	दि.	१२	०	सौभाग्य	९	४५	दि.	१०	३८	को	७	७	ते.	३८	१४	काण	४	११	१८	१३				६	४४	५	१६	२२	१०	७	१७	[illegible]	-१२	३	५९
२६	१७	१३	र.	४१	३४	रा.	११	२३	स्वाती	१७	१९	दि.	१	४१	शोभन	८	५५	दि.	१०	११	ग.	९	५४	व	४१	३४	लुम्बक	५	१२	१९	१४				६	४५	५	१५	२२	१६	७	१८	[illegible]	-१२	४	५२
२६	१५	१४	सो.	४५	५८	रा.	१	८	विशाखा	२२	३१	दि.	३	४५	अतिगण्ड	९	२	दि.	१०	२२	वि	१३	४६	श.	४५	५८	मित्र	६	१३	२०	१५	वृश्चिक	६	१३	६	४५	५	१५	२२	२४	७	१९	[illegible]	-११	५	४२
२६	१४	३०	मं.	५१	३	रा.	३	१०	अनुराधा	२८	५०	रा.	६	९	सुकर्मा	९	४८	दि.	१०	४०	च.	१८	३०	ना	५१	३	वज्र	७	१४	२१	१६				६	४५	५	१५	२२	३०	७	२०	[illegible]	-११	६	३४

मिथुन राशिः५६।६ (रा.५।७)। पारणा कार्तिक व्रतस्य। फसली मार्गशीर्ष मासारम्भः। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.२८।१४ (सा.५।५९) या.।(क)
भद्रा घ.३२।१६ (रा.७।३५) उ. घ.५९।१९ (रा.शे.६।२५) या.। **(क) मु.पर्व–शबे बारात।** (ख) घ.४९।२० (रा.२।२५) उ.।
सकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदये (रा.८।२६) चादने चन्द्राय अर्घ्यम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.१९।५२ (दि.२।३८) उ.। मृत्युबाणः (ख)
कर्क राशिः२।२ (प्रा.७।३१)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.१६।५ (दि.१।८) या.। मृत्युबाणः घ.४८।२१ (रा.२।२) या.।
भद्रा घ.४३।५२ (रा.१२।१५) उ.। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.१२।५० (दि.११।५०) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.४३।५२ (रा.१२।१५) उ.।
भद्रा घ.११।५९ (दि.११।३०) या.। दोष संघ विनाशको रवियोग घ.१०।१५ (दि.१०।४८) या.। यायि(ग)
सिंह राशिः१०।१५ (दि.१०।४८)। भद्रा घ.११।५९ (दि.११।३०) या.। [illegible]
श्रीकाल भैरवाष्टमी ८ व्रतम्। सायं भैरवोत्पत्तिः यात्रा दर्शनम् पूजनञ्च। काश्यां काल भैरवमन्दिरे श्रृंगार पूजनोत्सवश्च। अष्टका श्राद्धम्।(घ)
कन्या राशिः२२।५९ (दि.३।५५)। **(ग)** (मुद्दई) जयद् योगः घ.२०।१५ (दि.१०।४८) या.।
भद्रा घ.५।२९ (दि.८।५६) उ. घ.३५।२० (रा.८।५२) या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.३५।२० (रा.८।५२) उ.।
तुला राशिः४१।३८ (रा.११।२३)। **उत्पन्ना एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।** अभीष्ट फल प्राप्तिस्तवः। ⊙ज्येष्ठा नक्षत्रे रविः घ.२२।३६ (दि.३।४६)
सर्वार्थसिद्धियोगःघ.१३।९ (दि.१२।०) उ.। शुभाशुभद्वयगुणकर द्विपुष्कर योगःघ.१३।९ (दि.१२।०) या.। यायि(मुद्दई) जयद् योगःघ.३८।१४ (रा.१०।२) उ.
भद्रा घ.४१।३४ (रा.११।२३) उ.। **प्रदोष व्रतम् १३।** मृत्युबाण- घ.४०।१० (रा.१०।४९) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.१७।१९ (दि.१।४१) या.।
वृश्चिक राशिः६।१३ (दि.९।१४)। भद्रा घ.२३।४६ (दि.१२।१५) या.। **मासशिवरात्रि व्रतम् १४।** मृत्युबाणः घ.३८।१८ (रा.१०।१०) या.।
स्नानदान श्राद्धादौ **भौमवती अमावस्या ३० पुण्यतमा।** अमायाञ्च यदावारो भवद् भूमिसुतस्य वै गंगायाम् यदि लभ्येत् कोटि सूर्य ग्रहैः(च)

विवाह मुहूर्त विमर्शः

ति.७ सोमे मघायां भौम केतु वेधः आ. लग्न गोधूलिः वा लग्नं ३ रेखा ९ इष्टा ७ प्र.व.वि.१८ [illegible] लग्न ५ इष्टा ५ प्र.व.वि.१० वा लग्नं ६ पञ्चेष्टाभावः वा लग्नं ७ पञ्चेष्टाभावः।
ति.८ भौमे मघायां भौम-केतुवेधः आ. दिवा लग्न ८ रेखा ९ इष्टा ५ प्र.व.वि.९।
ति.९ बुधे [illegible] दिवा लग्न ९ पञ्चेष्टाभावः वा लग्न ११ रेखा ९ इष्टा ५ प्र.व.वि.१० (चं.दा.)वा लग्न गोधूलि वा रात्रौ लग्नं३ इष्टा६ प्र.व.वि.१६ वा लग्न ८ इष्टा ६ प्र.व.वि.१५ वा लग्नं ६ इष्टा ५ प्र.व.वि.१० वा लग्नं ८ इष्टा५ प्र.व.वि.२२।
ति.१० गुरौ हस्ते भद्रापरं रात्रौ लग्नं ५ रेखा ८ इष्टा ६ प्र.व.वि.१५ वा लग्नं ६ इष्टा५ प्र.व.वि.१०। वा लग्न ८ इष्टा ५ प्र.म.वि.२२।
ति.११ शुक्रे हस्ते दिवा लग्न ९ रेखा ८ इष्टा ४ प्र.व.वि.८ (क.दा.)।
ति.१२ शनौ स्वात्यां रेखा ८ लग्न गोधूलिः वा रात्रौ लग्नं ३ इष्टा ६ [illegible] लग्न ५ इष्टा ६ प्र.व.वि.१५ वा लग्नं ६ इष्टा ६ प्र.व.वि.१५।
ति.१३ [illegible] सल्लग्नाभावः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	बु.	१	१७	२५	५०	९	२	४९	४३	४५	२५	६	२१	१५	४७	९	६	०	२	४२	८	५	१३	५	२२	८	३३	६६	९	०	१७	५३	१३	४	२१	३	१३	१४	३९
२	गु.	२	१	३६	३८	९	३	३५	८	४५	३०	६	२१	६	४१	४	३१	०	२	३६	५५	५	१०	५	२३	१४	४२	६६	१५	०	१७	४८	५२	४	१५	३	१३	११	२८
४	शु.	२	१५	४५	२०	९	४	२०	३८	४५	३३	६	२१	२	१०	मा४	२	०	२	३१	४५	५	५	५	२४	२०	५७	६६	२४	०	१७	४४	३७	४	१०	३	१३	८	१७
५	श.	२	२९	५०	२७	९	५	६	११	४५	३६	६	२१	६	१२	१०	१२	०	२	२६	४०	५	०	५	२५	२७	२१	६६	३०	०	१७	४०	२७	४	५	३	१३	५	६
६	र.	३	१३	४९	३८	९	५	५१	४७	४५	३९	६	२१	१६	२४	१९	३८	०	२	२१	४०	४	४९	५	२६	३३	५१	६६	३८	०	१७	३६	२२	४	०	३	१३	१	५५
७	सो.	३	२७	४०	५२	९	६	३७	२६	४५	४०	६	२१	३६	२	२८	४१	०	२	१६	५१	४	४५	५	२७	४०	२९	६६	४५	०	१७	३२	२२	३	५६	३	१२	५८	४४
८	मं.	४	११	२०	४९	९	७	२३	६	४५	४४	६	२२	४	४३	४५	१७	०	२	१२	६	४	३१	५	२८	४७	१४	६६	५१	०	१७	२८	२६	३	५३	३	१२	५५	३३
९	बु.	४	२४	४९	१०	९	८	८	५०	४५	४६	६	२२	५०	०	५१	३४	०	२	७	२०	४	३२	५	२९	५३	५	६६	५३	०	१७	२४	३३	३	५०	३	१२	५२	२२
१०	गु.	५	८	३	२१	९	८	५४	३६	४५	५०	६	२३	४१	३४	६५	४०	०	२	२	५५	४	२५	५	०	५९	५८	६७	०	०	१७	२०	४३	३	४६	३	१२	४९	११
११	शु.	५	२१	२	४२	९	९	४०	२६	४५	५३	६	२४	४७	१४	६८	२४	०	१	५८	३०	४	१८	५	२	६	५८	६७	८	०	१७	१६	५७	३	४२	३	१२	४६	०
१२	श.	६	३	४६	१८	९	१०	२६	१९	४५	५६	६	२५	५५	३८	७०	५१	०	१	५४	१२	४	१०	६	३	१४	६	६७	१६	०	१७	१३	१५	३	३७	३	१२	४२	४९
१३	र.	६	१५	५६	५	९	११	१२	१५	४६	१०	६	२७	६	२९	७२	२२	०	१	५०	२	४	०	६	४	२१	२२	६७	२६	०	१७	९	३८	३	३३	३	१२	३९	३८
१४	सो.	६	२८	१४	५९	९	११	५८	२५	४६	३०	६	२८	१८	५१	७५	३५	०	१	४६	२	३	३०	६	५	२८	४८	६७	४१	०	१७	६	५	३	२९	३	१२	३६	२७
३०	मं.	७	१०	२२	४५	९	१२	४४	५५	४६	५३	६	२९	३४	२६	७८	४१	०	१	४२	३२	३	६	६	६	३६	२९	६८	४	०	१७	२	३६	३	२५	३	१२	३३	१७

पं.३५ मार्गशीर्ष कृष्ण ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २५१८ अयनांशाः २३/५०/२५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	९	६	०	५	०	३	९
१३	११	७	२२	२	२८	१७	१२	१२
१३	२०	२३	४	१२	४७	२८	५५	५५
५१	४१	६	४३	६	१४	२६	३३	३३
६१	७७०	४५	४५	४	६६	३	३	३
२	१५	४४	१७ मा	३९ व	५१	४३	११	११

१० मं. के. — ९ — ८ सू. — बु. ७ — शु. ६ — ११ — चं. ५ — १२ — २ — १ श. गु. — ३ — ४ रा.

भौमादीनां चारः–
भौमः-उ.षा.मकर राशौ, तिथि ११ शुक्रवार श्रवण नक्षत्रे घं.२१।३६। बुधः-वक्री तुला राशौ तिथि ४ शुक्रे। मार्गी। तिथि ५ शनौ मार्गी। वृश्चिक राशौ घं.११।३०। गुरुः-(वक्री) अश्विन्यां मेष राशौ। शुक्रः-कन्या राशौ तिथि ९ बुधवार तुला राशौ घं.६।१०। शनिः-(वक्री) भरण्यां २ चरणे मेष राशौ। राहुः-पुष्य नक्षत्रे ३ चरणे केतुः श्रवणे १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ सो. घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ सो. घं.	मि.	३० मं. घं.	मि.
वृश्चि.	८	७	८	३	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४४	७	४०	७	३६	७	३२	७	२८	७	२४	७	२०	७	१६
धनु	१०	१२	१०	८	१०	४	१०	०	९	५६	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	९	३३	९	२९	९	२५	९	२१
मकर	११	५८	११	५४	११	५०	११	४६	११	४२	११	३८	११	३४	११	३०	११	२६	११	२२	११	१८	११	१४	११	१०	११	७
कुम्भ	१	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	१	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४६	१२	४२	१२	३८
मीन	२	५७	२	५३	२	४९	२	४५	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१	२	१७	२	१३	२	१०	२	६
[illegible]	४	३५	४	३१	४	२७	४	२३	४	२०	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६	३	५२	३	४८	३	४४
	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
[illegible]	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	५	६	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४१
[illegible]	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	८	६	८	२	७	५८	७	५४
[illegible]	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२०	१०	१६	१०	१२
[illegible]	१	१७	१	१३	१	९	१	५	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६
[illegible]	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४	३	१०	३	६	३	२	२	५८	२	५४	२	५१	२	४७	२	४३	२	३९
[illegible]	५	४६	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२३	५	१९	५	१५	५	११	५	७	५	३	४	५९	४	५५

२३६ मार्गशीर्ष कृ ३० भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः [illegible] अयनांशाः २३/५०/२६

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	७	९	६	०	६	०	३	९
[illegible]	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	[illegible]
[illegible]	२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३३	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१० मं. के. — ९ — ८ चं. बु. — बु. ७ सू. — ६ — ११ — ५ — १२ — २ — ४ रा. — १ श. गु. — ३

राशि फलम्

मेष	रोगभयम्
वृष	धननम् हानिः
मिथुन	रिपुनाश सुखं
कर्क	धनम् हानिः
सिंह	रोग अपमानं
कन्या	सुखम् श्री प्राप्तिः
तुला	हानिः, भयम्
वृश्चिक	स्थान हानिः
धनु	शत्रुनाशः पीड़ा
मकर	[illegible] सुखं
कुम्भ	सौख्यं कर्मसिद्धिः
मीन	कार्यक्षयः कुचेष्टा

पंचक विचार (मतान्तर से)

शुक्ल प्रतिपदा से तिथि से गततिथि और इष्टलग्न, इनकी संख्या को जोड़ कर ९ का भाग दें। शेष बचने से मृत्युपंचक, २ से अग्निपंचक, ४ से राजपंचक, ६ से चोर पंचक, ८ से रोग पंचक जानें। मृत्यु पंचक विवाह में, अग्नि पंचक गृह-प्रवेश में, राजकीय कार्य में चोर पंचक यात्रा में, रोग पंचक व्रत बन्ध में विचारणीय होता है। बलवान लग्न हो, गुरु या शुभ ग्रह केन्द्र, त्रिकोट में हो तो पंचक का कोई दोष नहीं होता।

फलम्–अगहन का महीना सभी महीनों का राजा कहा जाता है क्योंकि विवाह वधू-प्रवेश-द्विरागमन सहित प्रायः मांगलिक कार्यों के लिये मुहूर्त उपलब्ध रहते हैं एवं मौसम भी अनुकूल रहता है। यह पक्ष १४ दिन का ही है क्योंकि गुरुवार को तृतीया तिथि का क्षय है। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान २६ नवम्बर शुक्रवार को है चन्द्रोदय रात ८।२६ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। ३० नवम्बर मंगलवार को **श्रीकाल भैरवाष्टमी** आज सायंकाल भैरवजी की उत्पत्ति मानी गई है अतः जयन्ती समारोह मनाया जाता है। काशी के **काल** भैरव के प्रसिद्ध एवं सिद्ध मन्दिर में विशेष रुप से पूजन-श्रृंगार किया जायेगा। **उत्पन्ना एकादशी व्रत** का मान सबके लिये ३ दिसम्बर **शुक्रवार को है। इस** एकादशी का व्रत रखने से व्रती की मनोकामना पूर्ण होती है एवं अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। **प्रदोष व्रत** ५ दिसम्बर रविवार को होगा। ६ दिसम्बर सोमवार को मास शिवरात्रि का व्रत किया जायेगा। स्नान दान श्राद्ध सहित **भौमवती अमावस्या** ७ दिसम्बर मंगलवार को है। भौमवती अमावस्या के दिन गंगा स्नान का फल अत्यन्त पुण्यफलदायक माना गया है। ज्येष्ठा नक्षत्र का सूर्य ३ दिसम्बर शुक्रवार को दिन ३।४६ बजे से आवेगा। चाँदी, खाद्यान्न, सरसों, वस्त्र, ऊनी, वस्त्र, मालवे का अफीम एवं अन्य मादक द्रव्यों में तेजी का दौरा आयेगा। मंगलवार की अमावस्या राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण। शेयर बाजार में मन्दी का रुख चलने लगेगा। श्रवण नक्षत्र का मंगल व्यापार जगत के लिये शुभफलकारक है।

(घ) स्थायी (मुद्दालेह) जयद् योगः घ.३७।१९ (रा.९।३९) या.।
(च) समा।' 'पापवारान्वितेदर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्।'

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ बुधे रोहिण्यां-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, वर-वरणं, कन्यावरणं, द्विरागमनं, (ल.८) विपणि व्यापारः हलप्रवहणं, बीजवपनं कणमर्दनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारिदर्शनं, जलाशयारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः, नूतनवध्वाः पाककर्म।

तिथि २/३ गुरौ मृगशिरायां-गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, वर-वरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः, द्विरागमनं, (ल.८ वा.१२) विपणि-व्यापारः, गवाक्रयविक्रयः हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यछेदनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारिदर्शनं, ऋणग्रहणं दानं च, भूमिक्रयः, गृहारम्भः (ल.८ वा.१२) जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः, नूतनवध्वाः पाककर्म।

तिथि ४ शुक्रे आर्द्रायां रिक्तादोषः।

तिथि ५ शनौ पुनर्वसौ-मुहूर्ताभावः।

तिथि ६ रवौ पुष्ये-पुंसवनं, सीमन्तः, विपणि व्यापारः गवाक्रयः विक्रयः, रत्नवस्त्र प्रवालधारणं शस्त्रधारणं, इष्टिकानिर्माणं, सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि ७ सोमे श्लेषायां- जलयंत्रकर्म।

तिथि ८ भौमे मघायां-मघोत्तरप्रसूतिस्नानं, रात्रौ न वध्वा प्रवेशफाल्गुन्यां इष्टिकादाहनं।

तिथि ९ बुधे पूर्वाफाल्गुन्यां-रिक्तादोषः।

तिथि १० गुरौ उत्तराफाल्गुन्यां हस्ते च भद्रापूर्वे ल.८ गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तः, प्रसूतिस्नानं, जातकर्म नामकरणं, वर-वरणं, कन्यावरणं च, वधूप्रवेशः विपणि-व्यापारः गवांक्रय विक्रयः, नव-वस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यछेदनं, कणमर्दनं, धान्यस्थापनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, दत्तकपुत्रग्रहणं, आ.पत्रलेखनं इष्टिकानिर्माणं, अधिकारिदर्शनं, जलाशयारम्भः सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः नूतनवध्वापाककर्म।

तिथि ११ शुक्रे हस्ते-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं, वर वरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः, विपणिव्यापारः, गवांक्रयविक्रयः, नव-वस्त्रधारणं, अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यछेदनं, धान्यस्थापनं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, दत्तकपुत्रग्रहणं, आ.पत्रलेखनं, सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि १२ शनौ चित्रायां-विपणि व्यापारः क्रयः।

तिथि १३ रवौ स्वात्यां-प्रसूतिस्नानं, वर वरणं, कन्यावरणं रत्नवस्त्रप्रवालधारणं, धान्यस्थापनं, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आ.पत्रलेखनं।

तिथि १४ सोमे विशाखायां-रिक्तादोषः।

तिथि ३० भौमे अनुराधायां-मासान्तदोषः।

दि. घ.	घ.	ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदयिक योगाः
२६	१३	१	बु.	५६	२८	रा.	५	२०	ज्येष्ठा	३४	५७	रा.	८	४४	धृति	१०	५९	दि.	११	[illegible]	कि.	२३	४५	बव	५६	२८	ध्वांक्ष
२६	११	२	गु.	६०	०	स	म	स्त	मूल	४१	२६	रा.	११	२०	शूल	१२	१९	दि.	११	[illegible]	वा	२९	७	को	६०	०	धूम्र
२६	१०	२	शु.	१	४७	दि.	७	२१	पूर्वाषाढ़ा	४७	३२	रा.	१	४७	गण्ड	१३	३०	दि.	१२	[illegible]	कौ.	१	४७	ते	३४	१०	प्रवर्धमान
२६	९	३	श.	६	३४	दि.	९	२५	उत्तराषाढ़ा	५२	५५	रा.	३	५७	वृद्धि	१४	१५	दि.	१२	[illegible]	ग.	६	३४	व	३८	३४	राक्षस
२६	८	४	र.	१०	३३	दि.	११	०	श्रवण	५७	१७	रा.	५	४२	ध्रुव	१४	२०	दि.	१२	[illegible]	वि.	१०	३३	बव	४१	५६	गद
२६	७	५	सो.	१३	२०	दि.	१२	७	धनिष्ठा	६०	०	स	म	स्त	व्याघात	१३	३२	दि.	१२	[illegible]	बा.	१३	२०	को	४४	९	शुभ
२६	७	६	मं.	१४	५८	दि.	१२	४६	धनिष्ठा	०	३२	प्रा.	७	०	हर्षण	११	५०	दि.	११	[illegible]	तै.	१४	५८	ग	४५	७	उत्पात
२६	६	७	बु.	१५	१६	दि.	१२	५३	शतभिषा	२	२९	दि.	७	४७	वज्र	९	७	दि.	१०	[illegible]	व	१५	१६	वि.	४४	४७	मानस
२६	५	८	गु.	१४	१८	दि.	१२	३०	पू.भाद्रपद	३	१२	दि.	८	४	सिद्धि	५	२४	दि.	८	[illegible]	बव	१४	१८	वा.	४३	१२	मुद्गर
२६	५	९	शु.	१२	६	दि.	११	३७	उ.भाद्रपद	२	४४	दि.	७	५३	व्यतिपात	०	५४	प्रा.	७	[illegible]	कौ.	१२	६	तै.	४०	२९	ध्वज
२६	४	१०	श.	८	५१	दि.	१०	१९	रेवती	५७	४१	प्रा.	७	२०	परिघ	४८	५८	रा.	२	[illegible]	ग.	८	५१	व	३६	४७	सौम्य
२६	४	११	र.	४	४३	दि.	८	४०	भरणी	५५	४३	रा.	५	४	शिव	४१	५	रा.	११	[illegible]	वि.	४	४३	बव	३२	४७	कालदण्ड
२६	४	१२	सो.	०	५२	प्रा.	७	३३	कृत्तिका	५२	४	रा.	३	३७	सिद्ध	३५	४४	रा.	९	[illegible]	बा.	०	५२	कौ.	५६	२८	स्थिर
२६	३	१४	मं.	४८	४२	रा.	२	१६	रोहिणी	४८	२	रा.	२	०	साध्य	२७	१	सा.	५	[illegible]	ग.	२२	३५	व.	४८	४२	मातंग
२६	३	१५	बु.	४२	४६	रा.	११	५३	मृगशिरा	४३	५०	रा.	१२	१९	शुभ	११	९	दि.	२	[illegible]	वि.	१५	४९	बव	४२	४६	अमृत

तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिनमान घ.	प.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	चन्द्रास्त घं.	मि.
८	१५	२२	१७	धनु	३४	५७	६	४५	५	[illegible]	२२	३७	७	२१	२२	३५	६१	१०	५	३८
९	१६	२३	१८				६	४६	५	[illegible]	२२	४४	७	२२	२३	४५	६१	११	६	२३
१०	१७	२४	१९				६	४६	५	[illegible]	२२	५१	७	२३	२४	५६	६१	१२	७	११
११	१८	२५	२०	मकर	३	५३	६	४७	५	[illegible]	२२	५७	७	२४	२६	८	६१	१३	८	२
१२	१९	२६	२१				६	४७	५	[illegible]	२३	४	७	२५	२७	२१	६१	१४	८	५४
१३	२०	२७	२२	कुम्भ	२८	५५	६	४७	५	[illegible]	२३	६	७	२६	२८	३५	६१	१५	९	४७
१४	२१	२८	२३				६	४७	५	[illegible]	२३	९	७	२७	२९	५०	६१	१६	१०	४१
१५	२२	२९	२४	मीन	४८	१	६	४७	५	[illegible]	२३	११	७	२८	३१	६	६१	१७	११	३६
१६	२३	३०	२५				६	४७	५	[illegible]	२३	१२	७	२९	३२	२३	६१	१८	१२	३३
१७	२४	१	२६				६	४७	५	[illegible]	२३	१५	८	०	३३	४१	६१	१९	१	३१
१८	२५	२	२७	मेष	१	१२	६	४७	५	[illegible]	२३	१७	८	१	३५	०	६१	१९	२	३२
१९	२६	३	२८				६	४७	५	[illegible]	२३	१९	८	२	३६	११	६१	२०	३	३६
२०	२७	४	२९	वृष	९	४८	६	४७	५	[illegible]	२३	२२	८	३	३७	३९	६१	२०	४	४२
२१	२८	५	३०				६	४७	५	[illegible]	२३	२४	८	४	३८	५९	६१	२१	५	५०
२२	२९	६	१	मिथुन	१५	५६	६	४७	५	[illegible]	२३	२६	८	५	४०	२०	६१	२१	+	+

धनु राशिः३४।५७ (रा.८।४४)। रुद्रव्रतम् (पीड़िया) इतिलोके प्रसिद्ध[illegible] यात्रायाम् निषिद्धः यमघंट यो[illegible]

चन्द्र दर्शनम् मु.३० समासमता करम्। सौम्य श्रृगम् सुभिक्षं। (ख) सर्वार्थसिद्धियोगः घ.५[illegible]

मु.रमजान २ हिजरी सन् १४२०। यवन रोजा आरम्भः। दाष संघ विनाशको रवियोगः घ.४७।[illegible]

मकर राशिः३।५३ (दि.८।२०)। भद्रा घ.३८।३४ (रा.१०।१३) उ.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रत[illegible]

भद्रा घ.१०।३३ (दि.११।०) या.। दाष संघ विनाशको रवियोगः घ.५७।१७ (रा.सा.५।४२) उ.। (घ) ७।[illegible]

कुम्भ राशिः२८।५५ (रा.६।२२)। पचक (पचखा) आरम्भः। श्रीराम विवाह महोत्सवः। द्वितीया नाग प[illegible]

श्रीस्कन्द षष्ठी व्रतम् (चम्पाषष्ठी) (महाराष्ट्र प्रसिद्धः)। दोषसंघविनाशकारवियोगः घ.०।३२ (प्रा.७।१०) या.[illegible]

मीन राशिः४८।१ (रा.१।५९)। भद्रा घ.१५।१६ (दि.१२।५३) उ. घ.४४।४७ (रा.१२।४२) या.। मि[illegible]

☉ स.मूले धनुर्षु च रविः घ.२७।१० (सा.५।३९) मु.४५ महती समर्घताकरम्। पूर्वा घ.१६ घट्याः। पुण्यक[illegible]

कल्पादि ९। नन्दा नवमी ९। देवो पूजनन विष्णु लोक प्राप्तिः। सौर पौष मासारम्भः। सर्वार्थोऽमृतसि[illegible]

मेष राशिः१।१२ (प्रा.७।१६)। पचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा घ.३६।४७ (रा.९।३०) उ.। दाष [illegible]

भद्रा घ.४।४३ (दि.८।४०) या.। मोक्षदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वषाम्। गीता जयन्ती ११। मौन एका[illegible]

वृष राशिः९।४८ (दि.१०।४२)। अनुदया सोम प्रदोष व्रतम् १३। पुत्रार्थाभिविधयम्। सर्वार्थसिद्धियोगः[illegible]

भद्रा घ.४८।४२ (रा.२।१६) उ.। काश्यां पिशाचमोचन यात्रा दर्शनञ्च पिशाच त्वमुक्तये श्राद्ध तर्पण[illegible]

मिथुन राशिः१५।५६ (दि.१।१९)। भद्रा घ.१५।४९ (दि.१।६) या.। स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा १५ पु[illegible]

विवाह मुहूर्त विमर्शः

[illegible]

ति.८ गुरौ [illegible] व्यतिपात संक्रान्तिजन्य [illegible]। घर्ष धन्वार्क: मुहूर्ताभावः।

[illegible] (ञ) श्रीदत्ता- [illegible]। राष्ट्रीय पौष मासारम्भः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	बु.	७	२२	२५	४८	९	१३	३१	४८	४७	९	७	०	५३	७	७९	०	०	१	३९	२६	२	५१	६	७	४४	३३	६८	२२	०	१६	५९	११	३	२१	३	१२	३०	६
२	गु.	८	४	२७	१३	९	१४	१८	५७	४७	१५	७	२	१२	७	८०	२२	०	१	३६	३५	२	४४	६	८	५२	५५	६८	३३	०	१६	५५	५०	३	१७	३	१२	२६	५५
२	शु.	८	१६	३५	२१	९	१५	६	१२	४७	३९	७	३	३२	२९	८०	४६	०	१	३३	५१	२	४०	६	१०	१	२८	६८	४२	०	१६	५२	३३	३	१३	३	१२	२३	४४
३	श.	८	२८	५१	९	९	१५	५३	५१	४७	४५	७	४	५३	१५	८१	५	०	१	३१	११	२	२२	६	११	१०	१०	६८	५८	०	१६	४९	२०	३	८	३	१२	२०	३३
४	र.	९	११	१९	४०	९	१६	४१	३६	४७	५१	७	६	१४	२०	८३	३०	०	१	२८	४९	२	०	६	१२	१९	८	६९	११	०	१६	४६	१२	३	३	३	१२	१७	२२
५	सो.	९	२४	०	५५	९	१७	२९	२७	४८	०	७	८	३७	५०	८७	३८	०	१	२६	४९	१	५३	६	१३	२८	१९	६९	२१	०	१६	४३	९	२	५८	३	१२	१४	११
६	मं.	१०	६	११	३३	९	१८	१७	२७	४८	१५	७	१०	४	२८	९०	२९	०	१	२४	५६	१	३६	६	१४	३७	४०	६९	४०	०	१६	४०	११	२	५२	३	१२	११	०
७	बु.	१०	१९	७	४२	९	१९	५	४२	४८	३०	७	११	३४	५७	९०	५७	०	१	२३	२०	१	२०	६	१५	४७	२०	६९	४७	०	१६	३७	१९	२	४८	३	१२	७	५०
८	गु.	११	२	१९	१८	९	१९	५४	१२	४८	४८	७	१३	५	५४	९१	१२	०	१	२२	०	१	९	६	१६	५७	७	६९	५३	०	१६	३५	३१	२	४४	३	१२	४	३९
९	शु.	११	१५	४५	३७	९	२०	४३	०	४८	५६	७	१४	३७	६	९२	२८	०	१	२०	५१	१	०	६	१८	७	०	७०	७	०	१६	३२	४७	२	३८	३	१२	१	२८
१०	श.	११	२९	२३	२८	९	२१	३१	५६	४९	०	७	१६	९	३४	९३	४४	०	१	१९	५१	०	३०	६	१९	१७	७	७०	१५	०	१६	३०	९	२	३१	३	११	५८	१७
११	र.	०	१३	७	२०	९	२२	२०	५६	४९	०	७	१७	४३	१८	९४	३३	०	१	१९	६	०	१२	६	२०	२७	२२	७०	२५	०	१६	२७	३८	२	२४	३	११	५५	६
१२	सो.	०	२७	११	५१	९	२३	९	५६	४८	५७	७	१९	१७	५१	९५	२७	०	१	१८	५४	०	४	६	२१	३७	४७	७०	३०	०	१६	२५	१४	२	१९	३	११	५१	५५
१४	मं.	१	११	१९	१०	९	२३	५८	४३	४८	५५	७	२०	५३	१८	९५	५०	०	१	१८	५०	मा०	१०	६	२२	४८	१७	७०	३९	०	१६	२२	५५	२	१२	३	११	४८	४४
१५	बु.	१	२५	२९	३६	९	२४	४७	३८	४८	५०	७	२२	२९	८	९६	१५	०	१	१९	०	०	१८	६	२३	५८	५६	७०	४०	०	१६	२०	४३	२	८	३	११	४५	३३

फलम्—इस पक्ष में द्वितीया तिथि की वृद्धि है तथा त्रयोदशी का क्षय है फलतः पक्ष १५ दिन का है। गुरुवार का चन्द्र दर्शन मु.३० अफीम एवं मीठी वस्तुएँ तेज होंगी। पक्ष के तीन बुधवार सुख-सुविधा-सन्तोष का वातावरण। घी गुड़, खाण्डसारी में रुख तेजी का। चाँदी में घटा-बढ़ी चलकर तेजी ठहरेगी। **पीड़िया नाम से प्रचलित रुद्रव्रत** ८ दिसम्बर बुधवार को किया जायेगा। इस्लाम समुदाय का पवित्र महीना रमजान १० दिसम्बर शुक्रवार से प्रारम्भ हो रहा है और इसी के साथ **रोजा शुरु** हो जायेगा। ऐसी मान्यता है कि मार्गशीर्ष शुक्ल पञ्चमी को भगवान् राम का विवाह जनकतनया सीताजी के साथ हुआ था इसी उपलक्ष में **श्रीराम विवाह महोत्सव** १३ दिसम्बर सोमवार को सर्वत्र विशेषकर मिथिला क्षेत्र में सोल्लास मनाया जायेगा। महाराष्ट्र में चम्पा षष्ठी के नाम से प्रचलित श्रीस्कन्द षष्ठी व्रत १४ दिसम्बर मंगलवार को मनाई जायेगी। मूल नक्षत्र और धनु राशि की सूर्य संक्रान्ति १६ दिसम्बर गुरुवार को सायं ५।३९ बजे से आ रही है और इसी के साथ खरमास प्रारम्भ हो जायेगा। **मोक्षदा एकादशी का व्रत** सबके लिये १९ दिसम्बर रविवार को है। इसी एकादशी के दिन गीता जयन्ती का मान होता है। जैन जगत में इसे मौन एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। ३६ भाषाओं में अनुवादित गीता का ज्ञान गौरव सम्पूर्ण विश्व में मुखरित होगा। **पुत्र की कामना से सोम प्रदोष का व्रत** अनुदया त्रयोदशी २० दिसम्बर को किया जायेगा। २१ दिसम्बर मंगलवार को काशी के पिशाच मोचन तीर्थ में श्राद्ध एवं तर्पण करने से बाधाओं से मुक्ति मिलती है। कपर्दीश्वर का दर्शन किया जायेगा। स्नान-दान-व्रत सहित अग्रहायणी पूर्णिमा श्रीदत्त जयन्ती २२ दिसम्बर बुधवार को होगी। श्री दत्तात्रेय का अवतारोत्सव मनाया जायेगा। तांत्रिक जगत का यह परम पुनीत पर्व है। पक्षान्त २१ दिसम्बर से गुरु मार्गी होकर गन्ना चपड़ा में मन्दीकारक और घी, तेल में तेजी होकर पुनः मन्दी की धारणा पैदा करेगा।

पं.३७ मार्गशीर्ष शु.८ गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २५२४ अयनांशाः २३/५०/२७

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	११	९	७	०	६	०	३	९
२९	२	१९	१३	१	१६	१६	१२	१२
३२	१९	५४	५	२२	५७	३५	४	४
२३	१८	१२	५४	०	७	३१	३९	३९
६१	७२९	४८	९१	०	६९	२	३	३
१८	३३	४८	१२	१	५३	४४	११	११

९	८ सू.बु.	७ शु.
१० मं. के.	११	६
	२	५
१२ चं.	१ श.गु.	४ रा.
	३	

भौमादीनां चारः-

भौमः-श्रवण नक्षत्रे मकर राशौ तिथि १२ सोमतः धनिष्ठायां घं.१२।१५

बुधः-वृश्चिक राशौ।

गुरुः-(वक्री) आश्विन्यां मेष राशौ, तिथि १४ भौमतः मार्गी।

शुक्रः-तुला राशौ।

शनिः-(वक्री) भरण्यां २ चरणे मेष राशौ। तिथि ६ भौमतः वक्रगत्या भरण्यां १ चरणे घं.४।१०।

राहुः-पुष्य नक्षत्रे ३ चरणे केतुश्च श्रवणे १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ बु. घं.	मि.	२ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ सो. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	ल.अं.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ सो. घं.	मि.	१४ मं. घं.	मि.	१५ बु. घं.	मि.
वृश्चि.	७	१२	७	८	७	४	६	५९	६	५५	६	५१	६	४७	६	४३	६	३९	धनु	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	[illegible]	८	[illegible]
धनु	९	१७	९	१३	९	९	९	५	९	१	८	५८	८	५४	८	५०	८	४६	मकर	१०	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	[illegible]	१०	७
मकर	११	३	१०	[illegible]	१०	५५	१०	५१	१०	४७	१०	४३	१०	३९	१०	३५	१०	३१	कुम्भ	११	५८	११	५४	११	५०	११	[illegible]	११	[illegible]	११	[illegible]
कुम्भ	१२	३४	१२	[illegible]	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१४	१२	१०	१२	६	१२	२	मीन	१	२६	१	२२	१	१८	१	[illegible]	१	[illegible]	१	[illegible]
मीन	२	२	[illegible]	[illegible]	१	५४	१	५०	१	४६	१	४२	१	३८	१	३४	१	३०	मेष	३	५	३	१	२	५७	२	[illegible]	२	[illegible]	२	[illegible]
मेष	३	४०	३	[illegible]	३	३२	३	२८	३	२४	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	वृष	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	[illegible]	४	[illegible]
रा.	रा.				रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
वृष	५	३७	५	[illegible]	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	६	मिथुन	७	१५	७	११	७	७	७	३	६	[illegible]	६	[illegible]
मिथुन	७	५१	७	[illegible]	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३	७	१९	कर्क	९	३३	९	२९	९	२५	९	[illegible]	९	[illegible]	९	[illegible]
कर्क	१०	८	[illegible]	[illegible]	१०	०	९	५६	९	५३	९	४९	९	४५	९	४१	९	३७	सिंह	११	४७	११	४३	११	३९	११	३५	११	३१	११	[illegible]
सिंह	१२	२२	[illegible]	[illegible]	१२	१४	१२	१०	१२	७	१२	३	११	५९	११	५५	११	५१	कन्या	१	५९	१	५५	१	५२	१	४८	१	४४	१	४०
कन्या	२	३५	२	[illegible]	२	२७	२	२३	२	१९	२	१५	२	११	२	७	२	३	तुला	४	१६	४	१२	४	८	४	४	४	०	३	५६
तुला	४	५१	४	[illegible]	४	४३	४	३९	४	३५	४	३१	४	२७	४	२४	४	२०	वृश्चि.	६	३४	६	३०	६	२६	६	२२	६	[illegible]	६	[illegible]

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ बुधे ज्येष्ठायां-नामकरणं, गवांक्रयविक्रयः, कर्णमर्दनं, मुकदमादायर, नूतनवध्वाः पाककर्म।

तिथि २ गुरौ मूले-पुंसवनं, सीमन्तः, नामकरणं, वरवरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः द्विरागमनं, (ल.८) हलप्रवहणं, बीजवपनं, कणमर्दनं, वृक्षारोपणं, जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर, भूमिक्रयः।

तिथि २ शुक्रे पूर्वाषाढ़ायां-वर-वरणं कन्यावरणं, धान्यछेदनं, जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर, भूमिक्रयः जलाशयारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि ३ शनौ उत्तराषाढ़ायां-वधूप्रवेशः,(भद्रापूर्व ल.गोधू.) विपणिव्यापारः इष्टिकानिर्माणं, नूतनवध्वाःपाकारम्भः।

तिथि ४ रवौ श्रवणे-रिक्तोत्तरं-पुंसवनं, सीमन्तः कन्यावरणं द्विरागमनं, (ल.गोधू.) क्रयः, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, धान्यछेदनं, कणमर्दनं, आ.पत्रलेखनं इष्टिकानिर्माणं।

तिथि ५ सोमे धनिष्ठायां-गर्भाधानं नामकरणं, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः, (ल.११) कन्यावरणं, वधूप्रवेशः द्विरागमनं, (ल.गोधू.) गवांक्रयविक्रयः, अलंकारनिर्माणं धारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं धान्यस्थापनं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, ऋण-ग्रहणं दानं च, गृहप्रवेशः, (ल.८) जलाशयारम्भः नूतनवध्वाःपाककर्म।

तिथि ६ भौमे धनिष्ठायां-शतभिषायां-रक्तवस्त्रप्रवालधारणं।

तिथि ७ बुधे शतभिषायां पूर्वाभाद्रपदायां च-वर वरणं, कन्यावरणं, धान्यछेदनं, चूल्हीस्थापनं, जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर (ति.दा.)।

*तिथि ८ गुरौ पूर्वाभा.उत्तराभाद्रपदायां च-संक्रान्तेःपूर्वम् पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशनं (ति.दा.) वर-वरणं, कन्यावरणं, आ.(ल.८) वधूप्रवेशः द्विरागमनं, विपणि-व्यापारः, नव-वस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यछेदनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षलतादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, (ति.दा.) शस्त्रधारणं आ.पत्र लेखनं, इष्टिकानिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ९ शुक्रे उ.भा. रेवत्यां च-रिक्तादोषः।

तिथि १० शनौ रेवत्यां अश्विन्यां च- विपणि व्यापारः गवांक्रय विक्रयः, इष्टिकानिर्माणं।

तिथि ११ रवौ भरण्यां-मुकदमासंबन्धी कार्य। इष्टिकादहनं (ति.दा.) प्रसूतिस्नानं।

तिथि १२/१३ सोमे कृत्तिकायां-नूतनवध्वा पाककर्म।

तिथि १४ भौमे रोहिण्यां-रिक्तादोषः।

तिथि १५ बुधे मृगशिरसि-जातकर्म नामकरणं अन्नप्राशन, विपणि व्यापारः, गवांक्रयविक्रयः हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणांदर्शनं जलाशयारम्भः, सेवारम्भः शिल्पविद्यारम्भः, नूतनवध्वापाककर्म।

पक्षफलम्

[illegible]

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	तिथि घ.	तिथि प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	आनन्दादियोगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	र.क्रा.द. अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.
२६	३	१	गु.	३६	५५	रा.	९	३३	आर्द्रा	३९	४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]ल	११	१३	दि.	११	१६	वा	९	५०	को	[illegible]	[illegible]	काण	२३	१	७	२				६	४७	५	१३	२३	२६	८	६	४१	४१
२६	३	२	शु.	३१	२१	रा.	७	१९	पुनर्वसु	३५	५२	रा.	[illegible]	[illegible]	ब्रह्म	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	ते	४	८	ग	३१/५८	२१/४६	लुम्ब	२४	२	८	३	कर्क	२१	५०	६	४७	५	१३	२३	२३	८	७	४३	२
२६	४	३	श.	२६	१२	सा	५	१६	पुष्य	३२	३०	रा.	७	४७	वैधृति	४८	३४	रा.	२	१३	वि	२६	१२	बव	५३	५७	मित्र	२५	३	९	४				६	४७	५	१३	२३	२०	८	८	४४	२३
२६	४	४	र.	२१	४३	दि.	३	२८	श्लेषा	२९	४५	रा.	६	४१	विष्कुंभ	४२	१८	रा.	११	४२	वा	२१	४३	को.	४९	५३	वज्र	२६	४	१०	५	सिंह	२९	४५	६	४७	५	१३	२३	१७	८	९	४५	४५
२६	४	५	सो.	१८	३	दि.	२	०	मघा	२७	५४	सा.	५	५७	प्रीति	३६	४०	रा.	१	२७	ते	१८	३	ग.	४६	४३	ध्वांक्ष	२७	५	११	६				६	४७	५	१३	२३	१५	८	१०	४७	७
२६	५	६	मं.	१५	२२	दि.	१२	५६	पू.फाल्गुनी	२६	५९	सा.	५	३५	आयुष्मान	३१	४२	रा.	७	२८	व	१५	२२	वि	४४	३६	धूम्र	२८	६	१२	७	कन्या	४२	३	६	४७	५	१३	२३	१३	८	११	४८	२९
२६	५	७	बु.	१३	५०	दि.	१२	१९	उ.फाल्गुनी	२७	१३	सा.	५	४०	सौभाग्य	२७	४१	सा.	५	५१	बव	१३	५०	वा	४३	४०	प्रवर्धमान	२९	७	१३	८				६	४७	५	१३	२३	११	८	१२	४९	५१
२६	६	८	गु.	१३	३०	दि.	१२	११	हस्त	२८	४१	रा.	६	१५	शोभन	२४	३९	दि.	४	३१	को	१३	३०	ते	४४	०	राक्षस	३०	८	१४	९				६	४७	५	१३	२३	९	८	१३	५१	१३
२६	७	९	शु.	१४	३०	दि.	१२	३५	चित्रा	३१	२६	रा.	७	२१	अतिगण्ड	२२	३५	दि.	३	४१	ग	१४	३०	व	४५	४७	मुसल	३१	९	१५	१०	तुला	०	४	६	४७	५	१३	२३	६	८	१४	५२	३६
२६	७	१०	श.	१६	५०	दि.	१	३१	स्वाती	३५	२१	रा.	८	५५	सुकर्मा	२०	३२	दि.	३	०	वि	१६	५०	बव	४८	३३	सिद्ध	१	१०	१६	११				६	४७	५	१३	२३	३	८	१५	५३	५९
२६	८	११	र.	२०	१७	दि.	२	५३	विशाखा	४०	२४	रा.	१०	५६	धृति	२१	२२	दि.	३	११	वा	२०	१७	को	५२	३०	उत्पात	२	११	१७	१२	वृश्चिक	२४	८	६	४६	५	१४	२३	०	८	१६	५५	२१
२६	९	१२	सो.	२४	४३	दि.	४	३९	अनुराधा	४६	१६	रा.	१	१६	शूल	२१	५५	दि.	३	३२	ते	२४	४३	ग.	५७	१८	मानस	३	१२	१८	१३				६	४६	५	१४	२२	५३	८	१७	५६	४३
२६	११	१३	मं.	२९	५४	रा.	६	४४	ज्येष्ठा	५२	४०	रा.	३	५०	गण्ड	२३	१	दि.	३	५८	व	२९	५४	वि	६०	०	मुद्गर	४	१३	१९	१४	धनु	५२	४०	६	४६	५	१४	२२	४६	८	१८	५८	५
२६	१२	१४	बु.	३५	२२	रा.	८	५३	मूल	५९	१५	प्रा.	६	२८	वृद्धि	२४	२१	दि.	४	३०	वि	२	३८	श	३५	२२	ध्वज	५	१४	२०	१५				६	४६	५	१४	२२	३९	८	१९	५९	२७
२६	१३	३०	गु.	४०	४०	रा.	११	२	पूर्वाषाढ़ा	६०	०	स	म	स्त	ध्रुव	२५	३७	सा.	५	१	च.	८	१	ना	४०	४०	धाता	६	१५	२१	१६				६	४६	५	१४	२२	३५	८	२१	०	४९

दिनांक २३ दिसम्बर १९९९ ई. - ६ जनवरी २००० ई. (राष्ट्रीय पौष २ - १६)
याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्त ऋतुः।

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, पौष कृष्ण पक्षः।

सर्वार्थसिद्धियोगः घ.३९।४४ (रा.१०।४१) उ.। पूर्व दिशायाम् बुधास्तः।
फसली पौष मासारम्भः। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.३५।५२ (रा.९।८) या.। (क) सिद्धयोगः घ.२६।१२ (सा.५।१६) उ.।
कर्क राशिः२१।५० (दि.३।३१)। भद्रा घ.५८।४६ (रा.श.६।२७) उ.। सकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.८।१५) वादन चन्द्राय अर्घ्यम्। क्रिसमस डे (ईसाई) ज्येष्ठ दिनम् (बड़ा दिन) [illegible]
भद्रा घ.२६।१२ (सा.५।१६) या.। याग्य (मुद्दई) जयद् योगः घ.२२।४३ (दि.३।२८) उ. घ.२९ [illegible]
सिंह राशिः२९।४५ (रा.६।४१)। यात्रायाम् निषिद्धः यमघट योगः घ.२९।४५ (रा.६।४१) उ.।
दोष सघ विनाशको रवियोगः घ.२७।५४ (सा.५।५७) उ.। दोष सघ विनाशको रवियोगः घ.२६।५९ (सा.५।३५) [illegible]
कन्या राशिः४२।३ (रा.११।३६)। भद्रा घ.१५।२२ (दि.१२।५६) उ. घ.४४।३६ (रा.१२।३७) या.। (ग) त्रिपुष्कर योगः घ.२६।५९ (सा.५।३५) उ.।
सर्वार्थसिद्धियोगः घ.२७।१३ (सा.५।४०) उ.। ⊙पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रे रविः घ.२९।३२ (रा.६।३६)। याग्य (मुद्दई) जयद् योगः घ.१३।३० (दि.१२।११) उ. घ.२८।४१ (रा.६।१५) या.।
अष्टका श्राद्धम् पार्वण वदस्य विधिः। रुक्मिणी अष्टमी ८। याग्य (मुद्दई) जयद् योगः घ.१३।३० [illegible] (घ) सर्वार्थसिद्धियोगः घ.३५।२१(रा.८।५५) या.। याग्य (मुद्दई) जयद् योग घ.२६।५० (दि.१।३१) [illegible]
तुला राशिः०।४ (प्रा.६।४९)। भद्रा घ.४५।४० (रा.१।३) उ.। खिष्टीय नववर्षारम्भः। इसवी सन् २००० प्रारम्भः। [illegible]
भद्रा घ.१६।५० (दि.१।३१) या.। श्रीपार्श्वनाथ जन्म कल्याणक जयन्ती (जैन)। (ङ) घ.२९।५४ (रा.६।४४) उ. घ.५२।४० (रा.३।५०) या.।
वृश्चिक राशिः२४।८ (दि.४।२५)। सफला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्।
सुरुप द्वादशी व्रतम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.४६।१६ (रा.१।१६) या.। याग्य (मुद्दई) जयद् योगः घ.२४।४३ (दि.४।३९) उ. घ.४६।१६ (रा.१।१६) या.।
धनु राशिः५२।४० (रा.३।५०)। भद्रा घ.२९।५४ (रा.६।४४) उ.। भौम प्रदोष व्रतम् १३। ऋणापकरणाय श्रेयस्करम्। मास शिवरात्रि व्रतम् १३। [illegible] जयद् योगः (ङ)
भद्रा घ.२।३८ (दि.७।४९) या.। यात्रायाम् निषिद्धः यम घट योगः घ.५९।१५ (रा.श.६।२८) या.। मु. पर्व शबे-ए-कद्र।
स्नानदान श्राद्धादौ अमा पुण्यतमा ३०। कपिल धारा तीर्थ श्राद्धम् ३०। शुभवारान्वित दर्शे सुभिक्ष प्रजा सुखम्।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	गु.	२	९	३८	१२	९	२५	३६	२८	४८	२५	७	२४	५	२३	९६	२०	०	१	१९	१८	०	२३	६	२५	९	३६	७०	४७	०	१६	१८	३५	२	४	३	११	४२	२२
२	शु.	२	२३	४४	१५	९	२६	२४	५३	४८	२०	७	२५	४१	४३	९६	४२	०	१	१९	४१	०	३८	६	२६	२०	२३	७०	५२	०	१६	१६	३१	१	५९	३	११	३९	११
३	श.	३	७	४४	२२	९	२७	१३	१३	४७	३९	७	२७	१८	२५	९७	३	०	१	२०	१९	०	४५	६	२७	३१	१५	७१	६	०	१६	१४	३२	१	५१	३	११	३६	०
४	र.	३	२१	३७	५०	९	२८	०	५२	४७	३६	७	२८	५५	२८	९७	२८	०	१	२१	४	०	५६	६	२८	४२	२१	७१	१७	०	१६	१२	४१	१	४५	३	११	३२	५०
५	सो.	४	५	१९	३७	९	२८	४८	२८	४७	३५	८	०	३२	५६	९७	४०	०	१	२२	०	१	३	६	२९	५३	३८	७१	२०	०	१६	१०	५६	१	४०	३	११	२९	३९
६	मं.	४	१८	५०	११	९	२९	३६	३	४७	३३	८	२	१०	३६	९७	५१	०	१	२३	३	१	१०	७	१	४	५८	७१	२५	०	१६	९	१६	१	३५	३	११	२६	२८
७	बु.	५	२	७	५२	१०	०	२३	३६	४७	३३	८	३	४८	२७	९८	४	०	१	२४	१३	१	१७	७	२	१६	२३	७१	३१	०	१६	७	४१	१	२८	३	११	२३	१७
८	गु.	५	१५	१०	४४	१०	१	११	९	४७	३०	८	४	५६	३१	९८	१८	०	१	२५	३०	१	२२	७	३	२७	५४	७१	३७	०	१६	६	१३	१	२२	३	११	२०	६
९	शु.	५	२७	५९	५	१०	१	५८	३९	४७	३०	८	६	३४	४९	९८	३३	०	१	२६	५२	१	३०	७	४	३९	३१	७१	४२	०	१६	४	५१	१	१७	३	११	१६	५५
१०	श.	६	१०	३२	३८	१०	२	४६	९	४७	२८	८	८	१३	२२	९८	४३	०	१	२८	२२	१	३८	७	५	५१	१३	७१	४८	०	१६	३	३४	१	१२	३	११	१३	४४
११	र.	६	२२	५२	१९	१०	३	३३	३७	४७	२६	८	९	५२	५	९८	५८	०	१	३०	०	१	४३	७	७	३	१	७१	५०	०	१६	२	२२	१	५	३	११	१०	३३
१२	सो.	७	७	२	४१	१०	४	२१	३	४७	२५	८	११	३१	३	९९	०	०	१	३१	४३	१	५०	७	८	१४	५१	७२	३	०	१६	१	१७	१	०	३	११	७	२२
१३	मं.	७	१९	५	१८	१०	५	८	२८	४७	२२	८	१३	१०	३	९९	११	०	१	३३	३३	२	२	७	९	२६	५४	७२	५	०	१६	०	१७	०	५४	३	११	४	११
१४	बु.	८	१	६	४७	१०	५	५५	५०	४७	२०	८	१४	४९	१४	९९	२५	०	१	३५	३५	२	१६	७	१०	३८	५९	७२	११	०	१५	५९	२३	०	४७	३	११	१	०
३०	गु.	८	१३	५१	४०	१०	६	४३	१०	४७	२०	८	१६	२८	३९	९९	३९	०	१	३७	५१	२	३५	७	११	५१	१०	७२	१५	०	१५	५८	३६	०	४०	३	१०	५७	५०

फलम्—यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। पौष का महीना और तुषार पात दोनों में पुराना एवं नैसर्गिक सम्बन्ध है। बाँदल-बूँदा-बांदी एवं कड़ाके की सर्दी का योग इसलिये पैदा हो रहा है क्योंकि पक्षारम्भ में पूर्व दिशा में बुधास्त हो रहा है। पक्ष के तीन गुरुवार सामान्यतया शुभफलदायक हैं। सोना, पीतल, सूती कपड़ा, चावल, शक्कर, चीनी में मन्दी की अवधारणा चलेगी। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत** २५ दिसम्बर शनिवार को किया जायेगा एवं चन्द्रोदय समय रात बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। **क्रिसमस डे (बड़ा दिन)** की धूम-धाम पूरे विश्व में रहेगी। ३० दिसम्बर गुरुवार को **रुक्मिणी अष्टमी** है आज के दिन रुक्मिणी एवं प्रद्युम्न भगवान की सोने की प्रतिमा का षोडषोपचार विधि से पूजन कर कम से कम आठ सौभाग्यवती स्त्रियों को भोजन कराने और वस्त्रादि से उनका सम्मान करने से पुण्यफल की प्राप्ति होती है। ३० दिसम्बर गुरुवार को पार्वण विधि से **अष्टका का श्राद्ध** भी किया जायेगा। जैन जगत में श्रीपार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक १ जनवरी शनिवार को मनाया जायेगा। १९ शती का अन्तिम वर्ष शनिवार से प्रारम्भ हो रहा है। सर्वत्र नये वर्ष की धूम-धाम रहेगी तथा परस्पर शुभ कामना संदेश का आदान-प्रदान किया जायेगा। **सफला एकादशी व्रत** का मान सबके लिये २ जनवरी रविवार को होगा। ३ जनवरी को सुरुप द्वादशी मनाई जायेगी। ऋण से मुक्ति के लिये **भौम प्रदोष व्रत** ४ जनवरी को किया जायेगा एवं आज ही मास शिवरात्रि का व्रत भी किया जायेगा। स्नान-दान-श्राद्ध सहित अमावस्या का मान ६ जनवरी गुरुवार को है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य २९ दिसम्बर बुधवार को रात ६।३६ बजे से आयेगा। खाद्य, तेल, गुड़, गुग्गुल, हल्दी, चाँदी, कपूर ऊनी वस्त्र, सन चांदी, अफीम में तेजी। गुरुवार की अमावस्या शुभ फलकारक है। अमावस्या को पूर्वाषाढ़ा का योग खेती फसल में वृद्धि कारक है।

पं.३९ पौष कृष्ण ८ गुरौ सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २५३८
अयनांशाः २३/५०/२९

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	१०	८	०	७	०	३	९
१३	१६	१	४	१	३	१६	११	११
५१	१०	११	५६	२५	२७	६	२०	२०
१३	४४	९	३१	३०	५४	१३	६	६
६१	७३८	४७	९८	१	७१	१	३	३
२३	१०	३०	१८	२२ मा	३७	२२ मा	११	११

के.१० | ९ सू.बु. | शु.८ | मं ११ | ७ | १२ | चं.६ | १ श. गु. | ३ | ५ | २ | ४ रा.

भौमादीनां चारः-
भौमः-धनिष्ठायां मकर राशौ, तिथि ६ भौमतः। कुम्भ राशौ घं.३०।३६ तिथि १४ बुधतः शतभिषायां घं.५५।५४।
बुधः-वृश्चिक राशौ तिथि ४रवितः धनु राशौ घ.४०।०
गुरुः- आश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-तुला राशौ,तिथि ५ सोमतः वृश्चिक राशौ घं.५।१५
शनिः-(वक्री) भरण्यां १ चरणे मेष राशौ।
राहुः-पुष्य नक्षत्रे ३ चरणे केतुश्च श्रवणे १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ गु. घं.	मि.	२ शु. घं.	मि.	३ श. घं.	मि.	४ र. घं.	मि.	५ सो. घं.	मि.	६ मं. घं.	मि.	७ बु. घं.	मि.	८ गु. घं.	मि.	९ शु. घं.	मि.	१० श. घं.	मि.	११ र. घं.	मि.	१२ सो. घं.	मि.	१३ मं. घं.	मि.	१४ बु. घं.	मि.	३० गु. घं.	मि.
धनु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	६	८	२	७	५९	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५	७	३१	७	२७	७	२३
मकर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	५२	९	४८	९	४४	९	४०	९	३६	९	३२	९	२८	९	२४	९	२०	९	१६	९	१३	९	९
कुम्भ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	२३	११	१९	११	१५	११	११	११	७	११	३	१०	५९	१०	५५	१०	५१	१०	४८	१०	४४	१०	४०
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	५१	१२	४७	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	२७	१२	२३	१२	१९	१२	१६	१२	१२	१२	८
मेष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२	२९	२	२५	२	२२	२	१८	२	१४	२	१०	२	६	२	२	१	५८	१	५४	१	५०	१	४६
वृष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	२६	४	२२	४	१८	४	१४	४	१०	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	५१	३	४७	३	४३
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
मिथुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	४०	६	३६	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२	६	८	६	४	६	[illegible]	५	५७
कर्क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	५७	८	५३	८	५०	८	४६	८	४२	८	३८	८	३४	८	३०	८	२६	८	२२	८	१८	८	१४
सिंह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	१२	११	८	११	४	११	०	१०	५६	१०	५२	१०	४८	१०	४४	१०	४०	१०	३६	१०	३२	१०	२८
कन्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	२८	१	२०	१	१६	१	१२	१	८	१	४	१	०	१२	५७	१२	५३	१२	४९	१२	४५	१२	४१
तुला	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	४०	३	३६	३	३२	३	२९	३	२५	३	२१	३	१७	३	१३	३	९	३	५	३	१	२	५७
वृश्चि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	५	४२	५	३८	५	३४	५	३०	५	२६	५	२२	५	१८	५	१४

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ गुरौ आर्द्रायां-पुंसवनं, सीमन्तः। मुकदमादायरः।
तिथि २ शुक्रे पुनर्वसौ-नामकरणं अन्नप्राशनं, गवांक्रयविक्रयः, नववस्त्रधारणं, अलंकारस्य निर्माणं, धारणं च हलप्रवहणं, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, ऋणग्रहणं दानं च, [illegible] नौकाजलयाननिर्माणं।
तिथि ३ शनौ पुष्ये -विपणि व्यापारः गवांक्रयविक्रयः इष्टिकानि[illegible] [illegible]
तिथि ४ रवौ श्लेषायां रिक्तादोषः।
तिथि ५ सोमे मघायां-जन्मराशि, शय्यासनाद्युपभोगः, [illegible]
तिथि ६ भौमे पूर्वाफाल्गुन्यां-प्रसूतिस्नानं, इष्टिकादहनं।
जलाशया[illegible]
तिथि ७ बुधे उत्तराफाल्गुन्यां-गर्भाधानं, जातकर्म नामकरणं, विपणि-व्यापारः, नव-वस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यछेदनं, कणमर्दनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखन अधिकारीदर्शनं, जलाशयारम्भः शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ८ गुरौ हस्तभे-पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, जातकर्म, नामकरणं, विपणिव्यापारः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यछेदनं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारिणांदर्शनं, सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।
तिथि ९ शुक्रे चित्रायां-रिक्तादोषः।
तिथि १० शनौ स्वात्यां-मुहूर्ताभावः।
तिथि ११ रवौ विशाखायां-गवांक्रयविक्रयः।
रत्नवस्त्रप्रवालधारणं, शस्त्रधारणं, इष्टिकादहनं (ति.दा.)।
तिथि १२ सोमे अनुराधायां-गर्भाधानं, जातकर्म,नामकरणं, विपणिव्यापारः, हलप्रवहणं, बीजवपनं, कणमर्दनं, वृक्षादिरोपणं,भृत्यकर्मारम्भः, ऋणग्रहणं दानं च, जलाशयारम्भः।
तिथि १३ भौमे ज्येष्ठायां-मुहूर्ताभावः।
तिथि १४ बुधे -रिक्तादोषः।
तिथि ३० गुरौ पूर्वाषाढायां-मासान्तदोषः।

पं.४० पौष कृष्ण ३० गुरौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २५४० अयनांशाः २३/५०/३०

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
०	५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

के.१० | शु.८ | ११ मं. | सू.बु. | ९ | १२ | ६ | ९ | ३ | ५ | श. गु. | २ | ४ रा.

राशि फलम्

मेष [illegible]
वृष [illegible]
मिथुन [illegible]
कर्क [illegible]
सिंह [illegible]
कन्या [illegible]
तुला [illegible]
वृश्चिक [illegible]
धनु [illegible]
मकर [illegible]
कुम्भ [illegible]
मीन [illegible]

अथ [illegible]

सूर्य	ॐ [illegible] सः सूर्याय स्वाहा।
सोम	ॐ [illegible] सः सोमाय स्वाहा।
भौम	ॐ [illegible] सः भौमाय स्वाहा।
बुध	ॐ [illegible] सः बुधाय स्वाहा।
गुरु	ॐ [illegible] सः गुरवे स्वाहा।
शुक्र	ॐ [illegible] सः शुक्राय स्वाहा।
शनि	ॐ [illegible] सः शनये स्वाहा।
राहु	ॐ [illegible] सः राहवे स्वाहा।
केतु	ॐ [illegible] सः केतवे स्वाहा।

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल खाड़ या दूध से बने पदार्थ का सेवन करें। यदि पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आँख वाले) भिक्षु को गया श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अंतिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावें। चाँदी, श्वेत वस्त्र, खांड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, [illegible] क्ल पक्षः।

[illegible] जनवरी २००० ई. (राष्ट्रीय पौष १७ - माघ १) [illegible] ऋतुः। [illegible] सौम्यायन शिशिर ऋतुः।

दि.मा. घ.	प.	पौष शुक्ल तिथि ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं. मि.	करण क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदयिका योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	र.क्रा.द. अं. क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गति	अं.	चन्द्रास्त घं. मि.
२६	१४	१	शु.	४५	२५	रा.	१२	५५	पूर्वाषाढ़ा	५	२९	दि.	८	५७	व्याघात	२६	३०	सा.	५ २१	कि	१३	३	बव	४५	२५	प्रवर्धमान	७	१६	२२	१७	मकर	२१	५३	६ ४५	५ १५	२२ २७	८	२२	२	१०	६१ [illegible]	+ ३	५ ५८
२६	१६	२	श.	४९	१९	रा.	२	२९	उत्तराषाढ़ा	११	६	दि.	११	११	हर्षण	२६	५३	सा.	५ ३०	वा	१७	२२	कौ	४९	१९	राक्षस	८	१७	२३	१८				६ ४५	५ १५	२२ १९	८	२३	३	३१	६१ [illegible]	+ ४	६ ५०
२६	१८	३	र.	५२	१	रा.	३	३३	श्रवण	१५	४५	दि.	१	३	वज्र	२६	२३	सा.	५ १८	तै	२०	४०	ग	५२	१	गद	९	१८	२४	१९	कुम्भ	४७	३२	६ ४५	५ १५	२२ ११	८	२४	४	५१	६१ [illegible]	+ ४	७ ४३
२६	१९	४	सो.	५३	३४	रा.	४	११	धनिष्ठा	१९	१८	दि.	२	२८	सिद्धि	२५	३	दि.	४ ३६	व	२२	४७	वि	५३	३४	शुभ	१०	१९	२५	२०				६ ४५	५ १५	२२ ४	८	२५	६	११	६१ [illegible]	+ ४	८ ३७
२६	२०	५	मं.	५३	४६	रा.	४	१४	शतभिषा	२१	३६	दि.	३	२२	व्यतिपात	२२	४०	दि.	३ ४८	बव	२३	४०	बा	५३	४६	मृत्यु	११	२०	२६	२१				६ ४४	५ १६	२१ ५६	८	२६	७	३१	६१ [illegible]	+ ५	९ ३१
२६	२२	६	बु.	५२	४२	रा.	३	४१	पूर्वाभाद्र	२२	३६	दि.	३	४६	वरीयान	१९	१७	दि.	२ २७	कौ	२३	१४	तै	५२	४२	पद्म	१२	२१	२७	२२	मीन	७	२१	६ ४४	५ १६	२१ ४८	८	२७	८	५१	६१ [illegible]	+ ५	१० २६
२६	२४	७	गु.	५०	२५	रा.	२	५४	उत्तराभाद्र	२२	२५	दि.	३	४२	परिघ	१४	५६	दि.	१२ ४२	ग	२१	३३	व	५०	२५	छत्र	१३	२२	२८	२३				६ ४४	५ १६	२१ ३६	८	२८	१०	१०	६२ [illegible]	+ ६	११ २२
२६	२६	८	शु.	४७	७	रा.	१	३४	रेवती	२१	८	दि.	३	१०	शिव	९	४३	दि.	१० ३६	वि	१८	४६	बव	४७	७	श्रीवत्स	१४	२३	२९	२४	मेष	२१	८	६ ४३	५ १७	२१ २५	८	२९	११	२९	६१ [illegible]	+ ६	१२ २०
२६	२८	९	श.	४२	५६	रा.	११	५३	अश्विनी	१९	२	दि.	२	२०	सिद्ध	३ / ५३	४२ / २०	प्रा.	६ १२ / ५ ३२	वा	१४	५७	कौ	४२	५६	सौम्य	१५	२४	१	२५				६ ४३	५ १७	२१ १३	९	०	१२	४७	६१ [illegible]	+ ६	१ २०
२६	३०	१०	र.	३८	३	रा.	९	५५	भरणी	१६	२	दि.	१	७	शुभ	४९	४८	रा.	२ ३७	तै	१०	२९	ग	३८	३	कालदण्ड	१६	२५	२	२६	वृष	३०	९	६ ४२	५ १८	२१ २	९	१	१४	५	६१ [illegible]	+ ७	२ २२
२६	३२	११	सो.	३२	३७	रा.	७	४५	कृत्तिका	१२	२९	दि.	११	४२	शुक्ल	४२	१३	रा.	११ ३५	व	५	२०	वि	३२ / ५१	३७ / ४४	स्थिर	१७	२६	३	२७				६ ४२	५ १८	२० ५१	९	२	१५	२२	६१ [illegible]	+ ७	३ २७
२६	३४	१२	मं.	२६	५१	सा.	५	२५	रोहिणी	८	३१	दि.	१०	५	ब्रह्म	३४	२४	रा.	८ २७	वा	२६	५१	कौ	५३	५३	मातंग	१८	२७	४	२८	मिथुन	३६	२६	६ ४१	५ १९	२० ३८	९	३	१६	३९	६१ [illegible]	+ ८	४ ३३
२६	३६	१३	बु.	२०	५६	दि.	३	३	मृगशिरा	४	२१	दि.	८	२५	ऐन्द्र	२६	३०	सा.	५ १७	तै	२०	५६	ग	२८	१	अमृत	१९	२८	५	२९				६ ४१	५ १९	२० २८	९	४	१७	५५	६१ १६	+ ८	५ ३८
२६	३८	१४	गु.	१५	७	दि.	१२	४३	आर्द्रा	० / ५६	१४ / ४	प्रा.	६ / ५	४६ / ३२	वैधृति	१८	४२	दि.	२ ९	व	१५	७	वि	४२	२१	काण	२०	२९	६	३०	कर्क	४२	१७	६ ४०	५ २०	२० १७	९	५	१९	११	६१ १५	+ ८	६ ३९
२६	४१	१५	शु.	९	३५	दि.	१०	३०	पुष्य	५२	४७	रा.	३	४७	विष्कुंभ	११	७	दि.	११ ७	बव	९	३५	बा.	३७	३	उत्पात	२१	३०	७	१				६ ४०	५ २०	२० ५	९	६	२०	२६	६१ १५	+ ९	+ +

मकर राशिः२१।५३ (दि.३।३०)। मु. जमातुल विदा। ● (दि.३।१०) या.। तदुपरि सर्वार्थ [illegible]
चन्द्र दर्शनम् मु.३० समा समताकरम्। सौम्य श्रागम सुभिक्ष। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.२२।६ (दि. [illegible]
कुम्भ राशिः४७।३२ (रा.१।४६)। पंचक (पचखा) आरम्भः। मु. सव्वाल १० हिजरी सन् १४ [illegible]
भद्रा घ.२२।४७ (दि.३।५२) उ. घ.५३।३४ (रा.४।११) या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ [illegible]
⊙ उत्तराषाढ़ा नक्षत्रे रविः घ.३१।४८ (रा.७।२७)। (ङ) पुण्यकालः। परा २० वा ४० घटी [illegible]
मीन राशिः ७।२१ (दि.९।४०)। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.२२।३६ (दि.३।४६) उ.। [illegible]
भद्रा घ.५०।२५ (रा.२।५४) उ.। गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती ७। लोहरी (जम्मू-काश्मीर-पं [illegible]
मेष राशिः २१।८ (दि.३।१०)। पंचक (पचखा) समाप्तिः। भद्रा घ.४८।४६ (दि.२।१३) या.। ⊙ स [illegible]
मकर संक्रान्ति जन्य पुण्यकालः [illegible] गंगासागरे, गंगाधाम सर्वत्र, नद्यां तीर्थे वा स्नानम्। [illegible]
वृष राशिः३०।९(रा.६।४६)। दोषसंघ विनाशको रवियोगः घ.[illegible] (छ) रवियोगः घ.[illegible]
भद्रा घ.५।२० (दि.८।५०) उ. घ.३२।३७ (रा.७।४५) या.। पुत्रदा एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषां [illegible]
मिथुन राशिः ३६।२६ (रा.९।४५)। भौम प्रदोष व्रतम् १२। [illegible]
सर्वार्थसिद्धियोगः घ.४।२१ (दि.८।२५) या.। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.[illegible]
कर्क राशिः४२।१७ (रा.१२।३५)। भद्रा घ.१५।७ (दि.१२।४३) उ. घ.४२।२१ (रा.[illegible]
स्नानदानादौ पूर्णिमा १५। पुष्य नक्षत्रयुता पूर्णिमा पुण्यतमा। शाकम्भरी जयन्ती १५। [illegible]

[illegible] (ग) [illegible] (घ) [illegible] (ङ) [illegible] (च) [illegible] शिशिर (च) [illegible] (छ) [illegible] (ज) [illegible] राष्ट्रीय(झ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	शु.	८	२५	५६	१२	१०	७	३०	३०	४७	१६	८	१८	८	१८	९९	५३	०	१	४०	२६	३	[illegible]	७	१३	३	२५	७२	२०	०	१५	५०	५६	०	३४	३	१०	५४	३९
२	श.	९	८	९	४३	१०	८	१७	४६	४७	११	८	१९	४८	११	१००	६	०	१	४३	२६	३	[illegible]	७	१४	१५	४५	७२	२३	०	१५	५०	२२	०	२०	३	१०	५१	२८
३	र.	९	२०	३३	१७	१०	९	४	५७	४७	१०	८	२१	२८	१७	१००	२२	०	१	४६	[illegible]	३	[illegible]	७	१५	२८	७	७२	२९	०	१५	[illegible]	[illegible]	०	२१	३	१०	[illegible]	[illegible]
४	सो.	१०	२	९	५०	१०	९	५२	७	४७	५	८	२३	८	३१	१००	४३	०	१	५०	[illegible]	४	[illegible]	७	१६	४०	३६	७२	४२	०	१५	[illegible]	३४	०	[illegible]	३	१०	[illegible]	[illegible]
५	मं.	१०	१५	२	३६	१०	१०	३९	१२	४७	५	८	२४	४९	२२	१०१	०	०	१	[illegible]	[illegible]	४	[illegible]	७	१७	५३	[illegible]	७२	[illegible]	०	१५	[illegible]	[illegible]	०	[illegible]	३	१०	[illegible]	[illegible]
६	बु.	१०	२८	१०	२०	१०	११	२६	१७	४७	३	८	२६	३०	२२	१०१	२०	०	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	१९	६	[illegible]	७२	[illegible]	०	१५	[illegible]	[illegible]	०	[illegible]	३	१०	[illegible]	[illegible]
७	गु.	११	११	३२	७	१०	१२	१३	२०	४७	३	८	२८	११	४२	१०१	३९	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	२०	[illegible]	[illegible]	७२	[illegible]	०	१५	[illegible]	६	मा.	[illegible]	३	१०	[illegible]	३३
८	शु.	११	२५	७	४८	१०	१३	०	२३	४७	३	८	२९	५३	२१	१०१	५३	०	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	२१	३१	५३	७३	३	०	१५	[illegible]	[illegible]	०	[illegible]	३	१०	[illegible]	२२
९	श.	०	८	५२	११	१०	१३	४७	२६	४७	३	९	१	२५	१४	१०१	[illegible]	०	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	२२	४४	[illegible]	७३	[illegible]	०	१५	[illegible]	३३	०	[illegible]	३	१०	[illegible]	[illegible]
१०	र.	०	२२	४८	११	१०	१४	३४	२९	४७	१	९	३	७	१३	१०२	१४	०	२	२१	४६	६	[illegible]	७	२३	५८	६	७३	[illegible]	०	१५	[illegible]	[illegible]	०	२०	३	१०	२६	०
११	सो.	१	६	५०	२३	१०	१५	२१	३०	४७	१	९	४	४९	२७	१०२	३१	०	२	२७	५२	६	[illegible]	७	२५	११	२१	७३	[illegible]	०	१५	[illegible]	२१	०	३३	३	१०	२२	५०
१२	मं.	१	२०	५८	४७	१०	१६	८	३१	४७	१	९	६	३१	५८	१०२	[illegible]	०	२	३४	[illegible]	६	[illegible]	७	२६	२४	३९	७३	[illegible]	०	१५	[illegible]	[illegible]	०	४०	३	१०	१९	३९
१३	बु.	२	५	८	४०	१०	१६	५५	३२	४७	१	९	७	१४	४३	१०२	५६	०	२	४१	८	६	[illegible]	७	२७	३७	५९	७३	[illegible]	०	१५	[illegible]	३४	०	४५	३	१०	१६	२८
१४	गु.	२	१९	१७	५५	१०	१७	४२	३३	४७	०	९	८	५७	३९	१०३	१	०	२	४७	५३	६	[illegible]	७	२८	५१	२४	७३	[illegible]	०	१५	[illegible]	[illegible]	०	५०	३	१०	१३	१७
१५	शु.	३	३	१६	२८	१०	१८	२९	३३	४७	०	९	१०	४०	४०	१०३	७	०	२	५४	३८	६	[illegible]	८	०	४	५४	७३	३०	०	१६	[illegible]	[illegible]	०	५५	३	१०	१०	६

पं ४१ पौष शु.८ शुक्रे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २५५३
अयनांशाः २३/५०/३१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	१०	८	०	७	०	३	९
२९	२५	१३	२९	२	२१	१५	१०	१०
११	७	०	५३	१०	३१	५६	३२	३२
२९	४८	२३	२१	१७	५३	१७	२२	२२
६१	८१७	४७	१०१	५	७३	० / १६	३	३
१८	३	३	५३	३५	३	मा	११	११

के.१० — ९ सू.बु. — शु.८ — ११ मं. — ७ — चं.१२ — ६ — १श. गु. — ३ — ५ — २ — ४ रा.

भौमादीनां चारः-

भौमः-शतभिषायां कुम्भ राशौ।
बुधः-धनु राशौ तिथि ८ शुक्रतः मकर राशौ घं.३।५४।
गुरु-आश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-वृश्चिक राशौ तिथि १४ गुरुतः धनु राशौ घं.५६।०
शनिः-(वक्री)भरण्यां १ चरणे मेष राशौ तिथि ७ गुरुतः मार्गी।
राहुः-पुष्य नक्षत्रे ३ चरणे केतुश्च श्रवणे १ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ शु. घ. मि.	२ श. घ. मि.	३ र. घ. मि.	४ सो. घ. मि.	५ मं. घ. मि.	६ बु. घ. मि.	७ गु. घ. मि.	८ शु. घ. मि.	ल.अं.	९ श. घ. मि.	१० र. घ. मि.	११ सो. घ. मि.	१२ मं. घ. मि.	१३ बु. घ. मि.	१४ गु. घ. मि.	१५ शु. घ. मि.
धनु	७ १८	७ १४	७ १०	७ ६	७ २	६ ५८	६ ५४	६ ५०	मकर	८ ३३	८ २९	८ २५	८ २२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मकर	९ ५	९ १	८ ५७	८ ५३	८ ४९	८ ४५	८ ४१	८ ३३	कुम्भ	१० ८	१० ०	९ ५६	९ ५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुम्भ	१० ३[illegible]	[illegible] ३२	१० २८	१० २४	१० २०	१० १६	१० १२	१० ८	मीन	११ ३२	११ २८	११ २४	११ २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन	११ ४[illegible]	[illegible] ०	११ ५६	११ ५२	११ ४८	११ ४४	११ ४०	११ ३६	मेष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मेष	१ ४[illegible]	[illegible] ३८	१ ३४	१ ३०	१ २६	१ २३	१ १९	[illegible]	वृष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष	३ ३९	[illegible]	३ ३२	३ २७	३ २३	३ १९	३ १५	३ ११	मिथुन	[illegible]	५ २३	५ १९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
मिथुन	५ ५३	[illegible] ४९	५ ४५	५ ४१	५ ३७	५ ३३	५ २९	५ २५	कर्क	७ ३९	७ ३५	७ ३१	७ २७	७ २३	७ १९	[illegible]
कर्क	८ १०	[illegible] ६	८ २	७ ५८	७ ५४	७ ५०	७ ४६	७ ४३	सिंह	९ ५३	९ ४९	९ ४५	९ ४१	९ ३३	[illegible]	[illegible]
सिंह	१० [illegible]	[illegible]	१० २५	१० २१	१० [illegible]	१० [illegible]	१० [illegible]	९ ५७	कन्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	१२ [illegible]	[illegible] ३३	१२ २९	१२ २५	१२ २१	१२ १७	१२ १३	१२ ९	तुला	२ २२	२ १८	२ १४	२ १०	२ ६	[illegible]	[illegible]
तुला	२ ५३	[illegible] ४९	२ ४५	२ ४१	२ ३७	२ ३३	२ ३०	२ २६	वृश्चि.	४ ३९	४ ३५	४ ३१	४ २७	४ २३	४ १९	४ १५
वृश्चि.	५ २०	[illegible]	५ २	४ ५८	४ ५४	४ ५०	४ ४७	४ ४३	धनु	६ ४५	६ ४१	६ ३७	६ ३३	६ २९	६ २५	६ २१

फलम्—यह पक्ष पूरे १५ दिन का है। शनिवार का चन्द्रदर्शन मु.३० बाजार में स्थिरता किन्तु अफीम एवं मादक-द्रव्य, तिल, घी में मन्दी तथा खाद्यान्नों में तेजी का रुख। मुसलिम सम्प्रदाय का **जुम्मे की आखिरी नमाज** पक्षारम्भ ७ जनवरी शुक्रवार को सम्पन्न होगी तथा ९ जनवरी रविवार को विश्व प्रसिद्ध **इदुल फितर (ईद) का पर्व सोल्लास** मनाया जायेगा। **गुरु गोविन्द सिंह** की जयन्ती १३ जनवरी गुरुवार को शोभायात्रा तथा अन्य धार्मिक समारोह के साथ सर्वत्र धूम-धाम से मनाई जायेगी। **१४ जनवरी शुक्रवार को मकर राशि का सूर्य** रात २।३० बजे से आयेगा और इसका पुण्यफलकारक अगले दिन **अर्थात् १५ जनवरी शनिवार** को माना जायेगा। यही **मकर संक्रान्ति (खिचड़ी)** का प्रसिद्ध पर्व है। हरिद्वार से गंगा सागर तक सर्वत्र गंगा नदी में तथा अन्य नदियों में स्नान एवं गंगा सागर का विशेष स्नान दान अत्यन्त पुण्यफलदायक है। आज सर्वप्रथम स्नानकर तिल से निर्मित विभिन्न प्रकार के व्यंजन, तिलवा लड्डू खाने के बाद खिचड़ी का भोजन करने का विधान है। आज से सूर्य उत्तरायण हो जाता है एवं खरमास समाप्त होकर विवाहादि शुभकार्यों के लिये मुहूर्त्त मिलने लगते हैं। पुत्रदा एकादशी व्रत का मान सबके लिये १७ जनवरी सोमवारको है। ऋण से मुक्ति पाने के लिये **भौम प्रदोष व्रत** १८ जनवरी को किया जायेगा। **व्रत के लिये पूर्णिमा २०** जनवरी गुरुवार को तथा स्नानदान के लिये पुष्य नक्षत्र से युतपौषी पूर्णिमा, **शाकम्भरी जयन्ती** २१ जनवरी शुक्रवार को होगी। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य ११ जनवरी मंगलवार को रात ७।२७ बजे से आयेगा। उड़द, मूंग, चावल, पटसन, गुड़, कपास, पीपलामूल, लाख, चपड़ी मूंज, सरसों में तेजी। पक्ष के तीन शुक्रवार शुक्रवार, की पूर्णिमा एवं शुक्रवार को ही संक्रान्ति फलतः प्रचण्ड हिमपात एवं शीतलहरी के योग मिल रहे हैं। महिलाओं के लिये यह पक्ष शुभ फल कारक है एवं कोई महिला उच्च पद को प्राप्त करे ऐसे योग हैं।

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ शुक्रे पूर्वाषाढायां-धान्यच्छेदन, जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर (ति.दा.) भूमिक्रयः, जलाशयारम्भः।

तिथि २ शनौ उत्तराषाढायां-विपणिव्यापारः, इष्टिकानिर्माणं।

तिथि ३ रवौ श्रवणे-पुंसवन, सीमन्तः, क्रयः रत्नवस्त्रप्रवाल धारणं, आ.पत्रलेखनं, इष्टिकानिर्माणं अधिकारिणां दर्शनं, नौकाजलयान निर्माणं।

तिथि ४ सोमे धनिष्ठायां-रिक्तादोषः।

तिथि ५ भौमे शतभिषायां-रक्तवस्त्रप्रवालधारणं।

तिथि ६ बुधे पूर्वाभाद्रपदायां-धान्यच्छेदनं, जलयंत्र निर्माणं, मुकदमादायर, (ति.दा.)।

तिथि ७ गुरौ उत्तराभाद्रपदे-गर्भाधानं, पुंसवनं सीमन्त प्रसूतिस्नानं, जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणिव्यापार नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, इष्टिकानिर्माणं, अधिकारिणां दर्शनं, जलाशयारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ८ शुक्रे रेवत्यां-संक्रान्तिजन्यदोषः।

तिथि ९ शनौ अश्विन्यां-रोगविमुक्तस्नानं। रिक्तादोषः।

तिथि १० रवौ भरण्यां-धान्यछेदन, मुकदमासम्बन्धीकार्य।

तिथि ११ सोमे कृत्तिकायां-वर-वरणं, कन्यावरण, धान्यछेदनं।

तिथि १२ भौमे रोहिण्यां-प्रसूतिस्नानं, रक्तवस्त्र प्रवालधारणं।

तिथि १३ बुधे मृगशिरायां-गर्भाधानं, जातकर्म नामकरणं, अन्नप्राशनं, वर-वरणं, कन्यावरणं विपणि व्यापारः, गवांक्रयविक्रयः, [illegible] बीजवपनं, वृक्षादिरोपण, भृत्यकर्मारम्भ गृहारम्भः

विवाह मुहूर्त विमर्शः

[illegible]

(च) शिशिर ऋतु प्रारम्भः। [illegible] सौर माघ मासारम्भः।

गृहप्रवेशः (लग्नं १०)। सर्वदेवप्रतिष्ठा (न.चि.)। जलाशयारम्भः, [illegible] शिल्पविद्यारम्भः। जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा, नूतनवध्वाः पाककर्म।

तिथि १४ गुरौ आर्द्रायां- [illegible] पुंसवन सीमन्तः नामकरणं, अन्नप्राशनं च मुण्डनं (ति.दा.) गवांक्रय-विक्रयः नववस्त्र धारणं, हलप्रवहणं [illegible] भूमिक्रयः, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि १५ शुक्रे पुष्य-[illegible], नामकरणं, अन्नप्राशनं, मुण्डनं (ल.१२) मुण्डनं, वधूप्रवेशः, ल.१२ [illegible] गाधूलि: विपणिव्यापारः, गवांक्रय विक्रयः, नववस्त्रधारणं, अलंकारनिर्माणं, धारणं च हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यस्थापनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, आ.पत्रलेखनं, जलयंत्रकर्म, दत्तकपुत्रग्रहणं, ऋणग्रहणं, दानंच, गृहारम्भः, ल.१२ अधिकारीणांदर्शनं ऋणग्रहणं, जलाशयारम्भः, संचारम्भः, च.शु. जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, नूतनवध्वाःपाककर्म।

९ गु. — १० — सू.बु.के. — ८ — ९ — ७ — गु.श. — ६ — ४ रा.चं. — ३ — ५

राशि फलम्

[illegible]

दि.मा. घ. प.	माघ कृष्ण ति. वा.	तिथि घ. प.	दि. घं. मि.	नक्षत्र	घ. प.	दि. घं. मि.	योग	घ. प.	दि. घं. मि.	करण	आनन्दादि योगाः	तारीखें अं.	फ. सो. रा.	चंद्र राशि
२६ ४३	१ श.	४ ३२	दि. ८ २७	श्लेषा	४९ ५४	रा. [illegible]	[illegible]	[illegible]	प्रा. [illegible]	बा ४ ३१ तै ३० [illegible]	मानस	२२	[illegible]	सिंह
२६ ४५	२ र.	[illegible]	प्रा. [illegible]	मघा	४७ ५५	रा. १ [illegible]	[illegible]	५१ १९	रा. ३ ११	ग ० ७ व [illegible]	मुद्गर	२३	[illegible]	
२६ ४८	४ सो.	५३ ५८	रा. ४ १३	पू.फाल्गुनी	३६ ४५	रा. १ २०	शोभन	४६ ८	रा. १ ५	बव २५ १५ बा ५३ ५८	ध्वज	२४	३ १० ४	
२६ ५०	५ मं.	५२ ३३	रा. ३ ३९	उ.फाल्गुनी	४६ ४३	रा. १ १९	अतिगण्ड	४१ ४८	रा. ११ २१	कौ २३ २५ तै ५२ ३३	धाता	२५	४ ११ ५	कन्या
२६ ५३	६ बु.	५२ २१	रा. ३ ३३	हस्त	४७ ५२	रा. १ ४६	सुकर्मा	३८ २८	रा. १० ०	ग २२ २७ व ५२ २१	आनन्द	२६	५ १२ ६	
२६ ५६	७ गु.	५३ ३१	रा. ४ १	चित्रा	५० २०	रा. २ ४५	धृति	३६ ७	रा. ९ ४	वि २२ ५६ बव ५३ ३१	चर	२७	६ १३ ७	तुला
२६ ५८	८ शु.	५५ ५८	रा. ४ ५९	स्वाती	५४ ३	रा. ४ १२	शूल	३४ ४८	रा. ८ ३१	बा २४ ४४ कौ ५५ ५८	गद	२८	७ १४ ८	
२७ १	९ श.	५९ ३२	प्रा. ६ २५	विशाखा	५८ ५०	रा. ६ ८	गण्ड	३४ १८	रा. ८ १९	तै २७ ४५ ग ५९ ३२	शुभ	२९	८ १५ ९	वृश्चिक
२७ ४	१० र.	६० ०	स. म स्त	अनुराधा	६० ०	स म स्त	वृद्धि	३४ ४२	रा. ८ २८	व ३१ ४८ वि ६० ०	मृत्यु	३०	९ १६ १०	
२७ ७	१० सो.	४ ५	दि. ८ २२	अनुराधा	४ ३४	दि. ८ २४	ध्रुव	३५ ४०	रा. ८ ५०	वि ४ ५ बव ३६ ४०	मानस	३१	१० १७ ११	
२७ १०	११ मं.	९ २६	दि. १० २५	ज्येष्ठा	१० ५६	दि. १० ५५	व्याघात	३६ ५९	रा. ९ २१	बा ९ २६ कौ ४१ ५८	मुद्गर	१	११ १८ १२	धनु
२७ १३	१२ बु.	१४ ४१	दि. १२ २५	मूल	१७ २८	दि. १ ३२	हर्षण	३८ २२	रा. ९ ५४	तै १४ ४१ ग ४७ १९	ध्वज	२	१२ १९ १३	
२७ १६	१३ गु.	१९ ५८	दि. २ ३१	पूर्वाषाढ़ा	२३ ५१	दि. ४ ४	वज्र	३९ २८	रा. १० १९	व १९ ५८ वि ५२ १८	धाता	३	१३ २० १४	मकर
२७ १९	१४ शु.	२४ ३८	दि. ४ २३	उत्तराषाढ़ा	२९ ३९	रा. ६ २४	सिद्धि	४० ५	रा. १० ३४	श २४ ३८ च ५६ ३१	आनन्द	४	१४ २१ १५	
२७ २२	३० श.	२८ २४	सा. ५ ५४	श्रवण	३४ ३३	रा. ८ २१	व्यतिपात	३९ ५७	रा. १० ३१	ना २८ २४ किं. ५९ ४१	स्थिर	५	१५ २२ १६	

चंद्र राशि प्रवेश घ. प.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	रा.क्रा.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	गति
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, माघ कृष्ण पक्षः।

दिनांक २२ जनवरी - ५ फरवरी २००० ई. (राष्ट्रीय माघ २ - १६)
सौम्यायनं याम्यगोलः शिशिर ऋतुः।

सिंहराशिः ४९।५४(रा.२।३७)।अरुणोदयेसमुद्र प्रयाग त्रिवेणी, काश्यां दशाश्वमेधेवा नित्य स्नानारम्भः। माघ मासं सूर्योदये गंगायामन्द्यां(क)
भद्रा घ.२८।१९(सा.५।५९) उ.घ.५६।३२(रा.श.५।१६) या.।नेताजी सुभाषचन्द्र बोसजयन्ती।(घ) विनाशकारोयोगः घ.५०।२०(रा.२।४५)या
सकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। अद्य गणेशोत्पत्तिः। चन्द्रोदय (रा.९।१) वादन चन्द्राय अर्घ्यम्।⊙ श्रवण नक्षत्र रविः घ.३५।१०(ख)
कन्या राशिः१।४३ (दि.७।१९)। ⊙ अभिजित्रिवृत्तः रविः घ.२७।१२ (सा.५।३१)। मृत्युबाणः घ.३४।० (रा.८।१४) या.।
भद्रा घ.५२।१(रा.३।३३) उ.। सर्वार्थसिद्धयोगः घ.४७।५२ (रा.१।४६) या.। दग्ध संघ विनाशका रवियोगः घ.४७।५२ (रा.१।४६)(ग)
तुला राशिः१।६ (दि.२।१५)। भद्रा घ.२२।५६ (दि.३।४७) या.। आचार्य सन्त रामानन्द जयन्ती ७। सर्वाप्ति सप्तमी ७। दग्ध संघ(घ)
अष्टका श्राद्धम् ८। पावणवदस्य विधिः। स्थायी (मुद्गलह) जयद् योगः घ.५४।३ (रा.४।१२) उ. घ.५५।५८ (रा.४।५९) या.।
वृश्चिक राशिः४२।३८ (रा.११।३९)। शनि रिक्ता समायोग सिद्धयोगः घ.५९।३२ (रा.श.६।२५) या.। (ङ) च षट्तिला पाप नाशनी।
भद्रा घ.३१।४८ (रा.७।१८) उ.। (ग) उ.। भारतीय गणतन्त्र दिवसः। राष्ट्रीय ध्वजातोलनम् राष्ट्रगान विविध समारोहश्च।
भद्रा घ.४।५ (दि.८।२२) या.। सर्वार्थसिद्धयोगः घ.४।३४ (दि.८।२४) या. (ख) (रा.८।४२)। मृत्युबाणः घ.३५।१० (रा.८।४२) उ.
धनु राशिः१०।५६(दि.१०।५५)।षट्तिला एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी। तिलदाता च भोक्ता(ङ)
प्रदोष व्रतम् १२। मृत्युबाणः घ.२५।१५ (दि.४।३९) उ.। यात्रायाम् निषिद्धः यमघंट योगः घ.१७।२८ (दि.१।३२) या.।
मकर राशिः०।१८ (रा.१०।३१)। भद्रा घ.१९।५८(दि.२।३१)उ. घ.५२।१८(रा.३।२७)या. ।मासशिवरात्रि व्रतम्१३। मेरु त्रयोदशी(च)
सर्वार्थसिद्धयोगः घ.२९।३९ (रा.६।२४) उ.। (च) (जैन)। मृत्युबाणः घ.२४।१० (दि.४।१२) या.। पश्चिमादशायाम् बुधोदयः।
स्नानदान श्राद्धादौ मौनी अमावस्या ३० पुण्यतमा। मौनव्रता चारण गंगायाम् प्रयाग काश्यां दशाश्वमेध स्नानम्। पश्चिम वाहिनी गंगायाम्(छ)

विवाह मुहूर्त विमर्श

ति.१ शनौ मघायां [illegible] रेखा ९ लग्नं ८ इष्टाः ६ प्र.व.वि.१३(सन्ध्यायां [illegible]) वा लग्नं ९ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१०।
ति.२ रवौ मघायां [illegible] रेखा ९ दिवा लग्नं १२ पञ्चेष्टाभावः। वा लग्नं १२ इष्टाः ६ प्र.व.वि.१० (भो.दा.) वा लग्नं गोधूलि। पर भद्राव्याप्तिः।
ति.४ सोमे उत्तराफाल्गुन्यां भृगुवासर [illegible]।
ति.५ भौमे [illegible] रात्री उत्तराफाल्गुन्यां लग्नं ६ रेखा ७ इष्टाः ५ प्र.व.वि.८ [illegible] रेखा ९ लग्नं ८ इष्टाः ७ प्र.व.वि.१८ वा लग्नं ९ इष्टाः ५ प्र.वि.व.१०
ति.६ बुधे हस्ते रेखा ९ दिवा लग्नं १२ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१२ वा लग्नं गोधूलि वा लग्नं ६ इष्टाः ५ [illegible]
ति.७ गुरौ स्वात्यां रात्री लग्नं ८ रेखा ८ इष्टाः ६ प्र.व.वि.१३ वा लग्नं ९ इष्टाः ६ प्र.व.वि.१५।
ति.८ शुक्रे स्वात्यां [illegible] लग्नं १० रेखा ८ इष्टाः५ प्र.व.वि.१२ (चन्द्र [illegible]) वा लग्नं २ पञ्चेष्टाभावः वा लग्नं गोधूलि, वा रात्री लग्नं ६ इष्टाः ६ प्र.व.वि.१७(भो.दा.)वा लग्नं८ इष्टाः६ प्र.व.वि.१३ वा लग्नं ८ इष्टाः ६ प्र.व.वि.१३ (चं.दा.)।
ति.१० रवौ अनुराधायां शनिदोषः। दिवा लग्नं १२ रेखा ७ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१२ वा लग्नं २ पञ्चेष्टाभावः वा लग्नं गोधूलि परं भद्रा व्याप्तिः।
ति.१० सोमे अनुराधायां भद्राव्याप्तिः।
ति.११ भौमे मूले लग्नं गोधूलि रेखा ६ वा रात्री लग्नं ६ इष्टाः ५ प्र.व.वि.८ वा लग्नं ८ इष्टाः ७ प्र.व.वि.१८ वा लग्नं ९ इष्टाः ५ प्र.व.वि.१०।
ति.१२ बुधे मूले दिवा लग्नं ११ रेखा ६ इष्टाः ६ प्र.व.वि.१५।
ति.१३ गुरौ उत्तराषाढायाम् रात्री भद्रोपरान्त लग्नं ९ रेखा ८ इष्टाः ६ प्र.व.वि.१५।
ति.१४ शुक्रे उत्तराषाढायाम् मासान्तादि दोषः सल्लग्नाभावः।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति. वा.	स्पष्ट सोम रा. अं. क. वि.	स्पष्ट मंगल रा. अं. क. वि.	गति	स्पष्ट बुध रा. अं. क. वि.	गति	स्पष्ट गुरु रा. अं. क. वि.	गति	स्पष्ट शुक्र रा. अं. क. वि.	गति	स्पष्ट शनि रा. अं. क. वि.	गति	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फलम्—माघ का महीना प्रायः सभी शुभ कार्यों के लिये श्रेष्ठ माना जाता है। प्रातः उठकर तीर्थ, नदी में स्नान, सुबह का भ्रमण स्वास्थ्य के लिये उत्तम रहता है। तृतीया तिथि का क्षय है एवं दशमी की वृद्धि होने से पक्ष १५ दिन का है। **संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत का मान २४ जनवरी** सोमवार को है, चन्द्रोदय समय रात ९।१ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायगा। माघ कृष्ण चतुर्थी को विघ्नहरण श्रीगणेश जी की उत्पत्ति हुयी थी इसलिये यह हिन्दू जनता का महत्वपूर्ण पर्व है इसे गणेश चौथ नाम से जाना जाता है। **आचार्य सन्त रामानन्द की जयन्ती २७** जनवरी गुरुवार को मनाई जायगी। २८ जनवरी शुक्रवार को **अष्टका श्राद्ध** पार्वण विधि से किया जायगा। **षट्तिला एकादशी व्रत** का मान सबके लिये १ फरवरी मंगलवार को होगा। यह एकादशी सभी पापों का नाश करने वाली होती है। तिल का दान, तिल का भोजन, तिल से स्नान करने का विधान है। **प्रदोष व्रत** २ फरवरी बुधवार को किया जायगा। ३ फरवरी गुरुवार को **मास शिवरात्रि का व्रत** किया जायगा। **स्नान-दान-श्राद्ध सहित मौनी अमावस्या** का पुण्यफलदायी गंगा स्नान ५ फरवरी शनिवार को होगा। प्रयाग, संगम में काशी-दशाश्वमेध में तथा पश्चिम वाहिनी गंगा में स्नान का विशेष महत्व होता है। श्रवण नक्षत्र का सूर्य २४ जनवरी सोमवार को रात ८।४२ बजे से आवेगा। सूर्य की अभिजित् नक्षत्र में निवृत्ति २५ जनवरी मंगलवार को सायं ५।३१ बजे से होगी। पक्ष के तीन शनिवार एवं शनिवार की अमावस्या भारी पड़ेगी। राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण। बर्फ ओला-पाला वर्षा बूंदा-बांदी से भयंकर ठंडक पड़ने का योग मिल रहे हैं। गेहूँ, जौ, चावल, चाँदी, आदि धातुएँ इमारती सामान में तेजी। अलसी अफीम में तेजी का रुख।

(क) तीर्थ वा नियमित स्नानम् पुण्यफलदायकं। अभाव उदास भ्रमणम्। माघ मूलिकाभ्यंजनं। कसला माघ मासारम्भः। यायि (मुद्ग) जयद् योगः घ.४।३१ (दि.८।२७) या.। (छ) स्नानम् विधेयम्। यम तर्पणम् ३०। मन्वादि ३०। सर्वार्थसिद्धयोगः घ.३४।३३ (रा.८।२१) या.।

प.४३ माघ कृष्ण ८ शुक्र स्पष्टग्रहाः अहर्गण २५६५ अयनांशाः २३।५०।३३

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	१०	९	०	८	०	३	९
१३	८	२३	२२	३	८	१६	९	९
२८	११	५८	३५	४२	४०	८	४७	४७
५०	२०	१५	५७	४९	१७	१६	५०	५०
६१	७४३	४६	१०३	७	७३	१	३	३
८	३२	४३	३५	५	४५	२९ मा	११	११

मं.११	१० बु.सू.के.	शु.९
१२		८
९ गु.श.		चं.७
२	४ रा.	६
३		५

भौमादीनां चारः-
भौमः-तिथि १ शनितः पू.भा. घं.५५।३० तिथि १४ शुक्रतः मीन राशौ घं.४३।३६
बुधः-मकर राशौ तिथि ११ भौमतः कुम्भ राशौ घं.२०।१२
गुरुः- अश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-धनु राशौ।
शनिः-भरण्यां १ चरणे।
राहुः-पुष्य ३ चरणे केतुश्च श्रवण १ चरणे। तिथि ४ सोमतः राहुः पुष्य नक्षत्रे २ चरणे केतुश्च उत्तराषाढायाम ४ चरणे घं.१०।२२

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ श.	२ र.	४ सो.	५ मं.	६ बु.	७ गु.	८ शु.	९ श.	१० र.	१० सो.	११ मं.	१२ बु.	१३ गु.	१४ शु.	३० श.
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मकर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुम्भ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मेष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.	रा.
कर्क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तुला	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
धनु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प.४५ माघ कृष्ण ३० शनौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गण २५७४ अयनांशाः २३।५०।३४

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]	११	शु.९
१२	चं.सू.के.	८
९ गु.श.		७
२	४ रा.	६
३		५

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ शनौ श्लेषायां-उग्रकर्माचरणं।
तिथि २/३ रवौ मघायां-वर-वरणं, कन्यावरणं, कणमर्दनं जलयंत्रकर्म, दृष्टिकादहनं (ति.दा.)।
तिथि ४ सोमे पूर्वाफाल्गुन्यां- रिक्तादोषः।
तिथि ५ भौमे उत्तराफाल्गुन्यां-पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूतिस्नानं।
तिथि ६ बुधे हस्ते-जातकर्म नामकरणं कर्णवेधः (ल.१) अक्षरारम्भः विद्यारम्भः, वर-वरणं, कन्यावरणं विपणिव्यापारः, गवांक्रयविक्रयः, नववस्त्रधारणं धान्यस्थापनं, भृत्यकर्म शय्यासनाद्युपभोगः, दत्तकपुत्रग्रहणं (ति.दा.) जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।
तिथि ७ गुरौ चित्रायां-जातकर्म, नामकरणं, विद्यारम्भः वधूप्रवेशः, भद्रापूर्वं (ल.१२) (च.द्रा.) विपणिव्यापारः, नववस्त्रधारणं हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्य स्थापनं, वृक्षादिरोपणं,भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यानाद्युपभोगः, दत्तक पुत्रग्रहणं, आ.पत्रलेखनं, गृहप्रवेशः, लग्नं १२ सर्वदेवप्रतिष्ठा, सेवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।
तिथि ८ शुक्रे स्वात्यां-नामकरणं, वर-वरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः, (ल.१२) क्रयः, नववस्त्रधारणं, अलंकारनिर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, दत्तक पुत्रग्रहणं (ति.दा.) आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं च, ऋणग्रहणं दानं च। सेवारम्भः।
तिथि ९ शनौ विशाखायां-रिक्तादोषः।
तिथि १० रवौ अनुराधायां-प्रसूतिस्नानं वर-वरणं, दत्तकपुत्रग्रहणं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणांदर्शनं, सेवारम्भः, नौकाजलयानर्निमाणं।
तिथि १० सोमे अनुराधायां-गर्भाधानं, जातकर्म, नामकरणं अक्षरारम्भः, वर-वरणं, कन्यावरणं, विपणिव्यापारः हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, आवेदन पत्र लेखनं, अधिकारी दर्शनं, जलाशयारम्भः।
तिथि ११ भौमे ज्येष्ठायां-उग्रकर्माचरणं (ति.दा.) मुहूर्ताभावः।
तिथि १२ बुधे मूले- नामकरणं, विद्यारम्भः, वरवरणं, कन्यावरणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, मुकदमादायर।
तिथि १३ गुरौ पूर्वाषाढायां-पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, वर-वरणं, कन्यावरणं, जलयन्त्रकर्म, मुकदमादायर, भूमिक्रयः, जलाशयारम्भः।
तिथि १४ शुक्रे उत्तराषाढायां-रिक्तादोषः।
तिथि ३० शनौ श्रवणे-मासान्तदोषः।

राशि फलम्

राशि	फलम्
मेष	[illegible] कर्मसिद्धिः
वृष	[illegible] कष्टं
मिथुन	[illegible]
कर्क	[illegible] धनहानिः
सिंह	[illegible] सुखम्
कन्या	[illegible] अर्थनाशः
तुला	[illegible] अपमान
वृश्चिक	[illegible]
धनु	[illegible]
मकर	[illegible]
कुम्भ	[illegible] पीड़ा भयं
मीन	[illegible] सुखं

ई.मा.	ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदयिका योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	र.क्रा.द- अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क.	वि.	रे.अं. घं.	मि.	चन्द्र घं.
२५	१	र.	३०	५९	रा.	६	५५	धनिष्ठा	३८	२२	रा.	९	५२	वरीयान	३८	५६	रा.	१०	५	बव	३०	[illegible]	वा	६०	०	मातंग	६	१६	२३	१७	कुम्भ	६	२८	६	३१	५	२९	१५	४९	९	२२	३८	२३	६०	५७	+	१२	६
२८	२	सो.	३२	२३	रा.	७	२७	शतभिषा	४०	५८	रा.	१०	५३	परिघ	३६	५५	रा.	९	१७	वा.	१	[illegible]	को	३२	२३	अमृत	७	१७	२४	१८				६	३०	५	३०	१५	३०	९	२३	३९	२०	६०	५५	+	१२	७
३१	३	मं.	३२	२६	रा.	७	२८	पू.भाद्रपद	४२	१५	रा.	११	२४	शिव	३३	५५	रा.	८	२	तै.	२	[illegible]	ग.	३२	२६	काण	८	१८	२५	१९	मीन	२६	५७	६	३०	५	३०	१५	१३	९	२४	४०	१५	६०	५४	+	१२	[illegible]
३५	४	बु.	३१	१४	रा.	६	५९	उ.भाद्रपद	४२	२२	रा.	११	२६	सिद्ध	२९	५४	सा	६	२७	व.	१	५०	वि.	३१	१४	लुम्ब	९	१९	२६	२०				६	२९	५	३१	१४	५३	९	२५	४१	९	६०	५२	+	१२	९
३८	५	गु.	२८	४९	सा	६	०	रेवती	४१	२०	रा.	११	०	साध्य	२४	५८	दि.	४	२७	बव	०	[illegible]	वा.	२८/५७	४९/[illegible]	मित्र	१०	२०	२७	२१	मेष	४१	२०	६	२८	५	३२	१४	३५	९	२६	४२	१	६०	५१	+	१२	१०
४१	६	शु.	२५	२५	दि.	४	३८	अश्विनी	३९	२४	रा.	१०	१४	शुभ	१९	१५	दि.	२	१०	तै.	२५	[illegible]	ग.	५३	१७	वज्र	११	२१	२८	२२				६	२८	५	३२	१४	१६	९	२७	४२	५२	६०	४९	+	१२	११
४४	७	श.	२१	८	दि.	२	५४	भरणी	३६	३७	रा.	९	६	शुक्ल	१२	५०	दि.	११	३५	व.	२१	८	वि	४८	३९	ध्वांक्ष	१२	२२	२९	२३	वृष	५०	४५	६	२७	५	३३	१३	५८	९	२८	४३	४१	६०	४८	+	१२	१२
४८	८	र.	१६	१०	दि.	१२	५४	कृत्तिका	३३	१०	रा.	७	४२	ब्रह्म	५/५१	४७/३६	प्रा.	८/५	४५/२३	बव	१६	१०	वा.	४३	२६	धूम्र	१३	२३	३०	२४				६	२६	५	३४	१३	३७	९	२९	४४	२९	६०	४६	+	१२	१
५१	९	सो.	१०	४२	दि.	१०	४३	रोहिणी	२९	१८	सा.	६	९	वैधृति	५०	४३	रा.	२	४३	को.	१०	[illegible]	तै.	३७	४७	प्रवर्धमान	१४	२४	१	२५	मिथुन	५७	१४	६	२६	५	३४	१३	१६	९	०	४५	१५	६०	४५	+	१२	२
५४	१०	मं.	४/५४	[illegible]	प्रा.	८/५	२२/५८	मृगशिरा	२५	११	दि.	४	२९	विष्कुं	४२	५१	रा.	११	३३	ग.	४	[illegible]	व.	[illegible]	[illegible]	राक्षस	१५	२५	२	२६				६	२५	५	३५	१२	५५	१०	१	४६	०	६०	४३	+	१२	३
५८	१२	बु.	५३	९	रा.	३	४०	आर्द्रा	२१	१	दि.	२	४८	प्रीति	३५	५	रा.	८	२६	बव	२६	[illegible]	वा	५३	९	मुसल	१६	२६	३	२७				६	२४	५	३६	१२	२५	१०	२	४६	४३	६०	४२	+	१२	४
१	१३	गु.	४७	३६	रा.	१	२६	पुनर्वसु	१७	२	दि.	१	१३	आयुष्मान	२७	२८	सा.	५	२३	को	२०	[illegible]	तै.	४७	३६	सिद्धि	१७	२७	४	२८	कर्क	३	२	६	२४	५	३६	१२	१४	१०	३	४७	२५	६०	४०	+	१२	५
५	१४	शु.	४२	३२	रा.	११	२४	पुष्य	१३	२७	दि.	११	४६	सौभाग्य	२०	११	दि.	२	२७	ग.	१५	[illegible]	व.	४२	३२	उत्पात	१८	२८	५	२९				६	२३	५	३७	११	५३	१०	४	४८	५	६०	३९	+	१२	६
८	१५	श.	३८	८	रा.	९	३७	श्लेषा	१०	२५	दि.	१०	३२	शोभन	१३	२५	दि.	११	४४	वि.	१०	[illegible]	बव	३८	८	मानस	१९	२९	६	३०	सिंह	१०	२५	६	२२	५	३८	११	३२	१०	५	४८	४४	६०	३७	+	१२	+

कुम्भ राशिः६।२८ (दि.९।६)। पंचक (पचखा) आरम्भः। वल्लभ जयन्ती १। माघे [illegible] पिस्नानम् विधयेम्। ⊙ [illegible]
चन्द्र ☽ दर्शनम् मु.१५ जघन्या महर्घता करम्। समर्घ्याम् समता करम्। (क)
मीन राशिः२६।५७ (सा.५।२७)। मु.जिल्काद ११ हिजरी सन् १४२०। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.४२।१५ (रा.११।२४) उ. [illegible]
भद्रा घ.१।५० (दि.७।३) उ. घ.३१।१४ (रा.६।५९) या.। वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। तिल चतुर्थी ४। [illegible]
मेषराशिः४१।२० (रा.११।१०)। पंचक (पचखा) समाप्तिः। बसन्त पञ्चमी ५। श्रीपंचमी ५। वाणी पूजा। वागीश्वरी [illegible]
सर्वार्थसिद्धियोगः घ.३९।२४ (रा.१०।१४) या.। मृत्युवाण घ.१६।५४ (दि.२।२४) उ.। दोष संघविनाशको रवियोगः घ. [illegible]
वृषराशिः५०।४५ (रा.२।४५) भद्रा घ.२१।८ (दि.२।५४) उ. घ.४८।३९ (रा.१।४५) या.। रथ सप्तमी ७। अरुण [illegible]
भीष्माष्टमी ८। भीष्माय श्राद्धम् तर्पणञ्च सन्ततिलाभाय। ⊙स.कुम्भ राशौ रविः घ.१५।२८ (दि.१२।३३) मु.३० [illegible]
मिथुन राशिः५७।१४ (रा.श.५।२०)। महानन्दानवमी ९। ब्रह्म नायक श्रीहरसू ब्रह्मदेव जयन्ती उत्सवः चैनपुर-रोहतास [illegible]
भद्रा घ.३१।५३ (रा.७।०) उ. घ.५८।५४ (रा.श.५।५८) या.। अनुदया जया एकादशी व्रत स्मार्त्तानाम् ११। [illegible]
वैष्णवानामेकादशी व्रतम्। भीष्म द्वादशी १२। भीष्मोद्देशन तर्पणञ्च दीर्घायुलाभाय। सोपपदा १२ केदार [illegible]
कर्क राशिः३।२ (दि.७।३७)। प्रदोष व्रतम् १३। कल्पादि: १३। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.१७।२ (दि.१।२३) उ. [illegible]
भद्रा घ.४२।३२ (रा.११।२४) उ.। स्थायी (मुद्दालेह) जयद्योगः घ.१३।२७ (दि.११।४६) या.। दोषसर्वविनाशको रवियोग [illegible]
सिंह राशिः१०।२५ (दि.१०।३२)। भद्रा घ.१०।२० (दि.१०।३०) या.। स्नान-दान-व्रतादौ माघी पूर्णिमा १५ पुण्य [illegible]

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति. वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति क.	वि.	स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१ र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२ सो.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९	११
३ मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६	०
४ बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	५०
५ गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	३९
६ शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	२८
७ श.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	१७
८ र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	६
९ सो.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५६	५५
१० मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५३	४४
१२ बु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५०	३३
१३ गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४७	२२
१४ शु.	३	१२	४४	२५	११	१०	१७	४८	४६	२०	१०	२३	१७	२७	२३	१०	०	६	३७	२५	९	४८	९	८	[illegible]	२६	७४	२२	०	१६	५६	१७	३	११	३	८	४१	०
१५ श.	३	२६	४०	५७	११	११	४	८	४६	१५	१०	२३	४०	३७	१०	१८	०	६	४७	१३	९	५२	९	५	४८	४८	७४	२५	०	१६	५९	२८	३	१७	३	८	३७	५०

पं.४५ माघ शु.८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २५८३ अयनांशाः २३/५०/३५

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१	११	१०	०	८	०	३	९
२९	२	६	१८	५	२८	१६	८	८
४४	८	२५	२१	५०	२३	४१	५६	५६
२९	४८	३७	१९	२४	०	५७	५५	५५
६०	८४८	४६	७५	९	७४	२	३	३
४६	४८	२८	३१	१०	१३	४०	११	११

बु.११ | १० सू.के. | शु.९ | १२ मं. | ८ | ९ गु.श. | ७ | २ चं. | ४ रा. | ६ | ३ | ५

भौमादीनां चारः-

भौमः-पूर्वाभाद्रपदायां मीन राशौ, तिथि ४ बुधतः। उत्तराभाद्रपदायां घं.०।४५।

बुधः-कुम्भ राशौ।

गुरुः-अश्विन्यां मेष राशौ।

शुक्रः-धनु राशौ तिथि ९ सोमतः मकर राशौ घं.१८।२४

शनिः-भरण्यां १ चरणे मेष राशौ तिथि ७ शनितः भरण्यां २ चरणे घं.१६।३६

राहुः-पुष्य नक्षत्रे २चरणे केतुश्च उत्तराषाढायाम् ४ चरणे।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ र. घं.	मि.	२ सो. घं.	मि.	३ मं. घं.	मि.	४ बु. घं.	मि.	५ गु. घं.	मि.	६ शु. घं.	मि.	७ श. घं.	मि.	८ र. घं.	मि.	ल.अं.	९ सो. घं.	मि.	१० मं. घं.	मि.	१२ बु. घं.	मि.	१३ गु. घं.	मि.	१४ शु. घं.	मि.	१५ श. घं.	मि.
मकर	७	६	७	२	६	५८	[illegible]	५४	६	५०	६	४६	६	४२	६	३८	कुम्भ	८	६	८	२	७	५८	७	५५	७	५१	७	४७
कुम्भ	८	३८	८	३४	८	[illegible]	[illegible]	२६	८	२२	८	१८	८	१४	८	१०	मीन	९	३४	९	३०	९	२६	९	२३	९	१९	९	१५
मीन	१०	६	१०	२	९	५८	[illegible]	५४	९	५०	९	४६	९	४२	९	३८	मेष	११	१३	११	१०	११	५	११	१	१०	५७	१०	५३
मेष	११	४४	११	४०	११	[illegible]	[illegible]	३२	११	२९	११	२५	११	२१	११	१७	वृष	१	१०	१	६	१	२	१२	५८	१२	५४	१२	५०
वृष	१	४१	१	३७	१	[illegible]	[illegible]	२९	१	२५	१	२१	१	१७	१	१४	मिथुन	३	२३	३	१९	३	१५	३	११	३	८	३	४
मिथुन	३	५५	३	५१	३	[illegible]	[illegible]	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	२७	कर्क	५	४१	५	३७	५	३३	५	२९	५	२५	५	२१
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कर्क	६	१२	६	८	६	[illegible]	[illegible]	१	५	५७	५	५३	५	४९	५	४५	सिंह	७	५५	७	५१	७	४७	७	४३	७	३९	७	३५
सिंह	८	२६	८	२२	८	[illegible]	[illegible]	१४	८	१०	८	७	८	३	७	५९	कन्या	१०	७	१०	४	१०	०	९	५६	९	५२	९	४८
कन्या	१०	३९	१०	३५	१०	[illegible]	[illegible]	२७	१०	२३	१०	१९	१०	१५	१०	११	तुला	१२	२४	१२	२०	१२	१६	१२	१२	१२	८	१२	४
तुला	१२	५५	१२	५१	१२	[illegible]	[illegible]	४३	१२	३९	१२	३६	१२	३२	१२	२८	वृश्चि.	२	४१	२	३७	२	३३	२	२९	२	२५	२	२१
वृश्चि.	३	१२	३	८	३	[illegible]	[illegible]	०	२	५६	२	५३	२	४९	२	४५	धनु	४	४६	४	४२	४	३८	४	३४	४	३०	४	२६
धनु	५	१७	५	१३	५	[illegible]	[illegible]	५	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	मकर	६	३२	६	२८	६	२४	६	२०	६	१६	६	१२

पं.४६ माघ शुक्ल १५ [illegible] स्पष्टग्रहाः अहर्गणः [illegible] अयनांशाः २३/[illegible]

मं.१२ | ११ | श. ९गु. | बु.सू. | २ | ३ | ५ | ४ रा.चं.

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ रवौ धनिष्ठायां-प्रसूतिस्नानं, कन्यावरणं, गवांक्रयविक्रयः, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, दत्तकपुत्रग्रहणं, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनं, नौकाजलयान निर्माणं। तिथि २ सोमे शतभिषायां गर्भाधानं, अन्नप्राशनं, मुण्डनं, (ल.१२) व्रतबन्धः (यज्ञोपवीतः) (ल.१२) (चं.दा.) क्रयः, गवांक्रय विक्रयः, अलंकार निर्माणं धारणं च, हलप्रवहणं, धान्यस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, जलयन्त्रकर्म, आ.पत्रलेखनं, ऋणग्रहणं, दानं च। सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः, नूतनवध्वाः पाकारम्भः। तिथि ३ भौमे पूर्वाभाद्रपदायां पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, इष्टिकादहनं (ति.दा.)। तिथि ४ बुधे उत्तराभाद्रपदायां रिक्तादोषः। तिथि ५ गुरौ रेवत्यां पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, जातकर्म, अन्नप्राशनं, कर्णवेधः (ल.१२) मुण्डनं, (ल.१२) अक्षरारम्भः, वरवरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः (ल.१२) (भौ.दा.) विपणि व्यापारः, क्रयः गवांक्रय विक्रयः नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, इष्टिकानिर्माणं, अधिकारीणां दर्शनं, ऋणग्रहणं, दानं च, भूमिक्रयः, सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा, नूतनवध्वाः पाकारम्भः। तिथि ६ शुक्रे अश्विन्यां-जातकर्म कर्णवेधः (ल.१२) मुण्डनं (ति.दा.) (ल.१२) अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः वधू प्रवेशः (ल.१२), विपणिव्यापारः क्रयः, गवांक्रय [illegible] अलंकारनिर्माणं धारणं च, वृक्षादिरोपणं, शस्त्रधारणं, ऋणग्रहणं दानं च, गृहप्रवेशः (ल.१२) सर्व[illegible] सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा। तिथि ७ शनौ भरण्यां-इष्टिकादहनं, [illegible] तिथि ८ रवौ कृत्तिकायां-वर वरणं, कन्यावरणं, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं, इष्टिकादहन (ति.दा.)। तिथि ९ सोमे रोहिण्यां रिक्तेतरे-गर्भाधानं, जातकर्म अन्नप्राशनं, उपनयनं, (ल.२) वर वरणं, कन्यावरणं, [illegible] द्विरागमनं, (ल.२) विपणिव्यापारः अलंकारनिर्माणं, धारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं भूम्यामलकस्थापनं, [illegible] भृत्यकर्मारम्भः शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, गृहारम्भः (ल.२) (भूमिसुप्ता) गृहप्रवेशः (ल.२) सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा। तिथि १०/११ भौमे मृगशिरायां पुंसवनं, सीमन्तः [illegible] स्नानं, रक्तवस्त्र प्रवालरत्न धारणं, हलप्रवहणं। तिथि १२ बुधे आर्द्रायां विद्यारम्भः उपनयनं, ल.११ वा.२ भूम्यामलकस्थापनं, पुष्करसारार- लतः पुनर्वसु नामकरण अक्षरारम्भः, विद्यारम्भ, गवांक्रय-विक्रयः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं [illegible] (भूसु.) (ल.२) सर्वदेवप्रतिष्ठा, शिल्पविद्यारम्भः, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा। तिथि १३ गुरौ पुनर्वसौ पुष्ये च पुंसवनं, सीमन्तः नामकरणं, अन्नप्राशनं, मुण्डनं, ल.३ द्विरागमन (ल.गोधू.) गवांक्रय-विक्रयः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, धान्यस्थापनं, शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, ऋणग्रहणं, दानं, भूमिक्रयः गृहप्रवेशः गृहारम्भः (पुष्ये ल.५) सर्वदेवप्रतिष्ठा, शिल्पविद्यारम्भः, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा पुष्यभे-जातकर्म, वधूप्रवेशः ल.५ विपणिव्यापारः बीजवपनं, भूम्यामलकस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः

फलम्- असमर्थता में कम से कम तीन दिन माघ के महीने में गंगा नदी अथवा अन्यत्र नदी-तीर्थों में स्नान का पुण्यफल अवश्य प्राप्त करना चाहिए। सोमवार का चन्द्रदर्शन मु.१५ बाजार भाव तेज। दैनिक उपभोग की वस्तुयें जैसे सब्जी, दूध इत्यादि में अच्छी तेजी का रुख चलेगा। मंगलवार को एकादशी का क्षय होने से यह पक्ष १४ दिन का ही है। **बसन्त पञ्चमी का लोक प्रिय एवं सर्वमान्य पर्व** १० फरवरी गुरुवार को सर्वत्र हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। सरस्वती पूजा की धूम रहेगी। आज के दिन वाणी पूजा, वागीश्वरी जयन्ती भी मनाई जायेगी तथा रतिकाम महोत्सव, बसन्तोत्सव की उमंग रहेगी। १२ फरवरी शनिवार को **रथ सप्तमी, अचला सप्तमी** का मान होगा, अरुणोदय बेला में स्नान करने से पुण्यफल की प्राप्ति होती है। सूर्य भगवान को रथोत्सव मनाया जायेगा। **भीष्माष्टमी** १३ फरवरी रविवार को है आज के दिन भीष्म पितामह को उद्देश्यकर श्राद्ध करने से सन्तति सुख की प्राप्ति होती है। **१४ फरवरी सोमवार को महानन्दा नवमी** है आज हरसू ब्रह्म देव की जयन्ती दर्शन पूजन-हवन मेलोत्सव के साथ चैनपुर रोहतास (बिहार) में मनाई जायेगी। **अनुदया १५ फरवरी मंगलवार को जया एकादशी** का मान गृहस्थ लोग करेंगे तथा वैष्णजन १६ फरवरी बुधवार को एकादशी का व्रत रखेंगे। **भीष्म द्वादशी** भी **१६ फरवरी** बुधवार को होगी आज के दिन भीष्म को उद्देश्य कर श्राद्ध तर्पण करने से मनुष्य दीर्घायु होता है। **प्रदोष व्रत** १७ फरवरी गुरुवार को किया जायेगा। स्नान-दान एवं व्रत सहित **माघी पूर्णिमा, सन्त रविदास** जयन्ती (शोभायात्रा) १९ फरवरी शनिवार को मनाई जायेगी। घनिष्ठा नक्षत्र का सूर्य पक्षारम्भ ६ फरवरी रविवार को रात १०।५५ बजे से आवेगा। कुम्भ राशि की सूर्य संक्रान्ति १३ फरवरी रविवार को दिन १३।३३ बजे से लगेगी एवं पक्षान्त १९ फरवरी शनिवार को शतभिषा नक्षत्र का सूर्य रात २।४० बजे से आ जायेगा। इनके फल से ओला-पाला कुहरा, से भीषण सर्दी एवं राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण।

●जलयन्त्रकर्म दत्तकपुत्र ग्रहणं, आ.पत्रलेखनं इष्टिकानिर्माणं, अधिकारीणां दर्शनं, जलाशयारम्भः, सेवारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, नूतनू वध्वाः पाकारम्भः। तिथि १४ शुक्रे पुष्ये-रिक्तादोषः। तिथि १५ शनौ श्लेषायां-उग्रकर्माचरणं, नीलमादिरत्नं कृष्ण वस्त्रं च धारणम्।

विवाह मुहूर्त विमर्श

[illegible]

[illegible] (घ) [illegible] घ.४२।२२ (रा.११।२६) या.। [illegible] रतिकाम महोत्सवः। आममञ्जरी [illegible] दोष संघ विनाशको रवियोगः [illegible] (मुद्दई) जयद् योगः घ.२८।४९ [illegible] (ङ) सप्तमी ७। सूर्य रथोत्सवः। मृत्युवाण [illegible] या.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.२१।८ [illegible] (च) [illegible] मांदावर्याम् [illegible] दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.३३।२० (रा.७।४२) [illegible] (छ) [illegible] च। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.२९।१८ (सा.६।९) उ.। [illegible] सर्वार्थाऽमृतसिद्धयोगौ। दोष संघ विनाशको रवियोगः या.। [illegible] घ.१०।४२ (दि.१०।४३) [illegible]। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.१०।४२ (दि.१०।४३) उ.। **सौर फाल्गुन** [illegible] मृत्युवाण घ.१४।३४ (दि.१२।२६) उ.। या.। दोष संघ विनाशको रवियोगः मासारम्भः। (ज) (दि.११।५७) या.। (झ) सर्वार्थाऽमृतसिद्धियोगौ यायीजनम् घ.२५।६१ (दि.४।२९) या.। (ञ) [illegible] दोषसंघ विनाशको रवियोगः घ.१७।२ (दि.१।२३) उ.। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.१७।२ (दि.१।२३) या.। (ञ) जयन्ती १५। ⊙शतभिषा नक्षत्रे रविः शोभायात्रा। प्रयागे माघ मेला समाप्तिः। माघ स्नान-यम-नियम-संयम समाप्तिः। घ.५०।४४ (रा.२।४०)। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.१०।२५ (दि.१०।३२) या.।

राशि फलम्

मेष	शुभः अर्थागमः	तुला	रोग-शोकं
वृष	सुखोपभोगः	वृश्चिक	धनसुखादि प्राप्तिः
मिथुन	सम्भयं धननाशः	धनु	भयम् शत्रुतः
कर्क	धनादि लाभः	मकर	धनलाभः
सिंह	पीड़ाभयं विग्रहः	कुम्भ	बन्धन भयं
कन्या	अलाभकर स्थितिः	मीन	शोकः धननाशः

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१, फाल्गुन कृष्ण पक्षः।

दिनांक २० फरवरी - ६ मार्च २००० ई. (राष्ट्रीय माघ १ - १६)
सौम्यायनं याम्यगोलः शिशिर ऋतुः।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदयिका योगाः	अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	र.क्रा. अं.	क.	स्पष्ट रा.	अं.	चन्द्रोदय घं.	मि.
२८	१२	१	र.	३४	३७	रा.	८	१३	मघा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४०	आतिगण्ड	७	१७	रा.	९	१७	वा	[illegible]	[illegible]	ते.	३४	३७	मुद्गर	२०	१	७	१				६	२२	५	३८	११	१२	१०	६	६	४१
२८	१५	२	सो.	३२	५	रा.	७	११	पू.फाल्गुनी	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	सुकर्मा	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	ते.	३	[illegible]	[illegible]	३२	५	ध्वज	२१	२	८	२	कन्या	२१	४७	६	२१	५	३९	१०	५०	१०	७	७	४२
२८	१९	३	मं.	३०	४४	रा.	६	३८	उ.फाल्गुनी	६	३८	दि.	८	५८	शूल	५३	४१	रा.	३	४१	व	१	२५	वि	३०	४४	धाता	२२	३	९	३				६	२०	५	४०	१०	३०	१०	८	८	३९
२८	२३	४	बु.	३०	३८	रा.	६	३५	हस्त	७	३१	दि.	९	१९	गण्ड	५१	७	रा.	२	४६	बव	०	४१	बा	३०	३८	आनन्द	२३	४	१०	४	तुला	३८	३६	६	१९	५	४१	१०	७	१०	९	९	३५
२८	२६	५	गु.	३१	४१	रा.	७	३	चित्रा	९	४०	दि.	१०	११	वृद्धि	४९	३३	रा.	२	८	का	१	१३	ते.	३२	४१	चर	२४	५	११	५				६	१९	५	४१	९	४५	१०	१०	१०	२१
२८	३०	६	शु.	३४	११	रा.	८	२	स्वाती	१३	९	दि.	११	३४	ध्रुव	४८	११	रा.	१	३८	ग.	३	४	व.	३४	१९	गद	२५	६	१२	६				६	१८	५	४२	९	२३	१०	११	११	२३
२८	३३	७	श.	३७	५७	रा.	९	२८	विशाखा	१७	४४	दि.	१	२३	व्याघात	४९	३	रा.	१	५८	वि	६	८	बव	३७	५७	शुभ	२६	७	१३	७	वृश्चिक	१	३५	६	१७	५	४३	९	०	१०	१२	१२	१५
२८	३७	८	र.	४२	२८	रा.	११	१६	अनुराधा	२३	१८	दि	३	३६	हर्षण	४९	५४	रा.	२	१५	बा.	१०	२२	को	४२	२८	मृत्यु	२७	८	१४	८				६	१७	५	४३	८	३८	१०	१३	१	७
२८	४१	९	सो.	४७	४०	रा.	१	२०	ज्येष्ठा	२९	३१	सा	६	४	वज्र	५१	११	रा.	२	४४	ते.	२५	४	ग.	४७	४०	पद्म	२८	९	१५	९	धनु	२९	३१	६	१६	५	४४	८	१६	१०	१४	१	५८
२८	४४	१०	मं.	५३	४	रा.	३	२९	मूल	३६	४	रा.	८	४१	सिद्धि	५२	३१	रा.	३	१९	व.	२०	२२	वि	५३	४	छत्र	२९	१०	१६	१०				६	१५	५	४५	७	५३	१०	१५	२	४८
२८	४८	११	बु.	५८	१६	रा.	५	३२	पूर्वाषाढ़ा	४२	३४	रा.	११	१६	व्यतिपात	५३	५५	रा.	३	४८	बव	२५	४०	बा	५८	१६	श्रीवत्स	१	११	१७	११	मकर	५९	१	६	१४	५	४६	७	३०	१०	१६	३	३५
२८	५२	१२	गु.	६०	०	स	म	स्त	उत्तराषाढ़ा	४८	३१	रा.	१	३८	वरीयान	५४	४५	रा.	४	८	को	३०	३२	ते.	६०	०	सौम्य	२	१२	१८	१२				६	१४	५	४६	७	१०	१०	१७	४	२२
२८	५५	१२	शु.	२	४९	दि.	७	२१	श्रवण	५३	४१	रा.	३	४१	परिघ	५४	५६	रा.	४	११	ते.	२	४९	ग.	३४	३७	धूम्र	३	१३	१९	१३				६	१३	५	४७	६	४६	१०	१८	५	४
२८	५९	१३	श.	६	२५	दि.	८	४६	धनिष्ठा	५७	४४	रा.	५	१८	शिव	५४	१२	रा.	३	५३	व.	६	२५	वि	३७	३९	प्रवर्धमान	४	१४	२०	१४	कुम्भ	२५	४३	६	१२	५	४८	६	२३	१०	१९	५	४६
२९	३	१४	र.	८	५३	दि.	९	४४	शतभिषा	६०	०	स	म	स्त	सिद्ध	५२	३५	रा.	३	२३	श.	८	५३	च.	३९	२९	राक्षस	५	१५	२१	१५				६	११	५	४९	६	०	१०	२०	+	+
२९	६	३०	सो.	१०	६	दि.	१०	१३	शतभिषा	०	३६	प्रा.	६	२५	साध्य	४९	५८	रा.	२	१०	ना.	१०	६	कि.	४०	३	मुसल	६	१६	२२	१६	मीन	४६	५०	६	११	५	४९	५	३५	१०	२१	+	+

फसली फाल्गुनमासारम्भः। राष्ट्रीय फाल्गुनमासारम्भः। यात्रायाम् निषिद्धः यमघंटयोगः घ.८।१५ (दि.९।४०) या.। (क) चन्द्राय अर्घ्यम्।
कन्या राशिः२१।४७ (दि.३।४)। याम्य (मुद्दइ) जयद् योगः घ.३२।५ (रा.७।११) उ.१० घ.५।२५ (दि.८।२२)। मृत्युबाणः घ.५।२५A
भद्रा घ.१।२५ (प्रा.६।५४) उ.घ.३०।४४ (रा.६।३८) या.। अंगारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.८।३९) वादन(क)
तुला राशिः३८।३६ (रा.९।४५)। सर्वार्थसाद्धियोगः घ.७।३१ (दि.९।१९) या.। मृत्युबाणः घ.८।५६ (दि.९।५३) उ.। पश्चिम दिशायाम् बुधास्तः।
मृत्युबाणः घ.८।२३ (दि.९।४०) या.। याम्य (मुद्दइ) जयद् योगः घ.९।४० (दि.१०।११) उ. घ.३१।४९ (रा.७।३) या.।
भद्रा घ.३४।११ (रा.८।२) उ.। दोष सर्व विनाशको रवियोगः घ.१३।९ (दि.११।३४) उ.। A (दि.८।२२) या.।
वृश्चिक राशिः१।३५ (प्रा.६।५५)। भद्रा घ.६।८ (दि.८।४४) या.। शुभाशुभत्रयगुण्यकरः त्रिपुष्कर योगः घ.१७।४४ (दि.१।२३) या.। (ख)
जानकी जयन्ती ८। मध्यान्हे जन्मोत्सवः विशेषतो मिथिलायां उत्सवः। अष्टका श्राद्धम् ८। अद्य पार्वणावायः श्राद्धस्य सन्तति लाभाय सर्वाभीरः।
धनु राशिः२९।३१ (सा.६।४)। (ख) याम्य (मुद्दइ) जयद् योगः घ.१७।४४ (दि.१।२३) उ. घ.३७।५७ (रा.९।२८) या.।
भद्रा घ.२०।२२ (दि.२।२४) उ. घ.५३।४ (रा.३।२९) या. (घ) व्रतम् १३। चतुर्दश लिंग पूजा। श्रीवैद्यनाथ जयन्ती। कृत्तिवासेश्वर
मकर राशिः५९।१ (रा.शे.५।५०)। विजया एकादशी व्रतम् स्मार्त्तानाम् ११। (ग) घ.५।३६ (दि.८।२७) उ.।
विजया एकादशी व्रतम् वैष्णवानाम्। (ङ) प्रदक्षिणाभीष्ट फलादि द्रव्यः स्त्रीभावधवा पति सौख्य वृद्ध्यैः।
प्रदोष व्रतम् १२। सर्वार्थसाद्धियोगः घ.५३।४१ (रा.३।४१) या.। स्थायी (मुद्दालह) जयद् योगः घ.२।४९ (दि.७।२१) या.। मृत्युबाणः (ग)
कुम्भ राशिः२५।४३ (दि.४।२९) पंचक (पंचखा) प्रारम्भः। भद्रा घ.६।२५ (दि.८।४६) उ. घ.३७।३९ (रा.९।१६) या.। महाशिव रात्रि (घ)
श्राद्धादौ अमा ३०।A (काशी विश्वनाथ) दर्शनम्। सर्वत्र शिव पूजनम् अभिषेक दर्शनम्। रात्रि जागरणम्। ⊙पूर्वा भाद्रपदे नक्षत्रे रविः
मीनराशिः घ.४६।५० (रा.१२।५५)। स्नानदानादौ सोमवती अमावस्या ३०। अश्वत्थमूल प्राणाय विष्णुसम्पूज्य सम्यक्……(ङ)

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति	
१	र.	४	१०	२६	४२	११	११	५०	२३	४६	१	१०	२३	५०	५५	४	२३
२	सो.	४	२४	३	११	११	१२	३६	३२	४६	३	१०	२३	५५	१८	३	०
३	मं.	५	७	२६	३४	११	१३	२२	३५	४६	०	१०	२३	५८	१८	व४	१४
४	बु.	५	२०	३४	११	११	१४	८	३५	४६	०	१०	२३	५४	४	११	११
५	गु.	६	३	२८	४२	११	१४	५४	३५	४५	५४	१०	२३	४२	५३	१८	४८
६	शु.	६	१६	४	५०	११	१५	४०	२९	४५	५०	१०	२३	२४	५	२५	४०
७	श.	६	२९	२९	३०	११	१६	२६	१९	४५	५०	१०	२२	५८	१५	३१	३१
८	र.	७	११	४२	५	११	१७	१२	९	४५	४७	१०	२२	२६	४४	३८	४१
९	सो.	७	२३	४८	४२	११	१७	५७	५६	४५	४५	१०	२१	४८	३	४८	२०
१०	मं.	८	५	४९	४१	११	१८	४३	४१	४५	४१	१०	२०	५९	४३	५०	१६
११	बु.	८	१७	५२	८	११	१९	२९	२२	४५	३६	१०	१९	५९	२८	५३	३०
१२	गु.	९	०	०	५०	११	२०	१४	५८	४५	२५	१०	१८	५६	५८	५८	४५
१२	शु.	९	१२	१८	११	११	२१	०	३३	४६	२०	१०	१७	४७	१३	६०	२७
१३	श.	९	२४	५०	२७	११	२१	४५	२३	४५	१०	१०	१६	३६	४६	६०	२०
१४	र.	१०	७	४३	२३	११	२२	३०	३३	४५	२	१०	१५	२९	२६	६०	२८
३०	सो.	१०	२०	३६	३१	११	२३	१५	३५	४५	०	१०	१४	२८	५८	५३	१३

ति.	वा.	स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	र.	०	६	५७	५	९	५७	९	७	३	१३	७४	२६	०	१७	२	४५	३	२४	३	८	३४	४०
२	सो.	०	७	७	२	१०	०	९	८	१७	३१	७४	२८	०	१७	६	९	३	३२	३	८	३१	२९
३	मं.	०	७	१७	२	१०	८	९	९	३२	७	७४	३०	०	१७	९	४१	३	३९	३	८	२८	१८
४	बु.	०	७	२७	१०	१०	१३	९	१०	४६	३७	७४	३०	०	१७	१३	२०	३	४५	३	८	२५	७
५	गु.	०	७	३७	२३	१०	१५	९	१२	१	७	७४	३३	०	१७	१७	५	३	५१	३	८	२१	५६
६	शु.	०	७	४७	३८	१०	२०	९	१३	१५	४०	७४	३५	०	१७	२०	५६	३	५८	३	८	१८	४५
७	श.	०	७	५७	५८	१०	२६	९	१४	३०	१५	७४	३६	०	१७	२४	५४	४	५	३	८	१५	३४
८	र.	०	८	८	२४	१०	३०	९	१५	४४	५५	७४	३९	०	१७	२८	५९	४	११	३	८	१२	२३
९	सो.	०	८	१८	५४	१०	३४	९	१६	५९	३०	७४	४५	०	१७	३३	१०	४	१६	३	८	९	१२
१०	मं.	०	८	२९	२८	१०	३९	९	१८	१४	१५	७४	४५	०	१७	३७	२६	४	२२	३	८	६	१
११	बु.	०	८	४०	७	१०	४५	९	१९	२९	०	७४	४८	०	१७	४१	४८	४	२७	३	८	२	५०
१२	गु.	०	८	५०	५२	१०	५२	९	२०	४३	४८	७४	५०	०	१७	४६	१५	४	३४	३	७	५९	३९
१२	शु.	०	९	१	४३	१०	५७	९	२१	५८	३८	७४	५०	०	१७	५०	४९	४	३९	३	७	५६	२८
१३	श.	०	९	१२	४०	११	४	९	२३	१३	२८	७४	५३	०	१७	५५	२८	४	४५	३	७	५३	१७
१४	र.	०	९	२३	४४	११	१०	९	२४	२८	२१	७४	५५	०	१८	०	१३	४	५०	३	७	५०	६
३०	सो.	०	९	३४	५४	११	१६	९	२५	४३	१६	७४	५७	०	१८	५	३	४	५५	३	७	४६	५५

फलम्—द्वादशी तिथि की वृद्धि होने से यह पक्ष १६ दिन का है। **अंगारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान २२ फरवरी मंगलवार को है, चन्द्रोदय रात ८।३९ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायगा। मंगलवार की गणेश चतुर्थी अत्यन्त पुण्यफलदायिनी मानी जाती है। **जानकी जयन्ती** २७ फरवरी रविवार को मनाई जायेगी। मध्यान्ह बेला में सर्वत्र जानकी जी का जन्मोत्सव मनाया जायगा। मिथिला प्रान्त में विशेष उत्साह के साथ यह पर्व मनाया जाता है। सन्तान प्राप्ति के निमित्त **अष्टका का श्राद्ध** २७ फरवरी रविवार को किया जायगा। गृहस्थो के लिये **विजया एकादशी** व्रत का मान १ मार्च बुधवार को होगा तथा वैष्णवजनों के लिये एकादशी २ फरवरी गुरुवार को होगी। ३ मार्च शुक्रवार को प्रदोष का व्रत किया जायगा। वर्षभर का बहुप्रतीक्षित पर्व **महाशिवरात्रि** ४ मार्च शनिवार को किया जायगा। आज के दिन भगवान वैद्यनाथ जयन्ती मनाई जायगी। हिन्दू समाज इस दिन को अत्यन्त श्रद्धा एवं शिव भक्ति से मनाते हैं देश के प्रत्येक छोटे-बड़े शिवमन्दिर सुसज्जित रहेंगे। श्राद्ध के लिये **अमावस्या** ५ मार्च रविवार को मानी जायेगी तथा स्नानदान सहित **सोमवती** का मान ६ मार्च को होगा। सौभाग्यवती महिलायें पति सौख्य वृद्धि के निमित्त पीपल वृक्ष में भगवान् विष्णु का [illegible] मानकर उनका पूजन करेंगी तथा [illegible] -के उच्चारण के साथ पीपल वृक्ष की १०८ परिक्रमा करेंगी। [illegible] नक्षत्र का सूर्य ४ मार्च शनिवार को दिन [illegible] आयेगा। [illegible] सोमवार, सोमवार को अमावस्या [illegible] होना [illegible] पत्थर के संकेत। सोने-चांदी का [illegible]। [illegible] आ जाने ऐसे योग बन रहे हैं। शेयर बाजार में तेजी का रुख [illegible] आ जायगा।

पं.४७ फाल्गुन कृष्ण ८ रवौ सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २५९७ अयनांशः २३/५०/३७

भौमादिनां चारः—
भौमः-उत्तराभाद्रपदायां मीन राशौ।
तिथि ७ शनिवारे रेवत्यां [illegible]
बुधः-कुम्भ राशौ। तिथि ३ मार्गी [illegible]
गुरु-अश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्र-मकर राशौ।
शनि-[illegible]
राहु-[illegible]

दैनिक लग्न सारिणी

	१ र.	२ सो.	३ मं.	४ बु.	५ गु.	६ शु.	७ श.	८ र.	९ सो.	१० मं.	११ बु.	१२ गु.	१२ शु.	१३ श.	१४ र.	३० सो.
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

र.४८ फाल्गुन कृ ३० सोमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २६०५ अयनांशः २३/५०/३८

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ रवौ मघायां पूर्वाफाल्गुन्यां च-प्रसूति स्नानं विद्यारम्भः [illegible], कन्यावरणं, जलयन्त्रकर्म, मुकदमादायरस्थापनं कार्यं, इष्टिका [illegible] (ति.दा.)। तिथि २ सोमे पूर्वाफाल्गुन्यां-उ.फा.-च जातकर्म, नामकरणं [illegible] (ल.३) वर-वरणं, कन्यावरणं वधूप्रवेश द्विरागमनं, [illegible] धारणं च, हलप्रवहणं, बीजवपनं, [illegible] वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भ, [illegible] अधिकारीणां दर्शनं, गृहारम्भ (ल.३) [illegible] तिथि ४ बुधे [illegible] वर-वरणं, कन्यावरणं, वधूप्रवेशः, द्विरागमनं विपणि व्यापारः क्रयः, नवम्बरधारणं, हलप्रवहणं बीजवपनं, धान्यस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः शस्त्रधारणं, शय्यासनाद्युपभोगः, दत्तकपुत्र ग्रहणं, आभूषणधारणं, अधिकारीणांदर्शनं, ऋणग्रहणं दानं च, गृहारम्भः (ल.११) गृहप्रवेशः (विशाखायां) सर्वदेवप्रतिष्ठा संचारम्भः, नौकानलयानिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः, जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा।

तिथि ६ शुक्रे स्वात्यां-नामकरणं, विद्यारम्भः, वर-वरणं, कन्या [illegible] वधूप्रवेशः (ल.११), क्रयः नववस्त्र धारणं [illegible] धारणं च, सर्वदेवप्रतिष्ठा। तिथि ७ शनौ [illegible] (ति.दा.) [illegible] तिथि ८ रवौ [illegible] अधिकारीणां दर्शनं, संचारम्भः। तिथि ९ सोमे [illegible] तिथि १० भौमे मूले-पुंसवनं, [illegible]

विवाह मुहूर्त विमर्शः

ति.१ रवौ मघायां सूर्यवेधादसत्। दिवा लग्ने १ रेखा ७ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं १२ पञ्चकाभावः।
ति.२ सोमे उत्तराफाल्गुन्यां लग्नं गोधूलि: [illegible] लग्नं ६ रेखा १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०½ (भौम-[illegible]) वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि १२
ति.३ भौमे उत्तराफाल्गुन्यां [illegible] रात्रौ हस्ते भौमवेधः। आ. लग्नं ८ रेखा ५ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०।
ति.४ बुधे हस्ते दिवा लग्ने पञ्चकाभावः
ति.५ गुरौ स्वात्यां सूर्यवेधः कालिसम्भः [illegible] एकार्गल, [illegible] रेखा ६ आ. लग्नं गोधूलि: वा लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५½ (भौम दा.) वा लग्नं ८ इष्टाः ६ ग्र.व .वि.१२ वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१७।
ति.६ शुक्रे स्वात्यां पूर्व दोषः दिवा लग्ने पञ्चकाभावः।
ति.७ शनौ अनुराधायां शनिवेधः एकार्गलं रेखा ८ आ. लग्नं गोधूलि: वा रात्रौ लग्नं ६ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५½ (सप्तम भौ.दा.) वा लग्नं ८ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१० वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२ (द्वादश चं.दा.)।
ति.८ रवौ अनुराधायां शनिवेधः एकार्गलं रेखा ८ दिवा लग्ने पञ्चकाभावः।
ति.९ सोमे मूले लग्न गोधूलि: रेखा ८ वा लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०½ (सप्तम भौम.दा.) वा लग्नं ८ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५ वा लग्नं १ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१२।
ति.१० भौमे मूले रेखा ८ दिवा लग्ने ११ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१३। परं भद्राव्याप्तिः।
ति.११ बुधे उत्तराषाढायाम् केतुयुति व्यतिपातः।
ति.१२ गुरौ उत्तराषाढायाम् केतुयुतिः पातः एकार्गलश्च। आ. लग्नं गोधूलि: रेखा ७ वा लग्नं ६ इष्टाः ५ ग्र.व.वि.१०½ (सप्तम भौ.दा.) वा लग्नं ८ इष्टाः ६ ग्र.व.वि.१५।

राशि फलम्

मेष — विवादितः सुखं
वृष — सोऽस्यं कार्यसिद्धिः
मिथुन — कलिविग्रहः कृच्छ्रा
कर्क — [illegible]
सिंह — [illegible]
कन्या — [illegible]
तुला — [illegible]
वृश्चिक — [illegible]
धनु — [illegible]
मकर — [illegible]
कुम्भ — [illegible]
मीन — [illegible]

● तिथि ११ बुधे पूर्वाषाढायां-विद्यारम्भः वर-वरणं, कन्यावरणं, जलयंत्रकर्म, मुकदमादायर (ति.दा.) जलाशयारम्भः।

तिथि १२ गुरौ उत्तराषाढायां-गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, जातकर्म, नामकरणं, वर-वरणं, कन्यावरणं, विपणि व्यापारः, नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं धान्यस्थापनं चुल्लीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भ, इष्टिकानिर्माणं, अधिकारीणां दर्शनं, सर्वदेवप्रतिष्ठा, जलाशयारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः। तिथि १२/१३ शुक्रे श्रवणे-गर्भाधानं, अक्षरारम्भः विद्यारम्भः कन्यावरणं, क्रयः, अलंकारनिर्माण धारणं च, हलप्रवहणं, शय्यासनाद्युपभोगः आ. [illegible] [illegible], [illegible] दानं च।

तिथि १३ शनौ धनिष्ठायां-मुण्डनमात्र। तिथि १४ रवौ शतभिषायां-[illegible]स्नानं। तिथि ३० सोमे शत.पूर्वाभा.प.-मासान्तदोषः।

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं. मि.	क.	घ.	प.	क.	घ.	प.	औदयिका योगाः	अं.	फ.	सो.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	र.क्रां.द- अं.	क.	रा.	अ.		
२१	१०	१	मं.	९	५९	दि.	१०	१०	पू.भाद्रपद	२	१४	दि.	७	४	शुभ	४६	१९	रा.	[illegible] ४२	बव	९	५९	बा	३९	१९	काण	७	१७	२३	१७				६	१०	५	५०	५	१२	१०	२२	५४		
२१	१४	२	बु.	८	३८	दि.	९	३६	उ.भाद्रपद	२	३७	दि.	७	१२	शुक्ल	४१	३९	रा.	[illegible] ४९	कौ	८	३८	तै	३७	२१	लुम्बक	८	१८	२४	१८				६	९	५	५१	४	४८	१०	२३	५५	३	[illegible]
२१	१८	३	गु.	६	५	दि.	८	३५	रेवती	१	५१	दि.	६	५३	ब्रह्म	३६	१७	रा.	[illegible] ४०	ग	६	५	व	३४	१९	मित्र	९	१९	२५	१९	मेष	[illegible]	५१	६	९	५	५१	४	२५	१०	२४	५५	६	[illegible]
२१	२१	४	शु.	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	अश्विनी	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	[illegible]	ऐन्द्र	३०	११	सा	[illegible] १२	वि	२	३३	बव	[illegible]	[illegible]	वज्र	१०	२०	२६	२०				६	८	५	५२	४	१	१०	२५	५५	७	[illegible]
२१	२५	६	श.	५३	५	रा.	३	२१	कृत्तिका	५४	९	रा.	३	४७	वैधृति	२३	२७	दि.	[illegible] ३०	कौ	२५	३७	तै	५३	५	ध्वज	११	२१	२७	२१	वृष	११	३४	६	७	५	५३	३	३८	१०	२६	५५	६	५९
२१	२९	७	र.	४७	३१	रा.	१	६	रोहिणी	५०	२२	रा.	२	१५	विष्कुम्भ	१६	१२	दि.	[illegible] ३५	ग	२०	१८	व	४७	३१	धाता	१२	२२	२८	२२				६	६	५	५४	३	१५	१०	२७	५५	३	५९
२१	३२	८	सो.	४१	३७	रा.	१०	४५	मृगशिरा	४६	१९	रा.	१२	३८	प्रीति	८	३८	दि.	[illegible] ३३	वि	१४	३४	बव	४१	३७	आनन्द	१३	२३	२९	२३	मिथुन	१८	२०	६	६	५	५४	२	५१	१०	२८	५४	५८	५९
२१	३६	९	मं.	३५	३९	रा.	८	२२	आर्द्रा	४२	८	रा.	१०	५६	आयुष्मान	[illegible]	[illegible]	प्रा.	[illegible]	बा	८	३८	कौ	३५	३९	चर	१४	२४	३०	२४				६	५	५	५५	२	२७	१०	२९	५४	५१	५९
२१	४०	१०	बु.	२९	४७	सा	५	५९	पुनर्वसु	३८	६	रा.	९	१८	शोभन	४५	३०	रा.	[illegible] १६	तै	२	४३	ग	[illegible]	[illegible]	गद	१५	२५	१	२५	कर्क	२४	६	६	४	५	५६	२	३	११	०	५४	४३	५९
२१	४४	११	गु.	२४	१५	दि.	३	४५	पुष्य	३४	२४	रा.	७	४९	अतिगण्ड	३८	९	रा.	[illegible] १९	वि	२४	१५	बव	५१	४२	शुभ	१६	२६	२	२६				६	३	५	५७	१	४०	११	१	५४	३१	५९
२१	४७	१२	शु.	१९	१०	दि.	१	४३	श्लेषा	३१	१६	सा.	६	३३	सुकर्मा	३१	१५	सा	[illegible] ३३	बा	१९	१०	कौ	४६	५८	मृत्यु	१७	२७	३	२७	सिंह	३१	१६	६	३	५	५७	१	१६	११	२	५४	१८	५९
२१	५०	१३	श.	१४	४६	दि.	११	५६	मघा	२८	५३	सा.	५	३५	धृति	२५	०	दि.	[illegible] २	तै	१४	४६	ग	४२	५९	पद्म	१८	२८	४	२८				६	२	५	५८	०	५३	११	३	५४	३	५९
२१	५४	१४	र.	११	१३	दि.	१०	३१	पू.फाल्गुनी	२७	१८	दि.	४	५७	शूल	१९	२५	दि.	[illegible] ४८	व	११	१३	वि	३९	५६	छत्र	१९	२९	५	२९	कन्या	४२	१०	६	२	५	५८	०	२९	११	४	५३	४६	५९
२१	[illegible]	१५	सो.	८	४०	दि.	९	२१	उ.फाल्गुनी	२६	४६	दि.	४	४३	गण्ड	१४	२३	दि.	[illegible] ४६	बव	८	४०	बा	३७	५९	श्रीवत्स	२०	३०	६	३०				६	१	५	५९	०	५	११	५	५३	२७	५९

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१ [illegible] न शुक्ल पक्षः

मार्च २००० ई. (राष्ट्रीय फाल्गुन १७ - ३०)
शिशिर ऋतु। [illegible]

अं.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
१	७	११	चन्द्र०दर्शनम् मु.४५ [illegible]। [illegible] शृंगमुद्रभिक्षं। पयोव्रत [illegible] त्मकं१२ पुत्रकामनया। [illegible]
१	८	९	मु.जिलहिज १२ हिजरी सन् १४२०। फुलरिया २। पूर्वदिशायाम् बुधोदयः।
१	९	७	मेषराशिः१।५२ (दि.६।५३)। पंचक([illegible]) समाप्तिः। भद्रा घ.२८।१९ (रा.७।५३) उ.। वैनायकी [illegible]
८	१०	८	भद्रा घ.२।३३ (प्रा.७।१९) या.। सर्वार्थसिद्धियोग घ.०।४ (प्रा.६।१०) या.। स्थायी (मुद्गलोक्त) ज [illegible]
८	११	९	वृषराशि:११।३४ (दि.१०।४५)। सर्वार्थ/अमृतसिद्धियोगो घ.५४।१९ (रा.३।४७) उ.। दोष संघ विनाश [illegible]
८	१२	१२	भद्रा घ.४७।३१ (रा.१।६) उ.। भानु सप्तमी पर्वः सूर्य ग्रहण सन्निभम् स्नानदानाय। कामदा ७। होल [illegible]
८	१	१४	मिथुन राशिः१८।२० (दि.१।२६)। भद्रा घ.१४।३४ (दि.११।५६) या.। मृत्युबाणः घ.५।२ (दि. [illegible]
७	२	१४	⊙स.मीन राशौ रविः घ.५।१९ (दि.८।१९)। मु.१५ जघन्या। पूर्वाः पराः १६ घट्यः पुण्याः। गोऽन्नदानम् [illegible]
७	३	१०	कर्क राशिः२४।६ (दि.३।४२)। भद्रा घ.५०।१९ (रा.४।५२) उ.। दोष संघ विनाशका रवियोगः घ.३८।६ [illegible]
७	४	२	भद्रा घ.२४।१५ (दि.३।४५) या.। आमलकी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। इयमेव रंगभरी एकाद [illegible]
६	४	४९	सिंह राशिः३१।१६ (सा.६।३३)। प्रदोष व्रतम् १२। ⊙उत्तराभाद्रपद नक्षत्र रविः घ.२५।४८ [illegible]
६	५	३३	दोष संघ विनाशका रवियोगः घ.२८।५३ (सा.५।३५) उ.। शनि-रिक्ता समायोग सिद्धयोगः घ. [illegible]
६	६	१३	कन्या राशिः४२।१० (रा.१०।५४)। भद्रा घ.११।१३ (दि.१०।३२) उ. घ.३९।५६ (रा.१०।१०) या.। भद्रा [illegible]
५	+	+	स्नानदानादौ पूर्णिमा १५ पुण्यतमा। काश्यां होलिकोत्सवः रंगोत्सवः। सायं चतुःषष्ठी (चौसट्टी देवी [illegible]

विवाह मुहूर्त विमर्शः

[illegible] पर मांनाकः मुहूर्तभावः।

[illegible] होलाष्टके वर्जितः– [illegible] त्रिपुष्कर विवाहादि शुभ नष्ट [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

(घ) दाहः ढुण्ढा राक्षसी पूजनम् तद्दहनम् च। व्रताय पूर्णिमा १५। [illegible]

(ङ) [illegible] होलिका विभूति (भस्म) धारणम्, [illegible] कुसुम प्राशनम्, तैलाभ्यंग स्नानम्, [illegible] श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती १५। दोलयात्रा। मन्वादि १५।

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ता.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति वक्री		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति	स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	मं.	११	३	३६	१८	११	२४	०	३५	४४	५४	१०	१३	३५	४५	५०	३७	०	९	४६	१०	११ [illegible]	९	२६	५८	१३	७४	५७	०	१८	९	५८	५	१	३	७	४४	४४
२	बु.	११	१६	५२	९	११	२४	४५	२९	४४	५०	१०	१२	४५	८	४८	८	०	९	५७	३४	११ [illegible]	९	२८	१३	१०	७५	०	०	१८	१४	५१	४	५	३	७	४१	३३
३	गु.	११	२९	४२	४०	११	२५	३०	११	४४	५०	१०	११	५७	०	४२	१६	०	१०	९	४	११ [illegible]	९	२९	२८	१०	७५	३	०	१८	१९	४	४	१३	३	७	३८	२२
४	शु.	०	१२	५३	३१	११	२६	१५	९	४४	४७	१०	११	१४	४४	३९	२७	०	१०	२०	४०	११ [illegible]	१०	०	४३	१३	७५	६	०	१८	२३	१७	४	२०	३	७	३५	११
६	श.	०	२६	५१	४०	११	२६	५९	५६	४४	४५	१०	१०	३५	१७	३२	३५	०	१०	३२	२१	११ [illegible]	१०	१	५८	१८	७५	[illegible]	०	१८	२७	३३	४	२८	३	७	३२	०
७	र.	१	१०	५६	१३	११	२७	४४	४१	४४	४१	१०	१०	२	४२	२१	२१	०	१०	४४	६	११ [illegible]	१०	३	१३	२२	७५	७	०	१८	३२	०	४	३६	३	७	२८	५०
८	सो.	१	[illegible]	४	५१	११	२८	२९	२२	४४	३८	१०	९	[illegible]	२१	[illegible]	११	०	१०	५५	५५	११ [illegible]	१०	४	२८	३०	७५	[illegible]	०	१८	३६	४१	४	४३	३	७	२५	३९
९	मं.	२	९	१४	२८	११	२९	१४	०	४४	३३	१०	९	२३	१०	१०	१०	०	११	७	४८	११ [illegible]	१०	५	४३	४०	७५	१२	०	१८	४१	२४	४	५०	३	७	२२	२८
१०	बु.	२	२३	२२	३१	११	२९	५८	३३	४४	३०	१०	९	१३	०	७	२५	०	११	१९	४६	११ [illegible]	१०	६	५८	५२	७५	[illegible]	०	१८	४६	१४	४	५८	३	७	१९	१७
११	गु.	३	७	२	५८	०	०	४३	३	४४	२०	१०	९	५	३५	४	२७	०	११	३१	४६	१२ [illegible]	१०	८	१४	७	७५	१५	०	१८	५१	१२	५	५	३	७	१६	६
१२	शु.	३	२१	०	५०	०	१	२७	२३	४४	५	१०	९	९	१५	३	०	०	११	४३	५२	१२ [illegible]	१०	९	२९	२९	७५	१९	०	१८	५६	१७	५	१२	३	७	१२	५५
१३	श.	४	५	४१	११	०	२	११	२८	४४	०	१०	८	५८	१५	मार्गी	५	०	११	५६	०	१२ [illegible]	१०	१०	३४	३४	७५	२२	०	१९	१	२९	५	१९	३	७	९	४४
१४	र.	४	१९	२८	३१	०	२	५५	२८	४३	५७	१०	९	३	२०	१०	२५	०	१२	८	१०	१२ [illegible]	१०	११	४९	५३	७५	२२	०	१९	६	४८	५	२६	३	७	६	३३
१५	सो.	५	३	५४	८	०	३	३९	२५	४३	५०	१०	९	१३	४५	२२	४२	०	१२	२०	२२	१२ [illegible]	१०	१३	५	१४	७५	२३	०	१९	१२	१४	५	३२	३	७	३	२२

पं.४९ फाल्गुन शुक्ल ८ सोमे सूर्योदये
स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २६१२
अयनांशाः २३/५०/३९

र.	सो	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	११	१०	०	१०	०	३	९
२८	२५	२८	९	१०	४	१८	७	७
१४	४	२९	४१	५५	२८	३६	२५	२५
५८	५१	२२	२१	५५	३०	४१	३९	३९
५९	८५१	४४	१८/११	११	७५	४	३	३
५३	५४	३८	९	५३	१०	४३	११	११

११ सू.बु.शु. | १२ मं. | १० के. | १ गु.श. | ९ | २ चं. | ८ | ३ | ५ | ७ | ४ रा. | ६

भौमादीनां चारः-
भौमः-रेवत्या मीन राशौ तिथि १० चुभतः अश्विन्यां मेष राशौ घं.२।०
बुधः-(वक्री) कुम्भ राशौ तिथि १३ शनितः मार्गी।
गुरुः-अश्विन्यां मेष राशौ।
शुक्रः-मकर राशौ तिथि गुरुतः कुम्भ राशौ घं.२४।२९
शनिः-भरण्यां २ चरण मेष राशौ।
राहुः-पुष्य नक्षत्र २ चरण केतुश्च उत्तराषाढायाम ४ चरण।

फलम्–मंगलवार का चन्द्रदर्शन मु.४५ खाद्यान्नों के भाव में नरमी का रुख। पुत्र की कामना से १२ दिनों तक चलने वाला **पयोव्रत का आरम्भ** फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा ७ मार्च मंगलवार से शुरु होगा। १३ मार्च से होलाष्टक आरम्भ हो जायेगा तथा १४ मार्च मंगलवार को दिन ८।१९ बजे से मीन राशि की सूर्य संक्रान्ति लग जायेगी एवं खरमास प्रारम्भ हो जायेगा फलतः विवाहादि मांगलिक कृत्यों के लिये मुहूर्त्तो का अभाव हो जायेगा। **आमलकी एकादशी** का व्रत १६ मार्च गुरुवार को किया जायेगा। यही **रंगभरी एकादशी** होती है। आज के दिन भगवान शिव का अबीर से पूजन-अर्चन किया जाता है। काशी विश्वेश्वर बाबा विश्वनाथ का अबीर से श्रृंगार-अभिषेक किया जाता है। होली की उमंग हुड़दंग प्रारम्भ हो जाती है। **प्रदोष व्रत** का मान १७ मार्च शुक्रवार को होगा। १९ मार्च रविवार को दिन में १०।३१ बजे से पूर्णिमा तिथि लग जायेगी और रात १०।० बजे भद्रा समाप्त हो जायेगी अतः रात्रि १०।० बजे के बाद अक्षांशदेशान्तर भेद को ध्यान में रखते हुए देश में **सर्वत्र होलिका दहन** किया जायेगा। होलिका दहन से पूर्व ढुण्ढा राक्षसी का पूजन अवश्य करना चाहिए। **व्रत के लिये पूर्णिमा** का मान भी १९ मार्च रविवार को ही होगा। सदियों से काशी की यह परम्परा रही है कि होलिका दाह के साथ ही यहाँ रंग की होली शुरु हो जाती है। इस प्रकार काशी में रंग की होली २० मार्च सोमवार को होगी। सायंकाल चौसट्टी घाट पर स्थित (चौसट्टी देवी) चतुर्षष्ठी देवी का दर्शन किया जायेगा। उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का सूर्य १७ मार्च शुक्रवार को दिन ४।२२ बजे से आवेगा। लवण, तिल, तेल में तेजी का रुख बना रहेगा। जलोत्पन्न पदार्थो को क्षति पहुँचेगी।

(क) मध्यान्हव्याप्त्युक्तं।' सर्वार्थसिद्धियोगः यावद्दिनम्। दोष संघ विनाशकोरवियोगः घ.१।५१ (दि.६।५३) उ.। यायि (मुद्दई) जयद योगः घ.१।५१ (दि.६।५३) या.।
(ख) उ.। मृत्युबाणः घ.४।५७ (दि.८।५) उ.। यायि (मुद्दई) जयद योगः घ.४७।३१ (रा.१।६) या.।

दैनिक लग्न सारिणी

ल.अं.	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	६ श. घं.	मि.	७ र. घं.	मि.	८ सो. घं.	मि.	९ मं. घं.	मि.	ल.अं.	१० बु. घं.	मि.	११ गु. घं.	मि.	१२ शु. घं.	मि.	१३ श. घं.	मि.	१४ र. घं.	मि.	१५ सो. घं.	मि.
कुम्भ	६	४०	[illegible]	३५	६	३१	६	२७	६	२३	६	१९	६	[illegible]	६	११	मीन	७	३६	७	३२	७	२९	७	२५	७	२१	७	[illegible]
मीन	८	[illegible]	[illegible]	४	८	०	७	५६	७	५२	७	४८	७	४४	७	४०	मेष	९	१५	९	११	९	७	९	३	८	५९	८	[illegible]
मेष	९	४६	[illegible]	४२	९	३८	९	३५	९	३१	९	२७	९	[illegible]	९	१९	वृष	११	[illegible]	११	८	११	[illegible]	११	०	१०	५६	१०	[illegible]
वृष	११	४[illegible]	[illegible]	३९	११	३५	११	३१	११	२७	११	२३	११	[illegible]	११	१६	मिथुन	१	२५	१	२१	१	[illegible]	१	१३	१	१०	१	[illegible]
मिथुन	१	५[illegible]	[illegible]	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	[illegible]	[illegible]	१	२९	कर्क	३	४३	३	३९	३	३५	३	३१	३	[illegible]	३	[illegible]
कर्क	४	[illegible]	[illegible]	१०	४	७	४	३	३	५९	३	५५	३	[illegible]	३	४७	सिंह	५	५७	५	५३	[illegible]	[illegible]	५	४५	५	[illegible]	५	[illegible]
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
सिंह	६	२८	[illegible]	२४	६	२०	६	१६	६	१३	६	९	६	५	६	१	कन्या	८	९	८	६	८	[illegible]	[illegible]	५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	८	[illegible]	[illegible]	३७	८	३३	८	२९	८	२५	८	२१	८	१७	८	१३	तुला	१०	२६	१०	२२	१०	[illegible]	१०	[illegible]	१०	[illegible]	१०	[illegible]
तुला	१०	५७	[illegible]	५३	१०	४९	१०	४५	१०	४२	१०	३८	१०	३४	१०	३०	वृश्चिक	१२	४३	१२	३९	१२	३५	१२	३१	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृश्चिक	१	[illegible]	[illegible]	१०	१	६	१	२	१२	५९	१२	५५	१२	५१	१२	४७	धनु	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	[illegible]	[illegible]
धनु	३	[illegible]	[illegible]	१५	३	१२	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	मकर	४	३३	४	२९	४	[illegible]	४	[illegible]	४	२६	४	[illegible]
मकर	५	[illegible]	[illegible]	१	४	५७	४	५३	४	४९	४	४५	४	[illegible]	४	३३	कुम्भ	६	६	६	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५०	[illegible]	[illegible]

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ भौमे पूर्वाभाद्रपदायां-पुंसवन, सीमन्त, पर्यंकस्नानं, [illegible] शिल्पविद्यारम्भ जलाशयारामगृहप्रतिष्ठा, [illegible] (ति.दा.)। तिथि २ बुधे उत्तरभा.रेवत्यां-जातक[illegible] [illegible]। तिथि ४/५ शुक्रे अश्विन्यां भरण्यां-मुकदमादायर, [illegible] नामकरणं, अन्नप्राशन, चूडाकरणं, (मुण्डनं) (ल.३) [illegible] [illegible]। तिथि ६ शनौ कृत्तिकायां इष्टिकादहनं (ति.दा.) [illegible] वधू-वरणं कन्यावरणं, द्विरागमनं ल.३, [illegible] [illegible]। तिथि ७ रवौ रोहिण्यां-प्रसूतिस्नान, वधूवरणं, [illegible] नवांक्रयविक्रयः नव-वस्त्रधारणं, [illegible] कन्यावरणं, द्विरागमनं (ल.११ आ.३), विपणिव्यापारः, [illegible] [illegible] धारणं, भूलककर्मारम्भः शय्यासनाद्युपभोग [illegible] शस्त्रधारणं, आ[illegible], इष्टिकानिर्माणं, [illegible] गृहारम्भः (नाड्यचक्रशुद्धि) [illegible] [illegible] प्रतिष्ठा। तिथि ८ सोमे मृगशिरायां-[illegible] देवप्रतिष्ठा जलाशयारम्भ सेवारम्भ, [illegible] [illegible], नामकरणं, वधू-वरणं कन्यावरणं, भद्रापद वधूप्रवेशः [illegible] गामसर्प्रतिष्ठा, नूतनवस्त्राभूषणारम्भः। तिथि [illegible] द्विरागमनं (ल.९), विपणिव्यापारः। अलंकारनिर्माणं, धारणं, [illegible] च-प्रसूतिस्नान, जातकर्म [illegible] [illegible] नाकत्वन, वृक्षारोपणं, कृषिग्रहणं, सर्वदेव प्रतिष्ठा, ३ गुरौ [illegible] उपनयन ल.१ आ.३, [illegible], द्विरागमन [illegible], जलाशयारामगृहप्रतिष्ठा। तिथि ९ भौमे आर्द्रायां-मुण्डनं ल.११ [illegible] विपणिव्यापारः [illegible]। तिथि १० बुधे पुनर्वसौ-नामकरणं, (रेवत्यां) [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], नवीनवस्त्रधारणं, [illegible] शय्यासनाद्युपभोग [illegible] नौकाजलयाननिर्माणं, [illegible] इष्टिकानिर्माण, [illegible] [illegible] तिथि ११ गुरौ पुष्ये च-पुंसवन सीमन्त। [illegible] प्रसूतिस्नान, जातकर्म नामकरणं, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ, [illegible], नववस्त्रधारणं, [illegible], बीजवपनं [illegible] वृक्षारोपण, शय्यासनाद्युपभोगः, दत्तकपुत्र ग्रहणं, [illegible], इष्टिकानिर्माण, अधिकारग्रहणं, ऋणग्रहणं दानं [illegible], सेवारम्भ नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः। तिथि १२ शुक्रे [illegible] विद्यारम्भः मलयंत्रकर्म (ति.दा.) मुकदमादायर, (ति.दा.) भूमिक्रय (ति.दा.)। तिथि १३ शनौ मघायां इष्टिकादहनं (ति.दा.) उग्रकर्माचरणं। तिथि १४ रवौ पूर्वाफाल्गुन्यां-इष्टिकादहन, तत्र रिक्ता दोषः। तिथि १५ सोमे उत्तराफाल्गुन्यां जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, विपणि व्यापारः, अलंकारधारणं, चूल्हास्थापनं, वृक्षारोपण, जलाशयारम्भः।

फलम्
मेष
वृष
मिथुन
कर्क
सिंह
कन्या
तुला
वृश्चिक
धनु
मकर
कुम्भ
मीन

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	तिथि घ.	प.	दि./रा.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	दि./रा.	घं.	मि.	योग	घ.	प.	दि.	घं.	मि.	करण	प.	प.	करण	प.	प.	योगाः	तारीखें अं.	फ.	सौ.	रा.	चंद्र राशि प्रवेश राशि	घ.	प.	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	र.क्रा. उ+ अं.	क.	स्पष्ट सूर्यः रा.	अं.	क.	वि.
३०	१	१	म.	७	१८	दि.	८	५५	हस्त	२७	२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृद्धि	१०	४९	दि.	१०	२०	को	७	१८	ते.	[illegible]	[illegible]	सौम्य	२१	१	७	१	तुला	५८	२५	६	०	६	०	+०	१७	११	६	५३	६
३०	४	२	बु.	७	१२	दि.	८	५२	चित्रा	२९	३२	सा.	[illegible]	[illegible]	ध्रुव	८	१	दि.	१	११	ग.	७	१२	व.	३७	४८	कालदण्ड	२२	२	८	२				५	५९	६	१	०	४१	११	७	५२	४२
३०	८	३	गु.	८	२५	दि.	९	२०	स्वाती	३२	३५	रा.	७	०	व्याघात	६	११	दि.	८	२६	वि.	८	२५	बव	३९	३८	स्थिर	२३	३	९	३				५	५८	६	२	१	३	११	८	५२	१६
३०	१२	४	शु.	१०	५१	दि.	१०	१७	विशाखा	३६	५४	रा.	८	४३	हर्षण	५	२२	दि.	८	६	वा.	१०	५१	को.	४२	३९	मातंग	२४	४	१०	४	वृश्चिक	२०	५०	५	५७	६	३	१	२६	११	९	५१	४८
३०	१६	५	श.	१४	२८	दि.	११	४३	अनुराधा	४२	१७	रा.	१०	५१	वज्र	५	२४	दि.	८	६	ते.	१४	२८	ग.	४६	४३	अमृत	२५	५	११	५				५	५६	६	४	१	५०	११	१०	५१	१८
३०	२०	६	र.	१८	५८	दि.	१	३०	ज्येष्ठा	४८	२३	रा.	१	१६	सिद्धि	६	९	दि.	८	२३	व.	१८	५८	वि.	५१	३१	काण	२६	६	१२	६	धनु	४८	२३	५	५५	६	५	२	१३	११	११	५०	४५
३०	२४	७	सो.	२४	५	दि.	३	३२	मूल	५४	५७	रा.	३	५३	व्यतिपात	७	२५	दि.	८	५२	बव.	२४	५	वा.	५६	४४	लुम्बक	२७	७	१३	७				५	५४	६	६	२	३६	११	१२	५०	१०
३०	२९	८	मं.	२९	२४	सा.	५	३९	पूर्वाषाढ़ा	६०	०	स	म	स्त	वरीयान	८	५६	दि.	१	२७	को.	२९	२४	ते.	६०	०	मित्र	२८	८	१४	८				५	५३	६	७	३	०	११	१३	४९	३३
३०	३३	९	बु.	३४	२९	रा.	७	४१	पूर्वाषाढ़ा	१	२८	प्रा.	६	२८	परिघ	१०	२३	दि.	१०	२	तै.	१	५६	ग.	३४	२९	श्रीवत्स	२९	९	१५	९	मकर	२८	०	५	५३	६	७	३	२५	११	१४	४८	५४
३०	३७	१०	गु.	३८	५५	रा	९	२६	उत्तराषाढ़ा	७	३४	दि.	८	५४	शिव	११	२४	दि	१०	२६	व.	६	४२	वि.	३८	५५	सौम्य	३०	१०	१६	१०				५	५२	६	८	३	४९	११	१५	४८	[illegible]
३०	४२	११	शु.	४२	२६	रा.	१०	४९	श्रवण	१२	५७	दि	११	२	सिद्ध	११	५२	दि.	१०	३६	बव.	१०	४०	वा.	४२	२६	गृध्र	३१	११	१७	११	कुम्भ	४५	६	५	५१	६	९	४	१२	११	१६	४७	३०
३०	४६	१२	श.	४४	४९	रा.	११	४६	धनिष्ठा	१७	१४	दि.	१२	४४	साध्य	११	२६	दि.	१०	२४	को.	१३	३८	ते.	४४	४९	प्रवर्धमान	१	१२	१८	१२				५	५०	६	१०	४	३५	११	१७	४६	४४
३०	४९	१३	र.	४५	५२	रा.	१२	११	शतभिषा	२०	२५	दि.	२	०	शुभ	१०	१०	दि.	१	५४	ग.	१५	२१	व.	४५	५२	राक्षस	२	१३	१९	१३				५	५०	६	१०	४	५९	११	१८	४५	५६
३०	५३	१४	सो.	४५	३८	रा.	१२	४	पू.भाद्रपद	२२	१९	दि.	२	४५	शुक्ल	७	५१	दि.	८	५७	वि.	१५	४५	श.	४५	३८	मुसल	३	१४	२०	१४	मीन	६	५१	५	४९	६	११	५	२२	११	१९	४५	६
३०	५७	३०	मं.	४४	२७	रा.	११	३५	उ.भाद्रपद	२२	५७	दि.	२	५९	ब्रह्म	४	३४	दि.	७	३८	चं.	१५	१	ना.	४४	२७	निर्दि	४	१५	२१	१५				५	४८	६	१२	५	४४	११	२०	४४	१३

सूर्योदयकालिकदैनिकस्पष्टग्रहास्तेषांदैनिकगतयश्च

ति.	वा.	स्पष्ट सोम रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट मंगल रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट बुध रा.	अं.	क.	वि.	गति मार्गी		स्पष्ट गुरु रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट शनि रा.	अं.	क.	वि.	गति		स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.
१	मं.	६	१७	६	२१	०	४	२३	१५	४३	४२	१०	९	३६	२७	२८	२८	०	१२	३२	४७	[illegible]	[illegible]	१०	२४	२०	३७	७५	२५	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	३६	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	बु.	६	०	३	५०	०	५	६	५७	४३	४०	१०	१०	४	५५	३३	३६	०	१२	४५	३९	[illegible]	[illegible]	१०	२५	३६	७	७५	२८	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	४०	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	गु.	६	१२	४५	११	०	५	५०	३७	४३	३४	१०	१०	३८	३१	३५	९	०	१२	५८	३८	[illegible]	[illegible]	१०	२६	५१	३०	७५	३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	४४	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	शु.	६	२५	१४	३८	०	६	३४	११	४३	३०	१०	११	१३	४०	३७	०	०	१३	११	४३	[illegible]	[illegible]	१०	२८	७	०	७५	३३	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	४८	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५	श.	७	७	३७	४१	०	७	१७	४१	४३	२०	१०	११	५०	४७	४०	४२	०	१३	२४	५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	३५	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	५२	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६	र.	७	१९	३८	१३	०	८	१	१	४३	१२	१०	१२	३१	२२	४५	१७	०	१३	३८	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	३७	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	५७	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७	सो.	८	१	४१	२७	०	८	४४	४३	४३	६	१०	१३	१६	३४	४६	१८	०	१३	५१	४३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	४०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	१	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८	मं.	८	१४	४१	५२	०	९	२७	११	४३	६	१०	१४	२	५२	४८	७	०	१४	५	१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	४०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	६	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९	बु.	८	२५	५७	२३	०	१०	१०	२५	४३	३	१०	१४	५०	५९	५१	३६	०	१४	१८	५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	४२	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६	१०	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	गु.	९	८	५	१५	०	१०	५३	२८	४३	३	१०	१५	४०	३५	५३	५३	०	१४	३२	४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	४२	०	२०	[illegible]	[illegible]	६	१४	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११	शु.	९	२०	११	२७	०	११	३६	३१	४३	०	१०	१६	३४	२८	५६	२१	०	१४	४६	३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	४५	०	२०	[illegible]	[illegible]	६	१८	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१२	श.	१०	२	४८	५२	०	१२	१९	३१	४२	५५	१०	१७	३०	४९	६०	०	०	१५	०	३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	४७	०	२०	२१	५३	६	२२	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३	र.	१०	१५	३०	४६	०	१३	२	२६	४२	५०	१०	१८	३०	४१	६४	११	०	१५	१४	३७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	४९	०	२०	२८	११	६	२५	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१४	सो.	१०	२८	२७	१९	०	१३	४५	१६	४२	४२	१०	१९	३१	८	६८	८	०	१५	२८	४२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७५	५०	०	२०	३४	२३	६	२८	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	मं.	११	११	४०	२५	०	१४	२७	५८	४२	४०	१०	२०	४३	४६	७१	१७	०	१५	४२	५२	[illegible]	[illegible]	११	[illegible]	५९	४०	७५	५२	०	२०	४७	२६	६	३१	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फलम्– धर्मशास्त्रों में चैत्र कृष्ण प्रतिपदा उदय काल में ही **रंगोत्सव**, रंग की होली मनाने का निर्देश है **अतः २१ मार्च मंगलवार को शास्त्रानुसार रंग की होली सर्वत्र मनाई** जानी चाहिए। होली से सम्बन्धित स्वपच स्पर्श, कुसुम प्राशन, साभ्यंग स्नान, रतिकाम महोत्सव पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया जायेगा। संकष्टी **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** का मान २३ मार्च गुरुवार को होगा चन्द्रोदय समय रात ९।११ बजे चन्द्रमा को अर्घ्य दिया जायेगा। होली का सिलसिला रंग पञ्चमी २५ मार्च शनिवार तथा वृद्वा मंगल २८ मार्च तक अपनी-अपनी लोकपरम्परा के अनुसार चलता रहेगा। **श्रीशीतलाष्टमी व्रत** (बसियउरा) का मान २८ मार्च मंगलवार को होगा। इसमें बासी भोजन प्रसाद स्वरूप ग्रहण करने का विधान है। **पाप मोचनी एकादशी व्रत** का मान सबके लिये ३१ मार्च शुक्रवार को होगा। १ अप्रैल शनिवार को रात ११।४६ बजे से सूर्योदय तक महामहेति **वारुणी पर्व का योग शनिवार त्रयोदशी शतभिषा नक्षत्र** के संयोग में मिल रहा है तथा २ अप्रैल रविवार को दिन २।० बजे तक त्रयोदशी तिथि एवं शतभिषा नक्षत्र के योग में महावारुणी पर्व का योग मिल रहा है। प्रदोष का व्रत २ अप्रैल रविवार को किया जायेगा। **मास शिवरात्रि का व्रत** ३ अप्रैल सोमवार को किया जायेगा। ३ अप्रैल सोमवार चतुर्दशी को शिव सान्निध्य में गंगा स्नान से प्रेतत्व से मुक्ति मिलती है। काशी के केदार कुण्ड का पानी पीना अत्यन्त पुण्यफलदायक माना गया है। स्नान-दान और श्राद्ध के लिये भौमवती अमावस्या ४ अप्रैल को है। **भौमवती अमावस्या** को गंगा स्नान से अनन्त पुण्यफल की प्राप्ति होती है। रेवती नक्षत्र का सूर्य ३० मार्च गुरुवार को रात २।५० बजे से आयेगा। पक्षारम्भ २१ मार्च मंगलवार से राष्ट्रीय शक संवत् १९२२ प्रारम्भ हो जायेगा। चान्द्र संवत् २०५६ की समाप्ति ४ अप्रैल मंगलवार से हो जायेगी। शुभमस्तु!

पं.५१ चैत्र कृष्ण ८ भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः २६२७
अयनांशाः २३/५०/४१

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	१०	०	१०	०	३	९
१३	१४	९	१४	१४	२३	२०	६	६
४९	४१	२७	२	५	९	३	३७	३७
३३	५२	११	५२	१८	२५	२४	५५	५५
५९	७२१	४३	४८	१३	७५	६	३	३
२१	३७	६	७	४०	४०	५	११	११

१ गु.मं. श. | १२ सू. | बु.११ शु. | २ | १० के. | ३ | ९ चं. | ४ रा. | ६ | ८ | ५ | ७

भौमादीनां चारः-
भौमः- अश्विन्यां मेष राशौ तिथि १३ रवितः भरण्यां घं.२४।३६.
बुधः-कुम्भ राशौ।
गुरुः- अश्विन्यां मेष राशौ तिथि ४ शुक्रतः भरण्यां घं.३७।४२
शुक्रः-कुम्भ राशौ तिथि १३ रवितः मीन राशौ घं.२५।१८
शनिः-भरण्यां २ चरण मेष राशौ तिथि ७ सोमतः भरण्यां ३ चरणे घं.२६।०
राहुः-पुष्य नक्षत्र २ चरण केतुश्च उत्तराषाढ़ायाम् ४ चरणे तिथि ७ सोमतः राहुः पुष्य नक्षत्रे १ चरणे केतुश्च उत्तराषाढ़ायाम् ३ चरणे घं.२०।४२।

श्री शुभ संवत् २०५६, शाके १९२१-१९२२ चैत्र कृष्ण पक्षः।

दिनांक २१ मार्च - ४ अप्रैल २००० ई. (राष्ट्रीय चैत्र १ - १५) उत्तरायणं याम्यगोलः बसन्त ऋतुः।

तुलाराशिः५८।२५(रा.शे.५।२२)। काशीतोऽन्यत्रसर्वत्र होलिकोत्सवः रंगोत्सवः। राष्ट्रीय चैत्रमास शाके १९२२ आरम्भः। फसली चैत्र मासारम्भः। नववर्षोत्सवः। शुभाशुभद्वय(क)
भद्रा घ.३७।४८ (रा.९।६) उ.। (क) गुण्यकरः द्विपुष्कर योगः घ.२७।२७ (दि.४।५९) उ.।
भद्रा घ.८।२५ (दि.९।२०) या.। संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ४ व्रतम्। चन्द्रोदय (रा.९।११)बादन चन्द्राय अर्घ्यम्। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.८।२६ (दि.९।२०) या.।
वृश्चिक राशिः२०।५० (दि.२।१७)। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.३६।५४ (रा.८।४३) उ.। स्थायी (मुद्दालह) जयद् योगः घ.१०।५१ (दि.१०।१७) या.।
रंग पञ्चमी ५। यायि (मुद्दई) जयद् योगः घ.१४।२८ (दि.११।४३) या.। दोष संघ विनाशक रवियोगः घ.४२।१७ (रा.१०।५१) उ.।
धनु राशिः४८।२३ (रा.१।१६)। भद्रा घ.१८।५८ (दि.१।३०) उ. घ.५१।३१ (रा.२।३१) या.। दोष संघ विनाशको रवियोगः घ.४८।२३ (रा.१।१६) या.।
यमदंष्ट्रयोग घ.५४।५७ (रा.३।५३) या.। (ख) अत्र विशेषः- शुभयोग समायुक्ता शनौ शतभिषा यदि। महामहेतिविख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत्।
वृद्ध भौमः (बुढ़ला मंगल) इति लोके प्रसिद्धम्। श्रीशीतलाष्टमी ८ व्रतम्। पर्युषितान्नपानादिकमत्र विहितम्। स्थायी (मुद्दालह) जयद् योगः घ.२९।२४ (सा.५।३९) या.।
मकर राशिः२८।० (दि.१।५)। (घ) कोटि सूर्य ग्रहैः समा। चान्द्रसंवत्सर समाप्तिः शुभमस्तु।
भद्रा घ.६।४२ (दि.८।३३) उ. घ.३८।५५ (रा.९।२६) या.।⊙ रेवती नक्षत्रे रविः घ.५२।५ (रा.२।५०)। (ग) यदि लभ्यत् शतसूर्य ग्रहैः समा।
कुम्भ राशिः४५।६ (रा.११।५३)। पचक (पचखा) आरम्भः। पाप मोचनी एकादशी ११ व्रतम् सर्वेषाम्। सर्वार्थसिद्धियोगः घ.१२।५७ (दि.११।२) या.।
महामहेति वारुणी पर्वयोगः घ.४४।४९ (रा.११।४६) उ. सूर्योदययावत्। (शनिवार-त्रयोदशी-शतभिषायोगे) शुभाशुभद्वय गुण्यकरः द्विपुष्करयोगः घ.२७।२४ (दि.१२।४४) या.।(ख)
भद्रा घ.४५।५२ (रा.१२।११) उ.। प्रदोष व्रतम् १३। महावारुणी पर्वयोगः। त्रयोदशी-शतभिषा योग घ.२०।२५ (दि.२।०) या.। वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी। गंगायाम्(ग)
मीनराशिः६।५१ (दि.८।३३)। भद्रा घ.१५।४५ (दि.१२।७) या.। मास शिवरात्रि व्रतम् १४। कल्प महोत्सव १४। शिवसान्निध्ये गंगास्नानम् प्रेतत्वमुक्तये। अत्र सोपवासे केदार कुण्डादकपानं।
स्नानदान श्राद्धादौ भौमवती अमा ३० पुण्यतमा। मन्वादिः ३० [illegible] सर्वार्थसिद्धियोगः घ.२२।५७ (दि.२।५९) या.। अमावास्या यदा भौमे भूम्यां सूतस्य वै। गंगायाम् यदि लभ्येत् (घ)

दैनिक लग्न सारिणी

लग्न	१ मं. घं.	मि.	२ बु. घं.	मि.	३ गु. घं.	मि.	४ शु. घं.	मि.	५ श. घं.	मि.	६ र. घं.	मि.	७ सो. घं.	मि.	८ मं. घं.	मि.	९ बु. घं.	मि.	१० गु. घं.	मि.	११ शु. घं.	मि.	१२ श. घं.	मि.	१३ र. घं.	मि.	१४ सो. घं.	मि.	३० मं. घं.	मि.
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	१	६	५७	६	५३	६	४९	६	४५	६	४१	६	३७	६	३३	६	२९	६	२५	६	२१	६	१७
मेष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	३९	८	३६	८	३२	८	२८	८	२४	८	२०	८	१६	८	१२	८	८	८	४	८	०	७	५६
वृष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१०	३६	१०	३२	१०	२८	१०	२४	१०	२१	१०	१७	१०	१३	१०	९	१०	५	१०	१	९	५७	९	५३
मिथुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	५०	१२	४६	१२	४२	१२	३८	१२	३४	१२	३०	१२	२६	१२	२२	१२	१८	१२	१५	१२	११	१२	७
कर्क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	८	३	४	३	०	२	५६	२	५२	२	४८	२	४४	२	४०	२	३६	२	३२	२	२८	२	२४
सिंह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	२२	५	१७	५	१४	५	१०	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६	४	४२	४	३८
रा.	रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.		रा.	
कन्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	३४	७	३०	७	२६	७	२२	७	१८	७	१४	७	११	७	७	७	३	६	५९	६	५५	६	५१
तुला	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९	५०	९	४६	९	४३	९	३९	९	३५	९	३१	९	२७	९	२३	९	१९	९	१५	९	११	९	७
वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२	७	१२	३	१२	०	११	५६	११	५२	११	४८	११	४४	११	४०	११	३६	११	३२	११	२८	११	२४
धनु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२	१३	२	९	२	५	२	१	१	५७	१	५३	१	४९	१	४५	१	४१	१	३७	१	३३	१	२९
मकर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	५८	३	५४	३	५०	३	४६	३	४२	३	३८	३	३४	३	३०	३	२६	३	२२	३	१८	३	१४
कुम्भ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	२९	५	२५	५	२१	५	१७	५	१३	५	९	५	६	५	२	४	५८	४	५४	४	५०	४	४६

पं.५२ चैत्र कृष्ण ३० भौमे सूर्योदये स्पष्टग्रहाः अहर्गणः [illegible] अयनांशाः [illegible]

मं.श.१ गु. | १२ बु.सू. चं. | शु.११ | २ | १० के. | ३ | ९ | ४ रा. | ६ | ८ | ५ | ७

राशि फलम्

राशि	फलम्
मेष	पीड़ा भयम्
वृष	रोग-शोकं
मिथुन	लाभः सुखप्राप्तिः
कर्क	सुखं शोकं
सिंह	भ्रमणम् सुखं
कन्या	भयं प्राप्त बुद्धिः
तुला	कार्यं धननाशः
वृश्चिक	सुखार्थं लाभः
धनु	भ्रमणम् धननाशः
मकर	कष्टं शत्रुभयं
कुम्भ	सुखं श्रीप्राप्तिः
मीन	धननाशः नेत्रकष्टं

बृहस्पति के व्रत की विधि

यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठ) गुरुवार से आरम्भ करें [illegible] या १६ गुरुवार व्रत करें। उस दिन पीत वस्त्र धारण [illegible] मन्त्र को ११ या ३ माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन [illegible] दान आदि के बाद आदि के भोजन में चने के बेसन की [illegible] खांड से बनी मिठाई लडडू या हल्दी से पीले या केसरी [illegible] आदि ही खावे और यही दान करें जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मणों एवं बटुकों लड्डू भोजन करावें। स्वर्ण पीत वस्त्र, चने के दान आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है, धन की स्थिरता तथा यश बुद्धि कर हैं। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

विविध मुहूर्त तालिकाः

तिथि १ भौमे हस्ते- पुंसवनं सीमन्तः प्रसूतिस्नानं, रक्तवस्त्र प्रवाल धारणं।

तिथि २ बुधे चित्रायां-जातकर्म, नामकरणं, अन्नप्राशनं, अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, उपनयनं (विप्रकुमाराणां) विपणि व्यापार नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शय्यासनाद्युपभोगः, सवारम्भः, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ३ गुरौ स्वात्यां-गर्भाधानं, प्रसूतिस्नानं, नामकरणं अन्नप्राशनं, अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, क्रयः नववस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, बीजवपनं, धान्यच्छेदनं, आ.पत्रलेखनं, ऋणग्रहणं दानं च, शिल्प विद्यारम्भः।

तिथि ४ शुक्रे विशाखायां-रिक्तादोषः।

तिथि ५ शनौ अनुराधायां-मुहूर्ताभावः।

तिथि ६ रवौ ज्येष्ठायां-मुकदमासंबन्धी कार्यं, शस्त्रधारणं।

तिथि ७ सोमे मूले-नामकरणं, विद्यारम्भः, हलप्रवहणं, बीज-वपनं, वृक्षादिरोपणं, जलयंत्रकर्म।

तिथि ८ भौमे पूर्वाषाढ़ाया-पुंसवनं, सीमन्तः, प्रसूतिस्नानं इष्टिकादहनं।

तिथि ९ बुधे पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढायां च -रिक्तादोषः।

तिथि १० गुरौ उत्तराषाढायां श्रवणे च- गर्भाधानं, पुंसवनं, सीमन्तः, प्रसूतिस्नानं, जातकर्म, नामकरणं, विद्यारम्भः, विपणिव्यापारः, क्रयः नव-वस्त्रधारणं, हलप्रवहणं, धान्यछेदनं, चूल्हीस्थापनं, वृक्षादिरोपणं, भृत्यकर्मारम्भः, शस्त्रधारणं, आ.पत्रलेखनं, इष्टिकानिर्माणं, अधिकारीणांदर्शनं, ऋणग्रहणं, जलाशयारम्भः, नौकाजलयाननिर्माणं, शिल्पविद्यारम्भः।

तिथि ११ शुक्रे श्रवणे-गर्भाधानं, अक्षरारम्भः, विद्यारम्भः, अलंकारनिर्माणं धारणं, हलप्रवहण, धान्यछेदनं, शय्यासनाद्युपभोगः, आ.पत्रलेखनं, अधिकारीणां दर्शनम् ऋणग्रहणं दानं च।

तिथि १२ शनौ धनिष्ठायां-मुहूर्ताभावः।

तिथि १३ रवौ शतभिषा-प्रसूतिस्नानं विद्यारम्भः, क्रयः गवांक्रयविक्रयः, रक्तवस्त्रप्रवालधारणं,जलयंत्रकर्म आ.पत्रलेखनं, नौकाजलयाननिर्माणं।

तिथि १४ सोमे पूर्वाभाद्रपदायां-रिक्तादोषः।

तिथि ३० भौमे उत्तराभाद्रपदायां-मासान्तदोषः।

सरल-संध्या

शरीर पवित्र करने का मंत्र ।

ॐअपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा ।
यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

इस मन्त्र को पढ़े, कुशा से अपने ऊपर जल छिड़क कर शरीर पवित्र करें।

आसन पवित्र करने का मन्त्र ।

(विनियोगः)- ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कुर्मो देवता आसने विनियोगः।

मंत्रः- ॐ पृथ्वीत्वयाधृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

(इस मन्त्र से आसन पर जल छिड़कें और नीचे का संकल्प पढ़कर पृथ्वी पर छोड़ देवें)।

(संकल्पः) ॐ तत्सत् अद्य अमुकमासे अमुक पक्षे अमुक शुभ पुण्यतिथौ अमुक वासरे स्वकायिक-वाचिक-मानसिक पापक्षयार्थं श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थञ्च प्रातः (मध्याह्न वा सायं) सन्ध्योपासनामहं करिष्ये।

आचमन मन्त्र ।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः ।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽजायत ।
अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् ।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ।।

(इस मंत्र से हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें और अपनी रक्षा के लिए गायत्री मन्त्र (ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ) पढ़कर चारों ओर जल छिड़कें। तत्पश्चात् नीचे लिखे प्राणायाम के विनियोगों को पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ें और प्राणायाम के मन्त्र से प्राणायाम करें)।

(विनियोगः)-ॐ कारस्य ब्रह्मऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।।१।।

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र जमदग्नि भरद्वाज गौतमात्रिवसिष्ठ कश्यपा ऋषयोगायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पङ्क्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्नि-वाय्वादित्यबृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।।२।।

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः।।३।।

ॐ शिरसः प्रजापति ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछन्दो ब्रह्माग्निवायु सूर्या देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।।४।।

।। अङ्गन्यास मंत्रः ।।

(१) ॐ हृदयाय नमः। (२) ॐ भूः शिरसे स्वाहा। (३) ॐ भुवः शिखायैवषट्। (३) ॐ स्वः कवचाय हुम्। (५) ॐ भुर्भुवः [illegible] नेत्राभ्यां वौषट्। (६) ॐ भुर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।

गायत्री के ध्यान करने का मन्त्र ।

ॐश्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा [illegible]
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च [illegible]
आदित्यमण्डलस्था च [illegible]
अक्षसूत्रधरा देवी [illegible]

गायत्री के आ[illegible]

(विनियोगः)-ॐ तेजो[illegible]
गायत्र्यावाहने विनियोगः।[illegible]
मंत्रः-ॐतेजोऽ[illegible]
देवानामनाधृष्टं देवयजनम[illegible]

गायत्री के उपस्था[illegible]

(विनियोगः)-गायत्र्यसी[illegible] परमात्मादेवता गायत्र्युपस्थाने विनियो[illegible]

(मंत्रः)-ॐ गायत्र्यस्येकप[illegible] नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय[illegible]

इसके बाद प्रातःकाल में पूर्वाभिमुख, [illegible] सायंकाल में पश्चिमाभिमुख बैठ, सावधान होकर गाय[illegible] उच्चारण (मन ही मन) करता हुआ जप करे।

गायत्री का जपस्वरूप ।

(विनियोगः)-ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लवर्णो जपे विनियोगः।

ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः।।२।।

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता अग्निर्मुखमुपनयने जपे विनियोगः।।३।।

(मंत्रः)-ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।।

[illegible] सन्ध्या समाप्त होने पर ७ बार प्रदक्षिणा करके गायत्री देवी का विसर्जन करे[illegible]

प्रदक्षिणा मन्त्रः ।

[illegible]नि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
[illegible]नि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ।।

विसर्जन मन्त्रः ।

ॐ उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि ! यथासुखम् ।।
ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पण मस्तु।

स्वस्थचि[illegible] नेत्र बन्द करके म[illegible] रेचक प्राणायाम कर[illegible] छिद्र से धीरे-धीरे स्वाँस छ[illegible]

[illegible]तमेश के रा[illegible] तो स्त्री प्राप्ति [illegible] विशेष द्रव्य [illegible]

राजा-गुरुः
मेषार्कतः १४०६, ईसवीय सन् १९९९-२००[illegible]

विन्ध्योत्तरवासिनांविंशोत्तरीयमतेनायव्ययमान।

तनु	मेष	वृष	मि.	क.	सिंह	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
रवि	[illegible]	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११	[illegible]
[illegible]	[illegible]	५	२	८	११	२	८	११	११	८	[illegible]	[illegible]

[illegible] विचार- लाभव्ययौ समीकृत्वा एक हीन तु [illegible] सम्मानम् ६, विजय ७, हानि ८, [illegible]

[illegible]ना करना चाहिये। उस समय [illegible]ते हुए पूरक, कुम्भक और [illegible] को अँगूठे से मूंदकर, बायें [illegible]भ में नीलकमल के समान [illegible] हुए, प्राणायाम मन्त्र को तीन [illegible] बायें छिद्र को भी मूंदकर [illegible]ढ़ता जाय। उस समय हृदय [illegible] ध्यान करें। अन्त में अंगूठा [illegible]ट में स्थित श्वेतवर्ण त्रिनेत्र [illegible]ढ़ते रहें। इस प्रकार क्रमशः [illegible]प्राणायाम होते हैं।

[illegible] ॐस्वः ॐमहः ॐजनः [illegible]स्य धीमहि धियो यो नः [illegible]र्भुवः स्वरोम्।

[illegible] निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ता [illegible] मध्याह्न काल में एक बार [illegible]

[illegible]वितुर्व रेण्यं भर्गो देवस्य [illegible] सहस्रांशो तेजो राशे [illegible] दिवाकर।

[illegible], श्वेत वस्त्रवाली स्त्री इनके [illegible] अश्व, इनपर चढ़ना या दर्शन [illegible] शिर का छेदन, अपना मरना, [illegible] दही, चावल भोजन, जूआ, [illegible] मठा कपास इन वस्तुओं को [illegible] ऐश्वर्य तथा सम्मान की प्राप्ति [illegible] तथा कष्ट [illegible] है। यदि स्वप्न [illegible] पृण में श्वेत सर्प काट खाये तो निश्चय शीर्घ विशेष धन मिले। स्वप्न [illegible] या सर्प द्वारा पैर में काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर [illegible] हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथ में हथकड़ी पैरों में जंजीर [illegible] बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूता खड़ाऊँ तीक्ष्ण तलवार का [illegible]ना, टट्टी में सर्प का दिखना अपने पैर के माँस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्य मण्डल का देखना, अपना मरना, देखे तो रोगी पुरुष का रोग नाश और निरोग को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, मोरनी देखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त या मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस चरबी का खाना, विष्टा अपने अंग में लगना श्वेत चन्दन श्वेत पत्र पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर दे जाय तो लाभ हो। नदी में तैरना, या तालाब में तैरकर पार जाना, सूर्योदय का देख[illegible] प्राप्त करता है। ऊँचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना भाग्योदय [illegible] गौ ब्राह्मण का प्रसन्न देखना

पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त [illegible] म सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो[illegible] मी और सुख मिले। बेड़ा पर चढ़कर नदी पार होने से परदेश [illegible] स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है। अतः सोवे न[illegible]

अशुभ स्वप्न— लाल वस्त्र पहनना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हँस-हँस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम, पलाश के वृक्ष पर चढ़ना, रूई कपास तेल, लोहा मिलना इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना, किसी द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु या भारी कष्ट को सूचित करता है। सिर के सारे बालों का या मुख के दाँत का गिरना द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन या किसी वस्तु को माँग कर ले जाना, द्रव्य हानि या कष्ट करता है। तेलयुक्त गुलगुल ताँबा ताँबे के पैसे मिलना रोग सूचक है। अपनी स्त्री के वस्त्र को मरी स्त्री ले जाये तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो, हाथ नाक का कटना कीच (पङ्क) में फँसना ऊँचे गधे भैंस पर चढ़कर तेल मलकर दक्षिण को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्त वस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृ कार्यों का करना भूत प्रेत चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़े जाकर दक्षिण दिशा में जाना, इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा का देखना, बाघ सिंह गीदड़ बिलाव भैंस सर्प मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखर का [illegible] के ध्वज को गिराते देखना अशुभफल या चिन्ता कारक है। [illegible] इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ या चिन्ता कारक होता है।

स्वप्न फल कब मिलता ?- रात्रि के प्रथम प्रहर का [illegible] का ८ मास में तृतीय का तीन मास में अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। [illegible] स्वप्न निष्फल होता है।

अशुभ स्वप्नदोष शांति-दुष्ट स्वप्नदोष दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, इष्टदेव पूजन, विष्णु सहस्र नाम, गजेन्द्र मोक्ष, व चण्डी पाठ, ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देख फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है। दुःस्वप्न निवारण मन्त्रः- "लंकायाः दक्षिणेकोणे कुक्कुटो नाम ब्राह्मणः। तस्य स्मरण मात्रेण कुस्वप्नो सुस्वप्नो भवेत्।।"

अथ वृष्टिविचार :— आर्द्रादिकपञ्चकं पू. भा. रेवत्यादि-चतुष्टयम्। पूर्वाषाढ़ा चतुष्कञ्च चन्द्राणि चतुर्दश।।१।। [illegible] विज्ञेयानि मनीषिभिः।। [illegible] रोहिणी, मृ. पू. फा. उ. फा. ह., चि., स्वा. वि., अनु. मू. शत. उ. भा. चन्द्र नक्षत्राणि।। आर्द्रा पु. फा. श्लेषा., मृ., पू. भा., रे., अश्वि., भ., कृ., पू. षा., श्रवण ध., इति सूर्य चन्द्रवर्गे वृष्टि चन्द्र सूर्यर्क्षे सति। [illegible] स्यात्तां स्वल्पवृष्टिस्तदाभवेत्।। तावेन यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते।। अथ गर्भोत्पत्तिविचारः वर्षाप्रश्ने शशिन्यराशिगे [illegible] शुभोक्षिते।।२।। [illegible] ।।३।। [illegible] ।।४।। [illegible] सर्वेतमाः। तदा वृष्टि प्रकुर्वन्ति [illegible]।।५।। [illegible] राशयन्तरितेऽपि पश्यतो

[illegible]

वर्षा-विज्ञान

[illegible]	[illegible]	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३९	३४	[illegible]	३०	२८	२४	१२	१६	१२

[illegible] जिस दिन वर्षा होवे उसके नीचे लिखे दिन [illegible]

[illegible] के पूर्व आने के चौथवें दिन पानी बरस [illegible] जल वृष्टि न हो संकेतः जिस दिन [illegible] उस दिशा में जलवृष्टि [illegible]

विशिष्टयोगावली

दीर्घायुर्योगाः

१- [illegible] जीव नवमे पंचमे भृगुः ।
[illegible] जीवेद्वर्षशतं नरः ।।

[illegible] ३, ११, ९, ५ स्थानों में से किसी [illegible] मनुष्य सौ वर्ष जीता है।

२- [illegible] जीव सप्तमस्थोऽपि भार्गवः ।
[illegible] जीवति जातकः ।।

[illegible] कुण्डली में केन्द्रस्थ १।४।७।१० में हो और शुक्र सप्तम [illegible] तो जातक की आयु सौ वर्ष कहिये।

३- लग्ने जीवस्तथा शुक्रः सौम्यश्चाष्टमगो भवेत् ।
पापाः सर्वे न पश्यन्ति जीवेद्वर्षशतं नरः ।।

लग्न में यदि गुरु और शुक्र पड़े हों, आठवें शुभग्रह हों, सब पाप ग्रह [illegible] न हों तो बालक की आयु सौ वर्ष जानिये।

४- पूर्णे चन्द्रे शुभे वर्गे मित्रे वा मित्रवीक्षिते ।
उच्चत्रिलाभ संस्थे वा पूर्णायुर्जातको भवेत् ।।

पूर्ण चन्द्रमा यदि मित्र के घर में हो, मित्र से देखा जाता हो [illegible] हो, या तीसरे अथवा ग्यारहवें स्थान में बैठा हो तो जातक की आयु पूर्ण जानिये।

बालारिष्टयोगाः

१- षष्ठाष्टरिष्फगश्चन्द्रः क्रूरैश्च सह वीक्षितः ।
जातस्य मृत्युदः यद्यस्त्वष्टवर्षैः शुभेक्षितः ।।

जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा क्रूरग्रह के साथ या क्रूर दृष्टि युक्त ६, ८, १२ घर में बैठा हो तो बालक शीघ्र संसार छोड़ देता है, शुभ ग्रह का दृष्टि होने से उसकी आयु आठ वर्ष होती है।

२- व्यय-शत्रु-गतैः क्रूरैः मृत्युद्रव्यगतैरपि ।
पापमध्यगते लग्ने सत्यमेव मृतिंवदेत् ।।

यदि पापग्रह लग्न से ६, १२, ८, २, में हो और लग्न पाप-ग्रहों के बीच में हो तो बालक की अल्पायु समझिये।

३- शनैश्चरार्कभौमेषु रिष्फधम-
शुभैरावीक्षमाणेषु यो जातो निधनं
लग्न से बारहवें शनि, नवें सूर्य और आठवें ... और उनको शुभ ग्रह न देखें तो अल्पायु योग होता है।

काशीसे	
देशान्तर	मो.
मू.मे.	टी.

४- शनिक्षेत्रगतो भानुः भानुक्षेत्रगतः शशी ।
विंशद्वर्षे वदेन्नाशो रक्षितो यदि शंकरः ।।
कुण्डली में सूर्य मकर या कुम्भ का हो और चन्द्रमा सिंह राशि का हो तो बीसवें वर्ष के अन्त में निधन हो जाता है।

५- लग्नस्थितो यदा राहुः केन्द्रे भवति चन्द्रमा ।
बालस्य तस्यारिष्टं स्याद्रक्षितो यदि शंकरः ।।
जिसकी कुण्डली में लग्न में राहु, केन्द्र में चन्द्रमा हो तो वह जातक किसी भी जप, दान से नहीं बच सकता।

६- चतुर्थे च यदा राहुः केन्द्रषष्ठाष्टगः शशी ।
दशमेऽब्दे भवेन्मृत्युः सद्योजातो न संशयः ।।
जिसकी कुण्डली में चौथे राहु रहे तथा केन्द्र, छठवें या आठवें चन्द्रमा हो तो उस जातक की मृत्यु दस वर्ष में हो जाती है।

७- सप्तमस्थो भूमिपुत्रो लग्ने भवति चन्द्रमा ।
आत्मानं पितरं हन्ति मातरं च न संशयः ।।
जिस जातक की कुण्डली में सप्तम में मङ्गल और लग्न में चन्द्रमा रहता है वह माता पिता सहित अपना नाश कर देता है।

नोट- लग्न, द्वितीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में पापग्रह के होने से बालक को अरिष्ट योग होता है। लग्न लग्नेश पापग्रह के बीच में हो या पाप-युक्त हो, सप्तम भाव दो पापग्रह के बीच में हो (१) लग्नेश अष्टम में (२) अष्टमेश लग्न में (३) लग्नेश अष्टमेश का योग हो (४) चन्द्रमा लग्न पञ्चम सप्तम अष्टम नवम और द्वादश में पाप युक्त हो (५) सन्ध्या समय का जन्म हो (६) मध्याह्न का जन्म हो तो अरिष्ट समझिये।

।। पुत्र-भाव-विचारः ।।

१- शुक्रेन्दुवर्गैः सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
पापैरयुक्ते बहुपुत्रशाली शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
यदि पंचम भाव शुक्र या चन्द्र का वर्ग हो, या इस पर शुक्र, चन्द्र की दृष्टि हो और इसमें पापग्रह न बैठे हों तो उस मनुष्य को बहुत संतान सुख योग होता है। यदि शुक्र और चन्द्र की जगह शनि, मङ्गल का पूर्ववत् योग हो तो वह मनुष्य सन्तानहीन होता है।

२- पुत्रस्थे मदनाधिपे वितनयो जायाविहीनोऽथवा ,
पुत्रादष्टमशत्रुरिःफगृहगाः पापाः कुलध्वंसकाः ।
राहौ नन्दनराशिगे तदधिपे दुःस्थानगे पुत्रहा ,
पुत्रस्थे तनुपेतनौ सुतपतौ गृह्णाति दत्तात्मजम् ।।
यदि लग्न से सप्तमेश पंचम में बैठा हो तो मनुष्य स्त्री-हीन वा पुत्र रहित होगा। पंचम भाव से छठें, आठवें तथा बारहवें यदि पाप ग्रह बैठे हों तो उस मनुष्य से परिवार-समाप्त हो जाता है। यदि पंचम भाव में राहु हो या पंचमेश ६, ८, १२ वें घर में बैठा हो तो मृतवत्सा योग होता है। यदि लग्नेश पंचम भाव में और पंचमेश लग्न में हो तो दत्तक-पुत्र (गोद) का योग होता है।

३- दशमे ... पापिनः सुखे ।
तस्य स... विष्यति न संशयः ।।
यदि कुण्डली ... घर में चन्द्रमा, सातवें शुक्र और पापग्रह चौथे घर में बैठे हों तो ... ति विच्छेदयोग होता है।

४- षष्ठाष्टमस्थो लग्नेशः पापयुक्तः सुताधिपः ।
दृष्टो वा शत्रुनीचस्थैः पुत्रहानिं वदेद्बुधः ।।
यदि लग्नेश छठें या आठवें बैठा हो पंचमेश पापग्रह युक्त हों या शत्रु दृश्य हो तो मृतवत्सा योग होता है।

५- लग्नसप्तमधर्मान्त्यराशिगाः पापखेचराः ।
सपत्नराशिवर्गस्था वंशविच्छेदकारिणः ।।
यदि पाप ग्रह १, ७, ९ और १२ वें घर में बैठे हों और वे शत्रु क्षेत्र के हों तो वंशविच्छेद योग जानिये।

पुत्र-प्राप्ति समय- लग्नेश, पंचमेश के राशि अंशों को जोड़ने से जो राशि अंश बने उसपर जब गुरु आवे तो पुत्रोत्पत्ति का समय आता है।

दत्तक-पुत्र योग

१- पुत्रस्थाने बुधक्षेत्रे मन्दक्षेत्रेऽथवा यदि ।
मन्दिमान्दयुते दृष्टे तदा दत्तादयः सुताः ।।
पञ्चम भाव बुध या शनि की राशि में हो (३, ६, १०, ११) बुध शनि से युक्त या दृष्ट हो तो दत्तक पुत्र योग होता है।

पुत्र-प्राप्ति धर्म करने से होती है। बुध, शुक्र और चन्द्रमा प्रतिबन्धक हों तो शिवजी का अभिषेक कराना चाहिये। बृहस्पति प्रतिबंधक हो तो मन्त्र, तन्त्र औषधि प्रयोग से कष्ट निवारण जानिये। शनि राहु और केतु बाधक हो तो कुलदेवता तथा सन्तान गोपाल की आराधना विहित है। पंचम स्थान में जो राशि हो उसकी संख्या तुल्य हरिवंश का पारायण प्राचीन देवस्थान में या तुलसी के बीच में पुष्कर प्रादुर्भाव सम्पुटित प्रायश्चित करके स्त्री, पुरुष साथ होकर सुनने में कल्याण होता है। काशी से १७ मील उत्तर बृहत् पंचक्रोशी में श्री मार्कण्डेश्वर महादेव का मन्दिर इसके लिये सिद्ध तथा उपयुक्त स्थान है।

कलत्रभावविचार

१- शत्रुस्थाने यदा भौमः सप्तमे सैंहिकासुतः ।
नैधने भानुपुत्रस्थैस्तस्यभार्या न जीवति ।।
जिसकी कुण्डली छठें मङ्गल, सप्तम में राहु और बारहवें शनि पड़े हों तो उसकी स्त्री नहीं जीती है।

२- जायाधिपे लग्नशत्रुधर्मव्ययगते क्रमात्। एक-द्वि-त्रि-चतुर्भार्या भवन्ति नियतं नृणाम्।।
यदि सप्तमेश लग्न, छठें, नवें और बारहवें घर में पड़ा हो तो उस व्यक्ति को क्रम से १, २, ३ और ४ स्त्रियों का योग होता है।

नोट— (क) द्वितीय, सप्तम में पाप ग्रह हों, (ख) द्वितीयेश, सप्तमेश पाप युक्त हो (ग) शुक्र से चौथे, आठवें पाप ग्रह हों (घ) सप्तम घर पर पाप ग्रह की पूरी दृष्टि पड़ती हो (ङ) सप्तमेश अष्टम में और अष्टमेश सप्तम में हो, (च) शुक्र सप्तम में हो (छ) सप्तमेश पाप युक्त ६, ८, १२ में हो, (ज) केवल बृहस्पति सप्तम में हो (झ) सन्तान प्रति बाधक योग पड़े हों तो मनुष्य स्त्री सुख से वंचित रहता है। यदि दाहिने हाथ में विवाह रेखायें ऊपर की ओर मुड़ी हों और मोटी हों तो उस मनुष्य का विवाह नहीं होगा।

स्त्री प्राप्ति समय- लग्नेश ... सप्तमेश के राशि अंशों को जोड़ने से जो राशि अंश बने उसपर बृहस्पति आ... तो स्त्री प्राप्ति का समय हो जाता है।

प्रकारान्तर

लग्न में सूर्य का सम्बन्ध ... में पूर्ण चन्द्रमा या शुक्र का सम्बन्ध ... मङ्गल का योग हो तो धातु विद्या ... योग हो तो सूत का काम तथा व्यव... हो तो विद्वान् और ज्ञानी हो (५) शु... और दीर्घायु हो (६) शनि हो तो ... तो लोहा का व्यापार करे (८) केतु ... लग्न में हो शुभ दृष्टि न हो तो सर्प ... दृष्टि हो तो विष का भय हो (११) ... प्रेम हो (१२) दशम में बुध हो तो ... ग्रह दशम में हो तो स्थिर हो (१४) ... हो तो गोपालक हो (१५) चतुर्थ में ... बनाने वाला हो (१६) नवम में शु... हो तो अपने भृत्य से विरोध करे (१७) ... तो परदारा संसक्त हो (१८) सप्तम ... स्त्री सुन्दरी हो (१९) शनि का सम्बन्ध ... में पापग्रह हो तो वीर हो शुभग्रह हो ... ग्रह नवम में बृहस्पति हो तो कृषि क... केतु के होने से धार्मिक होता है (२... हो (२४) लग्न में चन्द्रमा हो शुक्र ... हो (२५) चतुर्थ या पंचम में मंगल ... से उदर विकार होता है (२६) लग्न ... हो तो विद्वान होता है (२७) द्वितीय ... हो तो केमद्रुम योग होता है (२८) ... हो तो धनवान् होता है। शुभ सम्बन्ध ... मार्ग से धन लाभ होता है (२९) ... व्यय होता है (३०) सप्तम में राहु ... में केतु के होने से शीघ्र वार्धक्य चिह्न ... है (३१) बुध गुरु और शुक्र के योग से श्रीमान् हो (३२) घटिकालग्न को एक ही ग्रह देखता हो या तीनों के ... देखे या तीनों के नवांश को एक ही ग्रह देखे तो श्रीमान् ... के घटी के तुल्य राशि जानना कलादि ... राश्यादि को स्पष्ट सूर्य के राश्यादि में ... लग्न और सप्तम के राशि, अंश और ... ग्रह देखे तो भी राजयोग होता है। इसमें ... से भी तारतम्य जानना चाहिये (३४) ... द्वितीय स्थिति को छोड़कर बाकी तीनों ... स्थिर राशि में रहता है वह अपने द्वादश ... को देखता है एवं द्विस्वभाव में रहता है ... बाकी सब द्विस्वभाव को तथा द्विस्वभाव ... में इसी दृष्टि से व्यवहार करना ठीक है ... वर्ष में अढ़ाई ...

दण्ड शुभ समय है इसमें उत्पन्न बालक श्रीमान् होता है (३६) ... लग्न में चन्द्रमा हो द्वितीय में शुभ युक्त बृहस्पति हों या उच्च गत ग्रह हो तो भी श्रीमान् हो (३७) सप्तम में शुभ ग्रह हो तृतीय में पाप ग्रह हो चतुर्थ में भी शुभ योग हो तो श्रीमान् हो (३८) चतुर्थेश सप्तमेश द्वितीयेश और लाभेश लग्न को देखते हों और एकादश को शुक्र देखता हो तो धनवान् हो (३९) ... ग्रह भी लग्न को देखते हों तो भी भाग्य योग होता है (४०) चर ... का नवम और द्विस्वभाव लग्न का सप्तम बाधा ... इनमें रहने वाले अपनी दशा में ...

विशेष योग

...राशिः ... पञ्चमी ५। याम्य (मुहर्र) जयद् योगः घ. ... राशिः ८।२३ (रा.१।१६)। भद्रा घ.१८।५८ (... योग घ.५४।५७ (रा.३।५३) या.। (ख) अत्र विशेष... भौमः (बुढ़ला मंगल) इति लोके प्रसिद्धम्। श्रीशीतलाष्टमी ८ ... राशिः१८।० (दि.११५)। (घ) कोटि सूर्य ग्रहः समा। चान्द्र ... घ.६।४२ (दि.८।३३) उ. घ.३८।५५ (रा.९।२६) या.। रेवती न... राशिः४५।६ (रा.११।५३)। पचक (पचखा) आरम्भः। पाप मोचनी ... ...हेति वारुणी पर्वयोगः घ.४४।४९ (रा.११।४६) उ. सूर्योदययावत्। (शनि) ... घ.४५।५२ (रा.१२।११) उ.। प्रदोष व्रतम् १३। महावारुणी पर्वयोगः। ... घ.४५।५१ (दि.८।३३)। भद्रा घ.१५।४५ (दि.१२।७) या.। मास शिवरात्रि ... राशिः६।५१ (दि.८।३३)। ...स्नानदान श्राद्धादौ भौमवती अमा ३० पुण्यतमा। मन्वादि ३० ...

दैनिक लग्न सारिणी

...नभ्रष्टो बहुकलहयुतः ... संततम्।।१।। स्थान- ... जीवे शांति ... जनयति न ... गृहयुवतिवसन- ... ज्वलं न च ... नरः सुखदं गुरौ।।४।। ... सुपवाद्यम्। जनयति ... बन्धं व्याधिं चाप ... ...शपत्रपतितं न बहु न च चिरम्।।२।। सूर्यसुते तुर्यगृहे ... ...सर्परन्ध्रदंष्ट्रमहिपाश्वकुञ्जरखरान्। सद्य विभूतिसौख्य ... प्रशास्त्यर्थरिपूंश्च वीरलालितः।।३।। चतुर्थ गृहे सूर्यपुत्रेऽभ्युपेते सुहृद्वित्तभार्यादिभिर्विप्रयुक्तः। भवत्यस्य सर्वत्र चासाधु दुष्टं ... नितम्।।४।। सुतधनपरिहीणः पञ्चमस्थे प्रचुरकलहयुक्त... पुरोगः पश्चाते पिबति च वनितास्यं श्रीपुटाक्षम्।।५।। ... च हीनः स्त्रीपुत्रैः सूर्यजे दीननेष्टः। तद्वद्धर्मस्थे ... देवीक्रियाद्यः।।६।। कर्म प्राप्तिदर्शमेऽर्थक्षयश्च विद्याकीर्त्योः ... सौरे। तैक्ष्ण्यं लाभे परयोषार्थलाभश्चान्त्ये प्राप्नोत्यपि ... कालमपेक्ष्य च पात्रं शुभकृद्विदभात्यनुरूपम्। न मधौ ... विसृजत्यपि मेघवितानः।।८।।

प्रसूति लग्न विचार

मेष- जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका ... २ या ३, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पैर से प्रसव, भूमि पर, घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं पीला भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे इन वर्षों के आरम्भ में तुलादान, गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष- ... और आयी, जन्मतेही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पैर से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत, स्वच्छ वस्त्र जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया. १।१२।८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन- माता का पश्चिम में शिर, उपसूतिका ३ या ५ माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव मुख ऊपर को जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाक छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म। माता ने पहले लवणयुक्त ... अल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ... वर्षों में बालक कष्ट पावे इससे बचे तो १०० वर्ष जीवे, कष्टकारक वर्षों के प्रवेश समय तुलादान छायादान मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणप्रद है।

कर्क- माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ६, बालक जन्मते ही छींका नाल छूटा, भूमि पर जन्म, ... भाग में चिह्न, पैर के बल जन्म, घर के ... भाग में प्रसव स्थान, माता का वस्त्र श्वेत या लाल, माता ने प्रसव के पूर्व मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया। बालक के वामांग में लहसन आदिका चिह्न, बालक जन्मोत्तर देर से रोया ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इससे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश समय तुलादान, छायादान मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह- माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलिन-सा लाल वस्त्र शुष्क ... भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३ पीछे से १ आई दीपक ... बालक जन्मते ही तुरन्त रोया। दक्षिण भाग में प्रसव स्थान। ... इन वर्षों में बालक कष्ट पावे इनसे बचे तो ६४ वर्ष जीवे। ... श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जप या आदित्य हृदय ... भोजन करावे तो कल्याण होवे।

कन्या- माता का दक्षिण में शिर, एक जीर्ण वस्त्र मिष्ठान्न वाली चीज या ... का भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही ... शब्द किया, नैऋत्यकोण में सूतिका स्थान ६।१५।... इन कष्टकारक वर्षों में गोदान, मृत्युञ्जय जपादि और मूंग के मोदक भोजन कराना श्रेयष्कर है, यदि इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला- माता का शिर पश्चिम या पूर्व को श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुजा हुआ ... ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोध पूर्वक खाई गयी थी। जन्म समय ... ३ या ... एक कन्या भी हो दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ... कर ... शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान ... १५।३६।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के आरम्भ में नवग्रह दान, नवग्रह जप ... करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक- माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दुग्ध वस्त्र, अधिक ... क्रोध पूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३ पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया दीर्घ केश, घर के पश्चिम भाग में प्रसव स्थान, १२।२८।५८।६१ इन कष्टकारक वर्षों के आरम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु– माता का शिर पश्चिम पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पकवान भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिका स्थान, १।१०।१८।२१।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन महामृत्युञ्जय जप ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७१ वर्ष जीवे।

मकर– माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़ दूध या कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था, जन्म समय १ स्त्री पीछे से आई। दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया और छींक भी किया। घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिका स्थान ५।१३।२७।३३।५७।६३।८४ इन कष्टकारक वर्षों के आरंभ में रुद्राभिषेक स्वर्णदान अन्नदान करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ– माता का पश्चिम को शिर, जीर्ण धूम्र-वस्त्र या कुरुप वस्त्र मधुर शीत शाकादि भोजन, कष्ट अधिक, जन्म के समय पास में स्त्रियाँ ४ या २, १ पीछे से आई उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी थी। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के आस-पास प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन– माता का शिर उत्तर, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र ढंग का भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था। बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशानकोण में सूतिका स्थान, १।७।१३।३६।४५ इन कष्टकर वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह शान्ति हवन, मृत सञ्जीवनी मन्त्र का जप करना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न में लक्षण मिले वही बालक का जन्म लग्न जानना, क्योंकि वह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

राशियों का वर्ण— मेष लाल, वृष श्वेत, मिथुन हरा, कर्क पाटल, (गुलाब के फूल जैसा थोड़ा लाल), सिंह धूम्र, कन्या चित्र, तुला कृष्ण, वृश्चिक गौर, धनु गौर, मकर भूरा, कुम्भ और मीन श्वेत वर्ण का है।

ग्रहों का वर्ण— सूर्य लाल, चन्द्रमा गौर, मंगल लाल, बुध श्याम, गुरु पीत, शुक्र श्वेत, शनि काला, राहु और केतु भी काले होते हैं।

राशियों की दिशा— मेष, सिंह, धनु पूर्व का। वृष, कन्या, मकर दक्षिण का। मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम का और कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तर के स्वामी होते हैं।

ग्रह दिशा—सूर्य पूर्व, शुक्र अग्निकोण, मंगल दक्षिण, राहु नैऋत्य, शनि पश्चिम, चन्द्रमा वायव्य, बुध उत्तर और गुरु ईशान का स्वामी है। जो ग्रह अपनी राशि से मित्र की राशि में और उच्च में रहता है एवं शुभ ग्रह और ग्रह के साथ रहता है वह बलवान कहा जाता है और ग्रह शत्रु के गृह में, पाप ग्रह से और शत्रु से युक्त होता है यह दुर्बल माना जाता है। जो भाव अपने स्वामी से तथा शुभ ग्रह से युत हो तो बलवान तथा पाप ग्रहयुक्त हो दुर्बल होती है। जिसके घर का स्वामी छटें, आठवें और बारहवें भाग में पड़े अथवा षष्ठाष्टम द्वादशांश जिस भाव में पड़े उस भाव की हानि होती है।

जातक प्रकरण

… जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे १, बुध शुक्र …

… के मध्य में चन्द्रमा हो २, लग्न शनैश्चर चन्द्रमा से अष्टम हो ३, भौम सप्तम चन्द्रमा को न देखता हो ४- इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना। जहाँ राहु शय्या वहाँ भंग तहाँ कुज होय।

अथ मातृ-सुख-नाश योग– (१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में (२) चन्द्रमा से सातवें … युक्त शुक्र होवे (३) … ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा … अथवा सातवें स्थान … में …

… भी यो… जाके ऐसे य… सन्त… परे जाय त्रिक भा… लग्नपति, जाय परे …

नीच यो…– भवन पाँचवें गुरु बसे, नी… विक्राल। म्लेच्छ होइ कुछ … राहु संग, सप्तम भाव विराज। …

जारज योग– भानु, चन्द्र तनु … जो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कु… चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तरा जन्म में नव शिशु कही वरार।

अथ श्री जातक– क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी … होय सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहोय कोय। जाके कुज दश में बसे … ऋणी होय पति तासु। लग्न राहुशनि सातवें पति जीवै नहिं जासु। क्रूर युत लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी, बुध वर कहें कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में, कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें, कन्या वास कुठौर।। लग्न बीच शनि कुच तमसि, निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहै, पति को तजे तमारि।। छठे आठवें चन्द्र जो, क्रूर परे जिन अंग। भौम आठवें भवन में, सो पति करहि भङ्ग।। राहु सातवें लग्न कुज संकट शुभसो हीन। ताको पति जीवित रहे, वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्टकुज क्रूर युत राहु बसे … हो कुछ दिवस में, कहत गणक गुणधाम। पाप ग्रहों के बीच … या चन्द्र। सो तिय नाशे दूनों, भाषत कविकुल वृन्द।। सप्तम भृगु … सी कुल दीपी नारि। रूपवती तनुभृगु बसे, बुधजन कहत विचारि।।

वैधव्य (विष) कन्यायोगः– चौपाई–रविवार द्वितीया जो हाय। श्लेषा ताहि दिन में जोय।।१।। कृत्तिका होय शनिश्चरवार। याते तिथि कर करो विचार।।२।। शतभिषा मङ्गलवार। कही द्वादशी तिथि निर्धार।।३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानी सोय।।४।। जन्म लग्न द्वय शुभ ग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वय ग्रह मानो। तो कन्या को विधवा जानो।।६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय।।७।। पर शतभिषा मङ्गलवार। याते तिथि लीजो निर्धार।।८।। रविवार द्वादशी जो होय …

… नक्षत्र विशाखा जानो सोय।।९।। … करे।।१०।। धर्म सदन में भूमि… में, कन्या विधवा जान।।११।।

वैधव्य (…)

… ते, शुभ ग्रह अष्टम …

… सिस जो परे, तो कन्या को विधवा … सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन …

(…) भङ्गयोगः– जन्म लग्न वा चन्द्र … सप्तम लग्नपति, शुभगा कन्या होय।।

…– … शे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कापष्टमे … वा मृतापत्या।

…– चौपाई–केन्द्रभाव नभगा शुभ होई। नर … धन ताके। मन प्रसन्न होइहैं सुत वाके। … गुरु आगे भाउ। सोई तिय होय नृपति की … षटवर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि रवि केन्द्र … रानी होय सदन बद भारी।। दोहा– कर्क … पौत्र धन भूरियुत, ताको पति नृप शूर।। … सप्तम भौम। सुर गुरु परिपूरन लावै, रानी …

…विचारः– पंचमे शुभसंदृष्टे पंचमाधि- … वती भवेत्।।

…ये अशुभ प्रसव मासः–

… में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, … में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया … घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता … में दिन को घोड़ी प्रसूती हो तो महाभय … मास को ग्रहण करें। प्रसूती गौ आदि … घृत युक्त पीली सरसों का हवन करें। … शान्ति करने से शुभ हो।

…– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति … जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण … होते हैं। कृपणता त्याग कर त्रिखल …

… विचार– … शुभ होता है। … यदि बच्चे को सर्व प्रथम … पर की दंत पंक्ति निकले तो मातुल को भयप्रद हो। सदन्तोर्ध्वपंक्ति वाला … जन्मे तो माता पिता आदि को भयप्रद होता है, शान्ति करानी चाहिये।

अथैकनक्षत्रजन्मफलम्– वृद्धगर्ग जी कहते हैं कि–यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता का एक नक्षत्र में और एक ही चरण में जन्म हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

कन्याजन्म नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा
फलम्	श्वसुरहानि	सासनाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा … श्वसुरहन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजा नव … तथाऽऽश्लेषाद्यपादजा।।

…

अश्विनी	आश्लेषा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

यह ६ नक्षत्र गन्डमूल … ते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और … नाश करनेवाला होता है … अपना शरीर नष्ट होने से बच जा… भवन तथा घोड़ों का स्वामी … है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता … नहीं करना चाहिए। तत्पश्चात् शान्ति कराके विधि से मुख देखना … है।

मूल और आश्लेषा के चरण जन्म फल

मूल			आश्लेषा		
चरण		फल	चरण		फल
१	में	पितृनाश	४	में	पितृना…
२	"	मातृनाश	३	"	मातृना…
३	"	धननाश	२	"	धनना…
४	"	शान्ति से शुभ	१	"	शान्ति से …

अथ मूलनिवास– फाल्गुने ज्येष्ठे वैशाखे मार्गे मूले … आषाढ़े वा आश्विने माघे स्वर्गे भाद्रपदे स्थितिः। श्रावणे कार्तिके चैत्रे … मृत्युमण्डले शुभं स्यात् स्वर्गपाताले मृत्युलोके च मृत्युदः।। तृतीय … शनि भौमः समन्वितः। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्। … प्रसूयेत् महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे इषच्छुभकरं भवेत्।

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृती शूले गण्डातिखण्डे … यमकंटके। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गण्डदिने शिशुः। जातो हन्ति … तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा … मन्त्र … गण्डदोषोऽपि विधानेन … शताच्छिद्रं घटं तस्मात्र … बालका… शांति। जप होमप्रदानेन कृते स्यान्मङ्गलं ध्रुवम्।। … वर्गैः। मुनीनां वचन सत्यं … कल्याणं …

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल
७	८	११	११	१२	१३	३
मूल नाश	नश क्षय	मातृ पीड़ा	मातुल नाश	राज्य लाभः	राज्य मंत्री	राज्य प्राप्ति

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम पाँच घटी, किसी के मत से चार घटी … के मत से एक घटी और किसी के मत से आधी घटी एवं मूल नक्षत्र … की आठ घटी, किसी के मत से चार घटी, दो घटी और आधी घटी, … कहलाता है, इस समय में जो बच्चा जन्मे उसका परित्याग कर दें … वर्ष तक मुख न देखे। घनगण्डे … शान्ति कुर्यात् स्वशक्तितः। … नाशमायाति … विशेषतः।

अश्विनीनक्षत्रफलम्– अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में … हो तो पिता को भय होता है। विशेषः– पितृहा तु दिवाजाती रात्रौजातस्तु … सन्ध्यायोजातो नास्तिगण्डो निरामयः।

आश्लेषापाद फलम्– आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम … जन्म हो तो शुभ सम्पत्तिदायक फल, द्वितीय चरण में धन का नाश, तृतीय … में माता का नाश, चतुर्थ चरण में पिता का नाश होता है। इसी नक्षत्र … शांति करने से दोष नष्ट हो जाता है।

मघापाद फलम्– आद्यपादे मघायाः स्यान्मातृपक्षस्य नाशः …

… स्यानुतीये सुखसम्पत् चतुर्थे … विद्या … [illegible]

…पादफलम्– [illegible] … तृतीये … च तुर्येशः … बालकः … [illegible]

रेवतीपादफलम्– रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप सम्मान, दूसरे में मन्त्री … तीसरे में सुख सम्पत्ति युक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

[illegible]

जन्मकुण्डली में … [illegible] … में हो तो क्रोधी होता है। … [illegible] … पञ्चमेश अष्टमेश … [illegible] … व्यभिचारिणी होती है। … [illegible] … तो उसको कुष्ठ रोग होता है। … [illegible] … हो तो भी कुष्ठ रोग हो। … [illegible] … और शनि पाप का द्वादश … [illegible]

… [illegible] … में शनि, चन्द्रमा होकर नवम … [illegible] … बृहस्पति चतुर्थ … [illegible] … सप्तम में सूर्य बुध राहु और अष्टम … [illegible] … मंगल और बुध एकत्र शुभग्रह … [illegible] … की दृष्टि हो तो वह विदूषक … [illegible] … शुभ ग्रह देखते हों तो … दानशील होता है।

… [illegible] … (२) दशम में हो (३) शुक्र और मंगल … [illegible] … (३) … चतुर्थ में हो (४) चन्द्रमा से दशम स्थान … [illegible] … (५) तो व्यभिचारी होता है।

… [illegible] … (१) सप्तम में शुक्र लग्नेश हो (२) … [illegible] … चतुर्थ में हो तो उसकी स्त्री उससे सन्तुष्ट नहीं रहती।

… [illegible] … द्वादश में पापयुक्त हो तो नेत्र विकार होता है और … [illegible] … शुक्र मंगल अष्टम में हो (१) मंगल और शुक्र … [illegible] … (२) शुक्र और चन्द्रमा मंगल की राशि में हो या शनि मंगल की राशि में हो (३) … [illegible] … धनु मेष का वृष लग्न हो पापग्रह बृहस्पति को देखता हो … [illegible] … पापग्रह का लग्न हो वा धनु या वृषलग्न देखते हों तो … विकार होता है। … [illegible] … नवम द्वितीय द्वादश और पंचम में पापग्रह हो और पापग्रह … [illegible] … हो तो … होता है।

… [illegible] … सप्तम स्थान अपने स्वामी और शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट … [illegible] … लग्न चन्द्रमासे पंचम स्थान स्वामी शुभ ग्रह से … [illegible] … लग्न में सूर्य और चन्द्रमा हो तो स्त्री पुरुष … [illegible] … दोनों की आँख में विकार होता है।

शुक्र … [illegible] … में हो मङ्गल शनि देखते … [illegible] … हों तो उसकी स्त्री पुंश्चली … [illegible] … हो तो वह पुरुष स्त्री पुत्रहीन हो, … [illegible] … दृष्टि हो तो अधिक अवस्था में … [illegible]

चन्द्रमा कर्क और वृश्चिक के नवांश में पाप युक्त हो तो गु... और द्वादश में दो पाप ग्रह हो चन्द्रमा लग्न में और सूर्य... होता है। चन्द्रमा दशम में मङ्गल सप्तम में और शनि द्वि... होता है। चन्द्रमा दो पाप ग्रह में रहकर सूर्य हो तो श्वास इत्या... रोग होते हैं।

द्वि.	नगर ... द्वितीय
	...त कुष्ठ
कुरुक्षेत्र	अंगहीन

(१) अथ तेजो मन्दी निकालने का ध्रुवा

अथ दिन ध्रुवा ॥१॥

सूर्य १३०। चन्द्र ९४। मंगल ८०९। बुध ७०२। बृहस्पति ७१३। शुक्र ८०८। शनि ८५। पृथ्वी. भर का ध्रुवा २०८५।

अथ तिथि ध्रुवा ॥२॥

प्रतिपदा ६१०। द्वितीया ७१०। तृतीया ४८१। चतुर्थी २५०। पंचमी ३३४। षष्ठी ३०४। सप्तमी ८१२। अष्टमी १११। नवमी ५६५। दशमी ३०५। एकादशी २२३। द्वादशी २६१। त्रयोदशी ५२४। चतुर्दशी ५५२। पूर्णिमा ६३०। अमावस्या २६६॥

अथ नक्षत्र ध्रुवा ॥३॥

अश्विनी १७६। भरणी ६८३। कृत्तिका ३७०। रोहिणी ७७५। मृगशिरा २०२। आर्द्रा १४६। पुनर्वसु ५४०। पुष्य ६३४। श्लेषा १७०। मघा ७३। पू. फा. ८५। उ. फा. १४८। हस्त ८१०। चित्रा ३०५। स्वाती ८६१। विशाखा ७३४। अनुराधा ७१२। ज्येष्ठा ७१६। मूल ६४३। पू. षा. ६१४। उ. षा. ५२३। अभि. ६८३। श्रवण ६५७। धनिष्ठा ५००। शतभिषा ५६४। पू. भा. प. ३३६। उ. भा. प. १८३। रेवती ८३०।

अथ मास ध्रुवा ॥४॥

चैत्र ६१। वैशाख ६३। ज्येष्ठ ६५। आषाढ़ ६७। श्रावण ६९। भाद्र ७१। आश्विन ७३। कार्तिक ५१। मार्ग ५३। पौष ५५। माघ ५७। फाल्गुन ६५।

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ॥५॥

मेष ५२०। वृष ७६२। मिथुन ५१०। कर्क २१८। सिंह ८३०। कन्या २६०। तुला ५०३। वृश्चिक ७११। धनु ५२४। मकर ५५४। कुम्भ २७०। मीन ५८६।

अथ देश तथा नगरों की ध्रुवा ॥६॥

कलकत्ता ३४७। नागपुर १६६। आसाम ७९१। इटावाँ ८९०। हरद्वार १७२। बीकानेर २१३। अजमेर १६७। बम्बई १६८। मध्यप्रान्त १६८। नेपाल १५४। चीन ६४२। पंजाब ४१९। रंगून १६७। सूरत १२८। यूरोप २७६। अमेरिका ३२२।

अथ पदार्थों की ध्रुवा ॥७॥

सोना २५३। चाँदी ७६०। तांबा ५६३। पीतल २५८। लोहा ९१५। कांसा-पत्थर १६३। मोती १४२। रूई ६१७। कपड़ा १२७। पाट ४७६। हैसियन ७३८। सूती १०३। तम्बाकू २४०। सुपारी २५२। लाह ८८। मरिच २६८। घृत ४६४। अतर ७५। गुड़ ३५६। चीनी ३२८। ऊन ११२। शाल ८११। धान ७१२। गेहूं ३३२। तेल मूंग ८०२। चावल ७७४। तीसी ३८६। गौ १३२। बैल १६३। भैंस ६२८। हाथी ८३०। घोड़ा ८३५।

अथ तेजी मन्दी देखने का चक्र ॥८॥

सूर्य १ तेज। चन्द्र २ अतिमन्द। भौम ३ तेज। बुध ४ अतितेज। बृहस्पति मन्द। शनि ६ तेज। राहु ७ सम। केतु ८ तेज। शुक्र ९ तेज।

जिसदेश की, जिस वस्तु की, जिस दिन तेजी मन्दी निकालनी हो उस देश, वस्तु, तिथिवार नक्षत्र मास, राशि इन सबके ध्रुवाओं का योग (जोड़) कर ९ का भाग देकर शेष से जिस दिन को विचारना है, उस दिन से शेष तुल्य कोष्ठ आठवें चक्र में देखकर तेजी मन्दी ज्ञान कर लेवे।

(२) दैनिक तेजी ... निकालने की रीति

वस्तु ... धातु

सोना ९६। चाँदी ७१। पी... मूंगा ५१। लोहा ५४। शीशा ९०। कांसा १२७ मोती ९५। रांगा ६७। ताँबा १०। कुमकुम २५।

"किराना"

कपूर १०२। गुड़ ७३। जीरा ७०। शक्कर १०२। मिश्री १०३। ज्वार १००। घृत ५०। तेल १०। नमक ५९। हींग ६२। सुपारी ३०४। अरहर ७२। मिर्च ८३। सूत १४। सरसों ८०८। कपड़ा १००। चमड़ा ८७। मूंग १५। सौंठ १००। गुड़ ४०। बिनौला ८८। मजीठ १४४। नारियल ७८१। छोहारा १४४। चावल १७। जौ ५७। साठी १६५। गेहूँ १४। उड़द ८०। तिल ५३। अरहर ७२। चना ५६। कपास १२७। अफीम १९२। रूई ७७।

"पशु"

अश्व ७७०। हाथी ६४। भैंस ९२। गाय ७७। बैल ८७। बकरी ६०। साँड़ ९४। ऊंट ८५।

"नक्षत्र विंशोपक"

अश्विनी १०। भरणी १०। कृत्तिका ९६। रोहिणी २०। मृगशिरा ५६। आर्द्रा ८६। पुनर्वसु २१। पुष्य ६४। आश्लेषा १३५। मघा १५०। पू. फा. २२०। उ. फा. ७२। हस्त ३३४। चित्रा २१। स्वाती २१०। विशाखा ३२०। अनुराधा ४९३। ज्येष्ठा ५५९। मूल ५५२। पू. षा. १४२। उ. षा. ४२०। श्रवण ४५०। धनिष्ठा ७३६। शतभिषा ५७६। पू. भा. २७५। उ. भा. २२६। रेवती २५६।

संक्रान्ति राशि विंशोपक

मेष ३७। वृष ८४। मिथुन ६६। कर्क १०१। सिंह १२५। कन्या १०२। तुला १०४। वृश्चिक १४४। धनु १४४। मकर १९८। कुम्भ १९०। मीन १८०।

"तिथि"		विंशोपक		"वार"		विंशोपक
१	१८	१०	१७	मंगल	५०	निकालनी हो उस
२	२०	११	१५	बुध	७२	महिने की संक्रान्ति
३	२२	१२	११	गुरु	६५	का ध्रुवांक तिथि
४	२४	१३	१३	शुक्र	२४	वार उसमें राश का
५	२६	१४	८	शनि	१४	ध्रुवांक जोड़ देवे।
६	२५	अमावस्या	९	तेजी मन्दी		फिर ३ का भाग देने
७	२३	पूर्णिमा	१६			से १ शेष तो मन्दी
८	२१	रवि	४०	जिस मास की		२ समान और ०
९	१९	चक्र	५०	या जिस दिन की		बचे तो तेजी।

(३) तेजी मन्दी निकालने का तृतीय प्रकार

वस्तु	स्वामी राशि	पुरश्चरण
गेहूं	कुम्भ	नियम पूर्वक ब्रह्मचर्य
सुवर्ण	मेष	से कामनानुकूल
मोती	मीन	कार्य करना
खाँड़	कुम्भ	
चावल	मेष	
ज्वार	वृश्चिक	
रूई	मिथुन	
चाँदी	कर्क	

चन्द्रमा– जिस वस्तु के स्वामी ... चन्द्रमा हो तो वस्तु तेज होवे। उस वस्तु के दू... पाचवें, छठ, सातवें, नवें, दसवें और ग्यारहवें ... वस्तु मन्दी करता है।

सूर्य– मं. श. रा. के यह क्रूर ग्रह ... राशि से तीसरे छठें दसवें ग्यारहवें रहे हों वह ... वस्तु के स्वामी राशि से पहले, दूसरे, चौथे, पाँच... जा रहे हों वह वस्तु तेज करेंगे। जितने अधिक ... उतनी अधिक तेजी आवेगी।

अग्नि बुझाने का मन्त्र

ॐ नमो कोरा करावा जल सा झरिया ... ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो ... फूरी मन्त्र ईश्वरी वाचा। मन्त्र ग्रहण या दीपाव...

विधि- कूप सन्निकट से सात कंकड़ों ... पढ़ कर अग्नि की ओर देवे।

नजर झाड़ने का ...

गरुर चरण दिया मन, श्रीहरी मोक्ष ... नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पाल... उड़ाय माटी शलिकर पाँव देख, टुकरिया आय... कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा।। दीपावली में सि... विधान है।

सर्प विषनाशक मन्त्र

गरुड़ास्त मन्त्र- ॐ सुपर्णोसि स्मरुत... यन्तरिक्षी। सोम आत्माछन्दा स्वयंमानि य... यज्ञर्याज्ञ यम्य छन्दिष्टायाऽशम्या सुपर्णोसिगरु... ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपा...

दधि मधु नवनीता, पीप्पली शृङ्ग... सुकेशी। यदि डसति सरोप तक्षको वासु... मृत्युर्नराणाम्।

गायके ताजे दूध से निकाला ताजा मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च और कूट, बराबर मात्रा में मिला... साँप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जायगा।

(१) चिन्ता निवारण लक्ष्य प्राप्ति मन्त्रः—

ॐ श्रीं ह्रीं कमले कमल वालेय प्रसीद श्रीं ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः।

(२) पुत्र कन्या के विवाह में यदि कठिनाई उपस्थित होती हो या विघ्न हो तो श्रीकात्यायनी देवी का पूजन विधि से करावे।

स्थायीधन स्थिति मन्त्रः— ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः॥

प्रसवसमयेजलमन्त्रः— अकाश टले पर्वत टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोंका फोंकी रिक्ता कुण्डली बसिया बाहिर हव अरिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर यरे शीघ्र करिया ... पड़े।। ताजा शुद्ध जल को सात बार मन्त्र पढ़कर परोसने के पश्चात् पिला... ...अपने है।

श्री शुभ संवत् ...

ॐ भूर्भुवः स्वः ... बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय ... मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय ... नमः॥

दैनिक लग्न सारिणी

...करके देना।

...चलेन च तार्क्ष्य पक्ष निपातेन भूम्या गच्छ (तार्क्ष्य=गरुड़)।

...झाड़ने का मन्त्र— शर्यातिल सुणन्यांच च्यवनं ...ध्योः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति। जल से धुलवाना।

ज्वर झाड़ना— ॐ नमो नरहरे रोगापहारिते ज्वरं नाशय नाशय ...मारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

अन्तरा तिजरा चौथिया का मंत्रखलंकायाम् दक्षिणेतीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरण मात्रेण ज्वरो याति दशोदश।। पीपल के पत्ते पर लिख कर डोरा से बाँध देवे।

यदि गर्भवती को क्लेश हो तो सुख से प्रसव के लिये चन्दन से चक्रव्यूह कांसे की थाली में बनावे फिर धोकर धर्मराज का स्मरण करके पिलावे। **मंत्रः**— हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीतामयाक्षिणी तस्य नूपुरशब्देन विशल्या गर्भिणी भवेत्।

चिरचिरा (चिचिड़ी) मस्तक में बाँधने से सुख से प्रसव होता है। सब मंत्रों को १०८ बार पढ़ना।

यात्रा में स्मरण करने का मंत्र- यः स्मरेत्तुलसी सीतां रामं सौमित्रिणां सह। कार्यं कृत्वा रिपूञ्जित्वा क्षेमेणायाति वैनरः।। दही थोड़ी-सी अपने खाकर यात्रा करे और चंदनतिलक से सदा पूर्ब रहे।

गांव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिये गुरु पुष्य हस्तार्क अथवा उत्तर पूर्व में मिट्टी के कड़े कसोरे (परई) के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका देने से बीमारी नहीं होगी।

मंत्र- अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटीश्वेतवाहनः। बीभत्सुविजयी पार्थ सव्यसाची धनंजय। कपिध्वजी गुड़ाकेशो गांडवी कृष्णसारथिः।

एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च योलिखेत् न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते। **ज्वर झारने का मंत्र**- ॐ नमो अजैपाल की दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरी मंत्र ईश्वरोवाच।

इस मंत्र को सात बार पढ़कर झारे तो ज्वर न रहे। इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में सातबार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्ध कर लेना चा...

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र-

यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रं प्रजापतेयत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्रः-

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मणत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्तव परित्यागो गच्छ सूत्रं यथासुखम्।

सूर्यार्घ्य मन्त्र

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां ... गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

औषधि खाने का मन्त्रः-

अच्युतानन्द गोविन्द नामोच्चारण भेषजात्। नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

आयु-निर्णय।

राशि सन्धिस्थखेटानां दशा रोगप्रदः ... मरणं नृणाम्।।१।। ... मरणं न राणां ...।।२।। ... दद्यात्पष्ठीगुरौ ...।।३।। ... विपत्प्रत्परिनैर्ताः। ... विशेषतः।।४।। तद्भावार्धकमेष ... स्यात्तयुत- फलितकारकैः।।५।। ... तदीशनव- भागयांगतेवा मरणं भवेत्।।६।। ... रन्ध्राधिप- युतश्चैव चतुः षट्त्र्यंशः नायकः।।७।। ... ग्रहाः स्मृता। तेषांमध्येबलीग्रहस्तु ... वदेत्।।८।। ... तद्भावादीश्वरस्य ... वीर्योत्तस्यखेटस्यपाकेमृत्युर्न संशयः।।९।। जीवमृत्युतनुर्गोपराशिने ... धनक्षयः। तत्त्रिकोण गृहगेवा तृणां तन्नाशकृद्युते ...।।१०।।

पल्ल... प्रशस्तवार्ततिथिभानि। सद्वाराः चन्द्रबुधगुरुशुक्राःतिथयः ...११।१२।१३ शुभा भानि पुष्य, अश्वि, रो. मृ., उ. फा. पुनर्व. ... अनु. ध. श. रेषु. भेषु।। दक्षिणांगेऽखिले पुंसा वामांगे च ...म्।। जन्मभेमृत्युयोगेऽह्नि दग्धेविष्ट्यादिदूषिते।। शुभम्।। ...शेषफलम्।। पादयोर्बन्धने जान्वोः गुदे गुह्ये च मृत्युदा। अन्यत्र ...ल स्नानमाचरेत्।।२।। पल्या प्रपतने चैव शरटस्याधिरोहणे।। ... यस्य शुभाशुभफलप्रदम्।। स्त्रीणांतुतद्विपरित्यागोष्यबुद्धिमता सदा इति।। पल्लीपतनस्यानिष्टफल निवारणार्थमंत्रदानजपमाह।। तिलमादिदानं च स्नात्वादेवं द्विजन्मने नमस्तस्यजपेन् मन्त्रं षडक्षरम् (ॐ नमः शिवाय) सतं सहस्रमथवा सर्वदोषनिवारणम्।। शिवालये प्रदद्याद्वा दीपं दोषोपशान्तये।।१।। अशुभंस्य मृत्युञ्जयजपस्वर्ण गोदानं कार्यमिति शुभम्।।

॥ अङ्गस्थविभागेन पल्लीपतने फलम्

स्थानम्	फल
केशान्ते	[illegible]
उदरे	[illegible]
अधरोष्ठे	[illegible]
नाभौ	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
वामकर्णे	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
वा. मणिबं	[illegible]
[illegible]	[illegible]
नेत्रयोः	[illegible]
पृष्ठे	[illegible]
[illegible]	धनलाभः
[illegible]	[illegible]
शिरसि	राज्यलाभः
नासाग्रे	व्याधिपीडनं
वामभुजे	राजभीतिः
जानुद्वये	शुभागमः
कटिभागे	अश्वलाभः
गुल्फयोः	धनलाभः
उत्तरोष्ठे	धननाशः
दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
स्कन्धयोः	विजयः
मुखे	मिष्ठान्नभोजनं
ललाटे	बंधुदर्शनम्
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः
कण्ठे	शत्रुनाशः
२ जंघे	शुभावहः
द. मणिब.	मनस्तापं

रविभावृत्तुलघिचक्रम्		
पृष्ठे	६	श्रीलाभः
शीर्ष	४	मृत्युभयम्
वामे	८	सुखम्
मर्मे	५	विनाशः
हस्ते	२	सुभुक्ति
पादे	२	कलत्रभृतिः

गृहारम्भे वृष वास्तु चक्रम् गणना साभिजित			अथगृहप्रवेशे कुम्भ चक्रम् रविभादस्यगणना		
स्थानम्	नक्ष.	फलानि	स्थानम्	नक्ष.	फलम्
शीर्षे	३	अग्निदाह	मुखे	१	अग्निदाह
अग्रपादे	४	शून्यम्	पूर्वे	४	उद्वसनम्
पृष्ठपादे	४	स्थिरता	दक्षिणे	४	लाभः
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः	पश्चिमे	४	लक्ष्मीप्राप्ति
दक्षकुक्षौ	४	लाभः	उत्तरे	४	कलहः
पुच्छे	३	स्वामीनाशः	गर्भे	४	विनाशः
वामकुक्षौ	४	दरिद्र.	गुदे	३	धैर्यम्
मुखे	३	पीड़ा	कण्ठे	३	स्थिरत्वम्

अथ द्वारशाखाचक्रम्। सूर्यभादत्रापिगणना

ग्रामवास चक्रम्
नक्षत्रावधि गणना
अथग्रामभाद्वासकर्त्तुः

स्थान	नक्ष.	फलम्			
शिरसि	४	श्रीलाभः			
कोणे	८	उद्वसनम्	मस्तके	७	धनं सौख्यम्
शाखायां	८	सौख्यम्	पृष्ठे	७	हानि-निर्धनम्
देहल्यां	३	स्वामीनाशः	हृदये	७	सुखलाभः
मध्ये	४	सौख्यम्	पादे	७	निर्धनम

कूपचक्रम्। सूर्यभाद्गणना			रोहिणीभात्कूपचक्रम्।		
स्थानम्	नक्ष.	फलम्	स्थान	३	फलम्
मध्ये	३	शीघ्राज्जलम्	मध्ये	३	स्वादुजलम्
पूर्वे	३	निर्जलम्	पूर्वे	३	खंडितजलम्
अग्नि	३	आशुजलम्	अग्नि	३	स्वादुजलम्
दक्षिणे	३	निर्जलम्	दक्षिणे	३	जलहानिः
नैर्ऋत्ये	३	अमृतजलम्	नैर्ऋत्ये	३	स्वादुजलम्
पश्चिमे	३	निर्जलम्	पश्चिमे	३	निर्मलजलम्
वायव्ये	३	जलहानिः	वायव्ये	३	मिश्रजलम्
उत्तरे	३	मधुरजलम्	उत्तरे	३	पूर्णजलम
ईशाने	३	क्षारजलम	ईशाने	३	क्षीरजलम

अथ गृहे शिलाप्रमाणानि

शिलाप्रमाणं क्रमशः प्रदिष्टं वर्णानुपूर्वेण तथागुलानाम्।। अथैकविंशद्धनविश्वनन्दविस्तार के व्यासमिदं तदर्धम्।। तदर्धमानं त्वथपिण्डकास्यात् ऊर्ध्वाऽधिका न्यूनतरा न कार्यम्। नामानि च। नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णेति। पञ्च कुम्भ नामानिपद्म महापद्म शङ्ख मकर समुद्र इति प्रधानशिलाधः पञ्चाधारशिलाभवन्ति।।

अथेष्टनक्षत्रकल्पनाऽनेन गणनाविचारः। आर्द्रादितिर्गुरुश्चैव सर्पश्चैव पितृभगः। शतभपूर्वयुग्मञ्च नेष्टा गृहतारकाः।।१।। तत्रराशि कूटादिकं सर्वं दाम्पत्योरिवचिन्तयेत्।। सेव्यसेवकयोश्चै-वर्गहतत्स्वामिनोरपि परस्परं मित्रयोश्च एकनाडी प्रशस्यतेइति।

अथ गृहप्रवेशे मुहूर्तबोधचक्रम्।

मासः	वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन जीर्णे गृहे श्रा. मार्गशीर्ष कार्तिक मासे अपिनवेष्वग्न्यादिभयसत्वे।

दानमेतद्... शीतलोकव... सम्प्रददे प्र... फलां मम... विष्णवेसंप्र... सन्तु मनो... इति विशेषः... महावीर क्षा... विष्णोश्चन्दन... शाखस्य सि... कृतोपवासः... होदयाः।

ज्येष्ठ

सायंसूर्यलोकेम। सचन्दनम्। त्रि... अथामाय... रात्रोपोषित... गमीम।।

अथ रत्नाप्तौ चतुर्विध ... माह!

प्रथमं ... स्थानसम्बन्धो दृष्टिजस्तु द्वितीयकः। तृतीयं ... सत्यकृतोदृष्टिः, स्थितिकेत्र चतुर्थकः।।१।। अन्योन्यगौ ... स्वे स्वेसंयुतावन्योन्यं स्थितः। पूर्णे मित्रौ मिथौ सापि सैव वर्ग गतौ यदा।।२।। अथ ... गृहाणां फल विचारे विशेषमाह उच्च त्रिकोणे स्वसुहृच्छत्रु नीच गृहाद्गतः शुभं सम्पूर्ण पादेन दलं पादाल्प ...

... पञ्चकम् (... गतांशाः)
...त्याज्यः रोगः
..., १७, २६
...ग्रहसंग्रह ...च्छादने त्याज्याः
११, २०, २९
...सेवायां नृपः
४, १३, २२
...त्याज्याः चौर.
६, १५, २४
विवाहेत्याज्यः मृत्युः
..., १०, १९, २८

...र्ष लग्नम् ७/२४/४४/३९

विन्ध्योत्तरवासिनांविशोत्तरीयनतेनाय...

मेष	वृष	मि.	क.	सिंह	क.	तु.	वृ.	ध.	म.
१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५
२	११	८	५	२	८	११	२	८	११

हस्ती	काकः
...जयेत्सिहं शयने- ...नसे-अग्रिशालायां ...-जयोगृहे। खरो ...प्रासादे पुर मन्दिर	

...	३	४
शुभ	शुभ	अशुभ
३	३	३
...	य.	के.
सत्	सत्	असत

...ज्ञानम् ...वति।

आग्नेयां	
ध.म.कु.	राशिस्थितेसूर्ये
तु.वृ.ध.	राशिस्थितेसूर्ये
वृ.मि.क.	राशिस्थितेसूर्ये
...	राशिस्थितेसूर्ये

अ.	क.
पूर्व	अग्नि
...	...
१।।	२

...स्थितिवांयुता सैक... शेषे भूमेवासः। पातालेवासः। भूमे...

१।।	२	२	...						
मृत्यु	राजभं.	स्त्री मृ.	धनं	...	...	...	...	...	...

स्मृत्वेष्टदेवतां प्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम्। गृहीत्वा च ततः शल्याशल्ये पूर्वं विचिन्तयेत्।। इत्युक्त्या-प्रश्नाक्षराणामादिम वर्णतोविचारः कर्तव्यः।

अथ शिलान्यासस्तत्र वाराहः - छत्रं सुगन्धयुक्तं कृतधूपविलेपन। स्तम्भं ... रोच्छायः प्रयत्नेन।। दक्षिणपूर्वकोणे कृत्वा पूजां शिलां ... प्रदक्षिणान्ताः स्तम्भाचैव प्रतिस्थाप्याः।।२।। शार्द्दूलं शुक्लपूर्वादयः ... षु गृहेस्वन्येषु सर्वदा। आग्नेय्यां प्रथमं स्तम्भं स्थापयेत्।।२।। ... त्रां। शुद्ध ... या च ब्रह्मशम्भुः क्षेत्रभित्तिशिलान्यासः स्तम्भस्यारोपणं तथा। ... दक्षिणयाम्ये कुर्यादित्याह कश्यपः।।४।।

पिण्डतः आयाद्यानयनप्रकारः।

पिण्डे क्रमात् ९।९।६।८।३।८।८।४।८ नवस्थानस्थापिते एतैगुणिते-एतैः ८।७।९।१२।८।२०।१५।२७।१२० विभक्तशेषेक्रमात् आयः १ वारः २ अशकः ३ द्रव्यं ४ ऋणं ५ ऋक्षं ६ तिथिः ७ योगः ८ आयुश्च ९ भवति। बहुऋणमल्पद्रव्यं

अथगृहकरणे चैत्रादिमासे पृथक् पृथक् ... फलबोधकचक्रम्											
चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	...	पौ.	मा.	फा.
शोकम्	धान्यम्	पशुमृतिः	पशुनाशः	द्रव्यवृद्धि	नाशः	युद्धम्	मृत्युक्षयः	धनम्	लक्ष्मीप्राप्ति	अग्निभयं	लक्ष्मीप्राप्ति

अथ गृहारम्भे मुहूर्तबोधकचक्रम् (देवालयादि सहित)

मासाः	वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, फाल्गुनमासे, मे. क. सिं. वृ. म. कुं. राशिस्थितेसूर्ये च शुभम्।
श्रेष्ठभानि	रो. म. पुष्य. उ. फा. ह. चि. स्वा. उ. षा. ध. शत. उ. अनु. रे. एषु भेषु वृषभचक्रशुद्धौ शुभम्।
शुभवाराः	चं. बु. वृ. शु. शनयः रविभौम, रिक्ता, ...मा. चरलग्न वर्जितम्।।
शुभतिथयः	१।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ ... भम्।
शुभलग्नानि	२।७।९।११।१२ ३, ५६ स्वा...

लग्नात् शुद्धि	लग्नात् - १।४।७।१०।५।९ शुभाः। पापा... शुभ पापरहितेषु शुक्लपक्षे। अष्टम ... बालवार्द्धक्य नीचराश्यादि स्थितदोषरहि...

कूपजलविचारः।

अतृणे सतृणा यस्मिन सतृणे तृणवर्जिता मही यत्र ।।
तस्मिन् शिरा प्रदिष्टा वक्तव्यं जलं चास्मिन ।।१।।
कण्टकाकण्टकानां व्यत्यासेऽम्भस्त्रिभिः करैः पश्चात ।।
ज्ञात्वा पुरुषत्रितयं त्रिभागयुक्तं धनं सा स्यात ।।२।।
नदति मही गम्भीरं यस्मिश्चरणाहता जलं तत्र ।।
सार्धे स्त्रिभिर्मनुष्यैः कौवेरो तत्र न शिरा स्यात् ।।३।।
वृक्षस्यैका शाखा यदि विनता भवति पाण्डुरा वास्यात् ।।
विज्ञातव्यं शाखातले जलं त्रिपुरुषं ज्ञात्वा ।।४।।
पूर्वोत्तरेण पीतोर्यदि वाल्मीकी जलं भवति पश्चात ।।
उत्तरागमना न शिरा विज्ञेया पञ्चभिः पुरुषः ।।५।।
निर्ह्न दर्दुर आदौ मृत कला तत्परं भवेद्धरिता ।।
भवति न पुरुषेऽम्भोऽमातस्य तलेऽम्भोविनिर्देश्यम् ।।६।।
पीतोरेव प्राच्यां वाल्मीकोऽतोऽर्द्धपञ्चभिर्हस्तः ।।
दिशि याम्यां तोयं वक्तव्यं सप्तभिः पुरुषः ।।७।।
प्रथम पुरुषे भुजंगः सितासितो हस्तमात्रमूर्तिश्च ।।
दक्षिणतः वहति शिरा साक्षरं भारि पानीयम् ।।८।।

सर्वघातचक्रम्। रोगात्तमोसन्नेरणं को मंगले

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सू. घा.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं. घा.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं. घा.	५	९	१	६	१०	२	७	३	८	१२	३	७
बु. घा.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
वृ. घा.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	५
शु. घा.	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श. घा.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
रा. घा.	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा.	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	३	१२	९
मा. घा.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.
ति. घा.	१ ६ ११	५ १० १५	२ ७ १२	२ ७ १२	३ ८ १३	५ १० १५	४ ९ १४	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	३ ८ १३	५ १० १५
वा. घा.	सू.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
न. घा.	म.	ह.	स्वा	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	[illegible]
या. घा.	वि.	शू.	प.	धृ.	प्र.	शू.	शू.	[illegible]	[illegible]	गं.	व्या.	व.
ल. घा.	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
प. घा.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.
क. घा.	वि.	वा.	ग.	क.	वि.	वा.	ब.	क.	पि.	वा.	स.	क.
वे. घा.	[illegible]	[illegible]	शू.	वि.	[illegible]	वै.	शू.	वि.	[illegible]	वै.	शू.	वि.
स. घा.	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री	पु.	स्त्री
सं. घा.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.	क्रू.	सौ.
स्व. घा.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.	च.	स्थि.	द्वि.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
घं. घा.	१	८	७	९	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११	५	१२

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ ... गृहस्याच्छायानिर्णयः - विस्तारषोडशांश सन्तुहस्ता भवे गृहोच्छ्रायः द्वादशभागः ... गृहस्यभित्तिविष्कम्भः। ... सर्वेषां स्थानां भवति भित्ति... भूमी ... पक्वेष्टका ... प्रकल्पयेत् ... करैर्ज्ञात्वा प्रकल्पयेत्।।

वास्तुभूमिशुभाशुभज्ञानप्रकार - सायंकाले हस्तप्रमितायां विस्तृतिप्रमाणं गर्त विधाय जलपूर्णं कृत्वा प्रातःकाले पुनर्विलोक्यम् ... सजलं शुभम्।। निर्जलं मध्यम्।। स्फुटितं असदिति।

गृहे ... वेधनिर्णयः - चन्द्रविद्ध गृहं कार्यं सूर्यविद्धं जलाशयम्।। ... वा वाटिका ... - मन्दिर ... प्रशस्यते।। पूर्वापरदैर्घ्ये रविवेधो याम्योत्तर दैर्घ्ये चन्द्रवेध उक्तः। अस्य ... देवायतने ... विचारोऽपि न कर्तव्यः।

यात्रा विचारः

अथ यात्रायां शुभाशुभनक्षत्रज्ञानाय चक्रम्

अश्वि.	पुन.	अनु.	मृग.	पुष्य	रेवती	हस्त	[illegible]	[illegible]नष्ठा	एषु शुभाः
रोहि.	३ पू.	३ उ.	ज्येष्ठा	मूल	शतभिषा		एषु भेषु मध्याः		
भरणी	कृत्ति.	आर्द्रा	श्लेषा	मघा	चित्रा	स्वाती विशा.	एतद्वे निन्द्याः		
श्रवण	हस्त	मृग.	पुष्य	एषु सर्वदा दिक्शूल दिनं विहाय शुभाः					
पू. ३	कृत्ति.	मघा	भरणी	स्वाती	ज्येष्ठा	विशा.	अश्ले.	चित्रा	एषु आवश्यके
१६	२१	११	७	१४	१४	१४	१४	१४	यात्रायां त्याज्याः घट्यः

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम्

आद्यश्चन्द्रः श्रियः कुर्यात् द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राज सन्मानं चतुर्थेकलहागमः॥१॥ पञ्चमे ज्ञान वृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा। सप्तमे सुखकृच्चन्द्रोह्यष्टमे मरणं भवेत् (कष्टं वा)॥२॥ नवमे भाग्य वृद्धिश्च दशमे गृष्ट सम्पदः। एकादशे सर्वलाभो द्वादशे चाशु भयावहः॥३॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्ट चन्द्रदानात्। दान-समाग्री दधि श्वेततण्डुल घृत-रजत मुक्तादयः॥

समुखश्चार्थलाभायदक्षिणेसुख संपदः। पृष्ठतोमरणं चैववामेचन्द्रेधनक्षयः॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णेचन्द्रे हि सम्मुखे॥

चन्द्रवासचक्रम्।

पूर्वे	दक्षिणे	पश्चिमे	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रायां छिक्का फलम्।

पूर्वे अशुभम्। अग्नये दुःखी। दक्षिणे अनिष्टः। नैर्ऋत्ये शुभम्। पश्चिमे सुभोज्यं। वायव्ये धन प्राप्ति। उत्तरे कलहः। ईशाने शुभम्। मध्ये भयः।

अथ यात्रायां समयशूलचक्रम्।

पूर्वस्मिन्	प्रातःकाले
दक्षिणे	मध्याह्नकाले
पश्चिमे	सन्ध्यायाम्
उत्तरस्यां	अर्द्धरात्रौ

यात्रायां समयविचारः।

तत्र सर्वासु यात्रासु शुक्रास्तो निषिद्धः। तदा जन्मदशेशेऽस्तंगतेऽपि न गन्तव्यम् तीर्थयात्रासु गुरु शुक्रयं स्त कालो वर्ज्यः सिंहस्थ गुरुनौं चगोऽपि वर्ज्यैः॥

अथ पथिराहुचक्रमिदम्।

अश्विनी	पुष्य	अश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शतभिषा	धर्मभानि
भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पू.भा.	अर्थभानि
कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.	कामभानि
रोहिणी	मृगशिरा	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती	मोक्षभानि

समरे (मुकदमा) अथ कुल-अकुल बोधचक्रम्।

कुलगणः (स्थायी) समरे जयः	अकुलगणः (यायि) जयः	कुलाकुलगणः (सन्धिः समः)
तिथयः: ४।१२।६।१४	१।३।५।७।९।११।१३।१५	२।६।१०
वाराः: भौम शुक्र	रवि चन्द्र, गुरु, शनि	बुध
भानि: पू. ३ अश्वि. रो. म. पू. फ. चि. ज्ये. श्र. दू.	भ. श्ले. स्वा. रे. ह. म. अनु. पुन. उ. ३ रो.	श. मू. आर्द्रा [illegible]

[illegible]वारपरत्वेन पाशचक्रम्।

पू.	[illegible]	[illegible]	प.	वा.	उ.	ई.	दिशा
मं.	चं.	[illegible]	श.	शु.	गु.	बु.	वारा

सूर्यधर्म्मगते चन्द्रो न मोक्ष शुभप्रदः। सूर्येधनगते धर्म्म मोक्षमार्गेशुभः शशी॥ कामेऽर्के धर्ममोक्षार्थेसंस्थचन्द्रो जयप्रदःमोक्षऽर्केधर्मगतश्चन्द्रः शुभोऽन्यत्र न शोभनः।

यात्रायां सर्वदिक शूलज्ञानाय चक्रम्।

पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नै.ऋ.	प.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिक् ८
चं.श.	चं.गु.	गुरु.	सू.शु	सू.शु.	मं.	मं.बु.	बु.श.	वाराः

यात्रायां — लग्नशुद्धिः। जन्मराशिलग्ने। कुम्भकुम्भांशकोमीनपृष्ठोदयराशयः त्याज्याः। लग्नात् १।४।७।१०।५।९ स्नानेषु शुभाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः १० शनि ७ शुक्रो नेष्टः। लग्नात् १।६।७।८ स्थानगश्चन्द्रो १।६।७।८।१२ लग्नेशो न सत्। शुभाष्शुभहीनमष्ठमभवनम्।

यात्रायामशुभशकुनानि — बन्ध्या स्त्री, चर्म, तुषा, अस्थि, सर्प, लवण, निर्धूमाग्नि, इन्धन नपुंसक, विष्ठा, तपस्वि, उन्मत्त, चर्वी, ओषध, शत्रु, जटावान्, संन्यासी, तपसी, व्याधिमान्, नग्नतैलाभ्यंग, अगभंग, जातिभ्रष्ठ, क्षुधार्त, रुधिर, स्त्री, पुष्प, नरट, छिक्का, स्वगृहदाह, मार्जारयुद्ध, रक्तवस्त्र, गुड़, तक्र, पक, विधवा कुब्ज कुटुम्बेकलह, वस्त्रादेरसखलनं, महिषयुद्ध कृष्णवस्त्र तूल वमनं, दक्षिण गर्दभशब्दः, अत्यन्त क्रोधी, गर्भवती, मुण्डी, आद्राम्बर, दुष्टवाणी, अन्ध, बधिर, रजस्वलाम्बर, कुमारहीन, अतिरोगी, गधादर्शन, जाहकदर्शन, सूकरदर्शन, शशकदर्शन, मर्कटदर्शन, ऋक्षशब्दयते, प्रयाणसमये दृष्टाः सन्तः न शुभाः नद्युतार भय प्रवेश युद्धाष्टार्थजन संवीक्षणे अशुभाशकुनाः शोभनाः नृपदर्शनवेलायां यात्रोदिता, शोभनाः।

यात्रायां शुभशकुनानि — ब्राह्मण २, अश्व, गज, फल, अग्र, दुग्ध, दधि धेनु, सर्षप, कमल विमलवस्त्र वेश्या, वाद्य, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, आदर्श ससुतस्त्री, सन्मुखछत्र, नगः नीलकण्ठ, रज्वादिनाबद्धपशु २ चम्पकादिपुष्प, कन्या कार्यसिद्धिवाक्य, मृतिका सजलपूर्णघट, घृत, इक्षुदण्ड, रत्नमाल्यादि शिरोवेष्टन, श्वेतवृषभ मदिरा कज्जल, पीताम्बर, गोरोचन, अरोदनशव, १पताका, मेष, रजक, वेदशब्द, मङ्गलवस्तु, गीतगानादि भरद्वाज पक्षी, शिविका, अंकुशहस्तिचालक पश्चाद जलघट, मङ्गलशब्द, दुर्वा, कोकिला, की पल्ली, सूकरी रला भैरवी, छछून्दरी, शृङ्गाली, कपोत, खंजन तित्तिर हंसादयः व। मेखर शब्दः। प्रयाणसमये दृष्टाः फलदा भवन्ति।

आसन्न मृत्यु लक्षणम् — अरुन्धती ध्रुवं चैव नभो मन्दाकिनी तथा। सर्व नाशाग्रं च चन्द्रार्कमायु हीना न पश्यति। पांशु पंकादिषु न्यस्त चरणं खण्डितं यदि। स्वाम्बु लिप्त गात्रस्य यस्यात्यं प्राक् प्रशुष्यति। पिहिते कर्ण युगले यस्य घोषोनुपश्रुतिः। अदर्शनं स्व शिरसः प्रति बिम्बे जलादिषु। छिद्रं प्रतिच्छायायां स चिरं नैव जीवति। दीप निर्वाण गन्धं च सुहृद्वाक्य-मरुन्धतीम्। न जिघ्रन्ति न शृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः॥ (१) जब कान पर हाथ रखने से कान में से घोष न होवे। (२) जल में अपना मस्तक न दिखाई दे। (३) अपनी छाया में छिद्र का आभास हो। (४) अपनी नासिका का अग्रभाग न दिखाई दे। (५) कीचड़ या धूल में पांव रखने से पदचिह्न खण्डित दृष्टिगोचर हो। (६) ध्रुवतारा न दिखाई दे इत्यादि, तो समझ जाइये कि आयु सम्बन्धी कष्ट आने वाला है।

आवश्यके दिग्शूल दोषनाशाय वारक्रमात् वस्तुनाम।

र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दिग्लग्नानि।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिक.
१।५।९	२।१०।६	३।७।११	४।८।१२	शुभ
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्य
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	नेष्ट
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	नेष्ट

यात्रायां वारदोहदज्ञानायचक्रम्।

[illegible]	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
रसालं	पयस्	कांजी	पक्वदु.	दधि	पयः	तिल

अथ मृत्युञ्जय मन्त्र— ॐ ह्रौं जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः ह्रौं ॐ। "मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः॥" पुराणोक्तमृत्युञ्जयमन्त्र है

[illegible] से आठवाँ तथा बारहवाँ राशि से पहले दूसरे, तीसरे, [illegible] में चन्द्रमा आवे तो यह [illegible]

[illegible] भद्रा घ.१८।५८ (दि.१।३०) [illegible]

यमदंष्ट्रयाग घ.५४।५७ (रा.३।५३) या। (ख) अत्र विशेष [illegible]

वृद्ध भौमः (बुढ़ला मगल) इति लोके प्रसिद्धम्। श्रीशीतलाष्टमी ८ [illegible]

मकर राशिः८।० (दि.१।५)। (घ) कोटि सूर्य ग्रहैः समा। चन्द्रभ्रष्टा बहुकला [illegible]

भद्रा घ.६।४२ (दि.८।३३) उ. घ.३८।५५ (रा.९।२६) या.। ⊙ रेवती [illegible]सितम्॥१॥

कुम्भ राशिः४५।६ (रा.११।५३)। पचक (पचखा) आरम्भः। पाप मोच[illegible]

महामहेति वारुणी पर्वयोगः घ.४४।४९ (रा.११।४६) उ. सूर्योदययावत्। (श[illegible]

भद्रा घ.४५।५२ (रा.१२।११) उ.। प्रदोष व्रतम् १३। महावारुणी पर्वयोगः [illegible]

मीनराशिः६।५१ (दि.८।३३)। भद्रा घ.१५।४५ (दि.१२।७) या.। माम शिवर[illegible]

स्नानदान श्राद्धादौ भौमवती अमा ३० पुण्यतमा। मन्वादि ३[illegible]

दैनिक लग्न सारिणी

१	२ बु. घं. मि.	३ गु. घं. मि.	४ शु. घं. मि.	५ श. घं. मि.	६ र. घं. मि.	७ सो. घं. मि.	८ मं. घं. मि.	९ बु. घं. मि.	१० गु. घं. मि.	११ शु. घं. मि.	१२ श. घं. मि.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६ ५७	६ ५३	६ ४९	६ ४५	६ ४१	६ ३७	६ ३३	६ [illegible]
[illegible]	७ १	७ ५	७ १	८ ३६	८ ३२	८ २८	८ २४	८ २०	८ १६	८ १२	[illegible]
[illegible]	८ ४०	८ ४३	८ ३९	१० ३२	१० २८	१० २४	१० २२	१० १७	१० १३	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१० ४४	१० ४०	१० ३६	१२ ४६	१२ ४२	१२ ३८	१२ ३४	१२ ३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२ ५४	१२ ५०	३ ४	३ ०	२ ५६	२ ५२	२	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ८	५ १७	५ १४	५ १०	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] करके देना।

[illegible]लेन च तार्क्ष्य पक्ष निपातेन भूम्या गच्छ[illegible] (तार्क्ष्य=गरुड़)।

[illegible]झाड़ने का मन्त्र— शर्यातिल सुणन्यांच च्यवनं [illegible]ध्योः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति। जल से धुलवाना।

ज्वर झाड़ना— ॐ नमो नरहरे रोगापहारिते ज्वरं नाशय नाशय [illegible]मारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

अन्तरा तिजरा चौथिया का मंत्रखलंकायाम [illegible] कुमुदो नाम [illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	लग्न	प्रमाद	[illegible]	शुक्रा[illegible]	[illegible]
पुत्र	चन्द्र	गुरुतः	तनु	व्यापा.	बुधः	ज्ञानात्	तनु
रोग	चन्द्र	तनुतः	तनु	कन्या	चन्द्रः	भौमात्	तनु
बंधु	चन्द्र	बुधात्	तनु	संताप	चन्द्र	शुक्रात्	तनु
मृत्यु	चन्द्र	८ भावात्	शनि	गर्भ	शनि	ज्ञानतः	तनु
यात्रा	धर्मेश	धर्मतः	तनु	जलाध्व	लग्न	शतशः	६ भा.
[illegible]	भावेश	धनात्	तनु	राज	गुरुः	कर्मार्द्धतः	मतम
[illegible]	सूर्य	शुक्रात्	तनु	घातक	पुण्यः	चन्द्रतः	तनु
[illegible]	सूर्य	चन्द्रात्	तनु	घातक	पुण्यः	गुरुतः	तनु
[illegible]	शनि	शुक्रतः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]	भौमः	[illegible]
आशा	शुक्रः	शनौ
राज	सूर्यः	शनि
भ्राता	शनिः	गुरौ
जीवि	गुरुः	शनौ
कर्म	बुधः	भौमतः
कलि	भौमः	गुरुतः
चेत्.	भाग्यः	१२ भा
रात्री	अस्मिन्	एकज्ञन

[illegible]

लटका दें [illegible] मंत्र- पार्थ सव्यसाची ध[illegible] एतन्यर्जुन[illegible] प्रजायते। ज्वर झा[illegible] रहे तो महादेव की [illegible] इस मंत्र को [illegible] की रात्रि में [illegible]

[illegible]क्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशाः
[illegible]	अश्व	शिवि.	वाहन

[illegible]	वायु	उत्तर	ईशान
[illegible]	दुग्धम्	दुग्धम्	पायस

[illegible]ायव्य	उत्तर	ईशान	दिशाः
[illegible]।१५	२।१०	८।३०	तिथयः

अथास्यफलम्।

योगिनी सम्मुखेद्युते गमे युद्धे न मृत्युदा॥ अशुभा वामभागस्था पृष्ठे दक्षे जयप्रदा।

उषाकाल में पूरब को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्न काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिये।

आदाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रायुद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशः शुभः। उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहस्थितोऽपि वा। मित्रवर्गे मित्र दृष्टः स ग्रह सबलः स्मृतः।

यात्रायां प्रस्थानस्थापनम्।

प्रस्थाने भूमिपालो दशदिवसमभिव्याप्य-पञ्चरात्रमित्यादि॥ दिक्परत्वेन प्रस्थान-स्थापनम्॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

शूल चंद्र एवं योगिनी चक्र

उत्तर

शिवावास फल विचारः

...त्र द्विगुणी कृत्वा पुनः पञ्च समन्वितम् । मुनिभिस्तु हरेद्भागं शेषं च शिववासनम् ॥ ...न वासः कैलाशे द्वितीये गौरिसन्निधौ । तृतीये वृष भारुढ़ः सभायां च चतुर्थ के । ...े भोजने चैव क्रीड़ायां च रसात्मके । श्मशाने सप्तमे चैव शिव वासः उदीरितः ...े लभते सौख्यं गौर्य्यां च सुख सम्पदौ । वृषभे भीष्ट सिद्धिः स्यात् सभायांताप कारकौ ...न च भवेत् पीड़ां क्रीड़ायां कष्टमेव च । श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचारयेत्

चक्रमिदम्

[illegible]	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	तिथयः शु. पक्ष
[illegible]	१	२	३	४	५	६	७	८/३०	९	१०	११	१२	१३	१४	तिथयः कृष्ण पक्ष
मृत्युकारकः	शुभम्	कष्टकारकम्	सन्ततिकष्टः	सौख्यं	अभीष्ट सिद्धिः	पीड़ा	मृत्युः	शुभम्	कष्टकारकम्	सन्ततिकष्टः	सौख्यं	अभीष्ट सिद्धि	पीड़ा	मृत्युः	फलम्
श्मशाने	गौरी सन्निधौ	सभायाम्	क्रीड़ायां	कैलाशे	वृषे	भोजने	श्मशाने	गौरीसन्निधौ	सभायां	क्रीड़ायां	कैलाशे	वृषे	भोजने	श्मशाने	शिववासम्

विशेषमाहः– कृष्णपक्षस्य तिथि गणनायां पञ्चदश संख्यां मेलयित्वा अस्मिन् चक्रे फलादेशो निर्दिष्टः। शिवप्रतिष्ठायां, महामृत्युंञ्जय जपे तथा पार्थिव पूजने शिववासः विचारयेत्। नित्यं शिवपूजने न विचारणीयम्।

अथ चैत्रादिमासेषु मन्वादि तिथयः

चै.शु.	ज्ये.शु.	आषा.शु.	भा.प.शु.	आश्वि.शु.	कार्ति. शु.	पौष शु.	माघ शु.	फा. शु.	श्राव. कृ.
३।१५	१५	१०।१५	३	९	१२।१५	११	७	१५	८।३०

अथ युगादि तिथयः

वैशा	भाद्रपद	कार्तिक	माघ	मासाः
शुक्ल	कृष्ण	शुक्ल	कृष्ण	पक्षः
३	१३	९	३०	तिथयः
त्रेता युगादिः	द्वापर युगादिः	कृत युगादिः	कलि युगादिः	अनध्यायं प्रकुर्वीत मन्वादि युगादिषु

सामान्य सुभिक्षादिकम्

प्रभवात् द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनञ्च कारयेत्। सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥ एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम्। त्रिषष्ठे च समता ज्ञेया शून्ये पीड़ा नसंशयः ॥

कल्पादि तिथयः– चैत्रशुक्ल १, वैशाख शुक्ल ३, कार्तिक शुक्ल ७, मार्गशीर्ष शुक्ल ९, माघ शुक्ल १३, चैत्र कृष्ण ३

दशावतार :– मत्स्यावतारः चैत्रशुक्ल ३, अपराह्ने। रामावतारः चैत्रशुक्ल ९, मध्याह्ने। परशुराम अवतारः वैशाख शुक्ल ३, प्रदोषे। नृसिंहावतारः वैशाख शुक्ल १४; सायंकाले। कूर्मावतारः वैशाख शुक्ल, १५, मध्याह्ने। कल्कि अवतारः श्रावण शुक्ल ६ सायंकाले, कृष्णावतारः भाद्रपद कृष्ण ८ निशीथे। वामनावतारः भाद्रपद शुक्ल १२ मध्याह्ने। बौद्धावतारः आश्विन शुक्ल १०, सायंकाले। वाराहवतारः भाद्रपद शुक्ल ३ अपराह्ने।

अथ जन्म कुण्डलीत प्रतिवर्षविप्रतिभाव विचार :– जन्माङ्गं प्रथमं वि... द्वितीयञ्च द्वितीयकम्। एवं द्वादश भावाः स्युर्द्वादशवर्षस्य सूचकाः॥ द्विरावृत्या लग्न भावात् त्रयो... पुरस्सराः, त्रिरावृत्तस्तु षट्त्रिंशद्वर्षाणि स्युरिहायुषाम्॥ आवृत्तितस्तु दशभिः पूर्णतः पुरुषायुषः। ... संज्ञक भावास्युर्यदि कोणेषु १।५।९ सद्ग्रहाः॥ दैहिकं सकलं सौख्यं वर्षउस्मिन्नियतं शुभम्। तद्वर्षमा... लग्नात्स्युस्तथा भावाः धनादयः। तत्तद्वा वस्य कोणस्था यदि सर्वेशुभं ग्रहाः॥ तद् वर्षे तस्य भाव... विशेषात्सुख कारकाः॥ एवं पाप ग्रहास्तेषु कोणेषु यदि संस्थिताः। सबलाः भावनाशाय ... बलाबल विशेषतः। इति सुखाय च॥ शुभैस्तु शुभाधिक्यं पापैरू भाव संक्षयः। मिश्र मिश्र फले ...

वार परत्वेन तैलाभ्यङ्ग... फल विधिः :–

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम	सुकान्तिः	मृत्युः	धन प्राप्तिः	वृत्ति हानिः	विपत हानिः	सुखं	फलम्
पुष्पं	[illegible]	मृत	०	दूर्वा	गोमयं	०	पातन

श्रीमहावीरपञ्चाङ्गम्

काशी...

राजा–गुरुः

बंगला सन् १४०५, मेषार्कतः १४०६, ईसवीय सन् १९९९-२००० ई.

वर्ष लग्नम् ७/२४/४४/३९

कर्मासिद्धिः	सुखम्	शोकश्च	सुखभागः	[illegible]	असुख	शुभः	सुखम्	शोकश्च	
वित्ताप्तिः सुखम्	विविधार्थः लाभः	लाभः सुखप्राप्तिः	शुभः अर्थागमः	सौख्यं लाभः	दुःखम् धनागमः	सुखम् वित्तलाभः	सुखवृत्तिः प्राप्तिः	सुयशोऽर्थलाभ	११
द्रव्यनाश...	रोग धननाशः	रोग शोकश्च	शोकः धननाशः	पीडा भयम्	धनागमः	क्लेशोऽनर्थश्च	हानिः पीडाच	पीडाभयं वैरञ्च	

...सहोदर बहिन का ... विवाह शास्त्रोक्त नहीं है। एक मण्डप में दो विवाह नहीं करना चाहिये।

[illegible]	[illegible]	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पति	शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
[illegible]	[illegible]	३।६।१०।११	२।६।१०।११	२।५।७।९।११	१।२।३।९।११	३।६।१०।११	शुभाः
१।२।५।७।९	७	१।२।५।७।९	१।३।५।७।९	१।३।६।१०	१।२।५।७।९	१।२।५।७।९	पूज्याः
१।२।४।८	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्याः

अथ वारपरत्वेन कालचक्रम् ।

पूर्व	अग्नि	दक्षि.	नैऋ.	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशः
[illegible]	शुक्र	गुरु	बुध	भौम	चन्द्र	सूर्य	०	वाराः

अथादप्रत्येक ग्रहाणां रेखाष्टकज्ञानाय सारणीयम्

...आयोध्वजा...वर्गाङ्काः ४८				अथचन्द्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ४९								भौमस्याष्टकवर्गाङ्काः								...ष्टकवर्गाङ्काः							
गु	शु	श	ल	चं	मं	बु	गु	शु	श	सू	ल	मं	बु	गु	शु	श	सू	चं	ल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सू	चं	मं	ल
५	६	१	३	१	२	१	१	३	२	३	३	१	३	६	६	१	३	३	१	१	६	१	१	५	२	१	१
६	७	२	४	३	३	३	४	४	५	६	६	२	५	१०	८	४	५	६	३	३	८	२	२	६	४	२	२
९	१२	४	६	६	४	४	७	५	६	७	१०	४	६	११	११	७	६	११	६	५	११	३	४	९	६	४	४
११		७	१०	७	६	५	८	७	११	८	११	७	११	१२	१२	८	१०		१०	६	१२	४	७	११	८	७	६
		८	११	१०	९	७	१०	९		१०		८				९	११		११	९		५	८	१२	१०	८	८
	९	१२	११	१०	८	११	१०		११		१०				१०				१०		८	९		११	९	१०	
		१०			११	१०	१२	११				११				११				११		९	१०			१०	११
		११				११														१२		११	११			११	

...वर्गाङ्काः ५६				शुक्रस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२								अथशनेरष्टकवर्गाङ्काः ३९								लग्नस्याष्टकवर्गाङ्काः ५२							
चं	मं	बु	ल	शु	श	सू	चं	मं	बु	गु	ल	श	सू	चं	मं	बु	गु	शु	ल	ल	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
२	१/२	१	१/२	१/२	३	८	१/२	३	३	५	१	३	१	३	३	६	५	६	१	१	३	३	१	१	१/२	१	१
५	४	२	४	३	४	११	३	५	५	८	२	५	२	६	५	८	६	११	३	३	४	६	३	२	४	२	३
७	७	४	५	४	५	१२	४	६	६	९	३	६	४	११	६	९	११	१२	४	४	६	१०	६	४	५	३	४
९	८	५	६	५	८		५	९	९	१०	४	११	७		१०	१०	१२		६	५	१०	११	१०	६	६	४	६
११	१०	६	७	८	९		८	११	११	११	५		८		११	११			१०	७	११		११	८	७	५	१०
	११	९	९	९	१०		९	१२			८		१०		१२	१२			११	९				१०	९	८	११
		१०	१०	१०	११		११				९		११							१०				११	१०	९	
		११	११	११			१२				११									१२					११	११	

...णकाः –मे.७, वृ.१०. मि.८, क.४, सिं१ , कं.५, तु.७, वृ.८, ध.९, म.१०, कुं.११, मी.१२। मृत्युपणकाः सू.५, चं.५, ...०, शु.७, श.५॥ रेखाफलम् १क्लेशः, २अर्थहानिः, ३प्रवासकष्टम्, ४समलाभः, ५सुखं, ६धनाप्तिः, ७परमानन्द,

...ग्रहाणामधि प्रत्यधि देवता ज्ञानमाह: ईश्वरश्च उमा चैव स्कन्दो ...॥ ब्रह्मणेन्द्र यमश्चव कालश्चैव तथाष्टम । चित्रगुप्तन्तु नवमं अधिदैवत ...चैव तथा आपः पृथिवी विष्णुरेव च। इन्द्रश्च तथेन्द्राणी तथैव च प्रजापतिः॥ ...च एता प्रत्यधिदेवताः॥

अथ ग्रहाणां गोत्र ज्ञानाय चक्रमिदम्

[illegible]	चं	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के	ग्रहाः
[illegible]	आत्रेयम्	भारद्वाजम्	आत्रेयम्	आङ्गिरसः	भार्गवः	काश्यपः	पैठानम्	जैमिनियम्	गोत्राणि

अथाधान काले चन्द्रवशात् प्रसवस्य ज्ञानाय चक्रमः

चन्द्रराशयः				दिनानि
१	४	७	१०	२७१
२	५	८	११	२९७
३	६	९	१२	२८१ वा २०...

प्रश्न कालात् आधानतो वा प्रसव कालः ... चन्द्रविज्ञानमाह

...यावत्संख्यद्वादशांशे शतिररिमञ्जावस्थितः॥ ... नाम जन्मेदी तद्गते भवेत्॥ ...द्वादश भागे गर्भाधाने व्यवस्थितश्च ... तत्तुल्यर्क्षे प्रसवो गर्भस्य नियत ...समुद्रजातकेऽपि– यतमे द्वादश भागे ... संख्यके विधायिति। अत्र लग्न बलवान् तस्य द्वादशांश कवशेन चन्द्रराशि ... इत्युक्तं लघुजातके लग्नतो यो ...द्वादशांशकान्विते विधौ प्रसवः॥

अथ ग्रहाणां मुख पुच्छादि परिज्ञानम्:

तिथिनाम	आयु दिग्विदिक्षु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	घटिन्वयं पुच्छे मुखम्
२४	[illegible]	२	५	४	३
१०१४	[illegible]	७	५	५	३
७	[illegible]	३	५	४	३
३	[illegible]	८	५	२	३
२४	[illegible]	४	५	३	३
२४	७	७	५	७	३
८	[illegible]	७	५	८	३
४	[illegible]	५	५	८	३

वार परत्वेन तैलाभ्यङ्ग फल विधिः–

सू.	चं.	[illegible]	[illegible]	गु.	शु.	श.	वाराः
ताप	सुकान्तिः	[illegible]	...प्राप्तिः	वृत्ति हानिः	विपत हानिः	सुख	फलम्
पुष्प	०	मृत	०	दूर्वा	गोमयं	०	पातन

तैलाभ्यङ्ग वर्ज्य तत्राह– रवौ भौमे व्यतीपाते संक्रान्तौ वैधृति ...। ...षष्ठ्यां न द्वितीयां न तैलाभ्यंगे न पर्वसु। अत्र तात्कालिकास्तिथयो ग्राह्याः।

अथ तैलाभ्यङ्ग दोषापवाद माह– तैलाभ्यंग न दोषाय ... क्रियते ... रोगे वा ... कोविदैः। ... तैलं सार्षपं पुष्प वासितम् ... ॥

... – वर्ण वैरं योनि वैरं गण वैरं नृदूरकम्। दुष्ट कूट फल... ॥१॥ न वर्ण वर्णौ गणो न योनि द्विर्द्वादिशे चैव षडष्टके वा। वरे... वा पञ्चमे वा नैधे यदा स्याच्छुभदो विवाहः॥२॥ सद्भकूटं योनि शुद्धिः ... कन्या रक्षोगणा शुभा॥३॥ राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे ... पुत्र पौत्र प्रवर्धनः॥४॥ स्त्री राशेर्वरभं दूरं कन्या दूरं शुभ... ॥५॥

वार वेला ज्ञानाय चक्रम्

[illegible]	चं	मं	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
[illegible]	७।२	६।२	५।३	६।८	३।४	१।६।८	दिने
[illegible]	३।४	२	६।४	५।८	३	६।१	रात्रौ

...– रवौ वर्ज्यं चतुष्पञ्च सोमे सप्तद्वयन्तथा। कुजे षष्ठ द्वयञ्चैव बुधे पञ्चतृतीयकम्। गुरौ ...श्चैव शुक्रे वेद तृतीयकम्। शनावाद्यन्तषष्ठञ्च वार वेलेति निन्दिता॥

...– रवौ रसाब्धी हिमगौ हयाब्धी द्वयं महीजे च बुधे रसाब्धी। गुरौ शराष्टौ भृगुजे ... रसाद्या निशिवार वेला॥

अथ अज्ञात जन्म राशेः विशेषस्तमाहः— अज्ञात जन्मानां नृणां नाम्नि भं परि...त्॥ तेनैव चिन्तयेत् सर्वं राशिकूटादि जन्मवत्। जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नाम... ... यदा योज्यं दम्पत्यो निधनं भवेदिति॥

कालज्ञानम् – तत्काले दिवस निशासंज्ञा समुदेति राशि भागो यः॥ यावानुदयस्तावान् ...स्य रात्रेर्वा॥

अथ वर्षाज्ञानाय सर्पाकारत्रिनाडीचक्रमिदम् ॥

अ. भ. कृ.	आ. मृ. रो.	पु. पु. श्ले.	उ. पू. म.	ह. चि. स्वा.	ज्ये. अ. वि.	मू. पू. उ.	श. ध. श्र.	पू.उ.रे.	स्वर्ग मृत्यु पाताल

सर्पाकारा तथा लेख्यमश्विन्यादित्रिनाडिकम् ॥ नवनन्दनवर्क्षाणिस्वर्गपातालभूमिषु॥१॥ एकनाडीस्थितिः सर्वे क्रूराः सौम्याश्च खेचराः तदा सद्यो वदेद्वृष्टि प्रभूतं जलमादिशेत्॥२॥ स्वर्गनाडीगतक्रूराः सौम्या पातालनाडगाः ॥ तदा वृष्टिर्भवेदेव क्षिपेत्तोयं समुद्रगम्॥३॥ नपुंसकानां योगः स्याद्वायुः स्त्रीयोगतो ध्रुवम् । पुंस्त्रीसंयोगतो वृष्टिर्ग्रहाश्चेत्र बलास्तदा॥४॥ क्लीबस्त्रीयोगतः शीतं पुंयोग वातजं भयम् । वातनाड्यादिगाखेटाः कुर्युर्नाडीभवं फलम्॥५॥ एकोऽपि तत्फलं दत्ते सुनाडी संस्थितो ग्रहः। भूसुतः सर्वनाडीषु दत्ते नाडीभवं फलम्॥६॥ बुधशुक्रमहीसुनुः गुरवश्चैकनाडिगः। निःसंशयं तदाकाले, जायते वृष्टिरुत्तमा॥७॥ –लयकारके वृष्टिरुदये च बृहस्पतौ । शुक्रस्यास्तङ्गते वृष्टिस्त्रिधावृष्टिः सर्वदा॥

यात्रा विचार: - ग्रां शुभाशुभनक्षत्र

(अक्षां)श-देशान्तर सारिणी

नगर	अक्षांश अं. क.	काशीसे देशान्तर घ. प.	मि.दि.	नगर	अक्षांश अं. क.	काशीसे देशान्तर घ. प.	मि.दि.	नगर	अक्षांश अं. क.	काशीसे देशान्तर घ. प.	मि.दि.	नगर	अक्षांश अं. क.	काशीसे देशान्तर घ. प.	मि.दि.	नगर	अक्षांश अं. क.	काशीसे देशान्तर घ. प.
अयोध्या	२६।४८	०।८	३ प.	कुरुक्षेत्र	२९।५७	१।१	२५ प.	जौनपुर	२५।४४	०।३	१ प.	पेशावर	३४।२	१।५४	४६ प.	भोपाल	२३।१६	०।५५
अमृतसर	३१।३९	१।२१	३२ प.	कूचबिहार	२६।२०	१।४	२६ प.	जलपाईगुड़ी	२६।३२	०।५७	२३ पू.	पोरबंदर	२१।३९	२।१५	५४ प.	भुवनेश्वर	२०।१५	०।२७
अलीगञ्ज	२६।१२	०।१४	६ पू.	कि.आ.दीप(अ.)	३३।५६	१०।४४	२५८प.	जमशेदपुर	२२।४८	०।३२	१३ पू.	प्रोम	१८।४७	२।०	४८ पू.	मद्रास	१३।४	०।२८
अमरावती	२०।५४	०।५२	२१ प.	क्वेटा	३०।१२	२।४०	६४ प.	जूनागढ़	२१।२९	२।५	५० प.	पिंडरा	२२।४५	०।१०	४ प.	मधुबनी	२६।२०	०।३१
अमेठी	२६।७	०।१२	५ प.	काबुल	३४।२३	२।१८	५५ प.	जिनेवा	४६।१२	१२।५०	३०७प.	पीकींग(चीन)	··०।०	५।३६	१३४पू.	मण्डाले	२२।०	२।११
अजमेर	२६।२८	१।२३	३३ प.	काञ्चीपुरम्	१२।५०	०।३२	१३ प.	जकार्ता	६।१६द.	४।०	९६पू.	पेरिस(फ्रांस)	४८।५०	१३।२६	३२२प.	मथुरा	२७।३१	०।५२
अमरपुर	२६।५०	०।३८	१५ पू.	कुम्भकोणम्	१०।५७	०।३५	१४ प.	झांसी	२५।२८	०।४४	१८ प.	फतेहपुर	२५।५५	०।२१	८ प.	मझौली राज्य	२६।३८	०।१
अहमदनगर	१९।६	१।२२	३३ प.	कोल्हापुर	१६।४३	१।२७	३५ प.	टेकारी	२४।५८	०।१७	७ पू.	फैजाबाद	२६।४७	०।९	४ प.	मालदा	२५।३	०।५१
अलवर	२७।३२	१।४	२६ प.	केनबरा(आस्ट्रे)	३५।१९द.	१।१०	२६४पू.	टोकियो	३५।४०	९।२५	२२६ पू.	फरूखाबाद	२७।२६	०।३४	१४ प.	माण्डवी(कच्छ)	२२।५०	२।१५
अलमोड़ा	२९।३५	०।३३	१३ प.	कोलम्बो(श्री.)	६।५४	०।३२	२३ प.	डुमराँव	२५।३२	०।१२	५ पू.	बलिया	२५।४६	०।१२	५ प.	मेरठ	२९।१	०।५२
अलीगढ़	२७।५३	०।५१	२० प.	खण्डपारा	२०।१६	०।२२	९ पू.	ढाका	२३।४२	१।१५	३० पू.	बहराइच	२७।३४	०।१४	६ प.	मेदिनीपुर	२२।२५	०।४३
अम्हर्स्ट(बर्मा)	१६।४	२।२५	५८ पू.	गया	२४।४९	०।२०	८ पू.	तिलहर	२७।५०	०।३२	१३ प.	बरेली	२८।२२	०।३५	१४ प.	मोतीहारी	२६।४०	०।१०
अहमदाबाद	२३।१	१।४४	४२ प.	गाजीपुर	२५।३५	०।६	२ पू.	तञ्जावर	१०।४५	०।३८	१५ प.	बक्सर	२५।३३	०।१०	४ पू.	मैहरराज्य	२४।१६	०।२२
आरा	२५।३४	०।१५	६ पू.	गोरखपुर	२६।४७	०।३	१ प.	तिरुपति	१३।४०	०।४३	१५ प.	बड़ौदा	२२।१८	१।३७	३९ प.	मुरादाबाद	२८।५१	०।४२
आजमगढ़	२६।४	०।२	१ प.	गोंडा	२७।८	०।१०	४ प.	त्रिवेन्द्रम	८।३१	१।०	२४ प.	बम्बई	१८।५६	१।४०	४० प.	मुंगेर	२५।२३	०।३५
आगरा	२७।१२	०।४९	२० प.	ग्वालपाड़ा	२६।११	१।१६	३० पू.	तेहरान(ईरान)	३५।४१	५।१७	१२७प.	बलरामपुर	२७।२७	०।८	३ प.	मैनपुरी	२७।१४	०।४०
आबा (मण्डा.)	२१।५५	२।१०	५२ पू.	ग्वालियर	२६।१२	०।४८	१९ प.	दतिया	२५।४०	०।४५	१८ प.	बर्धमान	२३।१७	०।४८	१९ पू.	मिर्जापुर	२५।९	०।५
आसनसोल	२३।४३	०।४०	१६ पू.	गिद्धौर	२४।५२	०।३३	१३ पू.	दरभंगा	२६।८	०।२९	१२ पू.	बांदा	२५।२८	०।२७	११ प.	मुजफ्फरपुर	२६।७	०।२५
ओटावा (कन.)	४५।२४	२६।२७	६३५प.	गोलाघाट(आ.)	२६।३१	१।५०	४४ पू.	दार्जीलिंग	२७।३	०।५३	२१ पू.	बिहार	२५।११	०।२६	१० पू.	मैमनसिंह	२४।४६	१।१४
इटावा	२६।४६	०।४०	१६ प.	गौहाटी(आ.)	२६।११	१।२७	३५ पू.	दीनाजपुर	२५।३७	०।५६	२२ पू.	बीकानेर	२८।२	१।३६	३८ प.	मौलमीन	१६।२९	२।२६
इन्दौर	२२।४४	१।१२	२९ प.	गोविन्दपुर	२३।५०	०।३६	१५ प.	देहली	२८।३८	०।५७	२३ प.	बेतिया	२६।४९	०।१५	६ पू.	मुर्शिदाबाद	२४।११	०।५३
इच्छागढ़	२३।५	०।२९	१२ पू.	ग्रीनिच (ब्रिटे.)	५१।२९	१३।४९	३३२ प.	देहरादून	३०।१९	०।५०	२० प.	बालेश्वर	२१।३०	०।३९	१६ पू.	मक्का	२१।२५	७।७
इम्फाल	२४।४८	१।५०	४४ पू.	गोकर्ण	१४।३२	१।२६	३४ प.	द्वारिका	२२।१४	२।२०	५६ प.	बिलासपुर	३१।२०	१।०	२४ प.	मैसोर	१२।१८	१।२
उज्जयिनी	२३।११	१।११	२८ प.	गोवा	१५।२७	१।३१	३६ प.	डिब्रूगढ़	२७।२९	२।०	४८ पू.	बून्दी	२५।२६	१।१३	२९ प.	मछलीपट्टन	१६।१२	०।१७
उदयपुर	२४।२४	१।३३	३७ प.	चरखारी	२५।१२	०।३२	१३ प.	धवलपुर	२६।४२	०।५१	२० प.	बुलन्दशहर	२८।२४	०।५१	२० प.	मदुरा	९।५८	०।४७
उन्नाव	२६।४८	०।२३	९ प.	चन्दौसी	२८।२८	०।४२	१७ प.	धुले	२०।५३	१।२२	३३ प.	बराकर	२३।४६	०।३८	१५ पू.	मास्को(रूस)	५५।४५	७।३५
एटा	२७।३४	०।४३	१७ प.	चित्रकूट	२५।१२	०।२१	८ प.	नरसिंहपुर	२२।५७	०।३७	१५ प.	बाँसी (बस्ती)	२७।१०	०।१	० प.	रंगपुर	२५।४५	१।२
कछार	२४।५०	१।३८	३९ पू.	चुनारगढ़	२५।७	०।१	० प.	नागौद(बुंदे.)	२४।३४	०।२४	१० प.	बाकरगञ्ज	२०।३०	१।१३	२९ पू.	रानीगञ्ज	२३।३५	०।४१
कलकत्ता	२२।३३	०।५३	२१ पू.	चाईबासा	२२।३३	०।२८	११ पू.	नासिक	१९।५९	१।३२	३७ प.	बदायूँ	२८।२	०।३८	१५ प.	राँची	२३।३५	०।२३
कर्नाल	२९।४२	१।००	२४ प.	चण्डीगढ़	३०।४४	१।०	२४ प.	नागपुर	२१।१०	०।३८	१५ प.	बस्ती	२६।४८	०।३	१ प.	राजमहल	२५।२	०।४८
कटक	२०।३०	०।२९	१२ पू.	छटक (सिल.)	२५।१	१।२६	३४ पू.	नीमच	२४।२७	१।२१	३२ प.	बाराबंकी	२६।५६	०।१८	७ प.	रायबरेली	२६।१४	०।१७
करांची	२४।५१	२।३९	६४ प.	छतरपुर	२४।५५	०।३३	१३ प.	नैनीताल	२९।२३	०।३५	१४ प.	बगदाद	३३।२४	६।१९	१५२ प.	रीवाँ	२४।३१	०।१७
कन्नौज	२७।३	०।२९	१२ प.	छपरा	२५।४६	०।१७	७ पू.	नेपालगञ्ज	२८।०	०।१३	५ पू.	बर्लिन (जर्मनी)	५२।३०	११।३५	२७८ प.	रायपुर	२१।१५	०।१३
कश्मीर	३४।६	१।२५	३४ प.	छयगाँव(आ.)	२६।५	१।२३	३३ पू.	पवनार	२४।०	१।२	२५ पू.	बङ्गलोर	१२।५८	०।५५	२२ प.	रुड़की	२९।५२	०।५१
कानपुर	२६।२८	०।२७	११ प.	जयपुर	२६।५३	१।११	२८ प.	पटियाला	३०।२०	१।५	२६ प.	बेलगाँव	१५।५०	१।२४	३४ प.	रावलपिण्डी	३३।३५	१।४०
काशी	२५।१८	०।०	००	जबलपुर	२३।१२	०।३०	१२ प.	पटना	२५।३६	०।२२	९ पू.	बरहानपुर	२१।१८	१।५	२६ प.	रोम(इटली)	४१।५६	११।४५
कासगञ्ज	२७।४७	०।४३	१७ प.	जगन्नाथपुरी	१९।४९	०।२८	११ पू.	प्रतापगढ़	२५।३४	०।१०	४ प.	बिङ्काक(थाइ.)	१३।४४	२।५५	७० पू.	राजकोट	२२।१८	२।२
काल्पी	२६।१०	०।३१	१२ प.	जामनगर	२२।२७	२।१९	५२ प.	पीलीभीत	२८।३८	०।३१	१२ प.	भरोच	२१।४२	१।४०	४० प.	राजमहेन्द्री	१७।०	०।०
काठमाण्डू	२७।४३	०।२२	९ पू.	जनकपुर	२३।४३	०।२२	५ पू.	प्रयाग	२५।२८	०।१२	५ प.	भरतपुर	२७।१४	०।५५	२२ प.	रामेश्वर	९।१७	०।३७
कृष्णगढ़(बंग.)	२३।२३	[illegible]	२२ पू.	जालौन	२६।९	०।३६	१४ प.	पूर्णिया	२५।४९	०।४५	१८ पू.	भागलपुर	२५।१४	०।४०	१६ पू.	रंगून(बर्मा)	१६।४७	२।२०
कोटाबून्दी	२५।१०	१।१०	२८ प.	जमालपुर	२४।५८	१।१०	२८ पू.	पूना	१८।३०	१।३०	३६ प.	भुज (कच्छ)	२३।२५	२।१३	५३ प.	रायचूर	१६।१२	०।१-
कोहिमा	२५।४०	१।५०	४४ पू.	जोधपुर	२६।२०	१।४०	४० प.	पुष्कर	२६।२९	१।२५	३४ प.							
								पुरुलिया	२३।२०	०।३५	१४ प.							

ग्रीनविच से काशी का देशान्तर १३ घटी ५० पल (५ घंटा ३२ मिनट) वाराणसी और इलाहाबाद में ...शीघ्र आता है या मद्रास के देशान्तर में पड़ता है।

नगर	अक्षांश अं. क.	काशीसे देशान्तर घ. प.	मि.दि.
सूरत	२१।१[illegible]		
सोलापुर	१७।३९	१।१०	२८ प.
सिलीगुड़ी	२६।४४	०।५५	२२ पू.
श्रीनगर	३४।६	१।२२	३३ प.
श्रीरङ्गपट्टम	१२।२६	१।३	२५ प.
हजारीबाग	२३।५९	०।२५	१० पू.
हरिद्वार	२९।५८	०।४८	१९ प.
हैदराबाद(द.)	१७।२५	०।४५	१८ प.
हैदराबाद(सिं.)	२५।२५	२।२६	५८ प.
हाजीपुर	२५।४४	०।२२	९ पू.
हमीरपुर	२५।५८	०।२८	११ प.
हरदोई	२७।२३	०।२८	११ प.
हलद्वानी	२७।१५	०।३४	१४ प.
	२७।३७	०।४८	१९ प.

...घड़ी के अनुसार यह अन्तर ... पूर्व) एवं पश्चिम(-) होता है।

...मोक्षे शुभप्रदः। ...र्गेशुभः शशी।। ...थचन्द्रो जय- ...: शुभोऽन्यत्र

...प्रा:। लग्नात् १।६।७।८ ...ांग्र, इन्धन तैलाभ्यंग, गुड़, तक्र, ...भशब्दः, अतिरोगी, सन्तः न ...त्रोदिता, ..., कमल मुखछत्र, ...ट, घृत, ...पताका, जलघट, तित्तिर ...शाग्रं च ...रस्यात्यं ... छिद्रं

श्री शुभ संवत् २०५६, शा...

तुलाराशिः५८।२५(रा.शं.५।२२)। का... श्रीमान्
भद्रा घ.३७।४८ (रा.९।६) उ.। ...हो और
भद्रा घ. ... ।२०) या... भी ...
वृश्चि... ...) जयद् ...
... ...।२६)। भद्रा घ...
धनु ... ।५७ (रा.३।५३) य...
यमदंष्ट्रायोग ... ...ला मगल) इति लोके ...
वृद्ध भौमः ...
मकर राशिः२८।० (दि.१।५)।
भद्रा घ.६।४२ (दि.८।३३) उ. घ.३८।५५ ...
कुम्भ राशिः४५।६ (रा.११।५३)। पचक (प...
महामहेति वारुणी पर्वयोगः घ.४४।४९ (रा....
भद्रा घ.४५।५२ (रा.१२।११) उ.। प्रदोष व्रतम्
मीनराशिः६।५१ (दि.८।३३)। भद्रा घ.२५।४५ ...
स्नानदान श्राद्धादौ भौमवती अमा ३० पुण्यतमा

विशेष ... तो स्त्री प्राप्ति ... तमस के राशि ...

दैनिक लग्न सा...

...करके देना।

...ज्वलेन च तार्क्ष्य पक्ष निपातेन भूम्या गच्छ... (तार्क्ष्य=गरुड़)।

...झाड़ने का मन्त्र— शर्यातिल सुणन्यांच च्यवनं ...श्व्यौः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति। जल से धुलवाना।

ज्वर झाड़ना— ॐ नमो नरहरे रोगापहारिते ज्वरं नाशय नाशय ...मारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

अनारा ... चौथिया का मंत्रखलंकायाम ... कुमुदो ना...

: भूर्भुवः स्वः ... ध्रनात्मृत्योर्मुक्षीय ... नीलकण्ठाय

लटका दे... मंत्र- पार्थ सव्यसाची ... एतन्यर्जुन ... प्रजायते। ज्वर झा... रहे तो महादेव को ... इस मंत्र को ... की रात्रि में ...

...भ्रष्टो बहुकल ... सितम्।।१।।

...धारणीयम्

लग्न स्पष्ट करने की विधि -

यत्सूर्य...शंश समा... ...तिस्थानं ...ष्ट घटी युतंतत्।
तत्तुल्य घट्यादि भवे... ...कमितं हि लग्नम्।।

सूर्य राश्यंश के समान कोष्ठ के घटी पल में इष्ट कालि... आने वाली संख्या को उपरोक्त लग्न सारिणी में देखें। जहाँ कहीं भी लग्न सारिणी में उक्त संख्या या उसके लगभग वाली संख्या मिले उसके बाईं ओर ... की राशि तथा ऊपर लग्न के अंश होंगे। उदाहरण — जन्म कालिक सूर्य ५।१२ इष्ट घट्यादि १५।३० है। लग्नसारिणी में सूर्य को ५ राशि १२ अंश ... सम्पकोष्ठ देखा तो ...सूर्यफल मिला, इसमें इष्ट घट्यादि १५।३० जोड़ा तो ... हुआ। अब लग्न सारिणी में इसे देखा तो ... मिला। उसके बाईं ओर धनुलग्न तथा ऊपर ४ अंश मिला अतः ८।४।... राश्यादि लग्न हुआ।

यही लग्न सारिणी गाजीपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, झाँसी, ... इलाहाबाद, ... पटना, मुंगेर, भागलपुर, हाजीपुर, ... चित्रकूट, ... पूर्णिया, शाहाबाद, सहर... ...के लिये भी है।

संक्षिप्त पूजन

पूजा प्रारम्भ करने के पूर्व पूजक (यजमान) ... स्थ चित्त होकर आसनपर बैठकर 'ॐ केशवाय नमः, ॐ ... नमः, ॐ माधवाय नमः' कहकर आचमन करे तत्पश्चात् ॐ ... धाय नमः उच्चारणपूर्वक हस्तप्रक्षालन कर 'ॐ स्वस्ति नुइन्द्रोवृद्धश्रवाऽस्वस्ति नःपूषा-विश्ववेदाऽस्वस्ति नुस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।" इत्यादि मन्त्र के साथ स्वस्ति वाचन तथा गणपत्यादि देवताओं का स्मरण करें अनन्तर "ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।" इस मन्त्र के साथ सबसे पहले बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से शरीर की पवित्रता हेतु जल छिडके बाद में प्राणायाम करें। तदन्तर, हाथ में जल, पुष्प, सुपाड़ी, दक्षिणा लेकर संकल्प करें-ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रम्हणः द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते बौद्धावतारे.....नाम्निसंवत्सरे.....अयने......ऋतौ......मासे......पक्षे.... तिथौ....वासरे.....नक्षत्रे शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानेषु स्थितेषु सत्सु एव ग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां.....गोत्रोत्पन्नः......नामाऽहं मम कायिक-वाचिक-मानसिकज्ञाताज्ञातसकलदोषपरिहारार्थं श्रुति-स्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं संकलकामना-सिद्ध्यर्थञ्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः पूजनमहं करिष्ये। तत्पश्चात् सुपारी पर मौली लपेटकर चावलों पर स्थापित करे और नीचे लिखे आवाहन मन्त्र पढ़कर अक्षत छोड़े। यदि मूर्ति हो तो पुष्प छोड़े। **आवाहनम्**-गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।। आगच्छ भगवन्देव! स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव।। प्रतिष्ठा- अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामेहति च कश्चन।। **आसनम्**-रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।। (आसनं समर्पयामि) **पाद्यम्**-उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।। (पाद्यं समर्पयामि) **अर्घ्यम्**-अर्घ्यं गृहाण देवेश! गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते। (अर्घ्यं समर्पयामि) **आचमनम्**-सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।। आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर।।(आचमनीयम् समर्पयामि) **स्नानम्**-गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे।। (स्नानम् समर्पयामि) **दुग्धस्नानम्**-कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।(दुग्धस्नानम् समर्पयामि) **दधिस्नानम्**-पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। (दधिस्नानम् समर्पयामि) **घृतस्नानम्**-नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। (घृतस्नानम् समर्पयामि) **मधुस्नानम्**-तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधुः। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।। (मधुस्नानम् समर्पयामि) **शर्करास्नानम्**-इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारकम्। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। (शर्करास्नानम् समर्पयामि) **पंचामृतस्नानम्**- पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करा-युतम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। (पंचामृतस्नानम् समर्पयामि) **चन्दनम्**-मलयाचलसम्भूतं चन्दनं देवदेवेश ... गृह्यताम् ।। (चन्दनं समर्पयामि) **शुद्धोदकस्नानम्**-... गंगा ... यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।। (शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि) अनन्तर शुद्धदेववस्त्र से भ... ... तत्पश्चात् **वस्त्रम्**-सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।। (वस्त्रम् समर्पयामि) **यज्ञोपवीतम्**-नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।। (यज्ञोपवीतम् समर्पयामि) **गन्धम्**-श्रीखण्डश्चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।। (गन्धम् समर्पयामि) **रोली**-कुंकुमं कामनादिव्यं कामिनीकामसम्भवाम्। कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर!।। (रोली समर्पयामि) **सिन्दूरम्**-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।। (सिन्दूरम् समर्पयामि) **अक्षतम्**-अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।। (अक्षतान् समर्पयामि) **पुष्पम्**-पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः। पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।। (पुष्पम् समर्पयामि) **पुष्पमालाम्**-माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!। मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर।। (पुष्पमालां समर्पयामि) **बिल्वपत्रम्**-त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ।।(बिल्वपत्रम् समर्पयामि) **दूर्वा**-त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि। सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरी भव।।(दूर्वा समर्पयामि) **दूर्वांकुरम्**-दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।। (दूर्वांकुरान् समर्पयामि) **शमीपत्र**-शमी शमय मे पापं शमी लोहितकण्टकी। धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी।। (शमीपत्रम् समर्पयामि) **अबीरगुलालम्**-अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च। अबीरेणार्चितो देव अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। (अबीरगुलालञ्च समर्पयामि) **आभूषणम्**-अलंकारान्महद्दिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान्। गृहाण देवदेवेश! प्रसीद परमेश्वर।।। (आभूषणम् समर्पयामि) **धूपम्**-वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। (धूपम् दर्शयामि) **दीपम्**-आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।। (दीप दर्शयामि) **नैवेद्यम्**-शर्करामृतसंयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम्। उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।। (नैवेद्यम् निवेदयामि) **मध्ये पानीयसमर्पणम्**-अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धि च पिबेच्छया। त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि!।। (मध्ये पानीय समर्पयामि) **ऋतुफलम्**-इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।। (ऋतुफलम् समर्पयामि) **आचमनम्**-गंगाजलं समानीतं सुवर्णकलशेस्थितम्। आचम्यतां सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम् ।।(आचमनीयं समर्पयामि) **ताम्बूलम् पूगीफलञ्च**-पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। (ताम्बूलं पूगीफलञ्च समर्पयामि) **दक्षिणा**-हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।। (दक्षिणा समर्पयामि) **आरती**-चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्।। (आर्तिक्यं ... दर्शयामि) **पुष्पांजलिम्**-नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।। (पुष्पांजलिं समर्पयामि) **प्रार्थना**-रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।। (प्रार्थनां समर्पयामि) अनया पूजया श्रीमहागणपतिः प्रीयतां ...